कंचन करत खरौ

ब्रजभाषा–उपन्यास

गोपाल प्रसाद मुद्गल



राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी,
सी–267 भाभा मार्ग, तिलक नगर, जयपुर

सम्पादक
डा विष्णुचन्द्र पाठक
अध्यक्ष
राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी

प्रकाशक
सचिव
राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी
सी 267, भाभा मार्ग तिलक नगर जयपुर

।

लेखक
गोपाल प्रसाद मुद्गल

आवरण
सन्त गोस्वामी

पहला संस्करण 500 प्रति
मार्च 1990

मूल्य 50 रु मात्र
राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी

मुद्रण-स्थान
दुर्गा शर्मा प्रिंटर्स,
आदर्श नगर जयपुर-4

जिणकी नेहिल भाव भरी दिव्य प्रेरक वाणी सूं "कंचन कलश रचौ' लिखौ गयौ है ऐसे तेजस्वी रिसि श्री तेजसिंहजी कूं सादर समर्पित।

गोपालवल्लभ

विसै सूची



प्रकासकीय

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी की स्थापना राजस्थान सरकार के सदप्रयत्नन ते जनवरी 1985 मे भई। अकादमी की स्थापना के सगई आधुनिक साहित्यिक ब्रजभाषा गद्य की सुरुआत भई है। अकादमी ने अपने पाँच बरस के कार्यकाल मे ब्रजभाषा गद्य के छन्न म आधुनिक विधान प अपनी मुख पत्रिका 'ब्रजशतदल' के मच सौं कई नई परपरा स्थापित करबे को किंचित प्रयास कीनो ह। राजस्थान के अग्यात कवि अक, मारवाड़ अक, हड़ौती ब्रज अक आदि विभिन्न अकन के द्वारा समीक्षा के क्षेत्र मे ब्रजभाषा गद्य की स्थापना करी गई अरु याके सग ब्रज सस्कृति अक ब्रज कला अक अरु नाथद्वारा अक के मच ते राजस्थान के विभिन्न भागन म फली भइ ब्रज कला सस्कृति कूँ पली दफै एक स्थान प लिखिबे को प्रयास कीनो गयो। याके सग कहानी अक, कवयित्री अक, रेखाचित्र अक एकाकी अक अरु उपन्यास अक के द्वारा गद्य की आधुनिक विधान पै ब्रजभाषा म लिखबे को प्रयास कीनो गयो। अपने या कार्यकाल म अकादमी न चार सौ पन्ना की राजस्थान की मरुभूमि मे फली सरस ब्रज कला सस्कृति 'ब्रज कला अरु सस्कृति' ग्रथ म समेटबे को प्रयत्न कीनो है। याके सगई अकादमी ने आधुनिक ब्रज गद्य विधा प रचनात्मक साहित्यिक वभव कूँ उजागर करबे बारे तीन सौ पन्नान को 'आधुनिक ब्रजभाषा गद्य ग्रथ ऊ प्रकासित कीनो है।

ब्रजभाषा म उपन्यास_शिल्प की अभाव हो। याते पूर्व वृन्दावन के शरण बिहारी गोस्वामी को पछरी को लौठा अरु श्याम सुन्दर शर्मा को 'मनसुखा लघु उपन्यास प्रकासित भये है। अकादमी द्वारा प्रकासित उपन्यास काल क्रम की दृष्टि सौं ब्रजभाषा उपन्यास जगत की तीसरी रचना है। आकार अरु आधुनिक जन-जीवन के सघर्षमय डगर एव भूत वर्तमान अरु भविस्य के सगम प मानव जीवन के करनीय की यथार्थ व्याख्या उपन्यास के मच ते ब्रजभाषा म अबई तानू देखबे मे नाय मिली ही। विद्वान लेखक श्री गोपाल प्रसाद मुदगल ने 'कचन करत खरो उपन्यास म उपन्यास कला की सपूर्ण विसेसतान कूँ ब्रज अचर की सीधी साधी कथा मे समेटबे को प्रयत्न

कीनो है। कचन करत खरो उपन्यास साहित्य जगत में जेऊ प्रमानित करगो के आधुनिक जन जीवन की कथा अरु मानव मूल्यन की स्थापना के आलोक में, सामाजिक जीवन के विकास के भावन कूँ प्रकट करबे की ब्रजभाषा की शक्ति काऊ तरियां ते कम नांय।

कचन करत खरो में आपकूं अधुना राजस्थान के ब्रज छेत्र के सामाजिक अरु पारिवारिक जीवन की सटीक झाकी ऊ मिलेगी। ब्रज के गामन मे आधुनिक जन-चेतना के सुर जद्यपि धीरे धीरे फलबे लग है परि आजऊ ह्यां के निवासी अपनी सस्कृति की परम्परान कूं धरोहर की तरियां अपन जीवन म धारन करे भये हैं। पुराने अधविसवास अरु रूढिबादिता ते अबई ब्रज अचर पूरी तरियां मुक्त नाय भयो है। भोरे परि स्वाभिमानी ब्रजबासी निधनता अरु उपक्षा के सत्रास म पिसते भयेऊ अपने फटेहाल मेई मस्ती के आलम मे जीवे के कसे अभ्यासी बन गये है याको यथार्थ लेखौ जोखो उपन्यासकार की लेखनी ते या उपन्यास मे निसरत भयो है। साहस सकल्प अरु कर्म निस्ठा की त्रिवेनी के सगम पै लेखक ने सफल जीवन के प्रयाग को निर्मान कचन करत खरो म करके जन जन कूं सफलता को रहस्य प्रकट कीनो है। स्यात ब्रज क नारी जगत कूं लेखक ने जो सघर्षसील पूजनीय आदर्श या उपन्यास म दीनो चितव जात पूर्व ब्रज के साहित्य के छेत्र नाय दियो गयो।

आशा है ब्रजभाषा अकादमी को 'कचन करत खरो' उपन्यास प्रकाशन को प्रयास ब्रजभाषा गद्य विधा कूँ आगे बढाइबे मे सफल होयगो ऐसी हमे आसा है। तिहारे सुझाव अरु मार्गदर्सन को हम स्वागत करे हैं।

डा० रामप्रकाश कुलश्रेष्ठ
सचिव
राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर

या उपन्यास के ताने बाने

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी अपनी स्थापना के चौथे बरस मे आपके हाथन मे निमग ब्रजभाषा म 'कचन करत खरौ' उपन्यास भेंट कर रही है। ब्रजभाषा म गद्य मेऊ बू ई सौरभ भरी सुगंध अरु वचन वक्रता भरी वाग्वदग्धता की भीनी-भीनी रमणीक शक्ति भरी पडी हैं जो पद्य मे है। याकै प्रमान आपकू भैया गोपाल पसाद मुद्गल के उपन्यास कँचन करत खरौ म मिलिगें।

कचन करत खरौ ब्रजभाषा मे राजस्थान की धरती प प्रकाशित पैला उपन्यास है। या उपन्यास मे राजस्थान के ब्रजभाषा भाषी भूभाग की कथा कू मूल आधार बनायौ गयो है। नारी प्रधान कचन करत खरौ' उपन्यास मे लेखक ने तीन पीढी की कथा कू समेटबे को प्रससनीय प्रयास कीनो है। समाज के सृजन मे नारी को महत्व अरु वाके सघससील जीवन ते निकरे भये चेतना के सुर कस टूटे भये परिवार के निर्मान की श खलान कू एक-एक करके जोडे हैं याको साचो खातो या उपन्यास को मूल केन्द्र बिन्दु रह्यौ है। सघर्ष के आलोक मेई सच्चो कम को पथ दीखे है। मानव जीवन मे अनेक उतार चढाव आमै है। भीतेरे कष्ट होंय, अन्ध विस्वास अरु रुढिवादिता के कारन भीतरी पीडा झेलनी पडे, समाज के नये बिचार, प्रगति की नवीन धारा को घनघोर विरोध करे है। परम्परा अरु नवीनता मे टकराव होय है। ई आज की नाय हर युग की कथा है। पर समाज मे ऐसे लगनसील अरु कमठ व्यक्तिऊ होय हैं जो परम्परा को आदर करते भये नये विचारन की उवरा भूमि कू अपने कमठ कम की सक्ति त जोत क बाय नवीन चेतना के अनुकूल बना देय है। 'कचन करत खरी के नायक चकोर अरु चन्दा याई तरियाँ के पात्र है। कम की निस्ठा इन दोनू पात्रन की चेतना को मूलबिन्दु है। एक समै तो ऐसौऊ आवै है जब चन्दा अकेली रह जाये है। जीवन के स्थान स्थान पै बाय एक त एक असहनीय दु ख झलने पडे है। लगे है कै वू अब सदा सर्वदा कू टूट जायगी, पर निरासक्त भाव ते कर्म के प्रति निष्ठा चन्दा कू जीवन निर्मान को एक नयो रास्ता आलोकित करे है। आखिर मे जीत कर्म निष्ठा की होय है। नायिका प्रधान 'कँचन करत खरौ उपन्यास मे नारी के महत्व कू समाज अरु परिवार की प्रगति के सग उपन्यासकार ने बखूबी ते दिखायबे को प्रयास कीनो है।

कर्म की निष्ठा की आराधना के संग संग 'कचन करत खरौ' उपन्यास म ब्रजभूमि के जीवन कौ अनूठौ प्रस्तुतिकरन करिबे कौ लेखक ने उल्लेखनीय प्रयास कीनौ है। ब्रजभूमि के गाम की रीति रिवाज, उत्सव, पारिवारिक जीवन क उतार-चढाव कै सग सग भोरे ब्रजवासीन की सिगरी जीवन शैली लेखक ने बखूबी या उपन्यास की घटना अरु पात्रन के परस्पर वार्तालाप म उतारी है। ब्रजभूमि के पारिवारिक अरु सामाजिक जीवन मे बालक क जन्म ते लक वाकी मृत्यु पयन्त तक की परिस्थितीन म कहा कहा उतार चढाव आमे ब्याह सादी क औसर प बिचौलिया कैसे द्वै मिलत भय परिवारन कू सर्वनास खण्ड खण्ड करिबे की प्रयत्न कर है। य सिगरी ब्रजभूमि की जीवन सली अरु बिनकी मर्यादान के उतार चढाव क संघष कौ कंचन करत खरौ उपन्यास मे लेखक की कलम ते सटीक वनन भयौ है। सतोसी मस्त मोला अरु स्वाभिमानी ब्रजवासी के जीवन की सिगरी बिससतान कौ निचोड 'कचन करत खरौ उपन्यास की एक एक घटना म प्रतिबिम्बित भया है।

'कचन करत खरौ' उपन्यास मे विद्वान उपन्यासकार ने औपन्यासिक शिल्प कौ आद्यो पान्त निर्वाह कियो है। उपन्यास सिल्प की रक्षा करत भये लखक न बडी सादगी अरु सरसता के सग करनीय कू याम प्रस्तुत कीनी है। तीन पीढी की कथा म एक नारी के सघस कू उजागर कर उपन्यासकार न सामाजिक अरु पारिवारिक जीवन के सच्चे रचनात्मक विकास म निरासक्त कर्म के महत्व कू मनाहर ढग ते प्रतिपादित कीनो है।

औपन्यासिक शिल्प क निकष पै कंचन करत खरौ' की विवचना प्रस्तुत करनो चाह है।

कचन करत खरौ कथा की डगर —

कथानक ब्रज अचर की है। सिगरी कथा भरतपुर डीग अऊ गामन क आस पास की है। उपन्यास की कथ्य सक्षेप मयो है —

बोहरौ चोखेलाल अरु बाकी बेटी चदा —

भरतपुर की चाखेलाल कम ब्याज प बोहरगत करतो। भलो आदमी हो। गरीब गुरबान क ताई भलाई की सोचतो। बाकै भइ इकलोती बटी "चन्दा। बोहरे की छारी ठाठ बाट सौं रहेई। समै नै पलटा खायो। कई साल अकाल रह्यौ। यानै बाकी कमर तार दई। बू हर साल अपने आसामीन की झोरी भरतो रह्यौ। बाए अपन घर चलाब क लाले पर गए। इत बाकी छारी सोनह बरस की है गई। बाकी मैया अची अरु बाकी बहू बाए खोदि खोदि क ब्याह आ रही क छोरी क पीरे हाथ कर जाएं। चाम जहा कहू जानौ म्हाई लैन दन मोलभाव काम ए बिगार देतो। चन्दा रूपवती पढी लिखी हो। सब काम म हुसियार पर माली हालत बिगर जाव त कोऊ हू नाय करतो। चन्दा को कई बर दियारो मयो पर माटी मइ नई पडी।

[1] अबीर में चन्दा नई हल निवासी। वाकौ एक परिचित कालेज कौ साथी ही चकोर । वाद विवाद में हमेसा पहलौ के दूसरौ नम्बर पातौ। चन्दा ऊ वाद विवाद मे भाग लैती।[1] दोनोन की जान पहचान है गई। एक पोत दहेज के विरोध मे चकोर नैं बाजी जीत लई । बडी वाहवाही मिली। चन्दा न बातें पूछी,'दहेज के विरोध में जो बात होठन सौं कही है बू होठन तकई रहैगी कै जीवन में उतारी जाइगी ?" ता समैं चकोर नैं कही ' या बात कौ उत्तर तौ समैई देगौ पर हाँ मानस कू अपनी बात कौ धनी होनौ चइए। इन बातन की याद दिवाबे के लाई चन्दा नैं चकार की नब्ज टटोरी । चकोर चन्दा सौं प्रभावित तौ हतई हौ। चन्दा के घर की गिरी हालत ने चकार के मन में और सहानुभूति जगा दई। चन्दा नैं ईऊ बता दई क बू जाति ते बाढई बामन है । चकोर तौ गुन कौ गाहक हौ। बानें प्रस्ताव स्वीकार कर लियौ।

पीरे हाथ चदा अरु चकोर के —

चन्दा नैं अपनी बात चिट्ठी के माध्यम सौं पिताजी सौं कहनी चाही। पाती लिखिकै बिनकी डायरी म धर दई। रात कू पाती पढी और राधा कू सुनाई। सबरे राधा नैं मिगरी बात पूछी तौ चन्दा नैं मैया कू सतोस दिवा दियौ। इतकू चकोर चन्दा ते तौ हाँ करगौ पर गाम मे पहुँचते ई नथिया ए अतरजातीय ब्याह की बात पसद नइ आई। बान चकोर कू समझायौ पर चकोर नैं तौ कलमाई नई भइयौ। बाकें अच्छे अच्छे ढोल लगा रहे पर चकोर तो बात कौ धनी हौ। चकोर के अन्तर जातीय ब्याह की बातें गाम वारेन कू नागवार गुजरी। चकोर अपनी बात पै जमौ रह्यौ। गाम नाराज हौ तौ गयौ। तबई एम ए कौ रिजल्ट आयौ। चकोर नैं एम ए टोप कियौ। बितकू चन्दा नैऊ बी ए पास कर लियौ। चकोर अतर जातीय ब्याह कर रह्यौ है या बात कू लक अऊ गाम म पचायत भई। किसोर सरपच, मूला पच, परमान लम्बरदार नैं नथिया ऊ समझाई पर बात बँड गई। नथिया कौ सग दैबे वारौ वाकौ धरम भैया बहोरी ही। नथिया अरु बहोरी के घर छेक दिये। बात हाँ तकई नाय रही। चकोर की मढया प पत्थर बरसबे लगे। एक रात तौ छप्पर म आग लगा दई। मैया बेटा बच तौ गए पर गाम बारे नैं हमदर्दी क बोलऊ नई बोले। जब बे अऊ छोडिकै चलबे लग ता चकोर की लैक्चरारी की कागज भरतपुर ते आयौ। मैया बेटा दुखी दुखी भरतपुर पौंच। भरतपुर मे चकोर के यार राजेन्द्र न बाकू बसायबे मे पूरी मदद करी। भरतपुर पौंचत ही चन्दा अरु चकोर कौ ब्याह आर्य समाज मन्दिर में सादगी सौं भयौ। चोखे गधा जस अ चौ नैं चन्दा के पीरे हाथ करकैं चैन की सास लई।

बनौ घरोबा टूटौ —

ब्याह पाछ, चकोर के भाग्य नैं जोर मारौ। बू आर ए एस भयौ अरु नौ डी ओ है मैं डीग म ई आयौ। थोरे दिनान मेई बू चारौ ओर पुजगौ। एक दिना अऊ गाम बारे सकोच के सग माफी मागबे आए अरु बाए अपने गाम बुलाबे कौं नौतौ —

गए । चकोर नै अपनो पुरानो बर भाव उठायबे ताव म रख दियो । सब गांम वारन सौं बू प्यार सौ मिल्यो अर दूसरे दिना अऊ पौंच गयो । म्हा खूब जलसा भयो । जब बू डीग कू लौट रह्यो । तबई एक्सीडंट है गयो–अस्पताल म वान दम तोर दियो । बाई समै चन्दा कै छोरा भयो । नथिया ने अपने बेटा के मरबे की सुनी नौ बाको हाटफेल है गयो । बूऊ चल बसी । रह गई चन्दा अरू बाकी गोद म एक दिना कौ छोरा । राजेन्द्र राधा अर चोखे चन्दा प छाती दर्के परे रह । चन्दा कू सोसल एजूकेशन आफीसर की नौकरी दिवाय क राजन्द्र नै दम लई । राधा चन्दा कू डीग मे सम्हारनी रही । चाखे अपनी मैया कू भरतपुर म सम्हारनो रह्यो । चन्दा न अपन बेटा दिवाकर कू पढायो लिखायो । पिलानी म बी ई करवायो । पिलानी मे दिवाकर चुनावन मे अध्यच्छ चुनो गयो । बाप कातिलाना हमला भयो पर जान बच गइ । चन्दा न म्हा जाइक अपन ब्योहार सा सबको मन जीत लियो । एक अच्छी मैया की उत्तम ब्योहार देखिक सब चन्दा क भक्त है गए । सबक प्रेम को पाठ पढायो ।

सघष अर लजन की सुग ध —

दिवाकर भरतपुर आयकै फैक्ट्री में इजीनियर बन गयो । बाको ब्याह सादगी सौ रजनी के सग भयो । रजनी धार्मिक विचारन की महिला ई । एक बरस पीछै रजनी के छोरा भयो । नाम रखो गयो प्रभात । घर म खुसी छा गई । थोर दिना पीछै जनम आठै आई । घर मे व्रत राखौ । रात कू प्रसाद लब दिवाकर अरू रजनी मन्दिर कू गए । अचानक रनजीत नगर कै चौराहे पै एक्सीडेंट है गयो । दुरभाग्य सौ दोनू मारे गए । चन्दा पै ओर ब्रजपात भयो । का करती सहनो परो । हाँ चन्दा न हिम्मत नई हारी । प्रभात कू लैकै अऊ गाम पौंची । अपनी पेंसन ग्रेचुटी को धन एक फारम बनायबे म लगा दियो । एक खोलो छोरीन को स्कूल । आवासीय स्कूल बाकी पढाई सेवा भाव देखिकै सब दग रह गए । दूर दूर तक नाम है गयो । प्रभात हू होनाहर निकस्यो । बान स्कूल मे प्रथम आयक खूब नाम कमायो । एक पोत बान एक लुटरेन के गिरोह कू पकडवायबे म कमाल कर दिखायो । बाकू राष्ट्रपति पुरस्कार मिल्यो । चन्दा सतुष्ट है गई क प्रभात कचन है गयो है । या तरियां सबकी सेवा करती रही । चन्दा कू एक रात लकुआ को झटक भयो चन्दा नऊ जान लियो पछी उडनो चाहे । बानै सब इकट्ठे किए ट्रस्टीन क प्रभात सौंप कै कही याको सादगी सौ ब्याह कर दीजों प्रभात ते कही जब तुम आए जगत म जग हासो तुम रोइ । ऐसी करनी कर चलहु तुम हासो जग रोइ । इतनौ कहकै चन्दा सदा कू मौन है गई ।

कथा के ताने बाने अर दरपन पात्रन को

या कथानक म यो तो अनोखे किशोर मूला परमाल रग्गो बहारी राजेन्द्र दिवाकर, कनुआ प्रभात भरत आदि पुरुष पात्र हैं पर चकोरई प्रमुख है । चकार की मरतु के पाछ दिवाकर अरू प्रभात उभर के आए हैं। बीच बीच म राजेन्द्र बहारी भरत जस पात्रन क माध्यम सौ कथानक आग बढो है महिला पात्रन मे चन्दाई प्रधान है

राधा, अ ची नथिया सहयोगी स्त्री पात्र है। पात्र धरती क अपने बीन के है। बिनक त्रिया कलाप अपने जैसेई क्रियाकलाप है। जैसो समाज में देखो है बसोई पात्रन के माध्यम सो ज्या की ज्यो उतार दियो है।

दूसरे की बहनूदी कू देखिकै जरबे, अरू कुढबे बारे रग्गो जस पात्र हैं। बनैं तो भजनानदी है, पर मुख मे राम बगल म छुरी बिनको धरम करम है। चढी छान उतारबे मई बि नै मजा आव। बिनते कोऊ छोरान के नाते गोते पूछबे को सहयाग माग ता सूधे म्हों बात नाय करें। सो सो एहसान दिखावें। अनोखे जसे पात्र हू है जा यसेष्णा क मारे भए है। अपने मित्र चोखे की मदद तो करें पर यसेष्णा के भूखे हैं। कबऊ कबऊ द्वन्द पे झूलान मऊ झून। बदनामी की सुनिकें हिल जाए। छोरा छोरी की ब्याह् अच्छो है जाय तो चेहरा प चमक आ जाय। किशार, मूला परमाल जस सरपच अरू पच हैं, जो लकीर के फकीर है कें नई बातन न अपन गर नाय उतारें। जब चकार बी डी ओ है जाए तो भय क मारें बिनको आख खुलें। राजन्द्र जस यार आजऊ मौजूद है जा शहर म नवयुवक मडल बनाय कैं दहेज क विरोध म धुजा ऊची करें। बदलाव क ठाई नई मान्यतान कू स्वीकारें। अपनो कर्तव्य निभाइब म जीवन को सार समझें। चकार क मर जाबे क पीछें अपनी भाभी चन्दा कू नौकरी दिवाय कई दम लें।

दिवाकर को चरित्र बडो सतुलित अरू आदसमय है। बू पिलानी म अपने मानवीय गुनन सो सबन को है जाए। सब वाके है जाय। अपने बुद्धि कौसल सो अपनो अरु अपन कालेज को नाम करें। याही तरिया प्रभात दिवाकर सो हू आगे निकस जाए। बू मधावी दयालु सवाभावी निर्भीक बालक है। अपनी जान जोखिम मे डार कैंऊ सवा कर अरू नाम कमाव याही सो राष्ट्रपति पुरस्कार पावें।

चोले या कथानक मे प्रारभ सो ई दिखाई पर। भलमानसहत वाकी रग-रग म बसी है। तबई तो घर को घन्धा करकें किसानन की मदद कर। रुपिया डूब जाए पर बू काऊ प जोर न जताव। काऊ क खिलाफ नालिस डिगरी नाय करावे। दुखन नै दखे अरू झेले। समाज म, बिन पइसा सब सून' जब देखें तो अक्ल दुरूस्त है जाय। घर म दिन रात मैया अरू बहू के कुचरके सुनै। सो सो ताने सुन। हिम्मत नाय हार। परिस्थितीन सो जूझ। बू दकियानूसी नाए—नएपन ए स्वीकारे। नई पीढी सो मल करके चल। चकोर या उपन्यास को प्रमुख पात्र है जो क्रम मे पथ पै सकटन कू झेलिकैं आग बढ़। बू कुसाग्र बुद्धि तार्किक कुसल वक्ता, कर्मठ सहनसील समाज सवी, उदार हृदय, मितभाषी, मधुर भासी है तबई तो सबके हृदय को हार बन जाए। गाम के चपडेन कू सहतोभयो अग्यात अधकार मे निकस परें अपन हाथ पामन क बल प। एक दिए अरू तूफान की सी कहानी दिखाई पर। बान हिम्मत हारकें बठनो तो सीखो ई नांएँ। नए बिचारन को युवक अकस्मात चल बसें ई न जाने कौनसी विडम्बना है। ई समझ सौं परे ह। जा सबके हित म रत ह वाको जीवन याही चसो जाए ई रहस्य बनो रह्यो है।

नारी पात्रन म चन्दा प्रमुख है। उपन्यास की नायिका वूई है। कथानक में सिगरे ताने बाने बाई क ओर ढौरे बुने भए हैं। जसी वहे बयार पीठ तब तैसी दीज क अनुसार ठाठ बाट सौ रहवेवारी चन्दा ओखा आते ई सादगी सों रहे। सकट के समै स्वय हल निकासवे बारी सकट म सीना तान कैं ठडी हैव बारी गुनन की खान है। लज्जा सौ विभूसित, समाज सेविका सहयोगिनी कमसीनता सवेदनसील आदि स्त्रीयोचित गुनन सों रची पची है। समाज म महिलामडल बनायकें बाल विवाह, मौसर दहेज, बहु विवाह आदि की विरोध कर समूह विवाह अरू सादगी सो विवाह करायकें आदश उपस्थित करैं। युगानुरूप नए नए कामन म रूचि लै। छोरीन कू आवासीय पाठसाला, फाम, घरेनू ग्रामीण उद्योग खोलिकें मसीन के युग मे आत्मनिर्भता को पाठ पढावें। जो काऊ वाके सपक म आवे बाइ कू कचन बनाय दे। सही मायने मे चन्दा पारस है। राधा अरू अची सामान्य नारी है। बेसुख म सुखी अरू दुख म दुखी दिखाई परैं। अची अपनी परम्पागत बिचारधारा सौं ग्रसित है। कबऊ-कबऊ धुरपट्टीन सुनायकें आयबेलो खडो कर दे। राधा हू पीछे रहवे वारी नाए। वू चोखे की चोखी खबर ले। नथिया नारी पात्रन मे दया की पात्र है जो जीवन भर गरीबी मे रही है। मेहनत मजूरी करकें छोरा लायक बनायो है। गाम बारेन ने वू दुरवारी तऊ गाम को मोह नाय छोडो। गाम बारे जिनै घर पजारो जब बाके पास आए तो वू खिल उठी रोम रोम नाच उठो। याय देवी की सग्या दैं तो कोई अतिस्योक्ति नाँय। या तरिया सौं जितेकऊ पात्र ह वे समाज के लोगन को प्रतिनिधित्व करवे वारे हैं। नई पीढी अपने आप सोचेगी कै किन पात्रन को अनुसरन करैं। किनकू छोडैं।

बातचीत को बाकपन —

कथानक कू आगे बढावे वारे सवाद याकी जान हैं। लोकभाषा मे कहैं कै इनकू लाक बोली मे कहे। जसी पात्र बसेई सबाद। थोरे मे घनी बात कहव बारे। गागर मे सागर की नाईं। कहावत मुहावरेन सौ भर पूरा एक उदाहरन देखो-चोखे न रग्गो ते पूछी—

अजी कोऊ और छोरा बताओ।'
'या नइ जचो?
अजी जचो तो खूब पर तेते पाम पसारिये जेती लाबी सौर।
'अरे लाला यो कह ज्यो ज्या गोह मोटी होय त्यो-त्या बिल सकरो होय।'

ठेठ ब्रजभाषा के ठाठ सम्बादन मे बिखरे परे हैं। चकोर जब अन्तरजातीय ब्याह के नाई नक मोह खान दे तो लोगन के तरिया तरिया क कथन दखो—

कचन करत खरो

"हमारीई बिल्ली हमसी म्याऊ कर । कल परसौ कौ छोरा हमारो सामनो करै।"

"अजी राड की माड है रह्यो है।

"लाला ऊपर कू मत थूकै।'

'बेटा गाम मे रहबौ भूल जाइगो।'

"अगर हमे मालूम तो होती एसी कौघई नई होन दैत जाप आज मक्खी भिन भिना रही है।'

'बेटा ज्वानी मे अधौ मत बन। ज्वानी हमपैऊ आई। आगौ पीछौ सोचलै।

इन कथनन मे स्वाभाविकता अपन आप आ गई है।

सामाजिक परिवेस —

देस काल अरु वातावरन की परिधि मे ई उपन्यास आजादी कं पीछै घटनान कू समेट भए है। ब्रज अचर माहि सन् 1948 के पाछै समाज म का परिवतन आयो है। गाँमन म पुरानी लकीर पीटव मे अबई तक लोग चून बाधकै पीछै पर जाय। पचायत बैठे और गहर डहावे म अबऊ पीछै नाय रहे। नए युग की लहर सौं अबई दूर अनकन रूढिन मे बधे भए ह। खास तौर सौ दहेज के भूत सौ सबई सताए भए हैं। तौऊ आसा की किरन नई पीढी की बुलद हौसलौ दिखायौ है। आजादी क पाछै पचायत समिति, महिला मडल, नवयुवक मडल नइ रोशनी लाइबे कू है।

उपन्यास जैसी वातावरन वसी झाकी अनकन ठौरन पै बिखरी है। अऊ गाम म पचायत कौ रूप देखौ—

"गाँम क मदिर म पचायत जुरबे लगी। गाम के लोग अपने अपने फैटान नै बाध कै इकठौरे है गए। सब अपनी-अपनी मौछन पै हाथ फेरिबे लगे। गाम की इज्जत के ताई म्यान म त निकसवे लग। या समै एसी लगौ कै राम के धनुस ताग्य पै विराधी राजा बौखला क वह उठे होय, का धनुस टटवे तई ब्याह धारइ है जान दिगें।'

याही तरिया होरी कौ त्यौहार मनाते समै कौ वातावरन चित्रित कियौ है "सबन नै मिलिकै पहल धुरैंडी कौ उत्सव मनायौ। धूल धक्कड सौं हटिकै रग गुलाल की खूब होरी खेली। ब्रज के खूब रसिया गाए। ढप ढोल चग लैकै नवयुवक मडल भरतपुर की गलीन मे निकस परौ। 'आज बिरज म होरी रे रसिया होरी गामत-गामत होरी के रस मे डूब गए। सबन के चेहरा रग अरु गुलाल म एस रग गए क पहचानब

मऊ नांय आय रहे। सब एक दूसरे के गर लग रहे। होरी की मिलन सबन में मन क मैल क् दूर पर रह्यौ। दुपैर तक सब कै सब धूर धूर है गए।"

याही तरिया आय समाज म ब्याह क सबै कौ चित्रन देखौ–"पंडित मसद्दीराम नै सुन्दर बेदी की रचना करी। चारों ओर हल्दी, गुलाल, म्हदी आटी अरू भई रगन की अल्पना माढ़ी गई। बेदी के चारा ओर सुन्दर मडप बनायौ। केरा के पात चारा कोनेन प लहरा रहे। बदी के चारा ओर पत्तरन प सामग्री सजा दई गई। एक ओर घ्यौ की पात्र रखौ गयौ, जामे स्रुवा परयौ। ब्याह के ताई सिगरी तयारी है गई।

बानगी कै रूप म तीनो उदाहरन मुकत्तरे हैं।

ठेठ ब्रजभाषा को ठाठ —

या उपन्यास की भाषा ठेठ ब्रजभासा है। सरस अरू सरस। सगी अपनी अनूठी है गई है कहावत मुहावरेन के प्रयोग ते। कहावत मुहावरेन नै याके मिठास मे और रस घोर दियौ है। काई एसौ पन्ना नइ होयगौ जाम कहावत मुहावरे नई आए होय। कहू कहू ब्रजभाषा के सग उर्दू क शब्द आ गए हैं बिन भाषा का माधुर्य बढ़ायौ है घटायौ नाय। देखौ चार लाईन– 'चाबे नै जब चकोर की बड़ाई सुनी तौ बाछ खिल गई। सोचिबे लगौ अधे के हाथ बटर लग रही है। बाए ईक परसाकला याद आयौ मैंस मरौ तब जानिए जब चालीसा होय। बड़े बूढे़ कह गए हैं हुरी लेतौ ब्यावन गाय जब जानौ जब म्हौतर आय। बाऊ नै आधरी ते कही तेरौ भया आयौ है। बानै कही भैया कह तौ भौत रही हू पर जब भुजा भरकै भेट लुऊ गी तब मानू गी।' सोई चौबे नै कही माटी मड लग जाए तब है। ससखरान प ते भस चोख लई जाय तब है। और देखो दो लाइन मुहावरेन भरी–"अपनी करनी प बे अपन आप गडे जा रहे। पर अब पछताए होत का जब चिड़िया चुग गई खेत। सब कानाफूसी करते यार हमनै अपने पामन आप कुल्हाड़ी मारी है। अब तौ जसी करनी बैसी भरनी है। याही तरिया चित्रात्मक उपन्यास मे ठौर ठौर प दिखाई परे। रेखाचित्र की झलक देखौ चन्दा के रूप बरनन म– बाकी आँखिन मे डल झील की गहराइ, गालन प सेबन की ललाई, सासन म सालीमर अरू निसात बाग की मधु गध अरू बाकी देह माहि केसर की झलक बाए कस्मीरन समझिबे कू भौतई।"

सदेसौ उपन्यास को—

या उपन्यास को उद्देश्य कम अरु भाग म कम प्रधान है यही सिद्ध करक दिखायौ है। हम मानै ग्यान सर्वोत्तम है। पर ग्यान की चरम सीमा कम सन्यास है जो गीता को मत्र है। कमयोगी को तौ हर कम लोक कल्यान के ताई होय। चकार अरु चन्दा के माध्यम सौ तथ्य कू उजागर कियौ है। कम करते भए कस्ट क उठाने परैं,

लो उठान चइए । दुनिया म बई पुर्जे जो कर्म के पथ पै मर मिटे । चकोर नै नीतिपथ पै चलकें कम कौ पल्लो नाय छोडो । सफलता अपने आप चरन तर आ गई । चन्दा नै जब सौं होस सम्हारो तबई सौ 'चलबे को है नाम जिंदगी मंत्र कू आचरन मे ढारो । याही सो बू पारस भई । याही सौ बानै जाकू छुओ बाई कू कंचन बनायो । समाज म फैली कुरीतीन मे दहेज प्रथा कू दूर करबे के ताई भासन नाय दिए । चन्दा अरू चकोर नैं आदर्श रूप प्रस्तुत करकें बतायो । या उपन्यास को एक उद्देश्य है ब्रज संस्कृति को याकी प्रस्तुत करिबौ मस्तमौला प्रकृति के लोग ब्रज संस्कृति कू सजोए भए है । लगन ब्याह के ओसरन पै गाइबे बार गीत सुनाई परें तौ होरी प मस्ती भरे गीतन की गूंज सुनाई पर । नई पीढ़ी कू ऐसी करनी कर चलहु तुम हासों जग रोई ' अध्यात्म कौ संदेस दे । बदलाव के ताई व वैज्ञानिक दृस्टिकोन के ताई उपन्यास रचौ गयौ है, जासों जीवन में नए आयाम खुलें नई राह खुलें, नई मंजिल दिखाई परें । हा ध्यान ई रखो है कै अपन पुरान अच्छे कू छाती स चिपकाय कें राखें गले सड़े कू काटें छांट । नारी के तीनो रूप बेटी, पत्नी अरु मां, प्रस्तुत किए हैं चन्दा के माध्यम सौ । अबला सौं सबला रूप दरसायो है या उपन्यास म । थपेड़े पै थपेड़े हू सहकें नारी को रूप निखारो है या उपन्यास म । सेवा समर्पण अरू धर्म के पथ प चलकें जीवन की सफलता अरू सार्थकता सिद्ध करी है या उपन्यास म ।

सार्थकता सीसक की —

एक बात उपन्यास सीसक प कहनी है । लेखक ने याको सीसक सूधम सट्ट "चन्दा ' रखबे की सोची । फिर विचार बनो उतार चढाव भर्यो जीवन जीबे बारी चन्दा को चित्रन है यासो 'उतार चढाव रखो जाए । फिर विचार आयो ऐसी करनी कर चलहु सीसक रखै, चौंके अखीर में चन्दा ने ई बात प्रभात सौ कही है । पर बात ' कंचन करत खरो ' पै ठहरी । बात साची है । चन्दा ने कठिनाई झेली । भवरन मेसे नया निकासी । मेहनत सौं बान समस्या हल करी पर चन्दा यहांई तक नाय रही बान समाज मे अलख जगायी गाम गाम घूम कै । महिला मंडल बनाय कें बान अपनऊ कंचन बनाए अरू दूसरे याही सौ 'कंचन करत खरो नाम दियो गयो है ।

राजस्थान मे ब्रजभाषा को जि उपन्यास गद्य को पैलो प्रयास है । अनेकन कमी हू गी । भाषा दोसऊ होयगो । एक सब्द के दोऊ रूप मिलिंगे । विभक्तिन केऊ दो रूप-मिलिंगे पर अपनी भाषा है कृस्न कन्हैया के मुख सौ निकसी बू भाषा है जामे कन्हैया नैं मचल मचल कैं माखन मिसरी मागी । फिर ई क्यो नई अच्छी लगगी । ऐसी ब्रजभाषा अपनी आत्महत्या करले कौन कू अच्छो लगेगो ? नई पीढ़ी यासो वंचित है जाए । या ई भाषा अजायबघर मे धर दई जाय यामे कौन सी भलो है । अपने अचर की भाषा की हत्या त बढकें कौन पाप होयगो । हम देखत रहे अरू याकी हत्या है जाए ई कहां

तक ठीक है। आप सोचो, अपनी मैया कौ रू प्यारी नांय लग। मेरी चाह है कै ब्रज माधुरी की बरसा याही पद्य में होय अरु याकौ गद्य आज की समस्यान कू सुरझावे के ताईं अपने ओज कू उतारे। सबकौ बडी बात है, इ नई पीढ़ी कू अलगाव अरु भटकाव सौं हटाय कैं नेह की डोरी में जोडे।

डा॰ विष्णुचन्द्र पाठक
अध्यक्ष
राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी

चैत्र प्रतिपदा सं॰ 2047
27 मार्च 1990

साची सांची बात लेखक की कलम ते

'सयाग सों मोय जुलाई 1961 मे वर जानो परो । बिन दिनान मे डा रांगेय राघव वैर मे ई रह रहे । स्कूल सों छुट्टी पायके बखऊ-बखऊ सांझ कू बिनके घर पोंच जातो वे बड़ी आवभगत करें हे । ब्रिसम खोलिवे कू यारवासी की सी ब्योहार करें हे । बिनको सुभाव ही पेरना दव को । लिखिवे की प्रेरना । एक दिना बातई बातन म "माधवी" काव्य लिखवे क ताई बिगरी रूपरेखा बनवा दई । बातन के दौरान वे उपन्यास लिखिवे की कलाऊ समझायो कर हे । धरती मेरा घर ' उपन्यास बिन दिनन में छोरान कू पढानो करतो । बामे आंचलिकता को पुट मन कू बांध लतो । मन उपन्यास मे रम जातो । 'कब तक पुकारू ?' उपन्याम के नामकरण को जब बिनने रोचक प्रसग सुनायो तो मन कू औरऊ आनन्द आयो । एक दिना बार बनवासते भए बिन ऊपर घर पै मुनी क नट मागवे के ताई पुकारतो पुकारतो हैरान है गयो है । अखीर म बान (नट) कही कब तक पुकारू ? बस याही कू लकै लिख मारो बिनने "कब तक पुकारू उपन्यास ? डा साहब न बतायो कै ब्रज अचर मे इतेक सामग्री बिखरी परी है कोऊ सम्हारवे बारो नाए । बस बिनकी प्रेरना भरी बातन न मन म एक बीज बो दियो । मैंने हू विचार कियो ब्रज सस्कृति कू एक आंचलिक उपन्याम मे उभारू । ई बीज भौत दिनान तक अंधेरे मे परो रह्यो । न जाने या बीज प कितेक पन चढ गई ।

समै आयो सन् 1983 मे । 28 फरवरी कू कामां मे राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर ने समारोह करायो । या समारोह मे ब्रजभाषा अकादमी बनायवे के ताई राजस्थान सरकार के सामई एक प्रस्ताव रखो गयो । ता समै श्री जुगल किशोर चतुर्वेदी ने एक बात कही ब्रज भाषा म पद्य लिख्यो जाय सकै गद्य नाय लिख्यो जा सकै । मैंने ता समै बिनम्रता सो कही ' गद्य कू नकारनो सरलता की ओर बढ़यो है । ब्रज भाषा मे पद्य लिखो जा सक गद्य नई ई तो बुई बात भई, आट की पूरी तो बन सक रोटी नई । हां गद्य लिखिवे मे जोर जरूर पर । कौन जोर उठावे । कविता लिखी । पढ़ी । वाहवाही लूटी अरू लिफाफे लकै चल दिए । यासो काम नाय चल सकै । अपन अचर की बात अपनी भाषा मे लिखिवो सरल है सक । अपन मन की बात अचर की भाषा मे अच्छी तरिया कही जा सकै । या बात कू सुनिकै चतुर्वेदी जी चुप लगा गए बिनकी महानता है, पर मैंने बाई दिना सकल्प ल लियो ब्रजभाषा गद्य मे आंचलिक उपन्यास लिखिवे को ।

ता दिना मैंने विचार कियो—जब गुजराती अरु मराठी को गद्य गुजरात अरु महाराष्ट्र के घर घर म ठौर पा सके तो ब्रजभाषा गद्य तो जरूरई सुन्यो अरु पढ्यो जाइगो। हा इतेक जरूर है ब्रज गद्य लिख्यो जाय आधुनिक समस्यान पै। जाम आधुनिक बोध होय। बरफ तोरिबे बारे हाथन कू दुनिया नमन करती रही है। सन्नाटो तोरिबे को काम करबो एक साहित्यिक पुन्य है। याके ताईं कठोरता वादी रुख छांडिकें उदारतावारो रुख अपनानो जरूरी है। समै क संग चलो जाय। जिन सब्दन कू दूसरी भासा सो ल सकें बिन पचायकें चलब म बुद्धिमानी है। भाषा तो प्रवाहमान है युग के संग नए शब्द गढनऊ परे। लेखक को काम तो सब्दन नें प्रवाह म डारिबे को है—सब्दन मे दम होगो तो तैर सकिगे नई तो नदी उठायक बिन्नें बाहर फेंक देगी।

मैं मनई मन विचार करतो रह्यो किसऊ नए लन चइएँ ? समाज म किन कुरीतीन न अड्डो जमा लियो है ? इन्नें कैसें उखारो जाए। कालेज म का राजनीति चलै ? समाज मे का का तरिया के लोग बिखरे भए हैं ? का का विचारधारा के लाग हैं ? बिनको चित्रन करबो लगें खतर ते खालो नाय। मैंन जानबूझ के दुस्साहस कियो है। नामन म थोरो सो उलटफेर करक अपनी धरती की कथा उठाई है। एक अबला कू सबला सिद्ध करबे के ताईं प्रयास कियो है। समाज के कल्यान के लय कम करिबो ई धम बतायो है।

छपबे सौं पहले उपन्यास कू श्री मोहन लाल जी मधुकर ने पूरी तरिया पढो। सशोधन कू सुझाव दिए। श्री तर्जसिंह जी नें सिगरो उपन्यास धय सौ सुनो अरु अपने अमूल्य विचारन को समावेस करायो। श्रीमती द्रोपदी दवी नें लोकगीतन के नमूना प्रस्तुत किए। याही तरियाँ डा बी सी पाठक श्री हीरालाल सराज, डा राम कृष्ण शमा डा दाऊ दयाल गुप्ता श्री राम शरन पीतलीयज श्री महावीर प्रसाद कुमावत जैसे सहयोगजन को प्रोत्साहन या उपन्यास कू सवारन मे मिल्यो। इन सबन क सहयोग के प्रति हृदय सो आभार। अन्त मे मैं स्व श्री हरिशकर जी पाराशर कू नमन करूँ जिनकी प्रेरणा मोय सदा मिलती रही।

उपन्यास आपके हाथन मे है। आपकूँ भाव अरु नई पीढी कूँ कछू प्रेरना दै सक तो मैं अपनो स्रम स्वय सफल मानगो।

चाखे न अपन जीवन म सन्तान के नाम प इकलौती बेटी चन्दा ई पाई। याके पीछ न छोरा भयो न छोरी। याके ताँई वान आस-पास घूर दौड धूप करी।

डीग मे हती एक धूपा दाई। यो तो यू जान वी फ़ोरिन ई। बडी मली कुचैली रहती पर जच्चा बच्चान क मामले मे अ च्छे-अच्छे डाक्टरन नें चारा याने चित लातो। असम्भव कू सभव कर देती। वान ना तो वहू कोऊ पढ़ाई पढ़ी ना वहू ट्रेनिंग पाई पर अपनी सास के सग रहबे जो अनुभव पायो वुई काम देतो। दिखावट, बनावट सजावट, मिलावट ते वासन दूर, पर करताउस्ताद होय। सन्तान क इच्छुक वाके पास दूर दूर ते अपनी वहू बेटीन न सब आते। वु जहा हाथ डारती खाली ना जाती। थोरे पईसान म हजारन को काम करती। वान चोखे कू भरपूर उपाय बताए पर बात नई बनी।

भरतपुर नगर के नामी वैद्य रमस क सामई चोखे नें अपनो दुखडा रोयो। उमे नामी गिरामी रमेस नऊ चोखे कूँ दवाई दई पर भैमाता के अ कन न कौन मिटा सकै। डीग म मनीराम पडित को नाम चोखे कू काऊ न सुझायो। वाके यस कू सुनि कैं चाल मनीराम के पास खिचो चलो गयो। अ धे कू आँख अरु मरते कूँ सजीवनी चइए। चोखे नैऊ अपनो दुखडा मनीराम के आगे रोयो। मनीराम न वाऊ कूँ उपाय वताए पर फल वुई निकसो जो पानी क विलोवे प निकस।

चोखे न या तरियाँ अनेकन स्याने-भोपन की दहरी की धूरि सई। अनेकन गडा तावीज कराए, अनेकन जन्तर मन्तर कराए अनेकन जादू टोना कराए, अनेकन दई देवतान की मनौती मनाई पर कछू हाथ नई आयो। हार थकमार क सन्तोष कर लियो। निपुत्री हैवे के दोस त तो बचो भयो है। नगर म अनेकन ऐसे हैं जिनकै छोरी हू नाए। परोस म प्रकास जन के पास जमीन ज्यादाद सब कछू हती पर विचारे की वहू क मरी मूसरी हू नई भई। मा स अपने त नीचे के मान्सन नैं देख तो याए सबर आ जाए। ऊपर वारेन न देखैं तो पछताव। दुख पाव।

सुख दुख तो आदमी क मन की बात है। मन की उपज है। काऊ नैं कही है, 'मन के हार हार है, मन के जीते जीत,' "और मन चगा तो कठौटी म गगा। मान्स चाहै तो दुख म हू सुख को अनुभव कर सक। सुख दुख तो अपने हाथ की वात है हल्को करल चाहै भारी करल।

जब चोखे अरु वाकी वहू राधा नगर क छारा वारेन नैं देखते तो छाती प स्याँप सो लोट जातो। दोनो जन करमन न कोर क रह जाते। विधाता की विधि कू मान क जीवन कू ढाते। पर जब ई विचार आतो क कु भी पाक नरक म जाइबे त तो बच जाऊगो तब वाए बसई सन्तोस होतो जस पपीहा कूँ स्वाति जल की बूँद सो होय।

मुख दुख के झूलान म झूलते भए बाखे चन्दा की सुख सुविधा को पूरो ध्यान रखतो। हल तो बू चालीस बरस को पर अनुभव साठ को सो। पुरानी विचारधारा को पर युग की नई बातन कूँ जीवन म उतारिब म पीछें नाँओ। एक आर तू चन्दा कूँ पढ़ावे की होंस लिए रहतो तो दूजी ओर वाए कठोर अनुशासन म रखतो। कंजूस जस धन प आँख लगाए रहे ऐसेई चन्दा प चौकसी रखतो।

चौकसी रखबे को मतलब ई नाँआ के चन्दा बदी के रूप म रहती होय। चन्दा कालेजहू जाती अरु मन्दिरन म हू जाती। मेले तामस हू जाती, बाजार हाट कूँ हू जाती पर जाती देख रेख म ई। ऐसो नाँय कै खुली छूट होय। चोखे न दुनियाँ देखी। समाज म छोरी छोरा का तरियाँ सों बिगर रहे हैं, याको चोखेलाल कूँ खूब अनुभव हो। वही बारी गली में एक बामन की छोरी धोबी के एक कार कलूटा छोरा के संग भाज गई अरु चिट्ठी लिख कैं धर गई 'प्यार किया तो डरना क्या?' याही तरियाँ समाज म आए दिन के बिगरे भए हालात कूँ देखि क चोखेलाल फूँकि फूँकि क कदम धरतो। बिटिया प आँख रखत भए या बात कौऊ ध्यान रखतो कै चन्दा कहूँ कठोर दबाव म टूट नइ जाए। वाए या बात को अनुभव हू नई होय क वाप निगाह रखी जाए रही है। वाको ऐसेंई ध्यान रखतो जस नागरि अपन सिर प धरी पानी की गागर को ध्यान रख। चोखे कूँ भोजन, भजन अरु व्यवसाय प त जो समै मिल ओ बू सब चन्दा की बढ़ती के ताँई जातो। चन्दा के लाभ कूँ ई अपन हों तो। राजा दिलीपअरु वाकी रानी नैं तो नंदिनी की सेवा करी होगी पर चन्दा की बढ़ोत्तरी कूँ दोनों पति पत्नी ने कोई कोर कसर नाँय छोड़ी।

चिंता

लाड़ चाव म परी चन्दा सोलह बरस की भई। यौवन की देहरी प दखकैं वाके मया बापन कूँ वाके ब्याह की चिंता लगी। राधा चोखे कूँ कुचरके लगायब लगी। उठते बैठते सोते-जागते चन्दा के ब्याह की चरचा करतो नाय थकती। चोखेलाल की मया म ची जो साठ के आस पास ही गु,ई चाहै ई, के चन्दा के पीरे हाथ वाके सामई है जाएँ। पुन्य हाथ लग जाए। बूढ़ी सासन को का पतो कब निकस जाएँ? पको आम हवा क झोंके त कब टपक पर। नदी क किनारे को पेड़ कब खिसक पर। आज मरी कल दूजो दिन होय फिर चौ नई नातिनी को ब्याह करक सुरग म ठौर बनाई जाएँ। बुढ़ापे म मोह हू कछू बढ़ जाए। मोह के ताने बाने इतक पुर जाएँ के बु बिनमें ते निकस ही नाय पाव। बु हू अचक अचक, डरती डरती चन्दा के ब्याह की

रचन करत खरो

बात चोखे के कानन म सरकाती रहती। या तरियाँ राधा अरु अँची नैं चाखे के दिन क भोजन अरु रात की नीद हराम कर दई।

चोखे लाल अब तानू अँची अरु राधा की बातन कूँ, या कान सुनतौ अरु वा कान निकास दतौ। पर अब अनसुनी अरु अनदेखी करबौ वाके बसकी बात नाइ। चन्दा कौ उठतौ भयौ हाड बाए दीख रह्यौ। बाकौ साहूकारी कौ काम इतेक फल रह्यौ जासौ वाए फुरसत नाय मिलई पर अब बान जान लई कैं फुरसत निकासनी परैगो। दूसरे चोखेउ कोऊ पत्थर कौ तौ हत नाओ जाप पानी की बूदन कौ काऊ असर नई होतौ हाय। अब तौ चोखेलाल वा माटी के तरियाँ हौ जो पानी की बूदन सौं तर बतर है जाए। भीतर ई भीतर वाए चिंता ब्यापवे लगी।

चोखेलाल की लेन देन भरतपुर ते बाहर गावन मे ई। सोऊ किसानन प। कातिक की फसल पानी के अभाव म सूख गई यात किसानन प विपदा के बादर गहराय रहे है। आसामी चोखेलाल कूँ चारा ओर ते घेरे रहत। बसाख की फसल के ताँई रुपयान की जरुरत इ। चोखे कौ हिसाव किताव कौरवन की सना की भाति अरु रावन के कुनबा की नाई बढ गयौ। वू हू जानतौ रुपया त रुपया कमायौ जाए। याही मौं वू खुले मन ते रुपया द रह्यौ। वू या बात कूँ हू जानतौ क बसाख की फसल के ताई रुपया नई दियौ गयौ तौ पिछलौ रुपया हू डूब सक। मास, पुत्रेष्ना सा हार मान वठ पर वित्तेस्ना अरु लोकेस्ना कूँ नाय छोडि सक। या कारन सो अपने आसामीन कौ सुभौ साधवे के ताँई बक सो बीस हजार रुपया निकास लियौ। पोस्ट आफिस म कुल पन्द्रह हजार रुपया हौ। वू हू निकास लियौ पर तौऊ वू अपने आसामीन की झोरी नइ भर पायौ।

चोखे नेधीरैं धीरैं हाथ खीचवौ प्रारम्भ कियौ पर आसामीन नैं जब भौत ज्यादा बीनती करी तौ चोख कू मुकिनौ परौ। चोख नें अपनी घरवारी अरु मया की मान मनुहार कर क बिनको सिगरो जेवर जोठो ल लिया। बा सबकू गिरवी रख क आसामीन की माँग पूरी करी। चाखे जो अब तक बौहरौ हो अब वू कजदार है गयौ। पूजी जब गाँठ म ते निकस जाए तब बाकी हालत कितक पतरी है जाए याए वू ही जान सक जानैं याको अनुभव कियो हो। जाके पाँयन की बिवाई नई फटी हाय वू बिवाई फटवे क दुख कू का जान सक? या सम चोखे की वसी इ हालत है गई जस गुब्बारे म ते हवा अरु पयाल म त पानी निकस जाव प गुब्बारे अरु पयाल की हालत है जाए।

चोख नैं आसामीन कू खूब समझा दियौ क वाकी छोरी ब्याह लायक है गई है। वारो ब्याह करनो है। एसी नई होय क ब्याह क सम सब आँख दिखा जाएँ। ता नम सब आसामीन न छाती ठोक ठोक क, मौछन न मरोर-मरोर क धरती प धणो

मार मार कैं, ऐसी दिलासा दिवाई, ऐसे दिल्ली के घैंसेरा मारे, क चोखे फूल के कुप्पा है गयौ। वाए या बात कौ सन्तोस हो क वान आसामीन कू रुपया दैकें अपनी प्रतिष्ठा बचा लई है, अपनौ सरुप किरकिरौ नाय होन दियौ।

आसामीन सौं छुट्टी पाय कैं वान चन्दा के ताँई वर ढू ढबे कौ निह्च कियौ। राधा तौ वाके पोटुआन माँस नौचिबे म लगी रहती। अब मया हू वाक पीछ पर गई। यान चोखे कू समझायौ—

'बेटा नौकरी अरु ब्याह के ताँई कछू ना कछू उसीला चइए। बिना जान पहिचान के सम्बन्ध नाँय होम। फिर घर बठे तौ वर काहू न पायौ नाऐ। यासौ परोस के रग्गो ते मिलनौ चइऐ।

चोखे, रग्गा कौ नाम सुनते ई ऐस बिधकतौ जस काऊ बिझुकाए देखि क कोऊ साँड बिधक। रग्गो कूँ देखते ई चाखे नाक भौ सिकोरतौ। वाकी नजरन म रग्गो दौ कौडी को मानुस हो। मैया जब हठ पर गई तौ चोखे कूँ रग्गो के पास जानौ परौ। अपन घर ते रग्गो के घर जात समैं रग्गो के अनकन चित्र वाकी आखिन के सामँई घूम गए।

रग्गो रग कौ कारौ हतई हो। बात ज्यादा मन कौ कारौ हो। सरकडा सौ, गाल पिचके भऐ। बड ढोग ढपाँग ते रहतौ। देखिबे मे भजनानन्दी लग औ। पर मन कौ कपटी हो।

सिगरी बातन नै जानते भए हू चाखे रग्गो की बठक माऊ बढतौ गयौ। जस रोगी भयकर रोग के निवारन के ताँई कडवी ते कडवा दवा कूँ आँख मीच क मन कूँ करौं करक लबे कूँ तयार हे जाए ऐसई रग्गो अपनी मैया की बात मान क रग्गो क दरवज्जे म पहुँचई गयौ। ई जान कैं क काम परे पै गधा हू बाप बनायौ जाए बान रग्गो की बठक माहि पाँव धरे। राम राम करी। चोखे कूँ दखते ई रग्गो सब समझ गयौ पर अनजानौ सौ है क बोलौ—

'आओ भैया चोखे आओ। आज खूब आयौ। कहौ राजी खुसीतौ हौ।

"हाँ आपकी किरपा है।"

कहौ कस आईबो भयो ?'

चाखे नै अपनी बिटिया की बात सौमई रखौ। रग्गो मूढा प बठो भयो, या बात कूँ सुनिकैं गहन बिचारन म डूब सो गयो। चोख वाए एस दखतो रहो जस अकाल म सम किसान आकास माऊँ देख। फिर धीर धीर गभीर बानी म बोलौ—

'चोखे या काम के ताईं मेरे पास आयौ है। कहाँ राजा भोज कहाँ गगू तेली ? कहा राम-राम कहाँ टाँय-टाँय ? आकास पाताल कौ अन्तर है।"

'अजी ऐसी बात चौ करौ, हमकूँ तौ आपकौ ई सहारौ है।"

"चोखे भया, तू आयौ है तौ तेरौ अनुरोध का टारौ जाए पर सम भौत बुरौ आ गयो है। बेटा बारे म्हौं फार। बारह बारह मनके है क बठे है। हाँ-ना कौ ज्वाव छ छ महीना मे देंम हैं।

"पंडितजी कछु होय, बिटिया के पीरे हाथ तौ करने ई हैं।"

'अरे लाला ! पीरे हाथ चौ करन हैं। बिटिया कौ ब्याह खूब धूम धाम ते कर। अकेली बेटी है। जनम भर कमाऔ है। चोखी बाहरगत चल रही है।"

"अजी दूर के ढोल सुहावने लगैं। खैर, कोऊ छोरा तौ बताऔ।"

"भाई, कसौ लड़का चइए ?

'कसौ ?

हाँ कितेक पढौ लिखौ होय ? कितेक तक कौ बतायौ जाए ? अरु याहू बात कूँ जान लै लड़का देखवे ना जाए। बजार म जसे धन सौ चीज खरीदी जाए याही भांति समाज की हाट मे छोरा खरीद जाए। इन्जीनियर, जे ई एन, ए ई एन, डाक्टर प्रोफेसर, वकील भाव के अनुसार लए जाए। छोरान के हू टन्डर भरे जाए अन्तर इतेकई है या सौदा मे अधिक की टन्डर स्वीकारी जाए।

रग्गो की बातन कूँ सुनिक चोखे कू झूझर आ रही। रग्गो उल्टी सीधी बात कर रह्यौ पर मज बावरी होय। दवी बिल्ली मूसेन प कान कटाव याही सौ चोखे रग्गो की सब बातन कूँ सुनि रह्यौ। वु अपन कूँ सम्हार क कसौ छोरा होय ? कितेक पढौ लिखौ होय ? कितक तानूँ कौ हाय ? या विस म अपनी राय प्रकट करतौ रह्यौ।

अधीर म रग्गो अपने दोनो घौटू न प हाथ धरिक मूढा प ते उठौ। अलमारी खोली। एक पुरानी डायरी निकासी। डायरी दिखाय क तारीफ के पुल बाँधे। कछू चोखे न पल्लै प कछू भूमरि म पानी की बुंदियान की भांति लोप है गए। डायरी देखिबे के ताईं रग्गो न टीन की पुरानी सन्दूक म त एक डंडी की चस्मा निकासो। चस्मा चढ़ाय कैं पापल म्हौं त अंगुरिया प थूक लगाय क डायरी न पन्ना बड़ी सावधानी सौं पलट तो मर जिन्दा झींगुर मक्खी आदि निकसपर। अखीर म एन पन्ना प बाकी नजर ठहरी, आँख गढ़ाई। कछू सोच समझ क गरदन ऊँची करी वह गार्वित्गढ़ त एक छोरा की बात कही छोरा कौ नाम भगवती, एम ए तक पढ़ौ ह।

पूरे पचास हजार ब्याह मे चाह रह्यौ। फिर बान दो चार पत्ता अरु पलट। डीग मे करकल्ली पटवारी कौ नाती हौ बाके बिसै म बतायौ क, "करकल्ली न अपनी छोरी के ब्याह मे चालीस हजार नकद दिए, बरात की ऐसी खातिरदारी करी क धौलपुर बारे मान गए। इतेक सामान दियौ क सबन की आँख फटी की फटी रह गई। चारो ओर हल्ला मच गयौ। ब्याह का कियौ लट्ठ गाढ दियौ। ऐसौ ब्याह तौ करनौ परगौ ई।'

या बात कूँ सुनिकैं चोखे कूँ पसीना आ गयौ। या समै चाखे की गाँठ म कानी कौडी [illegible] नाही। सिगरी पूँजी आसामीन म बट चुकी। बक अरु पोस्ट आफिस की पास बुक खाली है गई। सिगरो गहनो गाठौं गिरवी रखकैं आसामीन के आँसू पौंछे अरु अब पचास हजार साठ हजार की बात। आसमान के तारे दिखाई पर रहे। चोखे ने म्हो लटकाए, मन मारे रग्गो ते कही,

'अजी काऊ और बताऔ।"

' चौं नई जँची ?

"अजी जँची तौ खूब पर तत पाँव पसारिए जेती लाँबी सौर।"

"अरे लाला यो कह, ज्यो-ज्यो मोह मोटी होय त्यो त्यो बिल सकरी होय।'

ऐसी बात नाए पडित जी।'

'एसी बात नाए तौ चौ पीछे हट रह्यौ हैं। छोरा इजीनियर बनगौ। हजारन म देखिवे दिखावे लायक है। घर अरु वर दोनू जोरदार हैं। दरबज्जौ छोरा ने दिप उठैगौ।"

'साँची कह रह हौ, पर इतेक बोझ उठायबौ मेरे बसकी बात नाए। काऊ सहर के छोरा कौ कोऊ अतौ पतौ होय तौ बताऔ।"

सहर कौ नाम सुनते ई रग्गो तन गयौ। आवाज म करांई आ गई। बासी कढी मे उफान आ गयौ। बोलौ—

'सहरिया सब दिखावटी होय। बिनत मिलबे जाऔ तौ देखत ई कन्नी काटैं। भूल चूक ते मिल जाए तौ नानी सी मर जाए। कहाँ त आए हौ ? कब जाओगे ? जस सवाल करबे लग जाए। बिनपे धौरे-धौरे कपडा अरु चिकनी चुपडी बात इ समझौ। प्रेम भाव तौ गधा के सीग की नाई समझो। बिटोरा इ समझो। ऊपरान के नाम तौ ढोल म पोल है। भया पहार दूर त ही अच्छे लगै।

बान अपने मथुरा क एक नातदार कौ एसौ नक्सा खचो क चाखलाल दखतो ई रह गयौ। रग्गो फिर मथुरा के नातदार कौ बखान करबे लगौ।

"रघु हमारी खास नातेदार है वाकूँ हमारी भन ब्याही है। वू हू बिनक सग रहकैं सहरिया है गई है। एक तो हम कबऊ वाके यहां जाए ई नाए कबऊ मथुरा म आखिरी बस निकस जाए अरु रुकियो ऊ पर जाए तो बड़ो सकोच हाय। नौठन ते दो रोटी मिल पावें। नहू म्हों ते निकस जाए के भय नाए तो फिर रात कूँ भूखो ई मोनो परे। यासो सहर की रासरी माऊ पाव रखवे ते पहल खूब अच्छी तरिगों सोच समझ लीजो। अरु देख याऊ बात को ध्यान रखियो सस्तो रोव बार बार अररो रावे एक बार। छोरी कू जनम भर सुखी देखनो चाहे तो जी करो अरु हाथ ढीलो करनो परैगो।"

चोखे रग्गो की बातन नैं सुनिकें 'ज रामजी' की करकें चलवे लगो तो रग्गो न कही "चोखे मेरी समय म कोऊ और छोरा आयो तो बताउगो पर समै समै पे मिलितौ रहियो" तेरो दुख मेरो ई दुख है। ई ताई प ना बीत रही सब पै बीतती आई है। चोखे 'अच्छा' कहकर चल दियो।

रग्गो नै मनई मन म कही, बडी फूनी फूनी खाई ह। माठूराम कूँ अब सब पतौ चल जाइगो। अब तानू कमायो ई कमायो है। अब खच की बात आई है तो सोच विचार कर रह्यो है। चोखे न अब तानू काऊ क तरुमा नाय सराए। काऊ की लल्ला चप्पा नाँय करी, पर या समै गज गावरी है रही। वान अपन अनुभवन क सग औरन क अनुभवन को लाभ उठानो चाहो। वाए इ बतो क परोस म एक जन न बिना पूछे ताछे अपनी भैन को ब्याह कर दियो। छोरा कुपत्तो निकसो। वान वाकी भन कू छोडि दियो। वू बिचारी पीहर म अपन दिनान न फोर रही है। दुखी जीवन कूँ ढो रही है। आज हू वाए देखि देखि क बाके मैया बापन की छाती धधक रही है। ऐसे उदाहरनन कूँ देखि देखि क चोखे को मन रो परतो। पढ़ो लिखो समझदार मान्स अपन ग्यान की टोच के उजेरे म आगे के पथ कूँ देखिनो चाहै। देख ना सक तो अनुमान तो लगाव ई है। चोखे चन्दा के भावी जीवन के सुख के सपने सजोए घर माऊ बढ़ो जा रह्यो। वाकी नजरन मे सहर भा रह्यो। बाकी धारना ही क 'सहर बसन्ता देवानाम गाव बसन्ता भूतानाम।' चोखे गाव बारेन के जीवन सो भली भाति परिचित हो। बाके पास तो आए दिना गाव के मान्स आते रहते। ना व खाइवो जानै ना पहरिवो। बिनक घर जाय क देखतो तो गूदरे ही गूदर दिखाइ परते। साऊ मैले कुचले। सफाइ ते रहबौ बिनै सीखोई नाय। दिन रात गावर करे ते माथो मार। गाव को पूरी नक्सा चोखे की आखिन के सामई घूम गयौ। ऐसे बमेल चौखटा मे अपनी चन्दा सी तसवीर कस लगाई जाय सक। वानै अपने मन मे पक्को निहच कर लियौ क बू चन्दा कू गाव म नई याहवगो। इन विचारन मे खोयो खोयो डगमगाते पायन त घर पहुँच गयो। घर पहुँच कें दरवज्जो खटखटायो। राधा समझि गई आजि क दरवजो खोलो। चाम्बे क लटक भए चहरा कू देखिक समझ गई पर तौऊ पूछी कछू बात बनी ?

चोखे बरबरायो। बूढो खूसट मूख है। पुराने जमाने की बात कर। दा छोरा बताए। एक गोविन्दगढ को अरु दूसरो डीग को। गोविन्दगढ गाव जसो है। नल बिजली

ग्रा जावे ते गाव, सहर थोरई है जाए। काऊ नैं कही ह मथा गगाजी म नहा लै तौ गया थोरई है जाए। गाव में वहू चदा थोरई दई जाए । गाव के गमारन ते कौन मूड मारगौ। मोन सी वेटी, थोरे से लोभ के वांई नरक में ढकेली जाय का ? धन काऊ कौ मैया-बाप नाए। हाथ कौ मैल है। बडे बूढे वहै, धन तो चलती फिरती छाया है। आज कहू तौ वल्ल कहू। धन बात कू क स्वाद कू होय ।"

लम्बे चोरे भासन ए सुनिकें राधा ताहने मारते भए बोली घर ते निकसबे मे तौ सरम लग । दिमाग आसमान कूँ छू रह्यौ है। काऊ विचारे न छोरा वताए तौ बाकूं गारी गुस्सा कर रहे हो। घरे पराए को मानौं नई आप जानौं नहीं । गाठ मे हुत नहीं। ब्याह बरौदन के मामले यो ई थोरई त हाय। कुल्ली म गुड थोरई फोरी जाए। दो वात कही जाए तौ दो वात काहू की सुनी हू जाए। याम वुरी मानवे की का वात ह। दूसरे उमर लौ काऊ को बाट देख नाएँ। हमारी चन्दा उँजेर पच्छ के चन्दा की नाई दिन दूनी अरु रात चौगुनी वढ रही है। इक्लौती छोरी है ताप तिहारौ ई हाल है। कहू चार छ होती तौ चारौ कोन चित्त आते।'

चोखे नै मुट्ट खैंच लई। राधा न कुरेदते भए फिर पूछी, 'हाँ डीग कौऊ तौ छोरा वतायौ है डीग तौ गाव नाए चौखो कस्वा है। म्हा तौ जलमहल है, वाग है सरोवर है। दुनिया भर के ललानौ डीग आवें। फोटू खच-खच कै ल जाव फिर भरतपुर ते डीग आइबे जाइबे के चोखे साधन हैं।'

या वात कू सुनिकें चोखे बरस परौ "अरे डीग की वात तौ वह दई, पर वेटा वारे की बात हू पूछी है। वानैं अपनी छोरी के ब्याह में पचास साठ हजार रुपैया लगाए है। हमारी का विसात है जो पचास साठ हजार की वात करें। अव या समैं तौ गाँठ माहि कानी कौडी हू नाय। डीग वारे नैं जितक खच करे हैं, बु वाते ज्यादा की आस लगाए बठो है ।

राधा नैं समझाते भए कही, 'या समै तौ नाय पर का ऐसोई समै रहैगौ ? कछू दिना की बात है फिर चादनी रात आवगी। वरसात होयगी। नई फसल आवगी। आसामी रुपया चुकाइ गे।

चोखे कूँ झूँझर आ रही पर बु मुट्ट खचरयौ। जसैं विसकी पोटरी निकस जावे प साप फन पीट के रह जाए, ऐस ई धन की पाटरी निकस जाइवे प चोखेलाल झूँझर खाय कैं रह गयौ। समझदारी सौ काम लियौ। मन ई मन घुटतौ रह्यौ। वस समझातौ फसल नइ आई तौ सब गुड-गावर है आइगौ।

अन्नी दोउन की वात कू कान लगाय कें सुन रही। सव समझ गई तोऊ विनके वीच में आइकें बोली,

"चो चोखे कहा रहो ?'

'मया, रग्गो ते काम नई चलगो ।"

'अरे वेटा, कैसी वात करै । रग्गो वडो सुरझो भयो है। खेलो खायो ह ।"

"मैया, पुराने जमाने की वातन कूँ कर । छोरी का गाव म दई जाए । ऐसे ते का राय लई जाए ?'

वेटा तू का समझ वल्ल को छोरा है। वानै दुनिया देखी है। तरे वाप के सग को है। तेरी तो का विसात है तेरो वाप तो वाते पूछे विना कछू करतो ई नाओ। ऊच-नीच को जितेक वाए ध्यान है वितेक अच्छे अच्छेन म नाय। अकल तो उमरते आव। वोहरगत करिवो और वात है, सगाई सम्बध और वात है। मम्बन्ध के मामले बडे सोच समझ कै तै किए जाए। रग्गो इन वातन म पूरो तरो भयो है।

चन्दा सिगरी वातन न बगल के कमरा मे बठी वडे ध्यान त सुनि रही। आख सामने की किताब पै टिकी पर कान म्हाई लगे।

चोख अपनी मैया सौं पिंड छुडाय कै कमरा के वाहर आयो। पूरव म सूरज बांसन ऊपर उठ आयो। धूप वरामदे म फल रही। चिरया वरामदे मे घोसला बनाइब म लगी। वू चिरौंटा ते काम ल रही। चिरैया चिरौंटा दोनो काम म लग रहे। चोखे न ए सोची बूह अपने काम मे लगो रहे। घरबारन ते चौं मूँड मार। सुननी सबन की चइए पर करनी अपने मन की चइए। वान सोच लई कोऊ कितेकऊ कहे, पर वू अपनी चन्दा को व्याह सहर तेई करेगो। अब तक बान जो ढील दे राखी या ढील कू छोडि देगो। वाके सामई या समै अथ को सकट हो, पर वाए विसवास हो क नई फसल आवगी। रपया लौटेगो। खूब धूम धाम ते व्याह हायगो। कौन कौन कूँ वुलानो है ? कौन कौन सी चीज कहाँ सो इकठौरी करनी हैं ? कौन कौन ते कहाँ मदद लेनी है ? इनई विचारन म खोयो खोयो घूमतो रह्यो। तवई पोस्ट मैन ने 'चोखेलाल आवाज लगाई। चोखेलाल नै लपक क एक लिफाफो ल लियो।

लिफाफे कूँ एक सग खोलो तो चन की सांस लई। लिफाफे मे चिट्ठी क सग दो छोरान के फोटो दखि कै राहत मिली। विकट गरमी म थक राहगीर कू ठडी छाह मिली। फोटो के सग नाते गोते लिख भए। नात गोते मिलाए। नात गोत बच गए। चिटठी पढ़ी तो चोखे कछू गभीर सो है गयो। एक फोटो वकील को पर दूजवर हो। घर खामतो पीतो। वाके एक लडका हो चाख कूँ बू नई जचो तो राधा अरु मैया कू कस जचेगो। चन्दा हू दूजवर कबहू नही चाहेगो। चाख न वा फोटू कूँ घात क छोरा की नाई उपेच्छा सो दखो।

दूसरे छोरा को ब्योरा पढ़ो। छोरा को नाम निरजन हो। निरजन को वाप एक नामी वकील हो। वू दो साल पहल हैजा म चल वसो। घर को सिगरो भार

निरजन प हो । वाकी तीन क्वारी भन ही । फाटो ते लगों रग उजरो है, बडी-बडी आँख, पतरे पतरे होठ, चिरमा म्हों, गलुआ भारी भारी । सकल सूरत त भलो लग रह्यों । चोखे कूँ जँच गयो । याके देखिव के ताई मन म विचार वना लियो ।

ताही समै राधा नै दुपर क भोजन के ताई चोखे को ध्यान खैंचो । चोखे ने आँख उठाई तो देखी, राधा की त्यौरी चढ़ी भई हैं, वानी म खरखरोपन अरु चेहरा प चिन्ता की रेखा झलक रही । बोलो, ' भोजन करोगे कै यो ही बठे रहोगे ?"

अरी परमेसुरी भोजन कूँ कौन मना कर, मैं तैयार हू ।"

लोटा म त पानी लकैं हाथ म्हों धोय कैं, चोखे भोजन करवे लगो । म्हो यत्र के समान चल रह्यो मन कहू और हो । याही सौं भाजनन मे कोऊ स्वाद नाय आ रह्यो । राधा गरम-गरम रोटी परोसती भई बोली ' चिट्ठी कहा ते आई है ?" चोखे न चिट्ठी कौ सिगरो ब्योरा राधा कूँ द दियो । बोझ हल्को भयो । दूजवर को नाम सुनिक राधा नाक भौ सिकोरव लगी । दूसरे छोरा की हालचाल जानक राधा कूँ आनन्द नई आयो । जा घर मे छोरा पइ सिगरो भार होय । तीन-तीन क्वारी भन होय । वा घर मे चन्दा कस दिना निकासेगी । पलोथन पीटते-पीटते मर जाइगी । राधा छोट परिवार की पच्छधर ही । लम्बे चौडे परिवार कूँ देखिक वाको मनुआ घवराव औ । जीती मक्खी कैस निगल सकई । या वात कू चोखे हू जानतो । पर चोखे नै भोजन करक आगर वारे यार की पाती एक पोत फिर पढ़ी । ता पाछैं निरनय लियो क यार के ताई चिट्ठी लिखी जाए । वान कलम-दवात निकारे अरु अपने मन की घुटन कूँ हलको या तरिया कियो-

भरतपुर

30 9-48

प्रिय अनोखे,

तिहारी पाती पाई । मन कूँ तोस मिल्यो । अधे कूँ आँख मिली । भूखे कूँ भोजन मिल्यो । प्यासे कू पानी । आपने जो दो छोरान को विवरन भेजो है विनमे ते हम निरजन जँचो है । वाए देखिव के ताँई मैं इतवार कूँ आ रह्यो हू । मोय भरोसो है कै आप घर प ई मिलौगे । सम्बन्ध करवे की मोय जल्दी है । आप लडका सौं बातचीत करलें । बाकी वा माँग हैं जान ल । आप रुचि ल कै या काय कू पूरो करावे को प्रयास कर । कष्ट के ताई छमा । किरपा के ताई धन्यवाद । बाकी मिलवे प ।

आपको

चोखेलाल

श्री अनोखेलाल 9/120 वेलन गज आगरा

पाती लिखी कै चोखलाल नै कपड़ा पहरे अरु पोस्ट ऑफिस कूँ चल परौ। इतते जाते समै अरु उतते आते समै अनेक विचारन में डूबतौ उतरतौ रह्यौ। विचारन की ताता लहरन की नाँई आती जाती रह्यौ। सोचें रह्यौ-दुनिया में रोय राय के जीवन कौन बितानौ चाहे पर परिस्थितीवस वाए रोनौ झीकनौ परै। सुख में सुखी अरु दुख में दुखी हर एक दिखाई परै। एसे तौ बिरले ई हैं जो दुख मेऊ म्हौं पै उदासी नाय लावें। चोखे [illegible] घर अरु बाहर की समस्यान सौं जूझ रह्यौ। घरबारी घर माहिं जक नाय लेन दैती। बाहर छोरावारे म्हौ फार रहे हैं। चाकी दो पाटन में बीच पिस रह्यौ। यही सोचतौ फिरतौ घर आयकें अपने कमरा पै निढाल है कें परि गयौ।

राधा नै आते ही व्यंग्य बान छोड़बो प्रारम्भ कियौ। चोखे नैं अपन कूँ सम्हारते भए राधा कूँ समझायौ पर जो बंद विचार किए बैठे हाय विन्नै कौन समझावै। राधा पै समझाइबे बुझाइबे को कोऊ असर नईं परौ। बोली

"ब्याह की चरचा चलते इ तिहारौ ई हाल है गयौ है। आगे जाने का हाल होयगौ ?'

'भाई, आजकल की और मोहलत दै दै।"

'अजी तिहारी आजकल की सुनते सुनते मैं तौ तंग आ गई हूँ। तिहारे बस की बात नाए तौ घर बैठौ मैं इ निकस कै जाऊँ।"

अरे ! सबर तौ रख अबकी इतवार खाली नइ जाइगौ।'

"राम जानै तिहारो इतवार कब आवगौ। तुमकूँ ना गंद ना बूव। दुनिया वितेक नाम धर रही है याकौ कछू ध्यान है।"

चोखलाल नै खून की सी घूँट पीकै कही—

अच्छी परमेसुरी, अब साझ है रही है दोना खन मिल रहे हैं। दियौ बती कर। भगवान कौ नाम लै। दो नाम मोऊ कूँ लेन दै। मैं अबके इतवार पै अवसि-अवसि जाऊंगौ। तू कै तौ तिरवाचा भर दऊँ अरु देख याहू कूँ जान लै करबे धरबे वारौ तौ कोऊ और है हम तुम कौन हाय।'

इतवारऊ आयौ जा रह्यौ है'

याए कहकै राधा सझा बाती कै चली गई। सूरज डूब रह्यौ। अब वामैं तेज नाँऔ। सिंदूरी फलाव के पाछें कारी परछाई चली आ रही। चाखे या समै सिमटो सिमटो सौ प्रकृति के या सरूप कूँ देख कै सोच रह्यौ के समै सदा एक सौ नाय रहे। उतार-चढ़ाव आते इ रहै। सूरज या कथा कूँ रोज दुहराव। समझदार याए समझ। ना समझ या पै ना सोचै ना विचारै। गुनीजन कहै अकलवंद कूँ इसारौ अरु अहमक कूँ फटकारौ बराबर होय यही सोचतौ सोचतौ चोखे कबहू इतवार कबहू आगरा, कबहू निरंजन की अनेकन कल्पनान में खोतौ-खोतौ सो गयौ।

दौरधूप

चोखे इतवार कूँ अनोखेलाल के ह्या आगर पहुँचौ। अनोखेलाल चोखे की वाट देख रह्यो। वाके पहुँचते इ दोना निरजन कूँ देखिवे बाके घर जा पहु चे। निरजन न अपनी वठक भलीभाति सजा राखी। आधुनिक ढग की फरनीचर लगौ भयौ। सागौन को सोफा सट जाप डनलप की गद्दी लगी भई बीच में सन्टर टेबिल प अखवार धरे। एक कौन म रडिया सजौ भयौ। एक ओर तख्त प गद्दा बिछौ भयौ ताप साफ चद्दर बिछी भई। करीने ते मसनद लगे भए। कमरा के दोनू दरवज्जेन पै रगीन परदा लटक रहे जा पखा की हवा में फरफरा रहे। निरन्जन की उमर तौ नई पर वात सूझ वूझ भरी। सामाजिक व्यवहारिक सम्बन्धन के उतार-चढाव सौ भली भाति परिचित हा। याही सौ वाने वठक एसे सजा राखी जसै काऊ सफल दुकानदार अपनी दुकान कूँ सजाय कै राखै।

निरजन नै वडी विनम्रता सौ चोख अरु अनोखे की स्वागत सत्कार कियौ। चोखे कू निरजन पहली झलक म ई जच गयौ। रग गोरी वल लम्बी कटारदार मूँछ, बारन म बल पर रह। निरजन चन्दा के अनुरूप लग रह्यौ। वानै एसौ अनुभव कियौ कै मदिर और देवता दाना ई दिव्य अरु भव्य है। चोखे मन म सोचिवे लगौ या मौके कू नइ छोडिनो चइए। चोखे कू सव कछु चोखौ इ चाखौ लगौ। राजी खुसी पूछ कै चोखे नै सम्बन्ध की चरचा चलाई। निरजन न सुनक नैन नीचे कर लिए। थोरी देर म मौन तोरौ अरु कही बसे कर्ता धर्ता तौ हमारे मामा हैं पर अम्मा पहले छोरी देखिवे की कह रही है।' चोखे नै छोरी की सुन्दरता की बात छाती ठोकके कही। छोरी दिखायवे की बात हू स्वीकार कर लई। लेन देन की बात साफ नइ है पाई।

चोखे कू तौ चट्ट मगनी पट्ट व्याह की लग रही। वानै निरजन सौ कही कै अपनी अम्मा सौ पूछिक छोरी देखिव की तिथि बताव। निरजन अपनी अम्मा सौ पूछिवे भीतर गयौ। या बीच म चोख नैं अनोख त, छोरा पसन्द आबे की बात कही। अनोख की छाती फूल गई। चेहरा प चमक आ गई। अपनौ जस सुनिकै कौनखुस नाय होय। वू चोख ते बोलौ, छोरा का है लाखन म हीरा है। दखिव दिखाव लायक है। अपने बाप कूँ गयौ है। याको बाप इतक मिलनसार व्यवहार कुसल, हँसमुख, सहयोगी अरु समाजसवी हा क एक पात जा काऊ बातें मिल लतौ बाई को है जातो। निरजन न हू अपन व्यौहार अरु गुनन त पिता की छवि कूँ और निखार दियौ है।"

निरजन कौ गुनगान सुनिकै चोखे नैं, पूछी, "निरजन की सगति कसी है ?

अनोखे नैं फिर अपनी बात प्रारम्भ करी जसै पोस्ती कूँडी के इतकूँ क वितकूँ याही भांति निरजन, क तौ कालेज, क घर। सम मिल तौ नागिरी प्रचारिणी सभा जरूर जाए। म्हा साहित्यकारन कौ जमघट लगै। साहित्य सौं निरजन कौ लगाव है।'

इतेक म निरजन सलाह सूत मिलाइ क आ गयौ। दोनोन की बात रुक गई। दोनोन कौ ध्यान निरजन के होंठन प पौचौ। निरजन नं धीरे सौ कही, 'अम्मा यो कह रही है, आप कहौ तवई हम चल दें।

अनौख वालौ, "छोरी देखिवे की बात तौ तव होय जब लेन देन की त है जाए।

निरजन बोलौ 'मथुरावारी पारटी पचास हजार रुपया लगाइव की कह रही है। धौलपुर वारे साठ हजार रुपया की कह रहे। एक भरतपुर वारे औरऊ आए। बिनेंऊ पचास साठ हजार रुपयान की कही है।'

या बात कूँ सुनिकै चोखे कौ चेहरा उतर गयौ। अनोखे नैं बाकौ हाथ मसक क, म्हौ वाके कान के पास लै जाइक हौलें ते कही 'अरे! यार आजकल लडका देखे नाय जाएँ, खरीद जाएँ।

हिम्मत बांध कै चोखे नैं निरजन सौ कही, जो काम करनौ है वामैं देरी कौं। तुरत दान महा कल्यान। हम चाहे कै छोरी देखिवें कूँ हमारे सग ई चलौ।

निरजन कूँ इतेक जल्दी की आसा नाही। वू हा कसें कर देतौ एक पात फिर अम्मा ते पूछवे भीतर गयौ। काम वनतौ दखि क चाख कू राहत सी मिल रही। सोचिवे लगौ, चलौ चाखौ है दर दर प ठोकर ई खानी परी घर बठे ई छोरी कू वर मिल गयौ। व्याह म का ए रुपया ई तौ खच करने हैं। छोरा पक्कौ भयौ ना क आधौ व्याह भयौ ना। रुपया कौ हू का देखिवौ। रुपया तौ वात कूँ कै स्वाद कूँ।

अनोख हू ई सोच रह्या क वात बनती नजर आ रही है पर विचौलिया की कबहू कबहू भारी ख्वारी होय। कबहू-कबहू दो पाटन क बीच म सावत बचौ न काइ वारी वात है जाय। कबहू कबहू बेटीवार अरु बेटावारन क बीच म किंकर्तव्य विमूढ़ की सो नौवत आ जाय। चना क सग घुन पिस जाए। बात बन जाए तौ छोरी कौ भाग बिगर जाए तौ बिचौलिया क धुक्का फजीत। इत माऊ गिर तौ कुआ अरु उत माऊ

गिर तो खाइ। थोरे दिना पहल बू भरतपुर के रामदत्त बेटीवारे अरु कोटा के बालकिसन बेटावार के बीच म बिचौलिया की दुरदसा देख चुकौ। बिचौलिया ने बेटीवारे कौ हित चाहौ वितकू बेटावारे की कहनावत ई क छोरा कौ सम्बन्ध करायौ जाए। छोरा के बडे भया नें लव मैरिज कर लई यासौ छोटे छोरा के कोऊ दाँतऊ नाँय देख रह्यौ। बिचौलिया नें सम्बन्ध तौ करा दियौ। सगाई हू है गई पर सगाई पीछ बेटावार की ओर ते जो पाती आई वाए पढिक बिचौलिया की भूख प्यास हराम है गई। पाती में लिखौ जौ कपडा सगाई प दे गए वे जीव जन्तुन कू पहरवे जाग है क अजायब घर म रखने जाग है। बिचौलिया न हू ऐसो ज्वाब दियौ कि क बेटावारौ तिलमिला गयौ। कार लक सीधौ बिचोलिया के दरवाजे प आ धमकौ। बिचौलिया न मना कर दई छोरा कौ ब्याह और कहीं कर लेओ ऐसें निर्बाह नाय हायगौ तब बेटावारे की आख खुली। अखीर म काइली माकूली भई तब कहू जायकें ब्याह भयौ। ब्याह कें सम बेटीवारौ कच्चौ खा गयौ। बेटावारे की चढ बनी ता सम बिचौलिया पै कहा बीती बुई जानै।

अनौखे बिचौलिया बनकें एक ओर आबेवारी बदनामी ते वचिबे की साच रह्यौ अरु दूजी ओर सुख की हू अनुभूति कर रह्यौ तवई निरजन न आइक विचारन के ताने बाने कू तोरि दियौ।

'अम्मा अरु भन सग चलबे कू तैंयार हैं।' निरजन बोलौ।
तुमऊ तौ चलौ ' अनौखे ने कही।'
'मैं हू सग चलू ?'
'हा, यामे का बुराई है।' अनौखे नें जोर दक कही।

थोरी देर पाछ निरजन, निरजन की मैया, निरजन की भन, अनौखे अरु चोखे आगरा सौं भरतपुर कू चल दिए। आगरा सौ भरतपुर तक बस म बठे बठे अपनी अपनी तरिया सोचते चले आ रहे। चोखे कू या बात की चिन्ता व्याप रही, कै घर कहू क नाँय आए। घर बेढंगेपने ते परौ होयगौ। कहीं एसौ ना होय कै कुढंग कू देखि कै अंधे के हाथ ते बटेर निकस जाए। चोखे के मन म एक ई विचार आयौ क घर पहुँचते इ मौहल्ला म हल्ला मच जाइगौ। याते ई ठीक रहैगौ क अपन यार के घर रनजीत नगर म सबकू ल जायौ जाए।

निरजन की मया सोच रही छोरी पसद आ गई तौ अगूठी पहरानी परगी। नई पसद आई तौ कसे पिंड छुडायौ जायगौ।

निरजन सोच रह्यौ क इकलौतो बेटी है लाड चाव म परी है। कहू दिमागदार भई तौ घर कौ काम काज कस चलगौ? तीन-तीन भैंनन कौ ब्याह करनौ है। जमी दायजौ लियौ जाइगौ बसौ इ दनौ परगौ। कौन सी गल निकासी जाए।

निरजन की मन अपने ढग सौं सोच रह्यौ। भाभी कौ रूप रग कसौ होयगौ ? नाक नक्सा कैसे हुँगे ? कसी मेहमानी होयगी ? कसौ घर होयगौ ? भाभी की मया कसी होयगी ?

अनोखे एक आर अपनी वाहवाही लूटवे की खुसी म मिहर उठैऔ तौ दूसरी ओर विचौलिया की ख्वारी हैवे कौ विचार आते ई हिल सौ जातौ।

या तरिया सब अपनी अपनी उधेड बुन म हैं। मौन होते भए हू आप आपते कहते, आप आपकी सुनते भए पाचा जने भरतपुर पहुच गए।

चोखे नै भरतपुर उतरते ई अपने मन की बात अनोखे कू बताई—अपने घर ना चलक रनजीत नगर म रामसरूप के घर चल। म्हाई छोरी दिखाई जाए। चाय पानी कलेऊ सब म्हाइ करा दियौ जाए। छोरी पसन्द आ जाए तौ घर लिवाय कै नाऔ जाए। बात अनोखे के गरे उतर गई।

पाचा तागे म सवार है क रनजीत नगर रामसरूप क घर पहुच गए। रामसरूप समझदार मा स हो। पलक झपकत ई सब समझ गयौ। बान अपनी बठक म निरजन निरजन की मया मन कू आदर सौ बठायौ बितकू च दा कू मोटर साइकिल सौं बुला लियौ।

रामसरूप के कमरा मे सीलिग फन लग रह्यौ पर तोऊ एक टेबुलफन अरु लगा दियौ। थोरी देर म ही सीरौ पानी आ गयौ। ता पाछ ठडौ सरवत अरु वाके सग मीठे अरु नमकीन की प्लेट आ गई। निरजन की मया अरु मन कू पल पल भारी पर रह्यौ। वे तो अपनौ ध्यान दरवज्जे प लगाए बठी कब छोरी आव, कब वाए देखें ?

अखीर मे च दा सज धज क कमरा म आई। चन्दा के आते ई कमरा म उजेरौ सौ छा गयौ। च दा काई, च न्दा तौ च दा की कोर सी एसी रूपवान क तिन धरवे कू ठौर नाह्नी। तीनो देखते ई खिल गए। मन भर गयौ। छोरी लूली लगडी तौ नाँय याकी जाच के ताईं चन्दा प भीतर ते पानी मगवायौ। च दा मोरन न झुकाय कै गरदन नीची करकै नाप नाप क डग धरती भई भीतर गई तब रामसरूप न कही, 'हमारे यार की छोरी च दा तो च दा ई है। घर म पहुचते ई घर चमक उठैगौ सीतलता छा जाइगी। चन्दा पानी लक आई। निरजन की ममा नैं बाकू अपने पास वठा लियौ। छोरी गू गी तो नाय। तुतलाव तौ नाए। दात ग दे तौ नाए। आँख नाक सही हैं क नाएं। इन सब कू देखिभालकैं बातचीत करकै सब तरिया सन्तुस्ट है क चन्दा कू छुट्टी दई।

चन्दा जो कबऊ निचावली नाँय रहती आज लाज क मार अपनी पलकन नैं मोरन नै नीच झुकाय क अ गन कू सहेज क धीर धीरें चल दइ। थारी देर पीछे

राधा, अरु रामसरूप की बहू, निरजन की मया अरु भन के पास आइ गई। विनते चन्दा की बडाई करवे लगी। रामसरूप की बहू वाली, "हमारी चदा क सब तरियाते ठीक बजायकें देख लेऔ। काढवे बुनवे में पारगत है। काऊ बात की कमी नाए।' निरजन की मया बोली, 'भैनजी ई बात तो चौरे म दीख रही है हाथ कगन कू आरसी का?'

पर राधा तो ई चाह रही क बिनकू उत्तर मिलनौ चइए। निरजन की मया कू छोरी तो पसद आ गई तौऊ बात साफ नाँय करी। कही, 'हम घर जायकें खबर कर दिगे। मैं अपने भया सो और सलाह सूत कर लउगी।" बटीवारेन की आसा पै पानी सौ फिर गयौ, फिरऊ ससार आसा प टिको है कही है—'जब लौ स्वासा तब लौं आसा"। चोखे नै आदर सत्कार अरु मान मनुहार मे कोऊ क्सर नाय छोडी जा तरिया सौ बिनकू लिवाय क लायौ, वाही तरिया सबन कू आदर सौ विदा कियौ। मन म सोचतो रहौ कहूँ भौनी बिगर न जाए। पहले गस्सा म ई माखी नई आ जाए। चढी छान उतर नई जाय।

हाँ भरी उत्तर नई मिलो तौ चोखे के घर म उग्मी छा गई। बेचनी वढ गई। सबकू चिन्ता व्याग गई। कई दिनान तक तो चोखे निरजन की ओर सा बाट वाही तरिया देखतो रह्यो जस—मार उमडत घुमडत-गरजत बादरन की माऊँ टकटकी लगाय क देखें।

आगरे ते जब कोऊ उत्तर नइ आयौ तौ राधा नैइ चोखे कूँ आगरे पठायौ। चोखे फिर अनोखें कू सग लक निरजन के घर पहुचौ। अनायास दोनोन कूँ देखिक निरजन सकपकागौ। अबक निरजन की बैठक मे वू रौनक नाई जो पहल दिखाई परी। सामान करीने सो पहल जैसी नाँओ। मिलवे म हू पहले जसी ललक नाई। कही करै लाड परीसा मे अगन आए ब्याह के लक्खन तबई पाए। बिनके हाव भाव सौ इ चोखे नै अनुमान लगा लियौ।

बात यों विगरी क निरजन के घरवारेन कूँ चोखे की माली हालत को कच्चौ चिटठा काहू भाति हाथ लग गयौ। बिन्न मालुम पर गई क चाखे ठन ठन पाल मदनगुपाल है। इन तिलन मे तेल नाए। हीम क कोथरा म वासई बास है। चिकनाई के नाम प या हाडिया कू धूप म धरवे पै हू हाथ कछू नई लगगो। ब्याज पै सिगरौ रुपया द राखौ है। जेवर जाठो गिरवी रखकै किसानन कू रुपया ब्याज प दियौ है। बरसात भई नाएँ। रुपैया लौटिबे के आसार नाए तौ ऐसी ठौर कौन जु ग खेल?

आवभगत के पाछ मतलब की बात भई। निरजन नैं अपन मामा कौ बहानौ लकें बात कू टारनौ चाहौ।

कचन करत खरौ

'मामा चाह रह्यौ है कै पहले मैन को ब्याह कियौ जाए।'

'या बात कूँ आप पहलई कह देते तौ हम आपकू चौ वेस्ट दते ?' खासत भए चोखे ने कही।

'का कर ? अम्मा की राजी तौ हुती पर मामा के आगें पेस नाँय खाय रही।

'भाई मामा ते हम बात कर।'

"अजी मामा नैं तौ दो टूक मना कर दई। वसें आप चाहौ तौ मिल लेऔ।'

"भाई आए हैं तौ मिल लवे म का हज है ? काजी याव नई करगौ तौ का घर हू नई आन देगौ।'

'आपकी इच्छा।'

ता पाछ चोखे अरु अनोखे, निरजन के सग आगरे के बेलनगज में वाके मामा के घर पहुचे। निरजन को मामा, घर नाऔ। बू अपनी नौकरी प गयौ। वाए लिवावे निरजन गयौ। चोखे अरु अनोखे दोना बिचारे बैठे बठ बतराते रहे बेटा बारेन के बड नखरे हैं। बड विमाग है। सूधे म्हौ कौऊ बातई नाय कर। काऊ कितेक्ऊ सूधरौ होय पर टेढौ ई टेढौ चल। बिल म हू सूधो नाय जाए। सब बारह बारह मन के भए बठे हैं। सुरसा की नाई म्हौ फार। करकटा की नाई रग बदलै। बगुला भगत बनकै सिगरी मछला कूँ हडपनौ चाहे।

निरजन अरु वाके मामा आए। जो बात निरजन नैं कही बुई बात वाक के मामा नैं दुहरा दई। घर क भीतर ल जाइकै अनोखे नैं भीतरी-मूतरी बात कही पर निरजन के मामा नै तौ कलमा ई नाय पढौ। लन दन की सफाई की बात करी पर बान तो हाथ ई नाय धरन दियौ। बाए तौ जँच गई क या बगुला म तौ पाखई पाखन को ढेर है। मास तो नामऊँ कूँ नाएँ। जीमती माखी कैस निगली जाए ? बाके पास चित्तई चित्त ही वित्त को तौ नामऊँ नाऔ, याके बिना तौ सब चारो खाने चित्त होय।

हार झकमार कै चोखे अरु अनोखे अपनौ सौ म्हौं लकैं वापिस आ गए। अनोखे कूँ भारी दुख भयौ। निरजन पहलई मना कर दतौ तो इतेक आइवे जाइवें अरु खर्चा को भार तौ वचतौ। चाख के पास जब पइसा हुतो तब तौ नाँय व्यापतौ पर अब तौ मुरगी कूँ तकुआ कौ घाव ई भारी है रह्यौ पर बान अपने होठन प एसे भाव नइ आमन दिए जिनमौ अनोख कूँ धक्का लगतौ। चोखे नैं अनोखे ते कही यार ? और देखियो पर पहून पक्की करक खबर करियौ।

बनोरा बोलो, "पत्री करौं ई तौ ई धजर करो नई तौ पूरो घर छोरी देखिवे भरतपुर काई कू आतो। ई तौ बाद म बात बिगरी है। आजकल एसो ई है रह्यो है। ई ओखा तोई पै नाएँ चोग बढ़ती भई महँगाई अरु बढ़ते भए दहेज नें समाज म हाड़ पदा कर दई है। याक आसार घटब क नाएँ बढ़िवे क ई समझो।

चाग उदास सौं म्हों लटकाए भरतपुर लौट आयो। जब वु घर पहुँचो तो वाक लटक भय मुख भए अगन स घूघरे कू देखिक परवार समझ गए, दार म कछु काग़ो है। जब वा ने सिगरी राम कहानी सुनाई तो पल भर म पासो पलट गयो। चाचो अरु राधा न अपने सपने नरम ठोर। राधा न सरडाम आगरे बारे कूँ अरु हजारन चाग्रे कूँ सुनाई। चन्दा प बा बीती वुई जानें पर वाक सपने चूर चूर है गए। वु अपन दुख सौं कम दुखी पर अपने मया-बाप अरु दादी क दुख सौं ज्यादा दुखी हती। बाए या बात को और दुख हा के समाज म छोरी की परख एसें कर जस धाऊ ढोर की परख करी जा रही होय। कान पूँछ, दात रग, रूप चाल ढाल सब दखें। तापाछ हू जो उत्तर मिल वु सबन क हिएन नें हिलाद। सिगरे घर बारन की भूख, प्यास नींद उड़ गई। चन्दा करवट पच्छी चौनाई रात भर करवट बदलती रही।

चाख के सामद रात भर सिगार सिंगार की रीत घूमती रही। दिन प दिन बीतत गए। कश्मा सुरल पच्छ के चन्दा की नाइ बढ़ती गई, पर चन्दा क ब्याह की बहू बाऊ हिसाब किताब नई बठो। जहाँ बहूँ पाव धरत, म्हाँई धरती खिसकती दिखाई परै ई। चोखे की हालत खस्ता है गई है याकी कहानी बाको चेहरा मोहरा ई नाय कहतो याको पर कह दतो।

कातिक की फसल क पीछ बसाख की फसल प दारमदार हो, पर बादरन नें धोखा दिया दई। किसानन को बीज हू नई लौटो। चारा ओर अकाल गहरा गयो। चोखेलाल के आसामी ओख चुरावे लगे। चोखे काहू त कहतो तो का म्हों ते कहतो। बाकी आँखिन के सामद त्राहि त्राहि मच रही। खाते पीत घरन म हू दो जन की रोटी नाय मिल पा रहीं। ढोर डगर चारे क मारे म्हारे सुज रह। पाखे के पानी की भारी किल्लत है रही। अखबारन म खबर छप गई क पानी अब रासन कार्ड सौं मिलगो। बजार म सब चीजन प भाव चढ़ गए। घी के दरसन दुरलभ है गए। साग सब्जी को टोटो पर गयो। ऐस म आसामीन की भाऊँ देखिबो, अपनी गाँठ की खोवो हो। तोऊ चाखे नें अपने दो चार आसामीन कूँ परिचायक दयो। जिन जिनत बान बात करी बिनकी राम कहानी सुनिक चोखे की आँखिन म आँसू आ गये। आसामीन के घर की हुलिया बिगड़ गयो। बिनको घर खुद रोमतो सो दिखाई पर ओ। चोखे की हालत बिनें देखिकें कछू ते कछू है जातो। जब चाखे घर माहि आतो तो बाकी हालत और खराब है जाती। बाकी मया पापले म्हों ते कहतो 'चाखो है,

चोखे कूँ चोखौ फल मिल रह्यौ है। अब कछु जुरौ जाठौ तौ आसामीन कूँ लुटा दियौ अब घर कौ गाडौ कमें चल ? चन्दा नौ ब्याह कैसें होय ?

अ चौ साची कहती। घर म रुपैयान के दरसन दुरलभ है रहे। घर म दानेन के लाले पर रहे। चन्दा जो दिन म दस ड्र स बदलती वाके घर मे साज सिंगार कौ सब सामान धुसरा की नाईं भरौ रहतौ खाइवे पीव की कछु कमी नाईं, म्हा मूसे ग्यारस कर रहे। बारन में तौ तल डारिवौ दूर रह्यौ छौकवे के ताँईं हू तेल नाँओ। दात अरु राटी मे वर पर गयौ। चोखे ई कहूक वाह छुडातौ का वताऊँ होम करते हाथ जर रहे हैं।'

अकाल की छाया म वाकौ ही नाय, सबकौ बुरौ हाल है गयौ। अब बु काहू के आगें हाथ पसारतौ तौ का म्हौ ते पसारतौ। कोऊ या बात प हू विसवास करबे वारौ नाओ कै चोखे की ई हाल है सक। लोग समझते चोखे ढोग रच रह्यौ है। खैर काऊ तरिया चल्हौ जर रह्यौ। पर चन्दा के व्याह की चिन्ता चोखे के घर कूँ खाए जा रही। चोखे कूँ दिन ब दिन जरजर कर रही। चिन्ता की आग म बु दिन दिन तिल तिल जर रह्यौ। बाकी कचन सी काया सूख के काटौ हुई जा रही। घरवारी के दिन रात के ताहन बाकूँ और छेदत।

चोखे उकताय कै एक दिना छोरा देखिवे डीग जाय पहुँचौ। डीग में करकल्ली कौ घर चोखौ मालूम परौ। पूछताछ करकै करकल्ली की देहरी जाय ढोकी। करकल्ली म रामसिंह पहाड़ीवारौ टेर लियौ। हुक्का पानी की पूछताछ करक करकल्ली नै चोखे ते पूछी 'कहो भया कस आइबौ भयौ ?' चोखे ने अपनौ किस्सा कह्यौ। फिर काए नाते गोतेन कौ मिलान भयौ। नाते गोते बचते ई रामसिंह करकल्ली की कहानी सुनावे लगौ।

भया चोखे, इन्नै अबई अबइ अपनी छोरी कौ ब्याह कियौ है। व्याह की खातिरदारी अरु दन-लन जा तरिया कौ भयौ है बु काऊते छुपौ नाएँ।

चोख न कही ई बात मोय रग्गो ने बता दई है।'

फिर काए आप देख लेओ, सरूप के अनुरूप ब्याह है जाए। माँगिबे ताँगिबे की बात तौ हतई नाएँ आप तौ नामी आदमी हो।' रामसिंह बोलौ।

अजी सरूप के अनुरूप तौ है जाइगौ पर पीछ खाल खिचाई नईं होय। समधी तौ बन प्यार जोरिवे कूँ पर फिर प्यार म पाथर नईं पर, याते दन लन की बात साफ है जाए तौ चोखौ है। चोखे ने चिरोरी करी।

चोखौ सौ कचन बरस तौ पाथर चौं परिंग ?' रामसिंह ने हँसते भए कही।

थोरी देर म छोरा दिखबे कूँ आ गयो। छोरा जयपुर म नौकर हो। कई ठौरन ते लोगबाग पीछ पर रहे। चोखे न छोरा देखो तो वाकूँ पसद आ गयो।

अब करवल्ली की बारी आई वू बोलो, "भाई चाखे दन लन तो डोम भाट की चाज है पर सबसो पहल छोरी सुदर अरु पढी लिखी चइए।

'वोहरेजी मैं अपनी छोरी की बडाई अपन म्हो त कस करू ? मालिन अपने बेरन न अरु हलवाई अपन दही कूँ कब खट्टो बताव। आप चलक अपनी आखिन सों देख लेओ। मन भर जाए तो बात आग करियो नई तो तुम अपन घर अरु मैं अपने घर। चाखे ने अबक अपनी बात सरकाई।

'ठीक है छोरी छोरा के अनुरूप है तो छोरा आपको है।'

"तो छोरी कू देखिबे की बात बताओ कब, कस अरु कहाँ राखी जाए ?

'अजी एसी जल्दी काए आप हमारे बिस म पूछताछ कर लेओ। कछू हमकूँ हू सम देओ।

अजी हम का पूछताछ करिंगे ? हम तो पूछताछ करक ई आपकी सरन म आए हैं।

"अजी सरन तो भगवान की है, हम तो मान्स है। हाँ इतेक जरूर कह दें कै जब आपकूँ छोरा पसद है तो हम आपकूँ अपने आइबे की सूचना दै दिंगे। चिट्ठी डार दिंगे। चोखे न मुबतेरे हाथ थाम पीटे पर करवल्ली लाटक बिलया ल गए। छोरी देखिब को छेता दियो ई नई। अखीर मे चोखे मोह लटकाए भरतपुर लौट आयो। घर तो बाकी मह की सी बाट देख रहो। छारी कूँ कहू छोरा मिल्यो कै नई याके काज अँखी अरु राधा दरवाज की ओर आँख लगाए बठी। चोखे न घर पहुँच क करवल्ली की सिगरी बात सुनाई तो थोरो सो धीरज आयो पर ओस के चाटे त का प्यास बुझे ?

चोखे ने करवल्ली की चिट्ठी की कई दिनान तक बाट देखी। रोज मुहल्ला म चिटठी रसाल आतो। चोखा बात रोज पूछतो पर चिट्ठी नई आई। चोखा न जवाबी चिटठी डारी तब कहू जाइक चिट्ठी तो हाथ लगी पर सग म निरासा ई हाथ आई।

और छोरा देखिब के ताई चोखा न साहम बटोर के निगाह दौडाई। ईसुरी को सारो गोविन्दगढ म बतायो। चोखे ईसुरी कूँ लकै गोविन्दगढ पहुँचो। याकी सूचना पहलइ द दई। सयोग सो छोरा अरु वाको बाप गोविन्दगढ मिल गए। छोरा को बाप खूबसूरत है। याते ई चोखे सन्तुष्ट है गयो। सबसो पहल नाते गात बचाए गए फिर छोरा दिखाव की बात आई।

चाखे न हँसते भए कही, 'अजी साचौ अच्छो तौ खिलौना सहा होय। याम काई दूसरी बात नाएँ।"

इतेक म मूलचन्द आ गयौ। इकरो हाड, रग गोरौ, लम्बौ बेल, चेहरा म्हौरा चोखौ। बात करबे म फरवट। वाए सामान्य ज्ञान कौं अच्छो ज्ञान हौ। तबई तौ प्राइवेट कालज म वाके पाव जम भए। खूब अखबार पढतौ। वाभन हू बाके हाथ मे अखबार लगो भयौ। चोखे बाकी बातन सौ भौत प्रभावित भयौ। घर वर दोनो बाकू जँच गए।

लन दैन की बात करबे मे ईसुरी पतनछुरी हौ। पेट म भीतर घुसक बात कू निकाम लातौ। बान दोनो पच्छन सौं अलग अलग बात करकै तालमल बठायो। छोरी देखिबे के ताई दूसरो दिना ई त कर दियौ।

दाना हँसते भए भरतपुर लौट आए। चाखे के घर म खुसी की लहर दौड गई। घर की सार सम्हार करी गई। घर खूब सजायौ गयौ।

दूसरे दिना भगवनी परिवार दलबल के सग छारी कू देखिबे क ताँई आयौ। चाखे न विनकी खातिर म रुपया पानी कौ तरिया बहायौ। आत भाते ई ठडो सरबत दियौ। कलेऊ म भाति भाति की मिठाई, पान बीडी सिगरट सामई रख। चन्दा कूँ देखिकै सब खुस है गए। बात पूरी तरिया तुल गई। गोविन्दगढ के मद अब बेयर एक कमरा म बठकैं विचार करबे लग। ईसुरी हू विनके सग बैठौ। आध घटा पीछ ईसुरी बाहर आयौ। मन की घुडी खोली। जा पहले त करयो बामै और बढोतरी कर दई। याहू प गोविन्दगढ पहुँच क अपने जमाई त पूछकै सूचना दबे की कह क चल दिए।

या सम चोखे को मन बठ गयौ। बान स्वीकारो क अथ बिना सब अनथ है। अथ ईसुर तो नाएँ पर ईसुर ते कमऊ नाए। अब वाए मालुम परी क रगीन चित्रन क पीछैं निरी सफेदी ई सफेदी है। दुनिया म हाथी क दांत दिखाब के और हाय खायिब क और हाय। मन की बात कू साफ साफ नाय कह। काऊ कर्ता-धर्ता मामा कूँ बतावैं कोऊ भाई कूँ बताव, कोई मौसा कूँ बताव पर ये सब टारब की ऊपरी बात हैं। पढे लिखे समाज सुधारक मचन प लम्बो चौडो बात करब बारे बात तौ खूब घनाब खूब लम्बी चोडी हाक। आदसन न खूब बखार पर जब अपने प आब तो सब किमन जाएँ थूक कैं चाट ल। जा सम सम्बन्ध त करो जाए या सम बात और होय। सम्बन्ध के पाछ छारा कूँ नौकरी लग जाए तो छारा क भाव और बढ़ जाएँ। सही बात है सम सम क भाव है कौडी पर दाव हैं। बेटी वारे की भलमनसाहत, प्रतिष्ठा सवा लडकी को रूप सिन्ठा सालीनता

सब धूर मे मिल जाएँ। एक ओर ये सब दूसरी ओर घन कौ पल्लौ हल्कौ भयौ तौ काँटो नई तुल पाव।

चोखे मन ई मन सोचतौ रह्यौ। 'वर' कू वुही बात है के सुदर सृष्टि वलिदान चाहै दूल्हे वुई जो मिलिवे म दुलभ होय। दुहिता वुई जा सात पीडिन तक दोहन करै। इनई विचारन मे चोखे डूवतौ उतरतौ रह्यौ। सिगरौ घर सोच म पर गयौ। चन्दा विस कौ सौ घूँट पीक रह गई।

सकल्प

कार्तिक की फसल गइ तौ गइ पर वसाख की फसल के हू लाले पर गए। वैसाख अपन नाम कूँ सार्थक कर रह्यौ। नामइ वै साख। लोगन की इ मूखता है जो साख मानक चल। बाइ तरियाँ जसैं रगी भइ कूँ नारगी जमी भई कू माखरी सार कूँ खाया अरु चलती भइ कूँ गाडी कहै।

बादर आते गरजते पर बरसा के नाम प आँख दिखाय रहे। चाखे के आसामी वसाख की फसल प आँख लगाय रहे। चोखे आसामीन माऊँ आख लगा रह्यौ पर न चोखे की मनचाही भइ न आसामीन की। कछू किसान तौ खेतन म बीजहू नई डार पाए। जो रुपया करजा करकै लाए बू पेटन के हवाले है गयौ। जिन्न धूरि म बीज डारौ बू धूरि म इ गयौ। चारौ ओर भयकर अकाल परि गयौ। चारा ओर त्राहि त्राहि मच गइ। खेतन माऊँ देखिवे म हू आँख पथरावें इ। गरीबन कोइ नई अमीरन कौ जीबौ दूभर है गयौ। खेत की फसलइ नाँय मारी गइ उगाइ की फसल कौ कचूमर निकस गयौ। साची है खेत म होय तौ मन्डी म आव। टकी मे होय तो घर की मटकी मे आवै। चोखे कूँ चौरे म सब दिखाइ पर रह्यौ पर वाके सामइ चन्दा के पीरे हाथ करबे कौ सवाल हो। चोखे के पास कछू नाँय रह्यौ या बात कूँ कछू मान्स इ जानत। ज्यादा मान्स इ समझते कै चोखे क पास काऊ चीज की कमी नायँ। लोगन न बिसवास इ नाय होतो। दूमरे चोखे नै अब तानू दियौ इ दियौ, लियौ नाँओ। कबहू काऊ ते मागौ नाओ। यासो बाकूँ हाठ खोलिवौ अखर रह्यौ। जब जब चोखे ने अपने आसामीन कूँ टटोरौ फजीते इ भए। जो लबे के खन हाथ जारते आत। नाक रिगडत आते अब दवे क सम आख दिखाय रहे। ठेंगा बतात। साची बात है —

काज परे कछु और है काज सरे कछु और।
रहिमन भँवरी के परे नदी सिरावत मौर।।

चोखे मन मार कै रह रह्यौ। मास कहते मरौ हाथी बिटौरा सौ होय। दार बिगर जाए तौ काए साग की दर तौ दई है। डारी मर जाए तौ पिंडन न बेलेइ है। चोखे कौन कौन कूँ कस समझतौ क यू फाफानन्द फकीर है रह्यौ। जेवर जाठौ गिरवी रख दियौ है। कौन सौ का म्हो ते कहना ? अब तौ पट भरवौ दूभर है रह्यौ अब चाखे की नजर अँचौ अरु राधा के हाथ पामन पै बचे खुच जेवर प हू गइ। बिनकै सामई म्हो खोलिवौ कोऊ आसान नाओ। बिनक हाथ पामन म ते गहना लयौ, नाहर की दाढ म ते मास निकासबौ समझो। चोखे कब लौ सुट्ट खचतौ। अधीर म एक दिना म्हो खोलनो ई परो। फिर तौ राधा अरु अँचौ न धुर पट्टौन सुनाई। अँचौ बोली, पहल खूब कही, अपने ताइ कछू तौ रख पर ता सम तौ दान क चबूतरा प बठ गयौ। अब फटहाल है गयौ ना ?' राधा न कही 'दुनिया दूर की सोच क चल आडे सम के तांई बचावै राख पर छाया तौ हरिश्चन्द्र बन गए। अब चालनी म दूध काढिकै करमन कूं टटार रये है।"

अचौ प फिर बोले बिना नइ रह्यौ गयौ अरे चोखे तोय गढ न डूब। छोरी सयानी है गइ जित भाऊँ तन हाथ डारौ कछू हाथ नइ आयौ। पता है चौ ? बिना पइसा के मान्सन कू कोऊ दा कौडी कौऊ नाय पूछ। तन मुनौ नाय जर है तौ नर है नइ तौ पछौ वे पर है। बिना पइसान क जयपुर अमपुर है। राधा फिर बरस परी 'तब तौ आसामीन के बडे बडे गीत गात अब जाऔ न जिनके पास जो बढि बढि कै बात बनाते।

अचौ बीच म इ बरस परी 'चोखे, बुरे सम म काऊ काम नाय आव याही सौ तौ कही है विद्या क ठ की पइसा अट कौ।'

राधा नै पूछी, 'अब कहा गए बे निहोरे करबे वारे जो दिन रात घेरे रहते। जो इ कहते घदा हमारी बेटी नाय का ? कहा गए वे चदा कौ ब्याह धूमधाम ते करबे वारे ? अब बिनते जाय क कहो ना कै बा सम का म्हौं ते कही ?

चोखे राधा अरु अचौ दोनान की सुनतौ रह्यौ। सुटट एसी खच गयौ मानौ स्याप सूँघ गयौ होय। कहतौ तौ का म्हो ते कहतौ। बातें भूल है गई याकूँ चोखे अब जान रह्यौ। पर अब पछताए होत का जब चिरिया चुग गई खेत। बू या बात कौऊ अनुभव कर रह्यौ कै जो बिटिया के पीरे हाथ करबे कूँ छाती ठोक क दम भर रहे बे अब बाके पीरे परे म्हो माऊँ झाकऊ नाय रहे।

चोखे हिम्मत बाध क बोलौ कौडी तौ अच्छे दाव कूँ डारी पर का कर सब पट्ट पर गइ। चौबे जी छब्बे हैब की सोच रहे पर दुब्बे हू नाय रह। किया तौ अच्छे कूँ हौ कोऊ जुआ तौ खेलौ नायो।

अँचौ भराय कै परी, 'हा इ कमी अरु रह गइ है याऊ कूँ करल।

"अरी मया, गलतो है गइ पर अब पेट कूँ तो रोज चइए, कहा ते लाऊँ, काऊ कुआ पोखर मे जा गिरूँ का ?" चोखे दुखासी सो है कै बोलो।

राधा अरु अ ची ने जान लई अब रबर ज्यादा ख ची तो टूट जाइगी। यासो दोनान न अपने पामन क खँड़ुआ उतार कै द दिए। आसपास बेचव मे तो घर की लाज जावे की बात ई यासा आगरा जाइकै खडुआ बेचे गए तब कहू जाइकै पेट कूँ दान जुरे। चन्दा सिगरे तमास कूँ अपनी आखिन सो देख रही। बुद्धि ते समझ रही। मन म बिचार रही। समाज की कठोरता अरु परिवार की बिवसता नें वाके जोवन म भारी परिवतन ला दियो। धरती प जाके पाम नाय ठहरते, अब जसी बहे बयार पीठ तब तमी दीज के हिसाब ते सादा कपडा लत्तान म आ गई। पढ़ी लिखी, यासों साफ कपडान प तो बाको ध्यान हो सफाइ पै जरूर ध्यान द ती। वानें इ ऊ देख लियो क दुनिया म पइसा की वडी पूछ है। च दा या बात सो बडी दुखी ई कै छोरीन को ब्याह करवो हासी खेल नाएँ। ब्याह के ताई छोरीन को दिखारो होय। बजार म जस चीज पसन्द आ जाए तो ल लइ जाए नई तो उठाय क फ क दइ जाए। न कहु ना सोच दुकान की चीज पसन्द ना आव तो वाके फेंकवे ते वा चीज प का असर पर वू तो निरजीव होय, पर छोरी कै तो बुद्धि होय वू मास को ही लोथरा नाय, हियो हू होय। बाए जब उठाय कै फकै तो बाप का बीत वू ई जानै। छोरी के दिखारे के पीछ मोल तोल को ज्यादा महत्व है।

छोरान की नीलामी सी होय। याम मान्स को मूल्य कम पद की पूछ ज्यादा होय। जितेक ऊँचे आसन प देवता बठो होय वितेकइ ऊ चो चढ़ावो होय। एक ओर बात है—मोल तोल है जाने के पीछ मान्स बचन सो अरु फिर जाए। व ह ना देख जा छोरी कूँ देखिवे आए हैं वाके मन प का बीतगी ? वू बिचारी अपनी सहेलीन के बीच कस म्हो खोलगी। बोलगी तो कसे बोलगी। मुहल्ला म बयरबानी कितक नाम धरिंगी कइ जने देखि गए हैं। सम्बन्ध नाय है पा रह्यो जरूर, छोरी में कछु कमी होयगी।' कोऊ कछू कहैगो, काऊ कछू। जितेक म्हो तितेकइ बात। कौन कौन को म्हो रोको जाइगो। कौन कौन के सामइ असलियत खोल क रखी जाइगी। चन्दा के मन म या तरिया के अनेक बिचारन को तानो बानो पुरो रहतो। दूसरी तरफ समाज के ठेकेदार अरु दहेज के लोभीन की ओर घिरना के बीज बुव गए। निहचै कियो, "मेरो बस चलै तो या ढाचे कूँ इ बदल दऊँ।'

चन्दा के दिमाग म इ बात घर कर गइ क दहेज लेबे वारे ऐसे डाकू है जा माया कूँ देखे न काया कूँ। अ गूठी कूँ नाय उतार आगुरी कूँ इ काट। वे मुरगी ते एक एक सोने के अडा लबे के पच्छ म नाएँ एक दिना मे ई मुरगी कूँ मारक सान क सिगरे अडान न लबो चाहे। वे भैंस समेत खोवा करवो चाहैं। वे ऐस सामाजिक सिकारी हैं जो अपने स्वारथ के ताई सिगरे छत्ता कूँ तोरिकै छोटी बडी मधुमक्खीन के छटपटावे पै हू नकहु नाय पसीज। चन्दा कूँ या बात की सबसों ज्यादा दुख हो

क बाप पै कछू नाय रह्यौ अरु बेटा वारे म्हौ फार रहे हैं। ब्याह होय तौ होय क्यों? फसल अच्छी आ जाती तौ बाप को रुपैया आसामीन प त लौट आतौ अब तौ दानो फसल बिगर गइ। अब तौ पूरौ रुपया डूब गयौ। एमे मृ पार परिबौ आसान न आ। चन्दा जब अपने बारे म अपने परिवार कूँ दुखी देखती तौ हिल जाती। एक माऊँ अपने जीवन पै मुस्कराहट होनी तौ दूसरी ओर दादी, मया अरु बाप की दसा कूँ देखिकै रोइबौ आतौ।

यासौं चन्दा ने अपने मन म निरनय कर लियौ। कॉलेज जीवन मे चन्दा एक छोरा सौ भौत प्रभावित भई। छोरा कौ नाम हो चकोर। जब जब कालेज की वाद विवाद प्रतियोगिता होती तब तब छोरीन के कालेज ते चन्दा जीतक आती अरु छोरान के कॉलेज ते चकोर जीत क आतौ। कबऊ चन्दा जीत जाती कबऊ चकोर जीत जातौ। यासौ दानो एक दूसरे त भली भांति परिचित है गए।

एक पोत 'भारतीय समाज मे—दहेज कौ दबौ साथक है।" वाद विवाद कौ बिस रखौ गयौ। कछू छोरा छोरी या पच्छ म हे क दहेज दियौ जाए जासौ बाप की सम्पत्ति म त छोरान के सग छोरीन कूँ हू हक्क मिल। कछू या पच्छ म है क दहज नई दियौ जाए। चकार नै या पच्छ म जो तक दिए बिन सुनिकैं दहेज की माइ भरबे बार हक्का बक्का रह गए। इतक तारी बजी क सिगरौ हाल गूँज उठौ। चन्दा कूँ चकोर के तक भौत पसद आए। वाकौ भासन पसद आयौ। वाकौ सुभाव पसद आयौ। वाके व्यौहार प वू रीझ गई। चकार कूँ जब बिज की घासना भई तौ वाके चेहरा प कोऊ अभिमान की रेखा नाई उल्टे विनय के भाव दिखाई परे। सच है फल पाइक वृच्छ नवई हैं।

चकोर की विज प चन्दा नै एक सवाल पूछौ, दहेज के बिरोध म जो बात होठन सौं कही हैं वु होठन तकई रहिगी क जीवन म हू उतारी जाइगी।

चकार बालो, या बात कौ उत्तर तौ समै ई देगौ। हा मानस कूँ अपनी बात कौ धनी होनौ चइए। काऊ न कही है बिन नीति न नीर्च धनी धरनी क।

चन्दा अरु चकार की बात याइ भई। चकार बी ए फाइनल म पढ रह्यौ हतौ। वु डीग के पास अऊ गाम कौ रहबवारौ। इकहैरे हाड़ कौ रग गोरौ, चहरा प गम्भीरता झलकती। कम बालतौ पर जब बालतौ तौ फूल झरे हे। वू विनम्र त नीचा जो अल्ल टल्ल मारत रहैं। बिरथा अपनो तावन कूँ खावैं।

याः रहन महन को कम बालिब कौ, सादा जीवन उच्च विचार जीवन म उतारब को ई फल निकसौ क चकोर न यूनिवर्सिटी म पहलौ स्थान पायौ। चारो ओर हल्ला है गयौ। एक गाँव क रहबया नें सहरन के पढ़बयान कूँ पटार दियौ। सिगरौ महलन सौं जात गई। अखबार वारे वाकौ

इन्टरव्यू लवे के ताईं दौरि परे। दूसरे दिना अखवारन के पहले पन्ना प चकोर की फोटू अरु वाको इन्टरव्यू छपो। चन्दा नै जब ई समाचार पढ़ो अरु अखवार म फोटू देखो तो फूली ना समाई। बाए ऐसो लगो मानो बाके परिजन कूँ ई सौभाग्य मिल्यो है। चन्दा न एक पाती भेज कै बधाई दई। चोरोर कूँ बधाई सन्देसन की अम्बार लग गयौ पर चन्दा को बधाई सन्देस ऐसो लगो मानो अपन परिजन को ई बधाई सँदेस मिलो होय। बानै वू सबसो अलग छाट क रख लियो। चकोर हू चन्दा के व्यक्तित्व पै मन सो मोहित हो। वू जानतो क चन्दा एक अच्छे घर की छोरी है। बाप के पास खूब धन है तोऊ अभिमान को नाम नाएँ। फिर मन कूँ मन ते चन पर। मन की बात मन तक पहुँच। मन ई मन बात राय। याही तरिया दोनून क बीच मन ई मन विचारन को आइवो जाइवो होतो रह्यो। अब चकोर एम ए को छात्र हो अरु चन्दा बी ए की दूसरी साल म आ गई।

एक दिना चन्दा नै चकोर सौ अपनो समझ कै अपने मन की व्यथा कह दई। चन्दा न कही क बाके घर की हालत खराब है गई है। चकोर ने चन्दा की राम कहानी सुनी तो चकार को ध्यान चन्दा माऊँ ओर बढ़ गयो। चकार नैऊ आत्मीयता सो चन्दा वूँ साहस बढ़ात भए कही, ये तो आते जाते रह। देख जिनके नाएँ हापडे बिनके है गए घर। ऊसर है गए सर, सर है गए ऊसर। बानै चन्दा कूँ ढाढस बँधाते भए कही। सोच नई वित हानि को, जो न होय हित हानि। धन तो बादरन की छाया है। आती जाती रहै।

इन बातन त चन्दा कूँ बडो चन मिलो। चकोर के मन म एक ओर सहानुभूति उमडी चन्दा की गरीबी कूँ देखकै पर दूसरी ओर चकोर के पास बडे बडे लोगन के औफर आ रहे। अच्छे अच्छे अधिकारी अच्छे अच्छे धनी मानी चक्कर लगा रहे। या बात कूँ सब जानते क चकोर गाँम को छोरा है गरीब घर को है पर आइव वारे समै मे तो ऊजरो पच्छ दिखाई पर रह्यो है। या ई सो आए दिना बाके घर पै अच्छे अच्छे फिरकया लगा रहे। या समझो बटीबारेन ने बाकी देहरी की धूरि ल डारी।

चकोर की मया तो चरखा कातती बाके पास दो बीघा जमीन ही। कच्चो घर हो। कोऊ आतो तो बठावे के ताँई कोऊ ठौर नाई। जो कोऊ घर देखतो बुई नाक मौंह सिकोरतो। चकोर विन सबकी मनोदसा कूँ पढतो पर मन की बात कह ना पातो। बाकी मया नै सिगरो भार चकोर पै ही डार राखो। व्याह के ताईं कह राखी 'जसो करनो चाहै कर मै तो नदी किनारे को रूख हू ना जान कब बयार आ जाय अरु कब उखर क बह जाऊँ। काम तो तोय है जसो तू चाहे वैसो कर।

चकोर कूँ सिगरो भार सौंपि क वाकी मया निश्चित है गई। चकोर बु

कचन करत खरो

वात कूँ जानतो। चकोर न साची वान मचन प दहज र विरोध म लम्ब चौडे भासन दिए हैं भरु भ्रव दहज के ताई म्हौं फसायो तो नाग तान द द यँ मार दिग। यासो याने मन ई मन मछू त कर लिया। यारो ई निरनय चन्दा क मन तन न जानै क्स पहु च गयो? च न्दा कू [illegible] विसवास है गयो क चकोर वाक प्रस्ताव कू स्वीकार कर लेगो।

चन्दा अपन घर की बिगरी हालत कू देख रही। हर वरस की सूखा सौं आसामीन की हालत खस्ता है गई। जा अपना पट नाय भर पा रह व बजाए क्स चुकाते। चोसे की रुपया पूरी तरिया डूब गयो। ब्यहू बहू त थारी भौत उगाई है जाती तौ थाई त घर की ढरा चल रह्यौ। थोरो उगाई पट की भेंट है जाबेई। चन्दा के पीरे हाथन की का चलई। पट त छुट्टी मिलती ता ब्याह की बात सूझता।

चन्दा क ब्याह म ताई काऊ हिल्लो नाय लग रह्यौ। चाच अ ची अरु राधा एक ओर रुपया डूब जावे त दुखी है ता दूसरी ओर चन्दा के ब्याह की चिंता वसका रती। घर म सदा दुख की वातावरन छायो रहतो। चन्दा या दुख कू कब तानू देखती एक दिना वान अपन पिता कू एक पाती लिखी—

पूज्यनीय पिताजी

मै भौत दिनान सो घर क वातावरण सो घुटन को अनुभव कर रही हू। हार माम की बनी हू। भावन को उठिवो स्वाभाविक है। आपन गरीबन कू करजा बांटिकैं अच्छौ कियो है। विनके प्रानन की रच्छा करी है पर का कियो जाए, कई वरस सौं सूखा परि गयो। मै देख रही हू आपका रुपया डूब गयो है। किसानन की वधिया वठ गयी है। बे बिल्कुल टूट गए हैं। कर्जा कस चुकाव।

इतकू बिना रुपयान के मेरे ब्याह के ताई आपक सामई विकट समस्या ठाडी है। बिना रुपयान के घर को घरुआ है गयो है। बिना धन के मानस की पूछ नाय रहै। आप जहा कहू जाओ म्हा त निरास है क लौटो। मोय कई बेटावारे देख गए हैं। मरो कई बार दिखारी है चुकी है। मेरे रूप रग गुनन की ओर ध्यान न दक धन की ओर ध्यान द रहे है। धन ते बिनके फटे म्होन नै सींद तो भली भला है नही तौ म्हो सूज जाए। याही सो बात बनती भई टूट जाए। याको आप प तौ प्रभाव परई है माप हू प्रभाव पर। याए मै होठन सो ना कह सकू न लखनी सो लिख सकू।

आप देख रहे हैं समाज की माग वढ गई है। आदमी क दो दो चेहरा होय तौऊ गनीमत है पर अब तौ कई कई चेहरा अपनी जेब म रखें जब जसी जरूरत पर बमोई चेहरा लगा ल। जिनके म्हो लहू लग गयो है बे वा बिना कस रह सक। यह सब समय की बात है। जा देश म ब्याह की आधार गुनन की बात ई वा देस मे अब दहज ई आधार है गयो है।

पर अब आपकूं चिंता करवे की जरूरत नाए। मैंने सावित्री की भांति सत्यवान को चयन कर लियो है। याम कोऊ व्यवधान नाय होयगो। आप तो अनुभवी हो। आय ललना एक बार ई बरन करैं। विनके मन के तमचा मे तौ एक ई गोली होय। मैने जो जीवन साथी ढूंढो है, है तो वू गरीब घर को पर होनहार है। बी ए म प्रथम पास भयो है। एम ए मं हू पहलो ई स्थान पावगो। ई मोय विश्वास है गयो है। वाकी विचारधारा सो मै खूब परिचित हू। वू दहेज विरोधी है। माय जीवन साथी बनाइऊ म गव को अनुभव करगो।

आप दुखी न हो। ई ना समझें क मै गरीब क घर जाऊंगी। आप विसवास करें मैं अपनो भाग लकें जाऊगी। मया बाप कम के साथी होय भाग के नाय होय। आप याहू वात कौ विसविास करियो क मै कोऊ ऐसौ काम नाय करूंगी जासो आपकी प्रतिष्ठा कूं बट्टो लग। मै जो जीवन साथी बरन कर रही हू वू जाति, धम ऊंच नीच, गरीब अमीर के भेदभाव सौ ऊपर उठ गयो है। मैंने रुकमनी की नाई कृष्ण कूं पाती पठाय कैं अपन हैवे वारे साथी सौ समथन पा लियो है। याकी मैं क्षमा चाहू। आप अनुभवी हो। मैं आपकूं अपने दुख सौ और दुखी ना करनो चाहू। बस आपको समथन चाहू।

आपकी प्यारी बिटिया
चन्दा।

चन्दा नै पाती लिखिकै चोखे की डायरी मे धर दइ। अपने मन की विथा कागजन प उतार क, अपने कूं हल्को अनुभव कियो। हां, भय जरूर हतो क पिताजी कहू नाराज न है जाए। अम्मा अरु दादी कहू करमन नै न फोरिबे लग जाए। चाह तौ यही कै सबन को दुख दूर है जाए पर कहू उल्टो न पर जाए। कहू दुख अरु नई बढ जाए। पर मन की बात कूं, मन की विथा कूं चन्दा कब तक रोकती। कब तक घुटती। वाने सोची एक दिना जो होनी है बाए कर कर क छुट्टी पाऊं।

चोखें जब अपने कमरा मे आयो अरु बान डायरी म कछु निकसे भए कागज देखे तौ डायरी खोलिबो सुभाविक है। डायरी खोलिकैं दखी तो कछू लिखे भए कागज दीखे। सम्बोधन पिताजी कूं अरु नीच आपकी प्यारी बिटिया चन्दा। चखे समझ गयो चन्दा नैं अपन मन को बात पाती के माध्यम सौ कही है। चोखे एक सपाट मे ही पाती कूं पढ गयो।

मन कूं विश्वास ना भयो। मन नई मानो। आखिन न मलक, म्हो प हाथ फिरा क धीरज सौ धीरैं धीर एक पोत फिर पाती कूं पढ गयो। पढकैं बडो

अचम्भो भयो। छोरी के सुलझे भए विचारन नें वाकू झकझोर दियौ। एक पोत तो वाकू लगौ मानो वाके दिल दिमाग कू लकुवा मार गयौ होय। मन में उथल पुथल मच गई। माथौ पकरि कें बठ गयो। चन्दा की बात मानी जाए तौ कसैं मानी जाए ? समाज थू थू करगौ। लोग ताहने द द कैं मार दिगे। गल-गिरारेनमें निकसवौ दूभर है जाइगो। लोगन को हाथ पकरौ जा सक जीभ ना पकरी जाए। काऊ कछू न्हैगो काऊ कछू।

चोखे कू याद आई एक घटना। कोटा वारे बालकिशन के छोरा ओम न मैया बापनकी बात नाय मान कें अपने मनचाही अपनी जाति की छोरी ते व्याह कर लियौ। व्याह तो चुपचाप है गयौ पर थुक्का फजीते भौत भए। मया बापन नैं वू घर सौं निकास दियौ। अब वू अपनी बहू त लकैं अलग रह रह्यौ है। छोरा नैं तौ व्याह कर लियो पर छोट भैयान के व्याह की गल रोकें दई। समाज म ई ऐसौ वरियर है जाए देखिकै सब याहन रुक जाए। जब जब ओम के छोटे भयान के व्याह की चरचा चलई और ई बात मालुम परई तो लोग बिधक जात। या बात कू चोखे अच्छी तरिया जानतौ। दोनो प छन कू ऐसे व्याह सौ गरीबन के रस्ता बन्द है जाएं।

वाए दूसरी ओर दूसरी उदाहरण याद आयो। राधे के छोरा अशोक नें अन्तर जातीय व्याह कियौ। छोरी तो प्रभु गग की अरु अशोक बामन हो पर दोनोन को व्याह बडो धूमधाम सो भयो। दोना पच्छ सुखी। दोनान की मन चाही भई। फिर चोखे ने तुलनात्मक ढग ते सोची राधे अरु प्रभु तो देस के जाने मान मान्स हे। विनकी गिनती बडे लोगन म होय। बडे तो जो चाहे सो कर सकैं। कही कर बडे करें सो लीला, छोटे कर सो पाप। विनते अपनी बराबरी कैसें करी जा सकै।

याही तरिया चोखे के मन मे बिचारन को तातो लग गयो। मन भौत भारी है गयौ, नीद उचट गई। विचार आयो सयोगिता की नाई पृथ्वीराज की मूरति पै वरमाला टार दई तौ का होगो। या विचार नै चोखे कू और झकझार दियौ। अखीर में बासौं नई रह्यौ गयो बान राधा कू जगायो। राधा कू जगाय कै एक सग कसै कही जाए याकू त नई कर पायो। इत उत की बात करी पर राधा ओंगासूती कछु समझ नई पाई चाखे कब तक आय बाँय साँय करतौ अखीर म मुख्य बात प आयो। चन्दा की चिटठी की बात कही। राधा न चिटठी की बात सुनी तौ नीद हवा है गई। अब वाकी समय म आई क चोखे नैं वाकू चो जगायो है। राधा सुनत खम चौक परी। वान चन्दा की चिट्ठी कू सुननो चाह्यौ। चाखे ने रोसनी करी। धीर धीर चन्दा की लम्बी चौड़ी चिटठी वाची। चिटठी कू सुनकं गहरी चुप्पी छा गई। मौन तोरो राधा न—

वचन करत गरौ

' मै तौ पहलैं ई कहती पर तुमनैं कछू, ध्यान ई नईं दियौ, अब चोखी नाक कटगी ।'

"चौ नाक कटवे की का बात है ?

और का नाम उजागर हैवे की बात है ?

' नाई दुनिया मे लव मैरिज हू तौ है रही हैं ।

' लव मरिज करबे वारेन कौ नाम होय का ?

"नाम तौ होय चाए नईं होय, काम तौ है जाए ।

' ई तौ हार कौ नाम हरिनाम है ।"

"राघा तेरी ई भूल है । लव मरिज में मन चाहौ जीवन साथी मिल जाए ।'

"लव मरिज जितेक जल्दी होय बितेक ई जल्दी टूट जाए । आए दिना तलाक की कहानी अखबारन मे छपैं । भावावेस म करयौ गयौ ब्याह क दिना टिक पाव ।

' ऐसे तलाक तौ बिन ब्याहन म हू देखिबे कू मिल जिन ब्याहन कू मया बाप बड़े सोच विचार कै करैं ।

"अजी वा पछुआ हवा कौ चौ बखान करौ जहा की बयरबानी अपने धुरबारेन नैं जब चाहै तब दूध मे ते माखी की नाई निकास कै फेंक दें । हमारे यहा कौ सौ रस कहा ? मया बाप छोरा कू सोच समम कै कन्या कें अनुरूप चुनैं । फिर सगाई ते ब्याह लौं जो जो नेगाचार होय बिनते प्यार की गाठ ऐसी पक्की है जाए क दोनो एक दूसरे कूँ जिए मरे । छोरी कू पति आराध्य है जाए । परमेसुर है जाए । पति हू पत्नी कू अर्द्धांगीनी । दो देह एक प्रान है जाए । दोना जीवन साथी बनकैं जीवन भर सरस जीवन बितावें ।'

' पर अब का कियौ जाए । एक तौ गाठ म पइसा नईं । दूसरे जहा कहू जाए म्हाँ हमारी गरीबी कू देखिक कोऊ बातई नाय कर ।

तौ कोऊ गरीब गुरबा ई देख लेओ । चार रौटी की ठौर प एक रोटी दकैं हाथ जोर लिंगे ।

तुम गरीब गुरबा की बात कर रही हो । आज तौ बटा वारेन के म्हौ फट रहे है । काऊ की छोटी सी हू नौकरी लग गई है तौ बू हू लाखन कें सपने देख ।

तौ फिर चन्दा जाए देख रही है बू कौन है ? कौन जाति कौ है ? मैया बाप कौन है ? घर घूरौ है क नाए ? सब कछू देखनौं परयौ ।

"अरी परमेसुरी चिटठी म सिगरी बात साफ साफ लिख दई हैं जहा छोरा होनहार है भविष्य उजरो है म्हा फिर घर घूरे छान छपरिया दयिब म का तुक है। चोखे की बेटी नैं चोखो ई सोचो है। वू खोट की बेटी नाए '

'भाई जाति पाति तो देख लेओ। काऊ आन जात को भयो तो मोहल्ला बस्ती म कोऊ बोलन हू नई देगो। जाति म ते बाहर निकास दिए तो जीबो दूभर है जाइगो।

"अब इन बातन कू चन्दा ते तू करियो। मैं हू छोरा को अतो पतो पायकैं जाँच परताल करूगो। पर देख, अब जात पाँत के दिन तो लद रहे हैं।"

घनी रात तक चोखे अरु राधा बातचीत करते रहे। चोखे न अपने मन की बात कहकैं मन को बोझ हल्को कर लियो। अब राधा को मन उलझन म परि गयो। वाकी नींद उचट गई। रात भर करबट बदलती रही। कबऊ अपनी गरीबी की अरु कबऊ चन्दा के ब्याह की विचार करती। सोचिबे लगी कब भोर होय अरु कब चन्दा सौ बात करी जाए।

काल की गति काऊ कू रुक नाहैं। हा विपत्ति मे फसे मानस कू लग कै सम धीरे धीरे निकस रह्यो है। परदा पार करबोऊ ऐसो लग मानो पहाड पार करनो पर रह्यो होय। सुखद जीवन बिताबे वारेन के हाथन म ते सम बालू की रेत की नाई खिसकतो सो दिखाई दे। राधा कू रात भारी पर गई। राधा सम सौं पहलै उठिक काम काज माहि लग गई। वू तन ते काम म लगी जरूर ई पर मन चन्दा म ई उरझ रह्यो। कब चन्दा जगै कब बातन कौ अरथ दकैं सकट दूर करू।

चन्दा जैसे ही जगी, राधा लपकी। और दिनान की ठौर मया कू बदली सी देखिकै चदा समझ गई कि चिट्ठी की करामात है। पिताजी सौ छनक बात मया तक आ गई। चन्दा हू तयार है गई। ओखरी मे सिर दियो तो मूसरन ते का डर ? या यो कहो तेल पेट कू आयो तो लफावे त का होय। अब राधा अरु चन्दा की बातचीत प्रारम्भ भई—

'चन्दा तैंनें अपने पिताजी कू तो चिट्ठी लिख दई मोते कछू ऊ नई कई।

अम्मा भय झिझक अरु सकोच के मार नाय कह पाई।

'फिर इतेक लम्बी चौडी चिट्ठी लिखवे मे ।'

हाँ अम्मा कछू बात ऐसी होय जिन्नै म्हो ते नाय कह पावैं बिन लिखिक सुविधा सौ बता सकै।'

"पर बेटी जा छोरा कूँ तू देख रई हैं, वू कौन जाति कौ है ? मैया बाप हैं कै नाय ? कहाँ को रहवे वारौ है ?"

"अम्मा, अब समै बदल गयौ है अब जाति पाँति की बात सोभा नाय दें। छोरा सुयोग्य हानौ चइए। मैया बाप कब तानू कौन के संगी होय। हाँ मोय इतेक पतौ है क छोरा कौ नाम चकोर है। बी ए म टौप आयौ अरु अब एम ए मे ऊ टौप आवगौ।"

'कहा कौ रहवे वारौ है ? इतेक तौ पतौ होयगौ ?'

'यौं नई डीग के पास अऊ गाँव कौ रहवे वारौ है। घर म मया ई मया है। घर घूरौ कछू नाँय। गरीब हालत है। चकोर अपने पाँयन प ठाडौ है। अपने आप पढ रह्यौ है।"

'पर बिटिया गरीब के घर जाइबे म ।"

'यौं गरीब का मा स नाँय होय। नीयत ठीक होनो चइए। हमऊ तौ गरीब हैं। लच्छमी तौ आती जाती रहै। फिर गरीब के घर जाइव म का चिंता की बात है। गरीब के घर जाइवे म तौ सौभाग्य माननो चइए। जो अपनी बिटिया कूँ अपने त ऊँचे घरन माहि दैं बिनके का हाल होय, वे काऊ त छुपे नाँय। छोरीन कौ कोऊ कदरऊ नाय कर। बाए तौ घर की नौकरानी समझैं। बाए ऐसैं दाब क राख मानौ जड खरीद गुलाम होय। ठोकरन मे ठुकरावैं।"

"पर तोय विसवास है क चकोर बिना दहेज के तोय स्वीकार कर लगौ ?"

"अम्मा, वाके विचारन सौं अरु वाके मच प भासनन त तौ मोय पूरौ भरोसौ है।'

'बिटिया, मच पै कहबौ और बात है जीवन म उतारिबौ और बात है। हाथी के दात खाइव के और होय, दिखाइव के और हाय।'

'नाँय अम्मा, चकार कोऊ ऐसौ नता नाए जो कहै कछू अरु कर कछू। वाकी कथनी करनी मे भेद नाए। वू तौ गुड की पुआ है बाहर भीतर ते एक सो। वाकौ सादा जीवन उच्च विचार तौ सबकू सुहाव।'

तेरी मरजी बिटिया, पर सोच समझ कै कदम उठाइयो, कहू ऐसौ नइ हाव पै पीछैं पुकरा फजीते हाय।'

'अम्मा, काम तौ सोच समझ कैं ई करुंगी पर भाग त तौ काऊ की पता नाय पाय। राजा राम की साधि कैं लगन धरी पर तोऊ बन-बन भटकनो परौ तारा, दमयती की विपदा की कथा काहू त छिपी नाय। हमारौ धम है, करम करैं। हा काम करब म काम बिगर रह्यौ हाय तौ बुद्धि कूं नई बिगरन दें।

बिटिया के इन विचारन कूँ सुनिक राधा कूँ भरासौ है गयौ क चन्दा पक्क पैराएन प है। चन्दा न हू राधा कूँ पूरौ भरोसौ दिवा दियौ क भाग्य अपन अनुरूप गति अरु मति दे। होनी बडी प्रबल होय। कही है, 'करम गति टारे नाय टर।"

अब चन्दा कूँ चिन्ता परी अपने सपन कूँ साकार करवे की। कहू दवौ आसान है पर करिवौ भौत कठिन। जा कठिनाई चन्दा के सामई आ रही वात ज्यादा कठिनाई चकोर के सामई आवे वी। एक तो वाके ताइ एक त एक ऊंच धर क, अच्छे पइसान वारे ढोल प ढोल दैरहे। निहोरे कर रहे। दूसरे जाति पाँति वी अबई वाऊ कूँ पतो नाई। चन्दा न तौ आनजात म ब्याह करव कौ निरनय कर लियौ पर चकोर आनजात कूँ स्वीकार कर लगो, ई बडी टेडी खीर ई। खर चन्दा नै चकोर सौ साफ साफ वात करवे मे ई सार समझो।

गर्मीन के दिना हे। छुट्टी चल रही। कालिज लगतो तौ आसानी सौ भेंट है जाती। यासो चन्दा नै पाती डार कैं चकोर कूँ भरतपुर बुलाइव को निहच कियौ। पाती गोल गोल लिखी गई। पर पाती को तोर या तरियां कियौ क रोटी अऊ म खावे तौ पानी भरतपुर आइक पीव।

पाती कूँ पाइकै चकोर की धडक्न बढ गई। बान भरतपुर जाइवे की अपनी मया सौ पूछी और फिर हडबडातो भयौ सूधौ भरतपुर गयौ। पाती का मिली मानौ बिल्ली के भागन ते छीकौ टूट परौ होय। याके पहल चकोर वाके घर नाय आयौ, पर वाए चन्दा के घर को पूरौ अतो पतो हतो। चन्दा वाकी मेह की सी बाट देख रही। चकोर क आते ई चन्दा, चदा की नाई खिल उठी। चन्दा चकोर कूँ बठक मे बठाय कैं आवभगत की बात तौ भूल गई पहलै अपनी पाती की बात पूछ बठी—

आपकूँ मेरी पाती मिल गई होगी ?

पाती नइ मिलती तौ चकोर चन्दा के पास को आतो। चकोर कौ आइबौ इ पाती मिलिबे कौ प्रमान है।

'ई मेरो सौभाग्य है कुआ प्यासे के पास आयौ है।

चन्दा याको निहच करबौ बडो कठिन है कौन कुआ है ? कौन प्यासौ है ? हा इतेक वात जरूर है क चकोर तौ चन्दा के पास ई आव।

आप तौ कवि की सी बानी बोल रह हौ कौन कुआ है कौन प्यासो है याको उत्तर तौ मनई कर सक।

"हा जो तिहारो मन कह रह्यो है वुई मेरो मन कह रहो है।

चन्दा वातन में इतेक वह गई क खारी मीठौ पानी की ऊ बात भूल गई। वू भगी भगी भीतर गई अरु ठन्डो पानी लैकैं पौन की गति सों लौटि कैं आई। चन्दा के पायन म पख लग रह। पाव धरती प नाय ठहर रहे। रोम रोम हस रह्यौ। ठन्डो पानी सामने रखत भए बोली,

'चाय पिओग क सरवत ?"

जब तक चाय बनै तब तक सरबत ई पी लिंगे।" कहकैं चकोर खिलखिला उठौ। बात ज्यादा खिलखिलाहट चन्दा नैं बिखराई। ऐसे परिहास कौ मधुर पान करते भए दोनौं अलौकिक सुख म खो गए। चन्दा एक पोत फिर भीतर गई।

चकोर चन्दा के कमरा की साज सज्जा कू देखतौ रह्यौ। पौराणिक चित्र टगे भए। एक ओर सकुन्तला की विदाई को चित्र टग रह्यौ, जामें कण्व रिसि कौ आस्रम दिखाई पर रह्यौ। एक ओर सकुन्तला नन नीचे किए सासरे चलवे की तयारी कर रही। हिरनी नैं अपने म्हो ते वाको पल्लो पकर राखौ, लग रही पूछ रही होय "परदेसिन बनकैं कहा कू जा रही है ? एक ओर बेलन स फूल थर रहे दूसरी ओर सकुन्तला के ननन सा आसू टपक रहे। काने म कण्व रिसि आसू बहा रहे। चकोर ऐसे भाव चित्र कू देखिकैं भाव विभोर है गयौ। मन ई मन सोचिवे लगौ जब हिमालय जसो रो परै तो सासारिक जीवन कौ रुदन करिबौ सुभाविक है। चकोर की टकटकी चित्र माऊ लग गई। चकोर फिर सोचिवे लगौ, 'सपनौ देख रह्यौ हू क मन की भावनान कू टगो भयौ देख रह्यौ हू। जो भीतर है सोई बाहर है। राम जान का हौनौ है। तबई चन्दा सरबत के गिलास ट्रे में सजाइ क ल आई। -

धीरैं धीरं सरबत पीते भए चन्दा अरु चकोर बतरामते रह।

चन्दा चिट्ठी तौ ऐसी भेजी, मानो कोऊ आपत्ति को पहार टूट परौ होय पर अब कछु ऐसी बात मालूम नाय पर रही।'

"आपकू तौ मालूम नाय पर रई पर अबइ आपकू वताई कब है। जब सुनोगे तौ मान जाओगे।

"तौ बताऔ ना मेरौ मन तौ जब ते पाती पाइ है तबई ते धुकर-पुकर कर रह्यौ है। तिहारे होठन प हसी फूट रइ है।

ई हसी तौ आपकू देखि क मा रही है, मन का सदा एक सौ रहे। जब सुख की बात हाथ लग जाए तौ मन सिगरे दुख दरदन न भूल जाए। जब दुख को पल्लौ भारी है जाए तो सुख कपूर है जाए। ऐसे तो राजा राम इ हे राजतिलक की बात सुनाइ तो सुख को रेख हू दिखाइ नई परी अरु जब बनवास की सूचना दइ तौ रचमात्र दुखनई व्यापौ। समरसता कौ भाव हम सासारिक जीवन म कहा ?

'चन्दा राजा राम हू तौ हमारी तिहारी तरिया जन्मे। हमारी तिहारी तरिया बड़े भए। हमारी तिहारी तरिया खेले-कूदे, हसे हसाए। हा विनम ज्यादा गुन हे याही सो बिन्नै दुनिया पूज। हमे याही को तौ अभ्यास करनौ पड़ए। जितेक मानस क समरसता कौ अभ्यासी है जाए बितकई वाकौ मान बढ़ जाए।'

या अभ्यास कौ ई नौ सिगरौ खेल है। ई अभ्यास का बातन सो है जाए।"

"ठीक है चन्दा, अच्छे कामन मे मन लगाव के ताई बार बार अभ्यास करनौ चइए। इ कष्ट साध्य तो है असम्भव नाए।"

"असभव तौ कछू नाए कल्पना सक्ति के बल पै सही है जाए। सक्ति नई होय तौ झूठी पर जाए।'

'चन्दा, जीवन दरसन की बात ई करतौ रहैगी कैं जाके ताई बुलायौ हू बा बातऊ कू बतायगी।

बात अबइ बतानी बाकी है का? मरे घर को सिगरौ सामान आपसौं सब बात कह रह्यौ है। मै समझ रही हू अब कोऊ बात कहबे की नाय।'

'चन्दा तू पहेली बुझा रही है। मै जाननौ चाह रह्यौ हू क मै चौ बुलायौ हू?

'तौ सुनौ एक पोत 'भारतीय समाज म दहेज दनौ साधक है' या विस प बाद बिबाद प्रतियोगिता भई। याद है ना?"

"हा खूब याद हैं।

ता समै आपनै दहेज के विरोध मे जो विचार रखे विनकी याद है ना?

हा, बिनकी हू खूब याद है।

मै न आपत वा सम ई कही क य विचार होठन तकई है क जीवन म उतार जाइगे?

'बाहू की मोय खूब याद है।"

तौ अब बू सम आ गयौ है। अब कथनी अरु करनी कू कसौटी प कसबे कौ सम आपके सामइ है।'

चन्दा मैंन जौ कही बाए अब ऊ दुहरा रह्यौ हू। सम आन द दै।

'अब समै आबे म का देरी है। आपको एम ए की पढाइ पूरी भई।"

'पढ़ाई पूरी तो करऊ है ई नाय सक। घर पेट के ताई पढ़ाई पूरी है जावे
। घोरई आव। अब तो जब तक छोरा अपने पामन प नइ ठाडो है जाए तब तानू
बात करिवो बिरथा हैं।

"मापकू पांमन पै ठाडे हैब म का दरी है। पनारे घर हैं तौ चुचावेंगे ई।'

माहो आता प तो दुनिया टिकी है पर अबई मेरे सामई बखढे म्हो फारे
है ? ना नौकरी ना चाकरी, ना घर ना पूरो, ना खेत ना ब्यापार। फिर बता,
ौनो के बिना कोरिया स सठम लठा करबे म कौन सी तुक है।'

"अजी आप अपने मन म नितेकऊ सकुचाओ पर आपके ताई तो अनेकन हाथ
ए रहे हैं। आपको परिच्छा परिणाम आवे की देर है। आपको पहलो स्थान आउगो
यूनीवरसिटी आपकू हाथा हाथ लगावेगी।'

"चन्दा तू तो बडी भोरी है। आगे की बात कौन न जानी है। पहला अरु
ो स्थान नईं आयो तो कोऊ टका सेर क नाय पूछगो। फिर जती चढकामत
ाौ परैगो। देख ना रहो बरोजगारी सौं का कुगति है रही है। पढे लिखे सब
ारी चाहरै। पाऊ मेहनत सौं पमाय कै खाइबौ पसद नाय करै। नौकरी लग
; बस या फिराक म डोल। नौकरी लग जाव वे पीछै सरकार के मेहमान वन
;। मूछन प ताव दब खामे अरु गुरावै।'

'या बात कूँ तो मै सब ठौर देख रही हू कॉलेज म ई देख लेयो कौन
ाव पढ़ावैं।'

'चन्दा, सबन की आखन को पानी उतर गयो है। जब बिना पढाए काम
। जाए तो चौं पढ़ावै ? डर तो सबन को निकस गयो है।"

पर ईसुर ते डरब वारे कम करबे वारे अब क हुतैं।

"चन्दा दुनिया म ऐसे नईं होय तौ धरती कस टिक। हमारे कॉलेज म
ाजी ह अपन काम ते काम रख। घटी वजते ई कच्छा म आव। याही सौं भरतपुर
सब लोग बिनके खूब गीत गावैं।'

'सर्माजी कूँ तो मै हू जानू जो ट्यूसन कर।"

'हा म ई ट्यूसन वारे सर्माजी। ट्यूसन तो कर पर कालेज म हू खूब पढावै।
ूसन करबौ कोऊ बुरो नाय। कोऊ पाप नाय, पर कर ईमानदारी सौ। सर्माजी ऽ
े ते ई मेहनत करैं। मेहनत नईं करैं तो कौन बिनक पास फटक। सब चमत्कार
ँ नमस्कार करैं।"

"आप का बिनते कम परिगे। प्रोफेसर बनते ई हल्ला मच जाइगो।"

"मै फिर कह रही हू, आग आगे वारे समै मे जिंदे म कहुबो याहू क वस की बात नाय। मै एम ए मे टोप कर गयो तउई पछू रह् सकूगो।"

'आप भलई तब कहियों मै तो अबई भविस्यवानी कर दऊँ कै आप टोप आजौगे।'

'चन्दा बात साँची भई तो तिहार म्हों म घी सककर।"

'मै तो घी-बूरो पीछे लुगी पहलें आप मोय वचन तो देओ। मेरे पिताजी की गरीबी की कहानी अब उजागर है गई हू। कबहू या घर की पूछ हुती पर चार साल ते पर रही सूखा न हमारी हालत खस्ता कर दई। अब पिताजी पर म गाड़ कू कसे खेंच रह हैं वे ई जान। जिनके सामई मरे ब्याह को सवाल हू। अम्मा अरु दादी या दुख सौं भाधी रह गइ हैं। मै न आपक विचारन सौं प्रभावित हू क अपनो विचार सिगरे घर क सामई रख दियो है। अब आप जानो अरु आपको काम।"

"चन्दा तू तो भौत आग बढ गई है तन जाति-पाँति पूछी नइ। नात-गोत बचाए नई। मरो घर घूरो देखो नई। मरो परिवार जानो नइ। मेरी माली हालत देखी नई। मेरो और तेरो का मेल? कहाँ राजा भोज, कहा गगू तेली।

'घों उल्टी गगा बहा रहे हा? सम्बन्ध ईट चूने सौं नाय होय, सम्बन्ध रोटी सौं नाय होय, सम्बन्ध आदमीन सो होय। समै की उल्टी बयार बह रही है। आज कल नामसम्बन्ध सम्बन्ध कू रोटी, कपडा अरु मकान कू स्थान द रहे हैं। रुपया त सब चीज खरीदी जा रही हैं। रुपया तेई सम्बन्ध खरीदे जा रहे हैं। समझदार या बात कू समझ।' वे कहैं कुआ की माटी कुआ म ई लग जग। जो रुपया ऐ, बाए बेटी वारो ब्याह म पूरो खच कराले। नोन नोन बह जाए राई राई रह जाए। दूसरी बात जो जाति पाँति नाते-गोत की मेरे सामई राखी है। ये सब हमारे ई बनाए भए हैं। ये कहूँ ऊपर ते बन कै नाँय आए।

'चन्दा जो तू कह रही है वू बावन तोला पाव रती सही है। 'जाति पाँति पूछ नई कोइ हरि को भज सो हरि को होई मै तिहारी बात को समथक हू। मै तो समाज के या कोढ कूँ खुद हाथन सौ जर मूरि सौ उखाड दैनो चाहूँ।'

'अबई तौ आप अकेले हौ, जब हम और आप दोना मिल जाइगे तौ आपकूँ और सुविधा मिलैगी।'

'चदा, सुविधा सौ काम नाँय बन। सुविधा सौ मानुस और आलसी होय। मानुस के मन म कम की आग लाग अरु लगन चढ़ए फिर तो मजिल अपने आप पास आती जाएँ।'

"आपकी बात कू मै काट नाँय रही, पर मेरो मतलब है, साध्य के पाबे के ताँई साधन हू औत जरूरी है।'

"चदा जब मन म लगन होय तौ साधन अपने आप जुटते चले जाँय। महात्मा गाधी के मन म लगन हुती तो सब साधन अपने आप जुटत चले गय। अपने आप मांजल आती गई सुनी है क नाय जहाँ चाह तहाँ राह।'

'बिल्कुल साँची बात है, याकी पुष्टि तो बाबा तुलसीदास नैं हू करी है 'सिमिट सिमिट जल भरहिं तलावा जिमि सद्गुण सज्जन पहिं आवा।'

"बस तो ई कम की लगन हम तुम दोनो के मन मे होनी चाइए।

"याही बात कूँ तो मै दुहरा रही हूँ। जब एक विचारधारा के दो मा'स हूँगे तो बात जल्दी पूरी होगी। काहू नें कही है एक अकेलौ दो कौ मेलौ। एक और एक मिलिकें ग्यारह होय। अब तौ आपकी स्वीकृति चइऐ। एक पथ दो काज हु ग। हमारे परिवार कौ सिगरौ बोझ हू हरको है जाइगो।

'चदा मोय चो लजा रही है। ई तो मरी सौभाग्य होयगो। 'च'दा' जैसी लच्छमी मर घर आवगी। मर घर म उजेरो है जाइगो मेरे सोए भाग जाग उठेगे।'

"अच्छी उल्ट बास बरेली कूँ लाद लिए। मैं आपसो तक नाय कर सकूँ। वाद विवाद प्रतियोगिता म हू तो आप आगै रहे। फिर बातन म, मै आपसो कस जीत सकूँ।

'ई आपन अच्छो हथियार चलायो। तरवार के वार ते कोऊ भलई बच जाए पर फूलन की मार त बचिबौ कठिन है। अब हमारे पास कोऊ श्रोखर नाएँ जिनैं आपके सामई परौस। हाँ इतक जरूर है क अपने मया बापन सौ पूछ लेऔ। आगै बढिक फिर पीछो हटिबो नइ चइए।

"ई बात तौ माय कहनी चइए क आप अपन मैया बाप ते पूछ लेऔ।'

'च'दा तोय ई ऊ नाय पतौ के मेरे आगे पीछे मैया ई मैया है। बाप तौ मोय गादी म ई छोडि क चलौ गयो। मया नें सिगरे अधिकार मरे ई ताई सौंप राखे हैं। हा इतेक जरूर है मया ते ज्यादा गाँम है। गाँम की बात जरूर जरूर माननी परै। गाम म मा'स गाँव के ताँई होय। गाँम की बात मा स की होय। मा'स की बात गाँव की बात होय।

'या काम म गाम आडौ आयो तौ फिर कस बात बनयौ ?

गाँम वारन कूँ समझानों परैगो। गाँम के लोगन कूँ विसवास म लनो परैगो।

'अब कछू और पूछताछ करनो है सो कर लेओ। पानी पीकै जात पूछनी सोभा नाय दे। इतेक तौ ध्यान म रखियों कैं हम जाति सौं वाढ़ई वामन हैं।"

वामन तौ हमऊँ हैं फिर तौ कोऊ कठिनाई की बात नाय। वेसऊ जाति पाँति की बात अब तौ दूर हैं। हम सब एक हैं तँनेई तौ कही है—जाति पाँति हमार ई बनाए भए है।

मैंनें तौ कही है, पर आप मानो जब हो।'

अरे हमई नई मानिंगे तौ कौन मानैंगो? हम पढ लिख कऊ, इन समाज की कुरीतीन न समाज के ढकोसलान नें नइ मिटाइंगे तौ कौन मिटावगो? नए स्वतन्त्र भारत की रचना कौन करगो?"

तौ फिर बात आगें उठ? सम स्थान, विधि विधान कौ त करिवौ आपके हाथ है।'

चन्दा जो काम तम मोकूँ सौंपा है वाए मैं अपनी पूरी सामर्थ्य सौं पूरौ करिबे कौ पूरी प्रयास करूगो। जो भार मोपै है, वाए उठाइव की पूरी कोसिस करूगो। जा जुआ कूँ मेरे कधान प राखो है, वाते मैं कधा नइ डारूगो। बात अब बाप बराबर होय। ई तौ नए युग के मनचले छोरान की बात है क गाडी कौ पहया अब राड कौ चरखा चलतो ई रहै।

चन्दा कूँ पूरो भरोसो दकै, चकोर अपन गाम लौट आयो। चदा नें चन की सास लई। वानें सिगरौ किस्सा अपनी मया कूँ सुनाय दियौ। राधा या बात कूँ सुनिक वडी खुस भई क चकोर वामन है पर एक आसका घर कर गई क वामनन कौ वाढ़ई वामनन के सग सम्बन्ध नाय होय। कहूँ चकोर की मैया न ई बात नई मानी तौ सब गुड़ गोवर है जाइगो। चकोर जा गाँम म रहै वू या बात कूँ कसैं स्वीकार करगो? कहूँ गाँम नैं चकोर कूँ दबायो तो बात कैस बनेंगी?'

राधा जब इन विचारन म तैर रई तबई चोखे बाहर सौ आयो। वानें चकोर क आइबे की बात सुनी तौ भारी पछतायो। सोचिब लगो, "कहूँ मैं होंतो तौ छोराए भली तरियाँ देख लतो। दो दो बात है जातो। मन भर जातो। पर राधा नें समझायो बात बन गई तौ सौन म सुगन्ध समझो।

चाखे ने जब चकोर की बड़ाई सुनी तौ बाछ खिल गइ। सोचिबे लगो अबै वे हाथ बटर ता रही है पर वाए ईऊ परसोवसा याद आयौ मब मरौ तब

जानिए जब चालीसा होय। बडे बूढे कह गए हैं, हरी खेती ब्यावन गाय जब जानो जब म्हातर आए", काऊ नें आंधरी त कही क तेरो भैया आयो है, बात कही भैना कह तो भोत रहीं हैं, पर जब भुजा भरके भट लुगी तब जानूँगी। सोई चोखे न कही माटी मड लग जाए तब है। मसखरान प ते भस चौख लई जाए तब है।

विरोध के सुर

भरतपुर ते चकार सीधौ अपने गाँम अऊ आयौ। मन कबऊ मौन नाँय रहे। वाम तौ विचारन की ताँतो आतो जातो रहे। ताने बाने पुरते रह। मनऊ तौ एक सागर त कम नाएँ वामे बिचारन की लहर बनती बिगरती रह। भरतपुर त अऊ तक आत समै चन्दा को रूप अरु ब्यवहार चकार कूँ झकझोरतो रह्यो। चकोर हू तौ हाड माँस को पुतला ह्यो ईट पत्थर को तो हत नांओ। जा कछ सुनी अरु समझो देखी अरु समझी वाको प्रभाव परिवो सुभाविक हो। चन्दा के रूप के सामई वू झुक गयो। रूप क सग वाकी विचारधारा वाकी समाज सुधार प्रवृत्ति मन ते मिलती भावना मव चकार के मन म बसती गई। प्रकृति मिलव त मन ऐसे मिल जाएँ जस दही त दूध जम जाए। या तरियाँ वाको मन खूब पक्का है गयो। कमी रही तो अपनी मैया की 'हाँ' की छाप लगवे की।

घर आइके अपनी मया सों अपन मन की बात कहवे कूँ औसर की ताक म लग गयो। जब-जब मन की बात होठन तक आती, लोकलाज होठन कूँ खोलन नाँय दैती। मन ई मन मे घुटिबे लगो। अब वाए दो चिन्ता ब्याप रही। एक तौ एम ए म टोप आइवे की। चारा ओर हल्ला तो है गयो पर परिणाम म कहू रोडा नई अटक जाएँ। कहूँ दूध म माखी नई परि जाए। कहू खीर म कन्कड नई आ जाए। दूसरी चिन्ता ई चन्दा की। कहूँ वाकी मया अरु गाँम ग्रान जात की कहूक बाधक नह बन जाएँ। कच्च धागन के तान बाने ते बुने सम्बन्ध कूँ चन्नाय क नई तोर द नई तौ चन्दा अरु चकोर की बसब वारी बस्ती बसबे सो पहल उजर उजर जाइगी। जीवन नदिया क एम दो किनारे है जाइगे जो कबहू चाहब पै हू मिल नइ पाइगे। मया अरु गाँव वारे बाधक बन गए तौ चन्दा के सामई कसै जायो जाइगो, कसे चन्दा कूँ म्हो दिखायो जाइगो।

याही सो एक दिना समै पाइके चकोर न मया के पास बठिकै अपने मन की बात कही—

'मया अब कब तक तू चूल्हो फूँकती रहैगी ?

"बेटा, जब तक मेरे भाग म है।"

'मैया, भाग तो अपने हाथ की बात है।"

"अरे बेटा कसो बावरो है रह्यो है। सुनी नाँय भाग सौ अधिक अरु समै सौ पहल कछू नाँय मिल।'

'अरी ग्रम्मा, भाग्य तो प्रारब्ध सौं कहैं, प्रारब्ध को मतलब है पूव संचित करम, पहल जितेक करम किए बिनते अब भाग बनो। अब जो करम कर रह हैं बिनत आग को भाग्य बनगो। भाग्य तो मया करमन सौं बन।

'बेटा करम अरु भाग्य को झगरो तो युग-युग सौ चलो आ रह्यो है। जग मे ऐसौ कोन चाहे कै वू घास खोद? हर एक राज चाहे पर जाके भाग्य म हाय वू ई तो राज पाव।

मया, सकल पदारथ हैं जग माही करमहीन नर पावत नाही' करमन सौं जो हीन है बाकूँ पग पग प सक्ट उठाने परै। बाऊ न कही है करमहीन खेती कर, बल मर क सूखा पर। मैया मानुस करम कर तो सुप पाव। करमन क आग भाग कूँ झुकनो परै। सुदामा न द्वारका जावे को करम कियो तो भाग फलो।'

'बेटा भाग्य के आगें करम धरो रह जाए। भाग्य मे हाय तो छप्पर फार क दे। नौ निधि और बारह सिद्धि पूरी होय। भाग्य म ना होय तो सब खेल बिगर जाएँ नौलाख के हार कू खूँटी निगल जाए।'

'मया बात समझ म नई आई।

तो बेटा सुन, भाग के सामई लक्ष्मी न खूब कम किए पर लक्ष्मी न हू हार मानी।'

कस मया?

"एक पोत लक्ष्मी अरु भाग्य म होड पर गई। लक्ष्मी बोली मै बडी हू, भाग्य बालो मैं बडो हू। जब दोना की तू तू मै मै ज्यादा बढ गई तो भाग्य बोलो दख लक्ष्मी सामने खेत मे किसान हर चला रह्यो है याए तु खूब सोने चादी, हीरा, मोतीन सौं निहाल कर द। दख ई मालदार है हू जाए। या बात कू सुनिक लक्ष्मी भजी भजी वा किसान के पास गई। बाकू एक सोने की ईट दक कही, ल या सोने की ईट ल जा अरु मौज मार। अब खत जोतिब की जरूरत नाएँ। किसान न कही अरी पनमेसुरी अधे कूँ दो आख चइए"। जब घर बठे मोय सब कछू मिल रह्यो है तो मै काइकू आऊँगो।

किसान वा सोने की ईंट कूं लकें अपने घर पहुँचो। वा धन वारी वहू परोस में काहू के घर नाज पीसिबे कूं गई। किसान कूं इतक सवर कहा ही। वू वा साने की ईंट कूं चूल्हे के राए में धर के वा। राख ढक के अपनी वहू कूं बुलावे चलो गयो।

इतक मे एक परोसन आंच लव आई। वान देखौ किसान के घर कोऊ नाएँ। वान राए में ते आंच निकासी तो सोन की ईंट दिखाई परी। वाएं हुवा करो ना धवक वा सोन की ईंटें लऊ चली गई।

जव किसान अपनी वहू कूं लवें हुलसो हुलसो घर आयो अरु अपने मालदार हैवे की किस्सा सुनात भए चूल्हे के राए में ते सान की ईंट निकास के वय कूं हुम्रो तो दंग रह गयो। रायो खालो पावो। राखई राख दिखाई दई। किसान की वहू कूं निहचे है गयो के बाके घरवारे कूं भ्रम है गयो है, के दिमाग खराब है गयो है, चौंके राए में सोन की ईंट को का चल माटी की ऊ ईंट नाईं। किसान की वहू ने वाकूं खूब सुनाई। किसान मूंड पकर के अपनो सो म्हौं लवें रह गयो।'

"भैया ई नो वू वात भई, चालनी में दूध काढ करमन कूं टटार।"

'बेटा आग की बात तो सुन, दूसरे दिना किसान फिर खेत जोतिबे पहुँच गयो। भाग्य ने कही, लक्ष्मी, किसान खेत जातिबे क्यों आ गयो? लक्ष्मी किसान के पास पहुँची। किसान ते पूछी तो किसान ने साँची साँची बात कह दई। लक्ष्मी ने वाकें एक नौलखा हार दियो अरु कही याए हिफाजत ते रखियो। यासौं जीवन भर, घर बठे खइयो। खेत प आइवे की जरूरत नाएँ। किसान वा नौलखा हार कूं लैके भगो भगो घर आयो। दुरभाग्य सौं फिर बहू घर नाईं। वाकूं इतेक सबर कहा ही के बहू की बाट देखतो। वू वा नौलखा हार कूं भीतर खूंटी पै टाँग के बहू कूं ढूंढिव निकस परो। नौलखा हार कोठे के अंधेरा में चकम रह्यो। चील ने समन्दी के ग्याप है साइ वा नौलखा हार कूं लैके अपने घोंसला मे जा पोंचो। जब किसान अपनी वयर कूं लकें लोटा अरु नोलखा हार दिखानो चाहो तो वू असमंजस में आ गयो। खूंटी सूनी मिली। वाकी वैयर कूं पूरो विश्वास है गयो के वाको खसम बावरो है गयो है। किसान कूं बाकी बहू ने हजारन सुनाई। किसान नऊ हजारन सौगंध खाइ पर सौगंध ते का बिसवास आवै'।

तीसरे दिना किसान फिर अपने हर बलन नै लक खेत माँहि दिखाई परो। भाग्य ने फिर लक्ष्मी कूं कुरेदो। लक्ष्मी दौरी दौरी फिर किसान के पास गई। किसान की राम कहानी कूं सुनिके लक्ष्मी हू हैरान है गई। वान तीसरो अटा मोर वारी वात कहके किसान के ताईं एक वेसकीमती मोती दियो अरु कही किसान कान खालिक सुन ल ई तेरे ताईं आखिरी भेंट है। ई मोती इतनो कीमती है के याए वेचिक

तू जीवन भर बैठिकैं खा मक पर गए राखियौ मच्छी तरियाँ। किसान मोती कू अपनी जेब म धर क घर कूँ लौटो। रस्ता म परी नदी। बाए लगी प्यास, माई खुशि कै पस्सन म भरकैं पानी पियो। पर आपके बान अपन कुरता की जेब म त मोती निकास कैं अपनी बहू कूँ दनो चाहो, पर हाथ डार्यौ तौ जब खाली। किसान सकपका गया। सोचतरो मो अपनी घरवारी कू देखतो रहो। घरवारी के माथे पै बल पर गए। घरवारी न अपनी सूँझर मन करकैं निकासी। किसान नैं अनुमान लगा लियो क बीच नदी म जा समै पानी पियो ता सम मोती नदी म गिर गयौ हागो। किसान लम्बी साँस नक रह गयो।

चौथे दिना किसान फिर खेत माहिं तिक तिक करतो दिखाई परो। भाग्य नै लक्ष्मी कूँ फिर झकझोरो। लक्ष्मी उदास है गई किंगरे प्रयाग घूरि मे मिल गए। भाग बोनो अब मेरे मेल देख। साई भाग एक ताबे के खोट पइसाए किसान कूँ देवे पहँचो। किसान बोलो, भया चों हँसी करन आ गयो है? जब सोन की इट, नौलखा हार, अरु मोती ई काम नई आए तौ ई ताँबे कौ घिसौ सिक्का का निहाल करगो? भाग नै बू ताँबे कौ खाटो पइसा जबरन वाके माथे मढ दियो। याते कही 'अरे तोय ई नाय पतौ खोटो पइसा खाटो बटा सकट म काम आवै।

घर आइके किसान नै दखो कै घर म खाइब कूँ कछू नाएँ। बू बलन नैं बाध क बाजार गयो। साझ है गई। बजार बद ह रह्यौ। एक मच्छी वारौ बची भई सडी मच्छीन नैं औने पौने बेच रह्यौ। किसान वा खाट पइसाए लकैं बाके पास गयौ। मच्छी वारो बोझ हल्को करनो चाह रह्यौ। बानें एक सडी सी मच्छी वा खोट पइसा के बदले म किसान कूँ द दई।

मच्छी लाइक किसान नै अपनी घरवारी कूँ द दई। किसान न कही तू याए बनार। मै उपर नीम प चढिकै सूखी लकरिया तोरूँ। किसान की बहू न मच्छी धोय पौछि कै बनारी तो बाम मोती दिखाई परो। किसान न सूखी लकरिया तोरी तौ चील के घोंसला म नौलखा हार धरौ दखो। बू चिल्ला परो मा गई पा गई। या बात ए सुनिक परौसिन घबरा गई क सोने की ईंट की मालूम पर गई है। साई बान घबराय कैं सोने की ईंट किसान के घर म फेंक दई। अब तौ तीनो चीज एक संग मिल गईं। देखत ही देखत एक पइसा तई किसान मालामाल है गयौ।

अब किसान खेत प काहे कू जातो। वाके घर तौ सब आनन्द है गए। भाग नैं लक्ष्मी त कही देख लिए ना भाग क खेल। तौ बेटा सब कहौ कर भाग फल तौ सब फल भोख यज ज्योवार।

मैया तेरी बात बडी मानू, ताय अनुभव है तेरे बार धूप म धौर धोरई भए ए, पर किसान खेत जोतिब नई जातो, सोन की ईट हार मोती नई लातो

मच्छी खरीदबे नई जानी, लकरिया नई तोरती, कहुवे को मतलबईए के इन सब कामन कूँ नहीं करतो, तो का वू मालदार है जानो।"

'इनैं कम कहैं का? कम तो हाड चाम घिसकैं, पसीना बहाय कैं कियो जाए। पसीना बहाय क जो धन कमायो जाए वू कर्म को फल है अरु जो अनायास हाथ लगै सो भाग्य को फल।"

मैया तोतें मैं का तक करूँ। हा इतेक कहनो चाहू क मचन प मैं कर्म के गुन गाऊँ, कर्म के हाथन सौं भाग की रेखन नैं बदलबे की कहू। मैं अपने जीवन को उदाहरण दऊँ।

'अच्छो बेटा तू जीतो मैं हारी। मैंनें तो जा दिना ते तू जनो है वाई दिना ते तेरी हठ राखी है। बाल हठ के आगैं तिरिया हठ हू हारी है। माय भरासो है तू राजहठ ऊ हरावगो।

"मया, मैं कम करूँ पर तरी अरु गुरुजनन को आसीस हाथ तो मोकूँ बल मिलै। हाथ की छाया घनी होय।

'बेटा आसीस की कमी नाएँ, जो चाहै वाकूँ भरपूर मिलै। याम का खच हाय। हाँ होय कोई लव बारो।"

तो मया मेरी इच्छा है क तोय अब आराम दियो जाए। अब मैं अपनी सगिनी ल आऊँ।'

बेटा ई बात तो मोय कहनी चइए। मैं रोज बा दिना की बाट देख रही हू कब मेरी बेटा मेरे घर म उजेरो लाव।'

"उजेरो लाइब को भार जब तैनैं मेर ऊपर डार राखो है तो मैं पूरो जतन करूँगो एसो उजीतो लाऊँगो जा मेरे तेरे अरु सब घर के अधेरे कूँ दूर कर द। चदा सी बहू लाऊँगो।"

या बात को मोय पूरो बिसवास है। पर अब मेरी बूढी सासन को ज्यादा भरोसो नाएँ। न जानैं कब या पीजरा कू छाडि क हस उड जाए। याही सो आँखिन क सामई तेरो घर मढ जाए। याए देखिवो चाहू। मौहल्ला अरु गॉव बारे तो मोय जक नांय लन द। भाति भाँति के अरसोकला-परसाकला ढाब। कोऊ कहे छारा पच्चीस के औरे ढोर है गयो है, आधी उमर तो बीत गई। कोऊ कह डोकरी छप्पन करोड की चौथाई कूँ डोल रही ह। काऊ कछू कह, काऊ कछू कह। कौन कौन को म्हो राखो जाए?'

"मया दुनिया तो या ई कहती रहगी, पर समै के अनुरूप चलनो चइए। अब वू सम नांय रह्यो जब छोरी छोरान क गोदी म ब्याह कर दिए जात। अब वू मम नांय रह्यो क छोरी छोरा अपन पायन पै खड़े हू नांय भए अरु विनको ब्याह कर दियो जाए। अब वू हू समय नांय रह्यो क ब्याह कर दियो जाए अरु छोरी छोरान त पूछो हू नई जाय। जा समै की पुकार कू नई सुनै जिनैं मूड पकरि कैं पछ्तानों पर।'

"मैं या बात कू तो समझ गई हू पर गाम को रहबो अरु चबैयान की सुनिबो कसें सह्यो जाए ?'

"मैया गाम के चबयान ते तो वर्गे पर अपनी भलो बुरो तो सोचि ल। हां इतेक जरूर है गांव कू खुस करिबो कोऊ आसान नाएं। तोय तो सब पतो ए। तू ही तो मोय कथा सुनाती रही है। बाप बेटा एक घाडा लैकैं जा रए जब बाप बठो अरु बेटा पायन चलबे लगो तो दुनिया बा बाप कूं नाम धरबे लगी। जब छोरा बठिक चलबे लगो तो छोरा कूं नाम धरो। जब दोनो बठिक चलब लगे तो दोनौंन कूं कोसिबे लगे। जब दोनो पदल चलबे लगे तो दोनान की मूखता प हसब लग। मया दुनिया की भली चलाई।'

तौऊ बेटा समाज के रीति रिवाजन को तो ध्यान रखनो ई पर। अब दख तेरे ब्याह को समऊ आ गयो है। अब काइकू देर करै।'

'मैया मेरी परिच्छा को परिणाम आ जाए फिर देर नाए। पर हा, रीति रिवाजन को ध्यान तो रखें पर रीति रिवाज समै के अनुसार बदलते रह। बच्चान के ब्याह को चलना उठि गयो। याही तरिया घूघट कोऊ तो रिवाज उठ रह्यो है। गामन मे घूघट भलई चल जाए सहरन म घूघट काढ़ो तो जीवो दूभर है जाय।

बेटा नयो चल्ला गाव मे नाम चल सक।

मैया सम सब अपने आप ही चला लगो। छोट छोटे छोरी छोरान के ब्याह को चल्वा अब गाव मे तेऊ उठतो जा रह्यो है।

'सम सम की बात है अब तो छोरी छोरान की राय ते ई ब्याह हवे लगे है।

युग की माग तो ह। मैं हू नए युग की नई पीढ़ी हू पर नए युग को अन्धो भक्त नाऊ। जो हमारी पुरानी थाथी है, पुरानी सस्कृति है पुराने अच्छे रीति रिवाज है बिनकी रच्छा करनो चाहू पर बिना सोचे समझ लकीर को फकीर होनो मोय नाय भाव। मैं जो कछू करूगो तो ते पूछ क करूगो।

बेटा जा कछू करनोए कर करू ल। कही कर, करले सो काम भजले सो राम।

"तो सुन मैया मैने एक छोरी देख लई है। भरतपुर की है। अच्छे घर की है। इकलौती बेटी है। पहलें खातो पीतो घर हो। बोहरगत होती। कई सालन की सूखा सौ सब रुपैया डूब गयो है। या सम खस्ता हालत है।"

बेटा छोरी तौ पढी लिखी होयगी ?"

'हा जम मैन एम ए की परीच्छा दई है वान बी ए की परीच्छा दई है। माते दो दरजा नीचे है। है हुसियार चाहे तौ देख ल।"

"मोय तौ कोऊ ऐतराज नाय पर नाते-गोते तौ बचा लिए हू ग।"

"मैया सो मैने कछू नाय कियो।"

"बेटा सबते पहल नाते नाते बचाए जाए।'

"मैया नाते गोते बचाइबे की का जरूरत है ?"

'देख बेटा एक मैया के चार पाच छोरा कहू दूर-दूर बस जाए। बिनम आइबौ जाइबौ नई रहे। जान पहचान हू नई रहे अब कहू वे एक दूसरे के यहा छोरी छोरा दखिब कू निकस पर तौ भन भैया है सकैं।

"मैया तेरी बात बडी करकै मानी पर एक जाति के नई होय तौ नात गोते बचाइबे की जरूरत नाए।"

"राम राम कैसी बात कर रह्यौ है। कहू आन जाति की त ब्याह करगौ का ?'

'मैया, जाति-पाति कौ यमेलो तो हमनै बनायौ है। भगवान के यहा ते सब एकई जाति के आए है।

बेटा ई साँची है पर गाम रीति हू तो ध्यान मे रखनी है।

"गाम रीति कू आखि मू दि कै मानिबे ते न अपनौ भलो है सकै न गाम कौ, अब न देस कौ।'

पर बेटा हमई रीति चौ बदल ? हमई चौ आग आवैं ?

तौ कौन आगे आविंगे जो ढोर चराबै बे। बिनै दुनिया ते का मतलब ?

तौ माय या बता कै तैने जा छोरी देखी है वू आन जात की है का ?

मया यामे का दोस है ?

'बेटा ऐसी बात मत कर हमारी नाक कट जाइगी। गाम म कोऊ बोलन तक नई दगो।"

'मया हम कोऊ बुरौ काम थोरई कर रहे हैं ? कोऊ चोरी नाय कर रहे कोऊ जुआ नाहिं खेल रहे, काऊ की बन उटी कूं बुरी नजरन सों नाय देख रहे। ब्याह ही तौ कर रहे ह।"

"बेटा कोऊ बुरौ काम तौ नाय कर रहे पर जाति अरु गाम त अपर मड हैकें चलिजौ चोखौ नाय। मड मरजादन कूं तोरिवौ अच्छौ नाए।"

'तौ पच ऊट कूं बिल्ली कहैं तौ का हमकूं हू बिल्ली कहनौ चइए का ?

चकोर अरु चकोर की मैया की कई दिनान तक य ई बात चलती रही। ना चकार की मया टस ते मस भई ना चकोर। ई बात चकोर अरु चकोर की मया तकई नाय रही। च दा चकोर की चरचा, चौराहे प, चौक म, चौबारे म चारो ओर चल निकसी। कहौ करें बात भई होठन की, भई पोटन की। चकार गाम म हैं क निकसतौ तौ सब वाए टोकते।

गाम की वयरवानी एक एक करक चकोर की मया क पास आइबे लगी। भाति भाति सी ताने दबै लगी। चकोर की मया नथिया कूं आई हाथन लवे लगी।

'नथिया तेरे छोरा ए आन जाति म ब्याह करवे की का सूभी है ? का जात की नापद ह गई है का ?

नथिया, तेरौ छोरा तौ पढौ लिखौ है। या सम तौ वू अनपढ ते हू गयौ बीतौ निकस रह्यौ है।"

'ऐसी मा'लूम परै छोरा तेरी बात नाय मान रह्यौ कै तैन ढील दै राखी है। नई तौ का मजाल है जो छोरा होठ हू खोल जातौ।"

'नथिया कछू बोल बकर तौ सही। ऐसै सुटूट लगाए त का काम चलगौ ? आज तेरौ छोरा या काम ए कर रह्यौ है कल्ल कोऊ दूसरौ करगौ परसों तीसरौ फिर तौ ई रोग फलतौ ही चलौ जाइगौ। बात कहा जाइक ठहरगी। लोक मरजादा ई मिट जाइ गी। नथिया अपनी नाक कौ ध्यान मत रख पर गाम की नाक कौ तौ ध्यान रख।

चार जनीन की बात सुनिक नथिया बोली— जो तुम कह रही हौ वू सही है पर का करी जाए ? ज्वान जवान छोरा ते कही तौ जा सक। बच्चा तौ हत नाए जाए बहला न्यौ जाए। तिहारी तरिया मै न वाक मुक्तरौ समझाई है पर वाके तौ बात गर ई नाय उतर। इतेक तरक दे कें मैं तौ वाके म्हों माऊ दखती रह जाउ। वाप तौ कछू जादू सौ है गयौ है। ऐसी बयार सी भर गई है क कछू सूय इ नाए। अब मैं का करू। कितकूं जाऊ। इत गिरूं तौ कुआं उत गिरूं तौ

कंचन करत खरौ

खाई। ज्वान-ज्वान छोरा ते ज्यादा कह हू तो नाय सकू। बूढो दिखावै मरिबो, ज्वान दिखावै भगिबो। ज्यादा कहनावत सुनावत कर दई अरु वहू कहू इत बिनकू निकस गयो तो क वरकौ बीतगी। फिर तुम सब जानौ मरे तो ई हो छोरी फूका के नरु ई ही ग्रयाइ वठा हू।"

नथिया इन बातन ते तो ई लगै जसे तेरी स होय। सब तेरी ई करामात मालूम पर रही है। लगै मतर तू पढ रही है वामी म हाथ बू द रह्यो है। हम सब जानैं, छोटे, बडेन क बल पै ही नाच नाचैं।"

'अरी भनाओ, माकू चो लौना लगा रही हो। मै तो ई कह रही हू बिना पढौ लिखौ होतौ तो सब बातन मैं मान लतो। पढे लिखे कू कसैं समझाऊ ?'

तबई ता कहैं छोरी छोरान कौ ब्याह बचपन म ई कर दनौ चइए।"

'मरे छारा त बात करक तो देखो। बू बाल विवाह कौ कट्टर विराधी ह। बू कहै ऽस याही मार गड्ढा म गयो है। जनसख्या कौ बढिवौ दस कौ स्वास्थ्य गिरवौ बेरोजगारी फलिबौ, घर घर म लडाइ झगडे होनौ याम बाल विवाह कौ ई दोस है। बच्चान को ब्याह करिवौ बिनके पायन म कुल्हाडी मारिवौ है।'

'नथिया, वाए नए जमाने की हवा लग गई है। सहर म रहक बाक पख निकस आए है। हमारे तिहारे ब्याह पाच पाच सात सात की उमर म भए क नाएँ ?

'अरी या बात कू सुनिक छारा कहै क तबई तो बयरबानीन क दात निकस रहे ह। जितकू देखो बितकू ही हड्डीन की माला सी दिखाई परैं। काऊ की कमर चुकि गई है। काऊ की आख खराब है। काऊ कौ जिगर खराब है। बचपन कौ ब्याह सौ व्याधीन कौ घर बताबै। विदेसन क उदाहरण दक बताब क बिनक मन बयर बडी उमर म ब्याह करैं। खूब हट्टा कट्टा रहै।

'नथिया सौ बातन की बात ई ए क जाकौ पाव निकस जाए, वाकौ पाव टिक ना सकै जाकी जीभ चलबे लग जाए, वाकी जीभ फिर ताळुए त नाँय लग।'

या तरियाँ बयरबानीन के टोल के टोल नथिया कू समझाव ग्रात। नथिया चकोर सो कहतो पर बू सो सुनतो ग्ररु लुक्क प ई लतो। चकोर की जानजात म ब्याह की चरचा जोर पकर गई। गाम बारेन क ई बात अनकटोटी सी लगी। वे याम गाम की हटी समझबे लगे। यासों गाम क मुडडन न चकार क बुलाय क गाम की राय बताइबे कौ निरनय कर लियौ। एक दिना एक चौपार प बुलाय कैं बासौं बात करी। चकोर न सबन की सुनी पर म्हौ नइ खोलौ। विसार मरपच न बातें कहीं।

"लाला तेरे ऊपर तौ हम घमड हो क तू हमारे गाम कौ नाम उजागर करगौ। तैंने पढ लिखक हमारे गाँम कौ नाम दूर-दूर तक कियौ है पर अब एसौ अनरथ चो कर रह्यौ है ? गम्म की मरजादा चो मेट रह्यौ है ? '

मूला पच बोलौ बेटा गाँम की तौहीन मत करै अपने बाप कूँ जा। तेरौ बाप कितेक भलौ हतौ ई हमपै ते जान ल। एक पोत वाकी टौटकी त एक पिल्ला मर गयौ। वाकू माव नै गाँम वारेन की जूती कू अपन माथेप रखव की कही। वान विचारे न नकहू धी चपड नाय करी वान गाम बारेन की वात राखी। तू वाई कौ छारा है तू बाई की वात नाँय रख रह्यौ।

चकोर या कथा कू सुनिक मन ई मन भभकौ पर मन की बात होठन तक नई आमन दई। नार नीचो करकैं सब सुननो रह्यौ। तबई परमाल लम्बरदार उफन परौ—

लाला बोल चो नाएँ म्हो म मूराए का ? बोल पचन की मानगौ क अपनी तानगौ ? गाम त मिलिक चलगौ क अपनी खिचडी अलग पकावैगौ। तू याहू बात कूँ समच ल। गाम मे रहनौ है तौ गाम की मरजादा म रहनौ होइगौ। ऊपर हैंवे यहा नाँय रह सकगौ। अपनी ढपली अरु अपनौ राग अलापौ तो याए गाँम सहन नई कर सकगौ।

या वात कू सुनिक चकोर तिलमिला गयौ। धीरे त एक बात सरकाई—

का गाम छाडिनौ परैगौ ? '

या ज्वाब कू सुनिकै सिगरी चौपार बिगर उठी लोगन की म्हौ तन गई, म्हौ लाल है गए। कछू खड़े है क घुरपट्टीन सुनावे लग—

'हमारी ही बिल्ली हमतो म्याऊ कर। कल्ल परसौं कौ छोकरा हमारौ सामनौ कर।

अजी राड को साड है रह्यौ है।'

'लाला, ऊपर कू मत थूक।

बटा गाँम म रहबो भूलि जाइगौ।'

"अगर हम मालूम होतो तौ एसौ कौध ई नई होन दत आप आज मनजी भिनभिना रहौ हैं।

बटा ज्वानी म अ धौ मत बनै। ज्वानी हम पऊ आई। जो तू सुपन देख रह्यौ है। हमन ऊ दख हैं भली भाति सोच ल आगौ पीछौ बिचार ल।' सोग

कपन करत धरौ

नमतमाए परसोकला पै परसोकला डारते रहे। हल्ला गुल्ला मच गयो तवइ वहोरी भगत नें हाथ जोरि कें कही—

'सिगरे निरदारी आपन अपनी बात याकू बता दई। याए नेंक सोचिव विचारवेकौ तौ औसर दयौ। आप इतेक जने हो ई अकेलो है। कौन-कौन की बात कौ का का ज्वाब दे। याकी तौ बिसात ई नाए अकेला महारथी वीर अभिमन्यु हू चक्रव्यूह म फसकें जीतौ नाय लौटो।"

या बात कू सुनिकें गाम वारे वहोरी प ई बिगर परे।

"अच्छौ वहोरी अब मालुम पर रही है क चकोर के पीछे कौन हैं। चलौ कोई बात नाए तेरे कहे त औसर द रहे हैं। पर चकोर सुन ल बातन ते नइ मानो तौ लातन त बात करिंगे। गाव मे रहवो भारी पर जाइगो।' मुखा ने जोर दक कही।

चकोर प अब नइ रह्यौ गयो। हाथ जोरि कें बोला – सिगरे महानुभाव बाबा वहोरी कू मेरे बीच म मत सानौ, वाकू लोना मत लगाओ। इ ब्याह को मेरो अपनो विचार है। सिगरौ दोस मेरौ है। मोत जो चाहो सो कहो पर वहोरी बाबा सौ कछू मत कहौ।

गाँव वारे वहोरी की ओर सौ फिरिकैं चकोर पै फिर टूट परे देख लाला गाँव म रहनौ है तौ गाव की रीति रिवाजन की तरियां रहनो परगो।"

चकोर सबन के बोलन कूँ सुनिक घर लौट आयो। वाके उतरे भए चेहरा ते नथिया न अनुमान लगा लियो दार म कछू कारो है। चकोर गुम्म सुम्म सा निढाल है कें परि गयो। नथिया नें देखो तो वाको हियो भर आयो। नू बोली—

'बदा ऐसो गुस्त चों है ?

मया लग रह्यौ है, गाँव छोड़िकें चलनो परैगो।

'चौं गाँव नें ऐसी कहा कह दई ?'

"मया साफ-साफ कह दई है कै गाँव म रहनो है तो गाँव वारे जो किगे सो करनौ परगो।'

'बदा मैं तो पहलें ई कह रही गाँव त मह राम ते बैर नाँय खाय।"

'सो ठीक है पर मै अपने भले बुरे ए अच्छी तरिया जानू गाँव वार का जानें।"

'तौ बेटा, एसौ काम कर, साप मर न लाठी टूट। बाऊ वामन की पढ़ा लिखी छोरी ए देख ल वामन की मुगतगी छोरी हैं।'

' मैया जाकूँ वचन द दियौ है बाकौ का बनगौ? का मैं अपनी बात सौं फिर जाऊँ? थूक क चाट लऊँ?।"

देख तू अपनी जिद्द प सवारहै, गाम अपनी जिद्द प। यात काम नई चलगौ। तन सुनी नाएँ का? लोग कहैं---जाट कहै सुन जाटनी ताय गाँम म रहनौ ऊँट बिलया लगौ तौ हाजी हाजी कहनौ।

' मैया य कहावत थोथी रह गई हैं। इनम सार नाएँ। अब तौ सब अपने अपने घर के मालिक हैं। सब अपनौ भलौ बुरौ अच्छौ तरियाँ जान।'

अब तेरी मरजी, तू जानै तेरौ काम जानै। माय कितेक दिना रहनौ ए पकौ पान हू। जा दिना मर जाऊँ सोई दिना है। गाम में तोय रहनौ है गाँम कूँ तोय बरतनौ है।'

चकोर नैं मैया की मन की जान लई। गाम वारन की विचारधारा मालूम पर गई। अब बाए जीवन के कटु अनुभव हैरे लगे। बाए याद आन लगौ भरतपुर कालज का जीवन जामैं मिलतौ अपने सगी साथिन कौ प्यार। जितकू जातौ बितकू ई लोग आख बिछाते। घर कौ सौ प्यार मिलतौ। तौऊ चकोर कौ मन जऊ के काज भटकतौ। एक हूक सी उठती। गाम की गंध के ताईं बाकी बाछ खिल जाती। गाम की सुखद कल्पना सौं सिहर उठतौ। गाम कू देखते ही नौ नौ हाथ कूदिबे लगतौ। गाम की बयार लगते ही तन मन खिल उठतौ। आज बाई गाम मे बाकू इतेक सुनिनौ परौ याकी बानैं सुपनेन म हू नाय सोची।

चकोर की नीद हराम है गई। चकोर दुविधा मे परियौ। एक ओर चन्दा ते कौल करार अरु मचन प पीछे गये ढोल दूसरी ओर गाम कौ भय। चकोर गाम छाडि क भरतपुर जाबे कू तयार हौ पर मया को मन गाम म फसो परा। मया कू पीरा हायगी। मया झौंपरी ए नाहिं छाडि सक। झौपरी चुचाव गरमी सरदी बरसात कछू ए नाय रोक पाव। झौपरी की कच्ची भीत कच्चौ आगन गुबरौटी ते बाए दिना लीपनौ पर। चाकी ते रोज भूमरे ही भूमरे पीसनौ पर। झारा बुहारी करते करते थक जाए पर तौऊ झौंपरी प्यारी लग। बाए बू मरेऊ मारे नाय छोडि सक।

चकोर इन सोच विचारन माहि डूब रह्यौ तबइ बाक दरवज्ज प आइक एक तागौ रुकौ। तागे म त हसतौ भयौ चोख लाल उतरौ। बाके हाथ म एक अखबार हो। चोखे लाल न अनुमान सौ जान लियौ क झौपरी म त निकसवे वारौ हाय ना होय चकोर इ है। चोख न बिना पूछे ताछे बिना परिच के चकोर कू बधाई दत भए बाकू अखबार गहा दियौ।

चकोर नै अपनो रौल नम्बर टाप म दखिक पहलै चोखे कू धयवाद दियौ। आभार प्रकट करयौ। खाट बिछाय क चोखे कू खाट प बठायौ। फिर घर के भीतर मैया के पास पहुँच कै बाके पाम छिए। मैया कू खुस खबरी सुनाई। मैया की आखिन म ते खुसी के आंसू थर परे। बुढिया के ककाल में नई लहर दौर गई। नथिया नै चकोर के सीस प असीस को हाथ फेरो। बोली—

बेटा तेरो सुपनो पूरो भयो मेरी एक कामना पूरी भई। अब दूसरी कामना और है बाए भगवान और पूरो कर दे। आप और नई बाल्यो गयो। गरो रूँध गयो। आंखिन सों आंसू चरव लग

'अरी मया तू तो रो रही है ?

'अरे बेटा रो रही हूँ क खुस है रही हू। य दुख के आंसू नाएँ सुख के आंसू है। ई रोइबो नाएँ, हसवे ते कऊ गुनोबढिकैं है। हा आज तेरो बाप होतो तो कितेक खुस होतो। सिगरे गाम म फूलो फूलो डोलतो। ना जानैं कितेकन के घर जातो। ना जानैं कितेकन के पर छतो। गाठ म चाहे कछू नई होतो पर मन्दिर जातो, भोग लगातो घर म कथा करवातो। कहते कहते नथिया को गरो और भर आयो फिर बाते नइ बोल्यो गयो। चकोर मैया के आंसून नैं पोछ क बाहर आयो। बानै नवागन्तुक सौ परिच पायो। चोखे बालो—

नाम मेरो चोखे लाल है और ई अखबार चन्दा नै भेजो है।

"अरे! चन्दा के आप पिताजी हैं। धय है आपकू। आपन आइकैं जो किरपा करी है ताके ताई होठन सो कमैं आभार प्रकट करूँ।

'अपनेन के ताईं औपचारिक्ता नाय सुहाव। हा इतेक जरूर है, चन्दा नै अखबार देखत ई मोय भेज दियो है। बू ह आइबे की कह रही पर मैं ही जान बूझकैं सोचि समझ कै छाडि आयो हू।

'ये आपन अच्छो कियो। पर ई तो बताओ चन्दा को का परिणाम रह्यो ?

"चन्दा को परिणाम अबई आबे बारो है। आपनैं अखबार नॉय देखो का ?

"अजी गामन मे अखबार कहा ? अबई गामन म कम चल्ला है। कोऊ आइबे वारो ही भलई अखबार ल आव। ई तो आपन बडी किरपा करी। आज अखबार निकसो अरु आजई अखबार दखिवे कू मिल गयो

' फिर आपन किरपा जसे सब्दन को प्रयोग करो। अच्छे काम म योग दवो अच्छे काम कू देखिकैं खुस हैवो मान्स को सुभाव होनो चइए। एक दूसरे की बढ़ातरी मे हाथ बटावो अच्छो है।

"ई तौ आपनैं सतयुग की सी बात कह दई कलियुग म ऐस भाव कहू कहू मिलै।"

"अजी सतयुग कलियुग तौ हमेसा रहे हैं अरु आग हू रहिंगे। हर मास के जीवन में रोजीना इनकौ बतवौ होय। जब जाके जीवन म अच्छे विचार आवैं तब सतयुग बाके जीवन माहिं होय। जब बाके जीवन म कलह घर, स्वार्थ लगाइ झगडे के विचार आवैं तब कलियुग बत रह्यौ होय। मास कौ कर्तव्य ई ए क वू सात्विक बिचारन के सग, सग कौ सदुपयोग करै। बाए हाथन सौ निकसन नही दे। ई साचते के प्रभु न बाप किरपा करी है। सात्विक विचारन प स्वारथ कौ, मोह कौ माया कौ, ममता कौ आवरन नही चढन दे।

"वाह! भया वाह!! आपक विचार भौत सुलझे भए हैं। तबई तौ एम ए म टाप आए हौ। भगवान आपकू और मति अरु गति द।"

याके पाछै चकोर न चोखे कौ आवभगत के ताई दौड धूप करनी चाही पर चोखे नै हाथ पकर कै बठार लियौ। चकोर कू भरतपुर आइबे कौ नौतौ दकैं चोखे नै चकार सौ विदा लई। चकार की चाखे नै आवभगत स्वीकार नई करी। याकौ मतलब चकोर समझ गयौ। जसी नेटी तसौ बाप। हा चकोर के मन पै एक छाप जरूर पर गई। बाकौ मन चन्दा के माऊँ और झुक गयौ। बाकौ सम्मान और बढ गयौ।

चकोर के एम ए मे टाप आवे की चरचा पूरे गाम म फल गई। गाम कौ नाम है गयौ। याकौ कछू लोग फूले न समाए कछू लोगन कू चकार की बढती भई बात अच्छी नाय लगी। ऐस कुटिल लोगन कू तुलसी नैं सन की उपमा दई है जो अपनी खाल कढाय क दूसरे कू बधवाइबे म ही सुख मानै।

जब ते चकार नै खुसी कौ समाचार सुनो तब सौ कोऊ ज्यादा उछल कूद नाय करी। सहज सुभाव सौ गाम की अथाईन प गयौ। बडे बूढेन के पांय छीए। कछू लोगन के मन कौ मैल दूर है गयौ। कीचड ते कीचड दूर नाय होय। कीचड तौ साफ पानी सौ ही दूर होय। हां, जिनके मन कारे हैं, बिनपै चढ न दूजो रग बारी बात भई।

चकार न या समै या बात कौ विचार नई कियौ कै कौन किन भावना माहिं बरत रह्यौ है। बान तौ अपनो धरम निभायौ। बाकी मैया न जो आदेस दियौ बाकौ पालन कियौ पर अब चकोर नै अपने मन म निरनय कर लियौ।

कछू गाम बारे चकोर के ब्योहार कू देखि क पसीजे, पर कछू तौ मन ई मन कुढ क रह गए। मन ई मन कहबे लगे, बेटा तू कितेकऊ पांय छोल आनजात म ब्याह नइ करन दिग। आनजात म ब्याह कियौ तो जात म ते छिकवाय दिगे क गाम छोरनो परगौ।"

कचन करत खरो

चोखे नैं भरतपुर आयकैं सिगरौ समाचार सुनायौ। चन्दा मनई मन खिल गई। राधा,नौ मन हल्कौ ह्यौ। ऊची वे गरे वात नहीं उतरी। ऊचौ कौ मन धुकर पुकर करिबे लगौ। आनजात मे ब्याहवे की वात सुनतेई मन म घिरना अरु तन म आग सी लगव लगी। जिन बातन कू सुनिकैं ऊचौ नाक भौ सिकोडो करई, वाकौ जी जरयौ, बिन बातन कू अपन घर माहि देखिकैं वाकौ राम राम काप उठौ।

चोखे नैं जब सौं चकोर देखौ तब सौ वू बाते औउ प्रभावित है गयौ। वाके जीवन दरसन की बातन नैं सुनिकै तौ वू चकोर,कौइ है गयौ। उठती रेखन कौ गोरे रग कौ पट्ठा उठतौ भयौ हाड हँसमुख चेहरा, वात करतौ तौ फूल से झरत। बातऊ करीन सी करतौ। नपी-तुली सार भरी। का मजाल जो बातन म हल्कोपन झलक जातौ। वात ऐसी गूढ गम्भीर मानौ काऊ साधव बोल रह्यौ होय। चोख कू चकार की रहन-सहन पूरी तरियाँ सौ भा गई। हा बानैं अपनी आंखिन सौई देखौ कै वाकौ घर काए, मिट्टी क लौदान की दीवारन प छप्पर परयौ भयौ है। छप्पर हू साबित नाऔ। वामे चदा सूरज त्यारे झाक रह। घर के दरबज्जे प एक पल्ला की किवार सौऊ तज्जान की बनी भई। चातरा ऊबड खाबड। घर के सामइ औंधक नीची धरती। जा खाट पैं चोखे बठौ वू हू टढी मढी पाटी सरन की। बानऊ छितरौं छितरौ। कन कन ते कगाली झाक रही। सब तरिया सौ गाम कौ सौ ढर्रा हो। घर कूँ देखिक चोख का मन अचरचा रह्यौ। वर तो चदा के अनुरूप हुतो पर घर की माऊँ ते चोखे कूँ चिंता भइ। एक मन निरावतौ तौ ताई सम दूसरौ मन कहतौ,मोल करो तरवार को परी रहन देओ म्यान। चोखे न जब चकोर के घर की रूपरेखा राधा के सामइ खची तो राधा हू घबरा सी गई डूँडे बैल पैं भोल नाथ कूँ नगन हालत म दखिक, मग म बिनकी अनकटाटी वरात कूँ देखिकैं जो सती की मया की हालत भइ साइ दसा राधा की है गइ। सोचिबे लगी वाकी चिदिया न कबहू लीपी ना कबहू पोती। कच्च आगन क कबऊ दरसनऊ नाँय करे। टूट छप्परन म जहा फूँस झरेगी चन्दा कैस रहैगी? सोचत सोचते कुआ से मे पर गइ। चोखे के पूछव प वान अपने मन कौ दरद खालि क चोख वे सामइ धर दियौ। चोख न वाकूँ समझायौ अरी सब दिन जात न एक समान।'' अरु ई ऊ वात कही है पूत कपूत तौ क्या धन सच पूत सपूत तौ क्या धन सच।' पूत चोखौ होय तौ थोपरी कूँ कोठी म बदलते देर नाय लग। अरी बावरी तन सुनी नाय का सावित्री न लकरीमा काटते राज्यहीन अन्धे मैया बाप कौ बेटा सत्यवान चुनौ? फल का भयौ? तोय सब मालूम है। चकोर क अच्छे आसार दिखाइ पर रहे हैं। वार करबे कूँ तरवार

की धार देखी जाए म्यान कूँ नाय देखें । नीति की बात है कै गदी नाली म ते हीरा ते जडी सोने की अ गूठी छोडिवो हिमालय जसी भून है ।'

राधा कूँ समझाय कै चाखे नै चन की साथ लई, पर राधा नै कराहत भए कही, "अजी तुम मानम हो पिना हा, तक अरु बुद्धि तिहारे पास है । मैं तौ माहतारी हू मरे पास है मया को हियो । मैं और कछू नाय जानू । तुम्ह भाव सा करो ।' या तरिया राधा कू तो मनाय लियो । पर अ चो कूँ कसैं समझायो जातो । मया तो पुराने विचारन की । नए विचारन की परत चढतई नाय दती । बू तौ अपनी भावभूमि प हिमालय की भाति अचल अरु अटल ई । बु अन्तरजातीय ब्याह के पच्छ म नाई । वाकूँ समझायो गयो क सम के सग चलनो चइए । ज्वान छोरी छोरान की बात माननी चइए नई मानी गई तो इत वितकू हू निकस सक । यासौं राजी खुशी ब्याह कर दियो जाए तौ चोखो है । अचो कू लाख समझायो पर धोए हू मी वेर त काजर हाय न स्वन वारी बात भई । भरभू जा को भार सफेदी ते क्लिअऊ पातौ नाए पर बू सफद नाय हाय या ई भाँति अ चो कू बदलवो असम्भव हा । अ चो सबकी सुननी रही पर मन ई मन कुढती रही बिचारी को का चलती । बूढी सास अरु हड्डीन की माला की कौन सुन ?

च न्दा के सामई अऊ गाम अरु चकोर की घर बार बार घूमबे लगी। चकोर क आगै बू सबन कूँ भूल जाती । चदा तौ आग की माचिव बारी । वान इतिहास पढौ जामै अनेक ऐसे गरीब मा सन को इतिहास पढो जो कछू ते कछू है गए । वान खूब सोच विचार क पग आगै बढायो फिर मन माने की बात है, मना साति चाइए का कुटीर का महल ।" चन्दा तौ अपने सोचे भए कूँ पूरी करबे की माचिबे लगी ।

अऊ गाम म जस चकोर की विरोध भयो याही भाति भरतपुर के गोपालगढ मोहल्ला मे च दा को विरोध भयो । दकियानूसी जर भुन उठे—

कैसो कलियुग आ गयो है ?

"अजी अब तौ छोरी छोरा निरद्वद्व है गए हैं ।'

'अबइ का देखौ है ? आगे आगै दखियौ का का हाय ?

मया बापन नै छोरी छोरा मूँड प चढाय राखे हैं ।

या तरिया सौ गोपालगढ म चरचा हैव लगी । जा नइ विचारधारा के वे या सम्बन्ध की चरचा सुनिक बड खुस भए । विनै अपनो सुपनौ साकार हौ तौ दिखाइ परौ । वि न चन्दा अरु चाखे की वाहवाही करी ।

जो लोग अ तरजातीय ब्याह के विराध म ह विनै चाख कू समझायो । जो याके पच्छ म ह वि नै कही के शुभ काम मे देरी चौं ? चोखे कू जा विचारधारा के

मा स मिलत विनको प्रभाव नापैं परतो। पहली विचारधारा तब तक घुमडती रहती जब तक दूसरी विचारधारा के लोग नाय मिलत। दूसरी विचारधारा के मिलतई पहली विचारधारा कपूर की नाई उड जाती। चोखह हाड मास को बनो। हर विचारधारा को प्रभाव परनो जरूरी हो। जाकी मनोदसा वा दीपक के लौ की भातिई, जा बयार के झोकान मे कबऊ इतकू और कबऊ वितकू है जाय।

चोखे न साच विचार कै अन्तरजातीय ब्याह को विचार बनाए राखो। याके पीछे कई कारन हे। एक तो गरीबी, दूजे चकोर की योग्यता। तीजे च दा चकोर को घनो प्रेम और सबनो ऊपर सर्मे की माग। चकोर की चाह चोखे के चित म चाखी चुभ गई। पर बाके मन म अ देसो हमेसा बनो रहतो के पार कस परगी ?'

कच्चो दूध पीवे के कारन चन्दा कौऊ मन कबहू कबहू कचो जातो। कबऊ-कबऊ सोचती बी ए पास नई भई तो चकोर जानें स्वीकारगो कै नई ? परिनाम पै जीवन को परिनाम टिको भयो। याही मौं वू अखबार की मह की सी बाट देखती। सबरी की नाइ राम दरसन की प्रतीच्छा म। अखीर म राम की भाति एक दिना सम पै अखबार आयो। मन के कान कान त आवाज आई कै बिल्ली के भाग ते छीको टूट पर। बी ए को परीच्छा परिनाम माट आखरन म पढिबे धडकन बड गई। हाथ कापव लगे। 923 रोल न बर मिगर पन्नान प दख लियौ कही दिखाई नई परो। चन्दा पसीनान म भीज गई। अखबार कई पोत देखो पर सफद स्याही म ई रोल नम्बर हो। कस दिखाई परतो। वाके आखिन के आगे अधेरो छा गयो। वाए अपने सुपने चूरि चूरि होते दिखाई परे।

चन्दा की दुरदसा कू देखिकै राधा अरु चाखे के चेहरा उतर गए। घर माहि मातम सो छा गयो। सबन को भूख, प्यास, नींद, हिरन है गई। हाथन के तोता उड गए। ऐसौ लगो मानौ जीती बाजी हार गए हाय। चोखे अरु राधा कू चन्दा को ब्याह दुलभ दिखाई परो। पहलेई गस्सा म माखी आ गई। ताही सम चकोर अखबार लकै चन्दा के घर बाई तरिया आयो जमै चोखे अखबार लकै चकोर के घर गयो। ई सयोग की बात ही प चकोर वाई दिना भरतपुर आयो हतो। वाए चन्दा को रोल नम्बर याद नाँओ पर या बात को पूरो विस्वास हो क चन्दा पास होयगी।

चकोर न घर जाइक घर की स्थिति देखी तो चकरा गयो बाक पाम टूट से गए। घर को वातावरन कह रहयो कै दार माहि कारो है। चकोर को नाम सुनत ई चोखे अगवानी कू दौरि कै आयो। बठक माहि बठाय क चन्दा कू खबर करी। चन्दा को चेहरा और उतर गयो। म्हो प हवाई उड रही। वू सोचिब लगी न जाने का कहन आए हैं ? वू पूरो जोर लगाय कै साहस बटोर क बठक माहि पहुँची। वाक उतरे भए चेहरा ते चकोर सब समझ गयो। चन्दा नैं चकोर के हाथ म अखबार दखो तो चन्दा बोली—

"का अखबार मर ताइ लाए हो ?"

"सोचिक तो यही आयो हू।"

"अखबार या चुको है, पर आप लाए हो याके ताई धन्यवाद।"

'धन्यवाद तो तब दियो जातो जब तिहारो काम बन जातो। अखबार जब तिहारे कामई नाय आयो तो धन्यवाद काए को।"

'अखबार मेरे काम नहीं आवगो ई बात तो अब मालूम परी है, पर आप तो ई सोच कैं लाए कै अखबार काम आवैगो ही। तबई तो आप आए हो। तबई आपन कष्ट उठायो है याही सों धन्यवाद दबो मेरो कर्तव्य है।"

'चन्दा तू तो औपचारिकता म आ गई। पर ई बात तो बता तेरो रोल नम्बर का है ?

'आप रोल नम्बर पूछिकैं का करोगे ? रोल नम्बर देखि लियो। रोल नम्बर नाहै।

'चन्दा ऐसी तो आसा नाही।"

आप ठीक कह रहे हो पर भाग ते का पेस खाए।

'चन्दा भाग तो करमन क आग नाचै। कम सोई भाग रचै।

'कम अरु भाग म कोन बडो है याप आप सो वाद विवाद करकैं जीतिवो कठिन है। पर हा कम सो भाग बन क भाग सो कम किए जाए ई सवाल युग युग सो चलो आ रह्यो है। इनम कौन बडो है ई तो पानी कू बिलोकैं मक्खन निकारबे जसी बात है। मैं तो कम की पच्छधर हू पर भाग क खेलन ने देखिकैं कबहू कबहू हिल जाऊ।

'सो तो सुभाविक है अच्छे-अच्छे हिल जाएं। पर एस औसरन प जो सम्हर जाएं बेई कमवीर दुनिया म कछू कर सकै। हार जीत सफलता असफलता तो जीवन के सग जुरे हैं पर मानुस गिर के सम्हर जाए वु ई सच्चो मानुस है।'

"या समै मैं और कछू तो समझ नॉय पा रहो। हा इतक जानू क या समै मेरे सिगरे सुपन धूरि धूसरित है गए हैं।

एसी हारी हारी बात चो कर रहो है ?

"हार कऊ हारी बात नई कहू ता का कहू ? ज्वारी दाव हार कैं सब कछू गवां क और कसो बात करगो ?

कथन करत धरो

"तिहारी ई मानसिक दसा सदा एक सी नाय रहैगी या समैं थोरी सी निरासा झाक रही है। समै प सब ठीक हैं जाइगी। हिम्मत बाधौ फिर तयारी करौ।'

"तैयारी तौ करूगी, भरपूर करूगी, देखुगी कहाँ कमी रह गई। कमी कू दूर करवे कू फिर पूरी शक्ति सौं जुटूगी पर मेर फेल हैवे ते मेरे तान बाने टूटते से दिखाई पर रहे हैं।

चौं ई कने कह रही हो?

स्यात मेरे फेल है जावे ते ग्राप ।'

'चन्दा कसी बात कर रही है। हम अरु तुम डिगरीन ते थोरई मिल रहे हैं। हम तुम मित्र के रूप म रहे तो का या पास फेल ते बदल जाइगे। तुमने सुनी नाय एक सच्चौ मित्र ग्रपने सच्चे मित्र सौं कहा कहैं —

'मितर हम तुम एक हैं कहन सुनन कू दोय।
मन त मन कू तोलिए कबहू न दो मन होय॥

और सुन नोन पानी म घुर जाए ता कौन निकास सक। गोपीन क मन म उद्धव निरगुन ब्रह्म नाई बठा सको गोपीन ने कह दई—एक हुतो सो गयो स्याम सग या अवराध ईस।'

या बातचीत के दौर कू तार दियौ चोखेलाल अरु राधा के आगमन नैं। राधा चाय लकै अरु चोखे नमकीन अरू मीठे की तसतरीन न लकै आ गए। राधा के हाथ त चन्दा नैं केतली ल लई अरु मया ते कही—

'मोय आवाज द लैंतो मैं ल आती।

ता पाछ प्यालेन म चाय उडेलते भए चन्दा कछु हलकी फुलकी सी दिखाई परी। चकोर नैं चुप्पी तोरी इतक चीजन की का जरूरत ही इन सबसौ बढकै स्वाद हमारे अरु ग्रापके मधुर ब्योहार म है। हम तो ग्रापके घर की एक इकाई तो ह। घर के अग है।

'तबई तौ अपनी इकाई को स्वागत अरु सत्कार करनो चइए। आप हमारे अतिथि हैं और कही करैं 'अतिथि देवो भव । चोखेलाल न उत्तर दियौ। फिर तौ व तन की लरी बन गइ। चकोर न च दा के फेल है जाइवे की घटना कू हलको सौ लियौ। चन्दा कू हिम्मत बाधिवे की बात बार बार दुहराई। असफलता त सफलता को पाठ पढनो चइए। चोखे अरु राधा नऊ दुखी मन त चकोर की बात की पुष्टि करी। चकोर की बातचीतन कू सुनीकैं राधा अरु चोख क कछू आसा सी बधी। दूर सौं अधेरे म भटकते भए कू दीपक की चमक दिखाई परी।

अम्नीर मे चकोर वापिस लौटो। ऊपर ते वान हिम्मत तौ चन्दा कू वधाइ पर जाकू जीवन साथी वनाइवे को निहच कर लियो वाके दुख सौ दुखी होनो सुभाविक हा। च दा क पास गयो तौ उमग ते हो पर वुझे वुझे मन त ग्रानो परो। हाय मे लगी बटर निक्र गई। लाटरी को नम्वर निक्सतो निकसतो रह गयो। सोचिवे लगो वा म्हो त मया ते क्हो जाइगी ? कसे अपन यारनते कहैगो। वाको फलती फूलती फसल प बिजुरी गिर गई।

च दा चकोर के वोलन कू सुनिक कछू देर कू सम्हर गई। धीरज हू बधौ। थोरी देर पीछै फिर उदास है गई। ओस चाटवे ते का प्यास वुझे ? अखवार नै ना कछू दियो ना वछू लियो पर च दा की हालत विगार दई। चन्दा वीमार सी लगवे लगी। राधा और चोखे नेऊ चदा कू दिलासा दई वेटी घोडा पै चढव वारो ही गिर गिर का पीसन हारी पर सहानुभूति वे सब्दन न सुनिकै फफक-फफक कै रो परी। राधा नै च दा के आसू अपने पल्ले म बाध लिये। चोखे नै वाक सिर प प्यार को हाथ फेरो। च दा आंखिन सो आसू वहाय क हल्की है गई। आसून की बहवो भौत सुखद होय चाहै व सुख के हौ चाहे दुख के। आसू नई बहैं तो स्यात मान्स वावरो है जाए। सयोग अरु वियोग म आसू वहाय क मन कू सवर बधाय पाव। हिए रुपी बाध के आँखिन रुपी तदता नइ खोले जाए तो बाँध टूट जाए।

च दा कई दिना लौ उदास रही। घर सौ वाहर नई निकसी। घर म परी परी मनई मन घुटती रही। सग की सहेली च दा कू घेरे रहै ई। पास हैवे बारीन के धीरज वधाइव के वोल घावन प नौन की भुरक्नी से लगते, पर चन्दा कछू कहना सकई।

चन्दा अकेले म अपन परचान कू वर बेर देखती। वर वर नम्वरन कू जारती। समझ ना पाती क कसी फेल है गई ? वू राज पहली साल, दूसरी साल के नम्वरन कू देखिक रोती—प्रथम श्रेणी के आस पास के नम्वर, तबऊ फल। बाप भारी दुख के बादर छा गए। बाए तोस हुतो तो एक बात सों हो—चकोर कह गयो "सम्ब ध डिगरीन सौ नाय हाय सम्ब ध मन सो होय।" ई बात वर बेर वाक ध्यान म आवई अरु घाव प मरहम को सो काम कर जाव ई।

दो दिना पाछ कालेज म अ क तालिका आई। च दा बोझिल मन सों अ क तालिका लव पहुँची पर अ क तालिका देखिक दग रह गई अ क तालिका म लिखो द्वितीय श्रेणी पास। च दा फूली न समाई। पायन कू पख लग गए। पौन के वेग सों घर आई। चोखे के सामई अक तालिका धर दई अरु कही पिताजी ग्रखवार म गल्ती त रोल नवर छपव त रह गया। ई दखो मैं ता सकिण्ड डिवीजन हू। सिगर घर म सुसा की लहर दौरि गइ। सिगरो घर नाच उठो। मूखेधान कू पानी मिल गयो। कुम्हलाए पौधा जो

उठे। मरुस्थल म पानी की धारा बह निकली। पतझर में बहार आ गई। मृतप्राय कूँ सजीवनी मिल गई।

चन्दा सुपने बुनव लगी। चकोर कू जब मेरे पास हैबे की खबर मिलेगी वे रह नई सकिंग। भगे भगे आमिगे। यो तौ चकोर नैं कह दई कै सम्बन्ध डिगरीन सौ नाय होय सम्बन्ध मन सो होय, पर मन म उछाह होय तौ और बात है। पास हैबे की खबर ते चकोर कौ मन चौगुनो है जाइगौ। चौगुने चाव सौ ब्याह हायगौ।

बात हू ऐसीई भई। चन्दा के पास हैबे की खबर जैसई चकोर कूँ मिली चकोर भगौ भगौ आयौ। भरतपुर आइकैई दम लई। चन्दा क घर आइकैं साकर खटखटाई। सयोग ते साकर खोलिबे चन्दाई आई जसही दोनान के नैना मिले चेहरान प चमक दमक आ गई। मन नाँचिवे लगे, नना हँसिबे लगे। चन्दा नै हाथ जोरि के स्वागत कियो। पोथी सूची ते पोथी को पूरो ब्योरा मिल जाए। चकोर ने बधाई देत भए कही—

'हम तौ पूरो भरासौ, तुम जरूर पास होओगी।

मोऊ कूँ पूरो भरोसौ पर अखबार नैं तौ मरी दमई निकार दई।"

"तौ अ क तालिका आ गई।'

'हाँ ये देखौ ना।"

चन्दा नै अलमारी मे ते अ क्तालिका निकास क चकोर के सामई धर दई। सकिंड डिवीजन, सोऊ अच्छे नम्बर ते। याए देखिकै चकोर औरऊ नाच उठौ। थोरी देर म राधा अरु चोख हू उठक म आ गए। चकोर कूँ खुस दखिक बिनकी खुशी को ठिकानौ ना रह्यौ। चोखे अरु राधा न चकोर की खूब आवभगत करी। पूरे घर माहिं सुख को सागर उमड परौ। घन्टा दो घन्टा रहकै चकोर जब चलबे लगौ तौ चोखे बाए पहुँचावे भरतपुर के बस स्टण्ड तक आयौ। राह म चोखे नै बात छेरी—

लाला अब सम्बन्ध के बारे मे का सोची है?'

पिताजी यामे सोचिब अरु बिचारबे कू ठौरई कहाँ है? मैंने तौ पहलई कह दई सम्बन्ध कोऊ डिगरीन त नाय हाय, सम्बन्ध तौ मन त हाय। पिताजी सम्बन्ध तौ पहलैइ है चुकौ अब तो जग की रीति निभानी है।

"तिहारे इन बोलन न चन्दा कू बडौ सहारौ दियौ है। नई तौ ।

'नई तो का चदा क फल है जावे तें मैं अपनी बात सौ पीछे हट जातौ। हमन तौ पढी है "प्रान जाहिं पर बचन न जाही।

बचन करत खरा

'धन है तिहारे ताँई । मोय तौ पूरौ भरोसौ पर अब बात आगे कस बढ़ ? तुम कहौ तो गाम आइबे, तिहारी अम्मा सों बात करबे कू चन्दा की मया कू भेजू ।

"नाए पिताजी, मेरी खुशी म मेरी अम्मा की खुशी है । वान सब बात माप छोड राखी हू । करता धरता माइकू बनाय राखो है । मैं आपकू, चन्दा की अम्मा कू और दूसरे काई कू परेसान नाय करनो चाहू । आप चिंता ना कर । भगवान सब भलौ करगो ।"

' फिर शुभ काम मे देरी चा ।"

'मोय खुद चिंता है । अम्मा भौत बूढी है गई है । अब वाक हाथ पाव काम नाय दै । अब वाकी सेवा कूँ चन्दा की जरूरत है ।

' ई तो चन्दा को सौभाग्य होयगो ।"

सौभाग्य तो हम सबको होयगो । चन्दा क आते ई हमारे घर मे उजेरो आ जाइगो । तपते भए जीवन म ठडक आ जाइगी । सच माना चन्दा के सस्कार भरे व्यवहार न मेरो मन जीत लियो है पर अवई एक वाधा है । गाम जायक गाम वारेन त स्यात जुडड लनी परगी ।

"लाला अच्छे काम मैं तो बाधा आवई है ।

"मोय बाधान की चिंता नाए । अच्छे काम भौतन कू बुरे लगै तो भौतन कू भावै । मै सब निपट लऊगी । आप निश्चित रहौ ।

"देख लीजौ या गैल पै काटे दिखाई परैं तौ पीछे पग हटाबे म ई बुद्धिमानी है ।

अजी पिताजी कठिनाईन ते का बढते भए पाम रुक सकिगे । चैटिन के मरबे त का चलिवौ छोरि दिगे । कूकरान के भूकवे ते का हाथी राजमारग कू छाड देगो ? वस स्टैंड आबे प बातन की लरी टूटी । चोखे कू पक्को भरोसौ है गयो के चकोर पक्के पराएन प है । ज्याद बात करबौ अच्छो नई समझौ । राजी राजी चमार कू बिदा करकें खुसी खुसी चोखे घर लौट आयौ ।

परित्याग गॉम कौ

चन्दा अरु चकोर के ब्याह की बात जब चौराहे की चर्चा बन गई तौ अऊ गाम ब्याई कुतिया की नाईं हुरहुरायबे लगौ। गाम बारेन पै आनजात म ब्याह हैबे की बात सहन नाय भई। जुर मिलिक गाम उपाय ढूंढिवे लगौ। अखीर में पंचायत बुलाइबे की तै करी। दिना और ठौर तै कर दिए।

गाम के मंदिर प पंचायत जुरबे लगी। गाम के लोग अपन-अपने फटान नै बाँध क मंदिर पै इकठोरे है गए। सब अपनी अपनी मौछन प हाथ फेरब लगे। मौछन की सवाल हौ। गाम की आबरू कौ सवाल हौ। गाम की इज्जत के ताईं म्यान म त निक्सबे लगे। या समै ऐसौ लगौ क राम के धनुस तोरबे प विरोधी राजा बौखला कै चढ़ उठे होय, का धनुस टूटबे तेई ब्याह थोरई है जान दिंगे।

सबन को क्रोध चकोर की मैया प औ। सब बाई को दास बता रहे। सब या बात प तुल रहे, कै तो ब्याह रुकै नइ तो नथिया की घर जडमूड ते उड़ा दियौ जाए। किसोर सरपंच न सब भैयान कूं सांत करकै अपनी बात कही 'भयाओ आप सबन नैं गाम की नाक रखबे ने ताईं जो कदम उठाइवे की बात कही है मैं वाते दूर नाऊँ पर एक पोत वा बुढ़िया कूं बुलाय कै और पूछ ले ओ, वाके धरम भया बहोरी कूं बुलाय पै पूछ लमौ। फिर कोऊ यो नई कहै क बिचारेन कूं बालिबे कूं काऊ औसर नई दियौ अरु कुल्ली म गुड़ फार लियौ।

ई बात सबन कूं जँच गई। चकोर की मैया अरु बहोरी भगत बुलाए गए। नथिया अरु बहोरी भगत सौ पूछी गई' भाई बहोरी, चन्दा अरु चकोर कौ जो बालाई वाला आनजात मे ब्याह हैवे जा रह्यौ है ई रूक सक क नाय ?

बहोरी न हाथ जोर कै अपनो असमर्थता प्रकट करी। बाकी बात कूं सुनिकैं सब बहोरी भगत प टूट परे। भाँति भाँति की आवाज उसबे लगे—

'अजी घोटू पेट कूं ई नव।

भयाओ टूटी बाँह गर मई पर।

सही है मत्तर मैं पढ़ै बमई म हाथ तू दब बारी बात है।'

वहोरी प नई रह्यौ गयौ बोलो—'सिरदारो तुम कछू कहौ, आजकल क पढे लिखे छोरान के हट कू जानौ ही हौ। हमारी क्हा चल।"

किसोर नै इन बोलन कू सुनिकैं अपनी राय नई दई। बान नथिया सौं कही "नथिया तू क्हा कहै तोय पतौ है क तू या गाम क बसाए बस रही है नई तौ घर क्बऊ को उजर जातो। दा बीघा खारन न कोऊ क्बऊ को हुडप लेतौ। हर माह ताकू सीधे नई मिलते तौ पेट भरबौ दूभर हे जातौ। जा दिना चकोर कौ बाप मरौ वा दिना तेई तोकू अरु चकोर कू गाम नै छत्तर छाया दई है। काऊ तरियां त आंच नइ आन दई है नई तौ तिहारा खोजहू नही मिलतो।

नथिया नै सबसो हाथ जोरि क कही मैं गाम बारेन के बसाए बस रही हू, गाम के जिवाए जी रही हू। गाम बारे मोय मारैं चाहे छोडें द पर मेरी छोरा ते पस नाय खा रही। मेरी पस खामती तौ मैं रोक लेती।

अब तौ किसोर लाल तातौ है गयौ। लाग भमक उठे। बरसबे लगे। किसोर न सात करक अपनो निरनय सुनायो, भयाओ अपने हाथ क पौधा कूं काऊ नाएं काट पर जब वू काट बखेर, गाव की मड कूं तोर तौ का क्यिो जाए। यासौ आज ते वहोरी अरु नथिया कौ घर छेको जाय रह्यौ है जो इनको सग दगौ बाके सग हू ऐसौ स्तूक ई कियौ जाइगौ।"

याको एलान होते ही पचायत उठ गई। सब अपने अपने घरन कूं चल परे। वहोरी अरु नथिया हू घर लौटे। रस्ता मे बयरबानीन नैं पूछी 'का रही नथिया ?

नथिया बोली, 'रही का, जिनै म बादर समझी वे धुंआ क बादर निकस रच्छक भच्छक बन रहे है।

एक नैं नथिया कूं बुरदो, अरी अनीति तू कर रही है। बीज तू बो रही है अरु दोस द रही है गाम वारेन कूं। ई कहा की रीति है ?

नथिया प नई रह्यौ गयौ बोली मेरी छारा कौनसी अनीति कर रह्यौ है। कोऊ धरेजो तौ नाय कर रह्यौ। काऊ कूं उडाय क तौ नाय ल जा रह्यौ। फिर जा अपनौ वचन द आयौ है वू अपनी बातन त कसैं गिर जाए। अब चकोर चन्दा क बिना नाय रह सक और फिर छोराई मेरौ नई रहैगौ तौ दुनिया म मेरो रहई का जायगौ। जड कट गई तौ पेड क्हा टिक्गौ ? नीव खुद जाइगी तौ घर क्हा टिक्गौ ? और फिर महरन म तौ याहू त ज्यादा है रह्यौ है। आग बरस रही है। गाम कम अछूत रह जाइगे। गाँम म हू आज नई तौ क्ल्ल यही होयगो। समै की ब्यार कूं ना हम राक सकैं ना पच रोक सकैं। हानी तौ हैकैं रहैगी। समय एक सौ नाय रहै।'

नथिया घर आय कैं निढाल सी पर गई। नथिया जान ही, गाम वारेन को विरोध माल लैंक गाम म रहबौ कठिन हौ। 'जल म रहैं मगर सो वैर' वारी बात ही। नथिया या समैं किंकर्तव्य विमूढ सी है रही। एक ओर गाम मे रहवे को सवाल है तो दूसरी ओर छोरा के जीवन की बात ही। अखीर मे नथिया न निहचैं कर लियौ रहट्ट उतर चाए बट्टा वू छोरा कौ ई पच्छ लेगी।

छोरा न हू जा दिना टाप कियौ वाई दिना ते वाके ब्याह् के ताईं आइबे वारेन की लन डोरी सी लग रही। अच्छे अच्छे बामनन नैं देहरी की धूरि ल लई पर चकोर की मया न हाथई नाय धरन दियौ। चकोर नैं तो या विस मे बात करवौई छोड़ि दियौ। वानैं साफ साफ कह दई जा गैल जानौई नाय वाके कोसननैं गिनबे ते का फायदा ? चकोर जितेक मना करतो, बितेकई बेटीवारे दूने दूने आते। प्रलोभन देते। कोऊ नौकरी लगवाइवे की कहतौ। कोऊ हवेली दैवे की कहतौ। कोऊ स्कूटर दवे की कहतौ। कोऊ फ्रीज दवे की कहतौ। पर चकोर के चित्त पैं च दा बढी भई। वानैं सबन की सुनी पर अपन मन की मानी। अपने यारबासन ते अपने मन क विचार साफ साफ बता दिए।

इतकूँ अखवारन म अऊ गाम की पचायत की खबर छपी। चकोर नै पढी तो अचम्भे म आ गयो। वाकी मैया कूँ बुलाय कै दवाव प दबाव डारे गए। या बात कू पढिकै चकोर प नई रह्यौ गयौ। वू दौरौ छूटौ अऊ पहुँचौ। गाम पहुँच कैं वान मैया सौं सिगरे हालचाल जान।

चकोर की मया रोते भए बोली, 'बेटा अब गाम मे रहबौ बडो दूभर है गाम नैं हम छेक दिए हैं।

मया गाम नै ही तौ छेके हैं, धरती तौ भौत बडी है।

'बेटा, धरती तौ भौत बडी है पर अपने पुरखान के दो बीघे क्षार कम छोडे जाइगे। चलो इन क्षारन नैं हू छोड दिंगे पर जा घर म ब्याह कै आई हू, जाम तोकू जनम दियौ है वाए कसे छोडो जाइगो।

"मया धरती तौ एक है फिर घर ते का मोह ? सिगरी धरती हमारौ घरई तौ है। या घर मे जानैं कितेक भए। सब ना जान कहा गए ? याए यही छोडि गए। वाऊ दिना या घर कूँ का या देही कूँ हू छोडि जानौ परगौ। मया इतेक मोह काइकूँ कर तम सुनी होयगी, मोह मकल व्याधिन कर मूला।

बेटा सुनी तौ सब है पर मन तौ नाए मानैं। रहवे कूँ घौंसला हू चइए, पहरबे कूँ कपडाऊ चइएँ, पेट के ताँई दाने ऊ चइएँ।'

'मैया मोय तौ वा भगवान प खूब विसवास है फिर अपन हाथ पाँमन पै पूरौ भरोसौ है।'

'जसी तेरी मरजी, तू जानें तेरो काम जान। मैं नो भरी पचायत म कह आई, मैं अपने छोरा कूँ नाय छोड़ सकूँ, गाम नाराज होय तो है जाए।"

"मया ऐसें काइकूँ कही।'

'तो का कहती ??'

'या कहती, बेटा कोऊ बच्चा तो हुत नाएँ वू अपनो भलो बुरो आप जान ?

'बेटा यो ही तो कही है मेरी बेटा के सामई नाय चल।'

"मैया तेरी चल चौं नाएँ ? मैं जो कछू कर रह्यो हू तोते पूछ कई तो कर रह्यो हूँ।

'गाम वारेन न कैस समझायो जाए। वे तो जा बात प तुल गए हैं, क तो छोरा बात मान जाए नई तो गाम म घर अरु हार म खेत तक नई रहन दिगे।'

'मया कोऊ बात नाएँ याम घबरावे की का बात है ? यहा नई बजगी तो बावा तद क बजगी। राम कूँ बनवास राम कूँ लाभदायक भयो क नाओ ? हा फिर एक बेर मैं और सिगर सिरदारन के हाथ जोरूगो। पाम पकरूँगो आग बिनकी मरजी।'

मया कूँ समझा बुझाय क चकोर एक पोत गाम बारन कूँ मनाइबे कूँ निकसो। वू जा ठौर गयो बाई ठौर प दुत्कार दियो गयो। काऊ न सीधे म्हो बात नई करी। सबन न गाम ते छिक जावे को डर हो। गाम ते अरु राम ते कौन को बस चल। गाम ते कोऊ रार मोल लनो नाय चाहे। आखीर म चकोर भारी मन त अपनो सो म्हों लकै अपने घर लौट आयो।

गाम बारे अब हाथ धाय क चकोर क पीछे पड गए। कछू मन चले ना समझ अपनी ना समझी पै उतर आए। चकोर की झोंपडी प पाथर फिकये लगे। एक दिना एक पत्थर ते नथिया की कपार फूट गयो। वू लहू सा लथपथ है गई। चकोर को क्रोध जगो पर पस नई खाई। वान डीग जाइक मरहम पट्टी कराई पर गाम को एकऊ सग नई लगो। ताने और दिए। बिचारी फूस सी बुढ़िया म वित्तई कितक ओ। मुरगी कूँ तो तकुआ कोई डाह काफी हाय। बिचारी न खाट पकर लई। चकोर मया की तीमारदारी म लग गयो। राटी पानी घर की सारा बुहारी सब बाए करनी परी। गाम वार फटक तक नई। काऊ न तिनका तक को सहारो नई दियो। जा बुढ़िया कूँ मावस पूनो सीधे दओ करत वि न सीधो दनो बन्द कर दियो। यहा तक बात रहती तोऊ कोऊ बात नाई। एकदिना वाक मन म आग लगबा दइ। बुढ़िया न सुनी तो वाको हियो भर आयो। फूट फूट क रावे लगी अब वाको धीर धरयो तक नाओ। नथिया नें समझ लई क अब गाम नें पाम उखार दिए। चकोर मया क दुख सो पिघल गयो। वू

अकेले मे रो लेतो। वाए पतो, घर कूँ छाडिबे म मैया दुखी होयगी। चकोर के मन म दुविधा जनम लेवे लगी। एक ओर मैया दूसरी ओर चदा। मन करो गाम वारेन त माफी माग कै गाम वारेन नैं मना ले। अपनी जाति की छोरी त ब्याह करले खूब दैन गायजो ऊ मावगो, घर बन जाइगो। दूसर छन वाके माथे मे बिजुरी सी कोधती। वा म्हों ते चन्दा के पास जाइगो। वाप अरु बात की तौ एकसी ही बात है। चकोर गहर म डूबतो उतरतो।

मया क दुख सौं दुखी है कैं अपने मान गुमान कूँ ताक म रख कैं चकोर एक पोन किसार के घर पहुँचो। वाते हाथ जोरि क गाम वारन की जोमर्दी की बात कही। घर पै पत्थर फकव अरु खेत म आग लगाइवे की सिकायत करी पर किसोर नैं कह दई, मैं का कर सकूँ ? गाम वारेन ते पस नाय खाय। गाम म रहनौ है तौ हाजी हाजी कहनौ परगी।' या बात कूँ चकोर ऊ समप्त रह्यो क गाम अरु राम त बर मोल लक काऊ न पीरे नाँव पहरे। चकोर न तोऊ छमा चाही पर किसोर नैं अनसुनी कर दई। याई तरिया चकोर कई मुड्डन के पास गयो पर निरासाई हाथ लगी

अखीर म चकोर वहोरी भगत के पास गयो। वहोरी भगत आध्यात्म कूँ लै बठो बोला— बटा इन्द्रीन सौ वढिक मन है, मन त वडी बुद्धि है, बुद्धि तैं वडी आत्मा है। पत्लान ते वडो माळा ह, साग्रान सौ वढिकैं पड पड सौ वढिकै जड है। हम जड कूँ नई भुलानो चइए।"

वहोरी न वाके दुख सौं दुखी है क चकोर क मन कूँ तसल्ली दवे कूँ एक बात और कही, "या ससार मे तू ई दुखी नाय, चारो ओर दुखियारे है। सबन के माथे प गठरिया धरी हैं। अगर कोऊ आँखिन वारो है तो देख सकै क दूसरन के सिरन प दुख के गट्ठर बधे धरे हैं। जिनसौं दुख झाँक रहे हैं। भया भार म कहू सीरो नाएँ। इनते परेसान होनो सुभाविक है। पर समझदार दुखन सौं दुखी है कैं नीति के पथ कूँ नाय छोडैं। जीवन कूँ मन्न काटै पर ग्यानी काटै ग्यानतं मूरख काटै रोय। काटनो दानोन कूँ पर। हा वुद्धिमान बुद्धि सो काम लै अरु वा बुद्धि सो परे आत्मा अरु परमात्मा को ध्यान रख। दुख परवे प वाको सुमरिन तो सब कर, पर अपने कूँ समरपन हू करैं। हाँ दुख परवे पै सुमरन कोऊ काम को नाएँ। दुख परवे पै समरपन को कोऊ मजा नाएँ। सुख के सम सुमरन अरु समरपन को महत्व है। यई हमारी सस्कृति है। तोय मालुम नाएँ, महा एसो कौन पुन्यात्मा भयो है जाकी महिमा सृष्टी कूँ दुष्टन की बानी के बानन नैं नई भेदो होय।'

वहोरी के लम्बे चौडे भासन ते चकोर कूँ राहत सी मिली। हा वाए सन्तोस नई मिल पायो। वू अकेलो होतो तो पाँव फटकार कै चल दतो पर मैया कूँ कहा छाडतो ? मैया कूँ गाम वारे दातन के बीच मे जीभ की तरियाँ हू तो नाय रहन दै रहे। वाए चौरे मे दीख रह्यो क वाकी मया की स्थिति ऐसी है जस अकेली नाहिन सिगरो धौल खेरो। वहोरी नैं चकोर कूँ दुख सहन करवे कूँ पक्की कर दियो। दुख मान्सन प आत

पर मानसन कूँ दुखन सों भागनों नई चइए। नीति को पल्लौ नई छोडनौ चइए। दुख तौ मान्सन न घिस घिस कैं सालिग्राम बना द। इन भावन सों चकोर कूँ आत्मिक बल मिलौ । बू हिम्मत बाँधि क अपने घर लौटिवे लगौ पर घर आते आते रात है गई।

घर आय कै फिर मया की सेवा मे लग गयौ। मया कूँ अपने मन कौ दरद नई बतायौ। बू नाय चाह रह्यौ क मया कूँ अपने दुख सौ दुखी करौ जाए। मया बेर-बेर कहती क गाम मे रहवौ दूभर है। घर छाडि कै चलवे की बात मया ते कही तौ बू रो पडी गलौ रुंध गयौ। नथिया कौ गाम ते बसो ही लगाव हो जसे मीन कौ नीर ते मधुमक्खी कौ छत्ता ते फलौ कौ मनौ ते। इन साच विचारन म दानोन की आख लगवे कूँई । तबई घर की छान प भक्काटौ सौ भयौ। चकोर कूँ समझवे मे देर नई लगी। बान मन सौ पहलै अपनी मया कूँ गोदी म भरकै झटपट बाहर निकासनौ चाह्यौ। झोपडी म दम कितेक ही आग लगते ही छान स्वाह है गई। बू मया कू लकै दरवज्जे तक आयौ तौ लपटन नैं घेर लियौ। बान मया कूँ धरती प रखौ। झटपट साकर खोली और एक ही झपट्टा में मया कू लकै बाहर निकस गयौ। मया भौचक्की सी देखती रह गई। दहाड मारकै रो परी। गाँम के तमासगीर जुर आए। काऊ नैं नैकऊ दया नई दिखाई।

चकोर की आखिन म गोध उमड आयौ पर बिचारौ का करतौ। चकार नैं आग बुझाब कू हाथ पाव पीटे। नथिया न रोय रोय क गाम बारेन ते आग बुझाइवे की कही पर आग लगावे वारे बुझाते चों? छान धू धू जरवे लगी, बास चटक्वे लगे। नथिया अरु चकोर के हाउन प खटकबे लगी। देखते ही देखते घर कौ मरघ्अा है गयौ।

कछू दयावत बैंयरबानी नथिया के पास आ गई। वे होठन सों सहानुभूति के दो बोल बोल रही। नथिया के सग जो ब्याह के आइ बे जरूर दुखी भई । रात गहराबे लगी। एक एक करकै सब क नी काटवे लगे। घर के सामइ परे रह गए चकोर नथिया अरु बहोरी।

चकार नैं निहृच कर लियौ क दिन निकसते ही बू अपने प्यारे गाम कूँ छाडि क चल दगौ। रात भर तीनो अपनी दुखडौ रौमते रहे। बिलकी झोपडी रात भर मिलगती रही। कबऊ कबऊ नथिया नै चकोर के ताईं कोसा। ता समै चकोर नैं सब अपनौ दोस जानि क, चुपचाप सब बात सहन कर लई।

दिन निकसते ई नथिया के घर के सामई मेला जुर गयौ। कछू नथिया के दुख सौ दुखी हैक पिघले पर मदद करते तौ कसै करत। सब गाम ते छिकव कौ डर हौ। सब तमासौ देखते रहे। बहोरी न बाई ठौर प छान डरबायवे की साची पर चकोर कौ मन भर आयौ। बान साफ कह दई "अब मैं गाम म नाय रहूगौ। मया कू लकं भरतपुर ई रहूँगो।

या बात कूँ सुनिकें कछु व्यग्य कसवे लगे, 'अबई छोरा को बल नाय निकसौ जेवरी जर गई है पर ऐंठन नाँय गई।" या समै सूरज पख फैलाय क उडान भर रह्यौ तवइ एक डाकिया डोग ते आयौ। वानैं चकोर के नाम कौ लिफाफौ गहतायौ। चकोर ने लिफाफो खोलिक देखौ। खुसखबरी निक्सी। भरतपुर के कॉलेज म लक्चरार की नौकरी को कागज हो।

या समाचार कू पढ़िकें चकोर ने अपनी मया के पाम छिए तौ मैया कछू समझ नई पाई बोली, 'को मोय छोडि कें जा रह्यौ है का ?"

नई मया तोय छोडिक क से जाऊँगो। जाऊँगो तौ कहा जाऊँगो। मया मेरी नौकरी लगवे का तार आयौ है। भरतपुर म मोकूँ लक्चरारी मिल गई है।"

'अरे बेटा जुग जुग जियौ मेरे मन की साध पूरी भई। अब मेरे पाँमन न का छीमे। सब गाम वोरन के पाम छी।

बा सम जितेक बडे बूढे खडे, वानैं सबन के पाम छीए। सब पानी-पानी है गए। सबन नै हाठन सो ग्रासीस दियौ।

बा समै को नजारो देखब जोग हौ। एक ओर सुख दूसरी ओर दुख मया-बटा सुख दुख क झूला म झूल रहे।

चकोर तो भरतपुर चलव कूँ पहल तेई तयार हौ अब तो सुऔसर और आ गयौ। मैया ते बोलो मैया अब यहां रुकव म कोऊ सार नाएँ। मौय भरतपुर रहनौ ही है। तू अकेली रहैगी तो कहा रहैगी। भगवान नै सुन लई। अब हम दोनो ई भरतपुर रहिगे।

बेटा जसी चाहे वसी ही कर पर भरतपुर कहा चलिग अपनो कोऊ ठौर ठिकानो तौ हुत नाए।"

मया सब भगवान भलो करगो। नोकरी लग गई है। अब ता जहा नौकरी म्हाई अपनौ घर।'

पर या घर कू छोडि कैं कैसे चलूँ ?'

मैया अब घर कहा रह्यौ है अब तो ई तो धूरी है गयो।

बटा तू अकेलो चलो जा मैं तो एक छपरिया डारिकैं याई ठौर रह लऊँगो।'

मया अब ऐसो नाय है सकै। फिर अब अपनो यहा रहो ही काए। फिर ताय यहा रहन कौन देगो ?'

'तू जसी चाहे वसी कर तरौ सुख मेरो सुख है।'

मैया-बेटा बतरामत रहे । गाम वारे सुनत रहे । कछु गाम वारे या दुख म मानन्द लेत रहे । कछु नथिया की जरी भई झोपड़ी अरु दो बीघे गारन नैंहू हड़पबे कूँ तयार बैठे । जिनक मन म दया आई वे गाँम के डरते बोलऊ नई सक ।

थोरी देर म चकोर अपनी मया के न चाहते भए हू बाँए हाथ को सहारो दकैं होले-होले सडक प ल चलो । नथिया आगें जा रही पर मन जरी भई झोपरी म ही फस रह्यौ । मुड मुड क बाय देख रही । रो रही । मन म आग लग रही पर बिचारी बिवस ई । सडक प नथिया अरु चकार तमास बन रह । बस क आत ई नथिया भूपाटन ते रो परी । चकोर वाए हाथ पकरि क बठाव लगो नथिया गिर परी । बोली, "बेटा मैं नाँय जाऊँ, गाँम कू नाय छाडूँगी । या गाम मे ब्याह के आई हू । गाम बारे मोय लक आए हैं । भीर म ते आवाज आई, 'जो लक आए है बि नैं निकार दई है दूध की माखी की नाई । छारा ठीक कह रह्यौ है गाम मे अब रह्यौ ही काए ।" चकोर ने कही, मया अब इन बातन न रहन द नथिया ने कही, 'अच्छो गाँम वारेन सौं गलतीन की माफी तो माग लऊँ ।'

चकोर बोलो ' मया दोसी तू नाए —दोसी मैं हू मैं ही माफी मागूगो । ' वाने मया के आसू पोंछे । कन्डक्टर व्हिसिल देवे लगो । चकौर नैं मया सम्हार के बठारी फिर दोनोंन नैं हाथ जोर क गाँम वारेन सौं माफी माँगी । कन्डक्टर ड्राईवर और सिगरी सवारी कछु समझ नई पाए । गाडी चल दई । लाग लुगाई, धीरैं धीर अपन घरन कू लौट परे ।

बधे दोऊ बन्धन मे

भरतपुर म चकोर अपनी मया कूँ लकै चौमुखा महादेव के पास किराए क एक मकान म टिक गयो । बाके पास ना खाइब कैं औ ना पीब कू ना ओढिबे कूँ औ, ना बिछायब कू । वाके यार राजेन्द्र नैं कछू रहब सहब, खाइब पीवे, ओढिबे बिछायवे की परबन्ध कियो । बान तन, मन अरु धन सो पूरी मदद करी ।

भरतपुर कालेज म ड्यूटी ज्वाइन करते ई चकोर के हल्ला है गए । वाकी पढाई और व्यवहार सौं छारा भौत प्रभावित भए । चकोर न अपने साथीन को हू प्यार पायौ । थोरे दिनान मइ वाकी धाक जम गई । फून की सी गध फल गई ।

चकार की नौकरी की खबर सुनिक एक मत्री महोदय अपनी बिटिया की सम्बन्ध लकैं आ गए । भाँति भाँति के प्रलोभन दवे लग । चकार न दो टूक मना कर दइ । प्रलोभन के पीछ मत्रीजी न दडनीति को हू अनुसरण करौ, पर चकोर के कान प जुँ तक नई रेंगी ।

चन्दा के घरवारेन नैं जब सौं चकोर के भरतपुर आइवे की सूचना पाई बिनकूँ भारी खुशी भई। दूसरी ओर गाम वारन के अत्याचारान कूँ सुनिक बिनकूँ भौत दुख भयौ। लेक्चरार बनवे प चन्दा की कली कली खिल गई। वू चकोर कूँ बधाई दवे कालेज पहुँची। चाखे हू बधाई दवे गयौ। सग म ब्याह की चरचा हू कर गयौ।

चन्दा अरु चकोर के अन्तरजातीय ब्याह की चरचा भरतपुर क अखबारन म है गइ। एक पच्छ याकौ समथन कर रह्यौ। दुसरौ याकौ विरोध करवे प तुलौ। दोनो पच्छन नैं अपने-अपने पम्पलेट निकासे।

देखते ही देखते एक नवयुवक मडल तैयार हैगौ। चकोर कौ यार याकौ अध्यच्छ बनौ। वान नई विचारधारा क नवयुवकन कूँ लकै अन्तरजातीय ब्याह कौ समथन कियौ। नवयुवक मडल ने बाल बिवाह, पदा प्रथा बेमेल विवाह जसी सामाजिक कुरीतीन कूँ दूर करबे के ताइ और घोसना करी। नवयुवक मडल न मौहल्ला मडली बना दई। नवयुवक मडल ने निरनय लियौ जो अच्छे कामन म रोडे अटकाबगौ तौ बाकौ नवयुवक मंडल घिराव, पथराव अनसन, सत्याग्रह, बहिस्कार जैसे कामन कौ सहारौ लगौ नई तौ हम सबके हैं सब हमारे है। समाज की दहेज की दुनाली ते पीडित दुखिया आय-आय क मिलिबे लगे। जस छोटी नदी बडी नदीन म आइक मिलै वाके वेग ए वढा दै याही तरियाँ नवयुवक मडल कौ प्रभाव दिन दूनौ रात चौगुनौ बढवे लगौ। नवयुवक मडल न ठौर ठौर प सभा करी। रूढिवादी जर भुन कै रह गए। बहुमत क आगै अल्पमत झुक गयौ।

आलोचना क बादर हट गए। वाद विवाद मिट गयौ। जरजर जीवन, सक्ति रहित पुरानी पीरी पत्ती हरी भरी जीवन सक्तियुत नई पत्तीन क विकास कूँ कब तक रोके रहती। पतझर युग परिवतन लाव। चौखे नै सुभ दिना देखि क अपन चार भैयान के सग चकोर के घर आइकै चकोर के माथे प तिलक कर दियौ। कछू फल मिठाई बाकी गोदी म रख दिए। सकुन के रूप म एक रुपया भट दियौ। पडित नैं विधि विधान सौं सिगरौ काम करायौ। हाथो हाथ ब्याह कौ दिना त कर दियौ। होरी की दौज कौ सायौ दोना पच्छन नैं स्वीकार करौ।

चोखे की बहू राधा तौ अब दिन गिनवे लगी। नथिया हू फूली फूली डोल रही। दोना ओर उछाह दिखाइ पर रह्यौ। ब्याह त महीना भर पहले पीरी चिट्ठी आ गइ। ब्याह कौ बिधिवत नौतौ आ गयौ।

जब नथिया के सामइ देहरी पूजन की बात आइ। चकोर न राजेन्द्र की भन सो एक हडिया म मौती चूर क लडडू मगवाय क पूजन करा दियौ। राजेन्द्र की भन हू खुस हैं गई। नथिया हू खुस है गई। देहरी पूजन कू जो ढकोसला बताव लग बिनकूँ नथिया न समझायौ—

'देहरी म अमुर बाम कर, सबसों पहल विन्नें मनायो जाए जासों मगल काय निर्विघ्न हाव।"

चकोर नै या कू स्वीकारो। राजेन्द्र जा याकू व्यथ समझ रह्यो याकू चकोर नै बतायो—"तुलसीदास नै हू तो अपनी रामायन म देवतान सों पहल असुरन की वंदना करी है। फिर हमारी सस्कृति भुलाबे नें ताड़ मोरइ है।

देहरी पूजन के लड्डुआ घर घर बंट। सबन कू मालुम पर गई। नाक भौ सिकोरबे वारी नाक भौह सिकोरब लगी। कहबे लगी 'कहीं की इट कही को रोडो, भानुमती नै कुनबा जोरो।' जो भली बयरबानी विन सब प्रकार सों सहयोग दियो।

लगन को खेना पांच दिनान को निक्सो। इतकू चकार ी सलाह सूत करक मया के अनुरूप प्रबन्ध कियो। दूसरी ओर चोखे न आसामीन कू खटखटायो। कइ आसामी तो अकाल के मार घर छोड गए। कछू मडक डारबे कू जात। रोज खोदते, रोज पीते। कछून ी पट दिखाय कै कह दइ क यात बच तों कछू करें। चाखे आसामीन की हालत कू देखि क कह न सको। जिनत कही, विन्नें टका सो जवाब द दियो। हार झकमार क चोखे चुपचाप घर लोट आयो।

राधा नै चोखे त करजा लबे की बात कही पर जहा जहा हाथ डारो कोड़ी पटट परी। अखीर म राधा और चाखे ने त कियो क मकान के पास की 40″×60″ की जमीन बेच दइ जाए। भीत मे सामाजिक गिद्ध तो याकी बाट देख रहे। बीच बस्ती म ऐसो प्लाट मिलनो दूभर हो। प्लाट के साम सडक, नल, बिजली सब सुविधा हती। प्लाट 10 000/ ते कम को नाम्रो पर 5 00।/ ते ज्यादा दबे वारो कोऊ नाम्रो। सब जान गए गज बावरी होय। औने पौने म थोक्नो परगो। आदमी तो समै देख। समै को लाभ उठावै। सब चोखे कू न्यूटिव कू मेंडरा रह। चोखे कू हू अपनी बिटिया को ब्याह दिखाइ द रह्यो। वू मनइ मन कह रह्यो जाए लाख रहे साख।

चकार कू जसेइ या बात की मालुम परी बाप नई रह्यो गयो। वू भगो भगो चोखे सों आइके मिल्यो। वान विनम्रता सौ कही, पिताजी प्लाट बेचकै ब्याह करबे की सोच रहे हो। घर बरबाद करकै ब्याह करोगे? फिर तो मरे सग ब्याह करब को नतीजा ही का निकसगो? सब लोग माप थूकिंगे। हमारो करो धरो मटटी म मिल जाइगो। मरी ममन मे पइसान की जरूरत ही काए? चोखे का उत्तर दतो। बा ने चकोर के आगे प्लाट नाई बेचबे की सौग ध खाई। तब चकोर कू स्वात आई।

चोखे न सौग ध तो खा लई पर लगन म कछु तो भेजनो। चार भयान के ताईं घर प खारौमीठो पानी तो पिवानो। दुनिया बसेई नाम धर रही अब छोरी कू

खाली हाथ भेजबौ कहाँ लौ उचित हौ। का करतौ, अकल कछ काम नाय दै रही। अखीर म राधा ने तीन तोला सौनो जो बचाय कै रख राखौ चाखे के हाथ प धर दियो। चोखे के मन कूँ राहत मिली। प्यासे कूँ पानी मिल गयो।

लगन के दिना आगन म चौक पुराय कै चौकी प छोरी कूँ बठाय क पडितजी ने लगन लिखी। लगन के ताँई एक परात, ग्यारह सेर लड्डू कपडा को एक थान कछू फल फूल रखे गए। बयर बानीन न लगन लिखते समय लगन के गीत गाए। अखीर म आरतौ भयौ बयरबानीन ने आरतौ हू गायौ—

'ब्रारे झमके कौ बरसनी मेर '
सुक्लजी नै लगन पढकै सुनाइ ।

बयरबानी जब घर चलबे लगी तौ बतास बँट। बयरबानी चाखे के घर ते निकसते ही गिरारे म गीत गाती चली—

फिरगी नल मत लगवावे रे फिरगी नल मत लगवाव।
नल को पानी भौत बुरौ मेरी तबियत घबरावै।
सहर के सा गए हलवाई, जी सहर के सो गए हलवाई।
अब तौ मुखडा खोल कलाकद लायौ हूँ प्यारी॥

चकोर के यहा साझ कू लगन पहुँच गई। दरवज्जे पै हरे हरे बन्दरवार लग गए। ग्राँगन लिपवायौ गयौ। चौक पुराए गए। साम कू हमीदा ने नगाडो अरु वाय छोरा नै नफीरी बजाइ। नवयुवक मडल नैं मिलकै सब काम किए। फरस बिछाए चादनी बिछाई। नथिया पीरी पहरकैं पास-परौस की बयरबानीन कूँ बुलावे गइ। चकोर नै अपनी मया कूँ खुस करबे के ताइ मया के अनुसार सब काम किए। लगन के लते समय लगन लेबे के गीत गवे, ग्रारतौ छात भयौ। पडितजी न लगन पत्रिका बाचि क मुनाइ। पास परोसीन कूँ चाय पिबाई। चकोर न लगन कौ सामान अपनी मया की गादी मे रखक बाहर सबन कूँ राम राम करी। बडे बूढ़ेन को ग्रासीस लब क ताइ पाव छिए। सबन ने आसीस को हाथ फेरौ। आनन्द क सग लगन कौ काम सम्पन्न भयौ।

लगन के पाछ चिटठी लिखी जाएँ। दूसरे दिना सबसौं पहलैं मनसजी कूँ चिट्ठी लिखी गई। फिर गुरूजी कूँ चिटठी लिखी गइ। वा पाछ सिगरे नातदार अरु मिलिब वारेन कूँ चिटठी लिखी गई। नथिया के मन म ग्राइ अऊँ गाम क मुड्ड-मुड्डन कूँ हू चिटठी लिखी जाएँ। चकोर न चिट्ठी लिखिबो तो दूर गाम की ओर पग्ग करकै हूँ साबे की नाय सोचो। पर मया तो या विचारधारा की क बटवो तो मेमन को चाहे वर चौं ना होय। यामौं चकार ने ग्रऊ गाम वारन कूँ चिट्ठी लिखी।

नथिया के मन म कोऊ चोर नाओ वू ता चाहती जो है गई सा है गई। जबऊ गाम वार वात अऊ लौट चलव की बहैं तौ अऊ लौट जाए, पर गाम वारेन की यौनसी गज परी। जि घर उजारो वे याइकूँ आवे लग। गाम त बहारो जरूर आयो।

ब्याह के रीति रिवाज नथिया के मह अनुसार है रह। धूरो पूजिवे पै नवयुवक मडल आना कानी करने लगौ। नथिया न सबन कूँ समझायो, बेटाओ पुरखान ने धूरो पूजियो या ई नाँय राखो। याक पीछ जीवन दरसन है। धूरो पूजिक इ पाठ सिखाता है कै अब तक तौ हस खेल क उमर बिताय दइ। अब गृहस्थ जीवन म प्रवेश करव धूरा जसो बननो है। धूरो जस सब भार ए झेल कूरो करकट, मल मूत्र सबन न सहन कर एसैं ई अब सहनसक्ति को पाठ धूरे त सीखनो है।" नवयुवक मडल ने जीवन कौ रहस्य समझो तो बात जच गई। चकोर ने हँसत हँसत मया की बात मानी।

बितकूँ चन्दा क घर बिना धन के कोऊ प्रब ध नाय है पाय रह्या ब्याह के समै घर प सुफेदी, रग रोगन हाय हायी, घोडा बढ । पर हाय तौ हाय कैसी? अटटी का वित्त प चेत। चाखे की तो अटी खाली। इन सोच विचारन म चाखे डूब रह्यो। तबइ राजेन्द्र अपने दो यारन ने लऊ चाखे के पास पहुचो। ब्याह की व्यवस्था कसैं होयगी ? ई सवाल किया तो चोख की चहरा उतर गयो। मन बठ गयो। राजेन्द्र भाप गयो गरीबी चारो ओर सौ भाँक रही।

राजेन्द्र ने समझायो, ब्याह की चिंता नेकऊ मत करो ब्याह आय समाज मन्दिर मे होयगो न तो वर पच्छ की ओर सा काऊ ताम झाम आवगो, ना कन्या पच्छ के दरवज्जे प कोऊ धमरगज होयगो। आज तक अपने अपन घरन पै जो चाह्रो सौ करौ कल्ल दानो पच्छ आय समाज मन्दिर मे आ जाइ गे। ता पाछ सब काम नवयुवक मडल के हाथ म होयगो। बेटी बारे अरु बेटा बारे तौ तमासौ देखिग।" चोखे न ई समाचार सुनौ तो सकपकावे लगौ। वू किंकर्तव्यविमूढ है गयो। बाक मन कूँ राहत तौ मिली पर बिना पइसा धेला कस काम होयगो ? ई समझ म नाय आ रही।

राजेन्द्र नै समझायो दोनो तरफ की व्यवस्था आय समाज की ओर ते होयगी। आय बालक बालिकान की जसै ब्याह होतो वाई तरिया ब्याह होयगा। वादक सस्कृति का निर्वाह होयगो। आदस रखनो है। अगड्टा पीचनो है, जासौ सब दुख दारिद दूर है जाइ ग।'' चाखे ने अपनी सहमति द दई।

अब नवयुवक मडल के सदस्य नथिया के पास पहुचे। बिन्नै सिगरी बात नथिया कूँ हू समझा दइ बिन्ने हाय धाय क भूमर हा भूमर आय समाज के मदिर म पहुच जानो है। सिगरे काम विधि विधान ते हुग।' नथिया ने हू बिना हुज्जे तुज्ज क नवयुवक मडल की बात मान लई। वू या बात कू जानती क बाके हितसी नवयुवक मडल क ई तौ है। ब जो कछू करिगे भलौ ई करिगे।

नवयुवक मडल नें दोनो पच्छन कू तयार करकं चन की सास लई। वा दिना धूरडी को उत्सव हो। दूसरे दिना दौज कूँ ब्याह हो। सबन ने मिलिक पहले धूरडी को उत्सव मनायो। धूल धक्कड सों हटिकें, रग गुलाल सो खूब होरी खेली। व्रज के खूब रसिया गाए। ढप ढाल चग लक नवयुवक मडल भरतपुर की गलीन म निक्स परो—सब जुर मिलक गा रह—

आज बिरज म होरी रे रसिया
होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया।
अपने अपने मदिरवा सो निकसी
कोऊ स्यामल कोऊ गोरी रे रसिया॥
अबीर गुलाल के थार भरे हैं,
मारत भर भर झोरी रे रसिया॥
बाजत चग, मृदग ढाल ढप,
और नगारे की जोरी रे रसिया॥
कौन के हाथ पिचकरा सोहै?
कौन के हाथ कमोरी रे रसिया?"
स्याम के हाथ पिचकरा सोहै।
राधा के हाथ कमोरी रे रसिया॥
चन्द्र सखी कहि बाल कृष्ण छवि,
चिरजीवहु यह जोरी रे रसिया।"

दुपरी तक सब याही तरियाँ होरी गामते गामते होरी के रस म डूब गए। सबन के चेहरा रग अरु गुलाल म ऐसे रग गए कै पहिचानेवे म हू नाय आ रहे। सब एक दूसरे के गरे लग रहे। होरी की मिलन, मन के मल कूँ दूर कर रह्यौ। दुपर तक सब थक कै चूर चूर है गए। धीरे धीरे सब अपने-अपने घरन कू चल दिए।

साँझ कूँ फिर सिगरो नवयुवक मडल आय समाज के मदिर म इकठौरो भयो। ब्याह के ताईं सबन नें मिलिकै अपनो अपनो काम बाटो। एक दल मडप बनावगो। दूसरो दल यज्ञ की सामग्री जुटाय कं यज्ञ की व्यवस्था करगो। तीसरो दल बैठक व्यवस्था सम्हारंगो। चौथो दल जलपान करावगो। सामान की सूची बनाय दई। ब्याह को काम दिन ई दिन में होयगो ई ऊ निहच कर दियौ। या काम के बटवारे के पाछ सब अपने अपने काम म लग गए। सबन सो तालमेल के ताईं राजेन्द्र त दियौ गयो।

दूसरे दिना नवयुवक मडल न आय समाज मदिर कूँ झार बुहार क धोय पौछि क बिना तामझाम के सजा सँवार दियौ। दोना पच्छ हाथ धोय क आय समाज म आ गए। आय समाज के एक ओर के कमरान म बेटी बारा पच्छ ठहर गयो दूसरी ओर बेटा वारो पच्छ।

चन्दा की सहेलीन नैं चन्दा कूँ खूब अच्छी तरियां सजायौ । बिना चमक दमक के सादा कपड़ान में हू चन्दा, चन्दा की नाई दिप रही । बिना कोऊ आडम्बर के चकार के मित्रगन इकट्ठे भए । भरतपुर के समाज सेवक, समाज सुधारक चारों ओर ते एसें खिंचे चले आए जसें फूल पै भौंरा चले आवें । जसें पोखर में गाम को पानी चलो आवें । मास्टर आदित्येन्द्र, राज बहादुर जुगलकिसोर चतुर्वेदी, किसनलाल जोसी, पं रामकिसन मुकुट बिहारी लाल गोयल हरीसिंह वकील, हरीलाल पारासर जसे नव-युवक अपनों समथन और आसीरवाद दवे के ताईं इकठोरे है गए ।

आय समाज के साधुगन ऊ अपने भगवा वस्त्रन में एक ओर आलथी पालथी मारकें सोभायमान है रहे । सिनसिनी के पंडित लक्खीराम नैं सुन्दर वेदी की रचना करी । चारों ओर हरदी, गुलाल, मेहदी आटो और कई रंगन की अल्पना माढ़ी गई । वेदी के चारों ओर सुन्दर मंडप बनायौ । केरा के पत्ता चारों कोनेन पै लहरा रहे । वेदी के चारों ओर पत्तरन में सामग्री सजा दई गई । एक ओर घ्यौ को पात्र रखो गयो, जामें स्रुवा परो । ब्याह के ताईं सिगरी तयारी है गई । भारतीय संस्कृति की झलक सबन के आँखिन में सामई है गई ।

ब्याह की सही लगन में एक ओर सौं हल्की चम्पई रंगीन सादा धावती में चन्दा आई अरु दूसरी ओर सों सफेद खादी की धोती कुरता अरु जाकेट में सजो सवरो सहज भाव सौं चकोर आयौ । दोनोन ने मंडप के नीचे ठाड़े हैके भारतीय परम्परा के अनुरूप सबन कूँ करजोरि कें प्रनाम कियो । सबन ने अभिवादन स्वीकारो । ता समैं गोपाल गढ़ के रहवे वारे मदनजी ने एक मधुर गीत हारमोनियम पै सुनायौ । बोल हे— 'मैंने वन्दनवार सजाए ।' या गीत सौं वर पच्छ कौ स्वागत कियौ गयौ । ता पाछे रामायन की बिन चौपाइन को सस्वर पाठ कियो गयौ जिनमें सीताजी रामचन्द्र जी कूँ माला पहिराव । बिन चौपाईन के संग ई चन्दा ने चकोर के गरे में वरमाला डारी । वू मन की माला तौ पहलें ही डार चुकी । याही भांति चकोर नैं सालीनता सौं सहज भाव सौं चंदा के गरे में पुष्पहार पहिरायौ । चारों ओर सौं फूलन की वर्षा भई । लोग लुगाइन ने चन्दा अरु चकोर की वरमाला कौ ई सरूप देखो तौ तै करी याही तरियां हम अपने छोरी छोरान की वरमाला कौ आयोजन करिंगे ।

वरमाला के पाछें चंदा अरु चकोर यग पै बठे । पंडित जी ने आय पद्धति सौं यज्ञ करात भए ब्याह सम्पन्न करायौ । यग की सुगंध सों सिगरौ वातावरण सुवासित है गयौ । अगरवत्तीन की गंध सौं वायुमंडल महक उठौ । कन्यादान करबे बारेन नैं कन्यादान करौ ।

समाज सुधारक ने अपने अपने विचार प्रकट करे । एक जने ने बाल विवाह के दोस गिनाए । बाल विवाह सों बच्चान को स्वास्थ बिगर जाए, मानसिक विकास नई है पाव । ना पढ़ पावें ना लिख पावें । बीमारी के मारे, दुखी भए जीवन गुजारें । बाल विवाह के कारन विधवा है जाएँ तो जीवन और भार सरूप है जाए ।

बाल विवाह के पाछे दूसरे ने समाज की दूसरी बुराई पै प्रकाश डारो। एक बहू के हुते भर दूसरो ब्याह करल। कछू उजागर में कर कछू चुप्पचाप करें जब बात खुल तौ लेबे के दब पर जाएँ। एक के होते भए दूसरे सौ ब्याह करबौ एक के माथे के सिंदूर सौ खिलवार करबौ है। जिन्न दो दो ब्याह किए बिन्नें अखीर में नरक ही भागौ।

समाज के तीसरे कोढ दहेज प कई लागन ने धोय धोय क ऊजरो करी। बिन्नै उदाहरन दै दक आए दिना स्टोव फटबे, आग लगबे की बात कही। आए दिना गर म फंदा डारिके, जहर खाइकैं मरबे की बात कही। दहेज के कोढ कूँ दूर करबे कू नवयुवकन कू आगे आइक दहेज के भूत भगाइबे के ताई चकोर के आदस कू अपनाइक उदाहरन दबे की बात कही।

याही तरिया सती की प्रथा, अमिच्छा परिवार नियोजन, स्त्री समानता कारज, विधवा विवाह प हू विचार प्रकट किए। ता पाछे स्वल्पाहार भयौ। दिन ई दिन में ब्याह कौ सिगरौ काम काज है गयौ। ना तासे ना बाजे ना रोसनी ना आतिसबाजी ना झांय झाय ना झिक झिक ना चाय चाय ना चिक चिक। खूत सौ कत गयौ। ठीक सी ठाडी रही। न चैं ढैं ढ को कोई काम नाओ। सानद ब्याह भयौ। ब्याह के गुन गाते गात सब अपने अपने घरन कू चले गए। आलोचना करबे वारे हू मान गए। साच कूँ आच कहां।

चोखे ने जब अपनी बिटिया कूँ विदा कियौ तौ हिचकी भर भर कैं रोबे लगौ। मैया दादी न्यारी रोबे लगी। बिन्न रोमत देखकै अच्छे अच्छेन के हिया भर आए। चोखे ने विदा के समय बिटिया के सिर प सनेह को हाथ फरो। दो बोल सीख के कहे। दादी ने रुंधे कंठ सौ कही, घर कौ नाम करतौ बेटी कर क रोटी।' चोखे की आखिन सौ लग रह्यौ कै वे मौन है क बिटिया सौ छमा चाह रहे होय, 'बिटिया हम ने फटे पुराने जो कपडा पहराए सो तुम ने पहर, जो मोटौ झोटौ खाइबे कूं दियौ सो खायौ पर कबऊ उराहनो नाय दियौ। जो सेवा करी वाकौ बदला चुकायौ नाय जा सक। हमनै जब आधी आधी रात कू पानी मागौ तब पानी दियौ। बीमारी के सम, रात रात जाग क सवा करी। हमन कस्ट ई कस्ट दिए अब जाते समै छमा करती जा अपनी मया कू धीरज बंधाती जा।" मुखरित है क चोखे बोलौ बटी अपनी सास कू अपनी मया सौ बढकै समझियो, अपने पति कूँ देवता मानियौ। या सम सब रोतौ छाडि क चदा चल दइ। सबन की आखन मे आंसू छलकते रह गए।

नयिया न चदा कूँ बडे चाव सौ विधि विधान सौ, सोन विचार कैं घर क भीतर लबे को गीत गायो--

लोग महाजन या कहैं
या कृष्ण का ब्याह न होय

इनई मोहल्ला के देखते
इनई लोगन के दखत
लायो है वहू है विवाह ।

दरवज्जे प सांत कांसी की थारी एक के पीछें एक रखी । बिनम पेडा और पइमा धरे । चकार थारीन ते छटी छुवाय कें आग वढतो रह्यो चदा पीछ त सिर प जल भरी पीपर को डार परी गागर कूँ लक एक-एक थारी उठातो रह्यो फिर साता थारी न लकें भीतर घर म घुसिक देवतान के आगें थारीन नें धर क बठे । बयरन न घेर गढी गाई ।

घेर गढी भाइ घेर गढी ।
सासू छोटी वहू वडी ।
जितनं सासू पानी जाए ।
वितनें वहू गिदोरा खाए ।

सवन न नथिया के भाग सराहे । घर म चन्दा सी वहू आई है । सवन नं ई ऊ वही पूआ ना गापरी, गद्द वहू आ परी । हद नगी न फिटकरी, रग चोखो ही आ गयो ।

बज्रपात

चन्दा चकोर के घर म लच्छमी बनकें आई । घर म नौ निधि अरु बारह सिद्धि है गई । चन्दा अरु चकोर चर्चा करत, बाधा तो आई पर मांचा प्रेम, सही मस्तार, सही काम भाग्य अरु ईसुर की किरपा त मजिल मिलई गई । नथिया हू बटुआ म म्हौं की सुघर सलौनी वहू कूँ पायक सब दुख दरदन कूँ भूल गई ।

चकोर नवघरार तो बन गयो पर बाको ध्यान सदा पढ़ब बढ़बे म ई लगो रहतो । थोरे दिना पाछ बानें आर ए एम की परीच्छा दई । बाऊ म बाए सफलता मिनी फिर तो वू बो डी आ बना दियो । सौभाग्य सो बानो पोस्टिंग डीग माहि है गयो ।

डीग ब जिल म पुरान राजान के महल है । जब आमन-मामन लड़ाई नडी आरी तब ब महल जिल म बनाए जात । ता मन म सुरच्छा क बाई क बड़े उपायाो है । आजकल तो इनकी काई पूछ नाय रही पर महल ता महलई होय । बिन महलन माहि पचायत ममिति को आफिस अरु ऊपर क हिस्सा न बी डी आ अरु दूसर कमचारीन को आवास हो । चकार बी डी आ है कें चन्दा अरु अपनी मैया क सग

पचायत समिति के ऊपर के हिस्सा म रहब लग गयो । चकोर कूँ सब सुविधा मिल गई बगला की ठौर बगला, जीप की ठौर जीप नौकरन की जगह नौकर । सब आनन्द है गए । चतुर लोग कहो करें अव्वल सुख निरोगी काया, दूजे सुख घर मे होय माया, तीजे सुख पतिव्रता नारी, चौथे सुख सुत आज्ञाकारी । नथिया अपनो भाग सराहवे लगी । चकार को पद बडो, वतन बढो और वढ गयो यम ।

पचायत समिति म चकोर क रहन सहन, काय व्योहार कू देखिक सब लाग दानन तर अगुरी दवावे लग । भारतीय पोसाक, सादा रहन सहन सबसो प्यार सो मिनिवो, सब के काम म हाथा हाथ करवो, ईमानदारी सो रहिवो खूब ई भातो । पच्छ वारे प्रशसा करते । दुस्ट सुभाव वारे ईर्स्या करते । चारो ओर चकोर को डका पुज गयो । सब लाग कहवे लगे 'ना तो ऐसो बी डी ओ आयो अर ना ऐसो आवै ।' हा, जा दिना चकोर बी डी ओ वनक आयो अऊ गाँम म हुई मच गई । लोगन के मन म भय छा गयो । अऊ बारे भाँति भाँति की आसका करबे लगे । कछू कहवे लगे चकोर गाँम ते वदलो लकं रहैगो । कछू ा कही कुचलो भयो स्याप है । कछून ो कही मैया के वर ए छर छर कं लेगों । भांति भांति क लोग भांति भांति की बात—"जसी जाकी बुद्धि है तसी कहे वनाय ।'

कछ अपनी करनी पर पछताइवे लग । कछू चकोर के सामई जाइवे ते कनराव लगे । जात तो का म्हाँ ते जात ? पद प्रतिस्ठा तो पामन ने आगे बढातो पर उनको करनी उनके पामन नैं पीछे ढकेलती । कछू सामई गए ऊ तो आँख मिलाइवे म सरमावे लगे । कछू भय झिझक अरु सकोच कू छाडि कं मिलेऊ तो म्हो खोलिबे को साहस नई कर सके । तोऊ चकोर ने गाम वारेन को काम रोको नइ । सच्चाइ सो, ईमानदारी सो कतव्य परायणता सों बदले की भावना कू भुलायवं, ताही छन कियो । गाम वारेन ने गाम जाइवं मन भरकं झिकपेट चकोर की बडाई करी—"ई बात साँची है—बडे बडाई ना कर बडें ना बाले बोल ।" बहोरी ने कही, 'भैयाओ चकोर तो पढो लिखो ही नाएं, उदार हिए को है । फिर अपनो है । वाते काइकी झिझक वात काइकी डर । सज्जन लोग नकी कर अर कुए म डार पथ को अनुसरन कर । भल लाग हिंसा कू अहिंसा सो दूर कर । कीचड कू साफ पानी सो साफ करै । चकोर आदमी कू नई आदमी की नीयत कू बुरो बताव । वाको सिद्धांत ता वृच्छन को सो है—इनते वे पाहन हनै उनते व फल देत ।'

बहोरी ने लोगन कू मुक्तेरो समझायो पर जिनक मन म चार बठो भयो वू कैसे निकसतो जिन्नैं वाकी झोपडी म आग लगाई, जिन्नैं बाकी झोपडी म पत्थर फकें वे डर अरु लाज के मार मरे जा रहे । अपनी करनी प वे अपन आप गढे जा रहे । पर 'अब पछताए होत का जब चिडिया चुग गई खेत ।" सब कानाफूँसी करते 'यार हम ने अपने पामन म आप कुल्हाडी मारी है । अब तो जसी करनी वसी भरनी है ।

मन की बात तो मन तक पहुँच। अऊ गाम वारेन की मन की बात चकोर अनुभव कर रह्यौ। वानैं सब गामन के दौरा किए पर अऊ गाम कौ दौरा नाय कियौ। अऊ म हैंड पम्प लगाबे, चकोर नें अपनो ओवरसियर भेज दियौ। स्कूल कौ भवन बननौ हो तो जूनियर इंजिनीयर भेज दियौ। और कम्प लगे तौ दूसरे अफसर भेज दिए। यासौं गाम वारन कूं विसवास है गयौ क अब अऊ गाम को भलो नाएँ। गाम वारे गाँम के विकास के ताईं चकोर सौं का म्हौ ते कहते ? वे समझ ही नाय पा रहे।

एक दिना सिगरे जुरि मिलिक वहोरी के पास गए अरु कही भया अब या गाम की लाज तिहारे हाथ है। जो कछू होनी हो, सो तो है गई पर जब अपनौ ई बी डी ओ आ गयौ है तो गाँम की तरक्की होनी चइए।"

वहोरी बोलौ, "भया मौतें का चाहो ?"

परमाल नें कही 'वहोरी तू सब समध रह्यौ है। भाई गाँम ते पाप बन गयौ है यावौ प्रायस्चित कसैं होय ?"

वहोरी बोलौ 'भाई सब जुरि मिलिक चलौ। काहिली-माकूली है जाइगी। मैं कह रह्यौ हू वू अपने मन म मल नाय रखगो। पाप तौ है गयौ पर पाप कितेकऊ बडौ चौं न होय वाकौ प्रायस्चित तो है सक। पर ई तन ते नईं मन ते होनौ चइए।

किसोर बोलौ भाई वहोरी, चकोर मन म मल नईं रखतौ तौ अऊ गाम कौ दौरा करबे जरूर आतौ।"

वहोरी बोलौ 'भाई ! कस आतौ ? वाके मन म ऊ तौ सकोच है, पर तुमम ते कोऊ वाए बुलाबे गयौ का ? वाके जातेई वाकी चौपडी प ऊपरा थापबे लग गए। वाके दो बीघा आरऊ दूसरेन नैं जोत डारे। काऊ न जायकैं बात कछू कही का ? काऊ न जायकैं वू मनायौ का ? वाके पाँम पर तौ गाम म वा आधार प पर। गाँम म वाकौ धरोई का है ? तुम करेजा प हाथ धरकैं देखो, तुम्हारे सग ऐसी बीतती तौ तुम का करते ? खर, जो कछू भई सो भई, पर अब सब जुर मिलिक चल। अपने गाम की तरक्की के काजैं कहैं तो वू पीछ नईं रहैगौ।

भाई वहोरी कछू होय। वाके कामन नैं ही हमारे मन कौ मल धो दियौ है। हम वाके पास जायक रहिंगे। वाके पाम परिंगे हाथ जोरिंगे ठोडी म हाथ डारिंगे कहिंगे, क तू तौ हमारौ अग है या भाति वाए कसऊँ एक बेर यहां लाइक जरूर रहिंगे।" परमाल नें कही।

वहोरी की बात कूँ मान कैं सबनैं चकोर क पास डीग जाइबे कौ निहच कियौ। सिगरौ गाँम तौ डीग जाय नाय सकेओ। थोक गल एक एक चुनक वहोरी क सग चल दिए। सबन न चकोर क घर प मिलिबोई उचित समझ्यौ।

अऊ बारे डीग किले माहि घुसक पंचायत समिति के दफ्तर तक तौ पहुँच गए पर अब पीछे कूँ खिसकव लगे। अगडडो कौन खैंच ? सकुचा सकुची पहली मंजिल तक चढ गए। धीरें धीरें खिसकते खिसकते दूसरी मंजिल प पहुँच गए लम्बे चौडे कमरान के दरवज्जेन प चिक परी। ता समै सबन तन-मन की दसा सुदामा की सी है रही जा द्वारिका म पहुँच के सकुचा रह्यौ। बाहर चपरासी बठौ। कडक कै बोलौ। सब रूक गए। सबके सब सुट्ट। सबके छक्क छूट गए। पाँम म्हाई की म्हाई चिपक गए। मानो 144 की धारा लगा दई होय। बहोरी न आगें बढकें चपरासी सो कही, लाला बी डी ओ साहब ते कह द अऊ गाम वारे मिलिबे आए हैं। कछू अरज करनी है।'

चपरासी नैं जाइकैं भीतर खबर करी चकोर अखबार पढ रह्यौ। अऊ वारेन कौ नाम सुनतेई वानैं अखबार एक ओर फकौ। नग पामन भगो भगो बाई तरिया बाहर आयौ जस कृष्ण सुदामा सौ मिलिबे धायौ। सबन कूँ राम राम करी सबन के पाँम छीए। बडे आदर के सग भीतर अपने कमरा म लिवाय कै ल गयौ। लोग भीतर घुसब म झिपकबे लगे तो चकोर बोलौ, 'भयाओ झिझको मत चकोर या सम बी डी ओ नाएँ, एक मानस हैं। मान्स ते मान्स की कभी झिझक। मैं हू तौ आपम ते एक हू।

भीतर जब कछू फस प बठवे लग तौ हाथ पकर-पकर कैं सबन कूँ सोफा सट अरु मूढान प बैठायो। नथिया न देखौ तौ दौरी दौरी आई बहू कूँ लिवाय के लाई। बहू त कही, 'बहू ये सब हमारे गाम के हैं सबन की आसीस लै।' चन्दा ने सबन के पाम छिए। सबन नै आसीस दियौ। चकोर नैं चन्दा सौं कलेऊ लाइबे की कही। चन्दा न उलायते उलायते हलुआ बनायौ। अऊ गाम वारेन कौ धीरे धीरे सकोच दूर भया। वे चकोर के ब्योहार ते गदगद है गए। ऐसो लगौ मानौं बिनपै घडान पानी पर गयौ होय। काटौ तौ खून नई। किसोर राधे परमाल मूला, चकोर के ठाठ बाट कूँ देखि कैं दग रह गए। बढिया पलग साफ सुथरे ऊढँया बिछया बढिया कुरसी मेज सजी सजायौ कमरा सब गाम वारेन की आँखिन में फब रहे। कमरा म चुप्पी थोरी देर कूँ छा गई।

नथिया नैं ललक कै सिगरे गाम की राजी खुसी पूछी। अपनी सगवीन को नाम ल लवें बिनके सुख दुख की पूछी। अपनेन की बातन म जो सुख होय, जो अपनोपन होय बाकौ बरनन नाय कियौ जाए। अनुभव ही करयौ जाए। याही तरियाँ चकोर नऊ गाम के लोग लुगाइन की जानकारी लई। मंदिर के पुजारी की बात पूछी। स्कूल के हैडमास्टर साहब की पूछी।

इतेक देर मे चन्दा कलेऊ म हलुआ बनाय क ल आई। हलुआ परोस दियौ सिगरे हलुआ खाते रहे अरु बतराते रहे। या समै सबकी दसा वसी ही है रही जस कृष्ण के भौन म सुदामा की भई।

किसोर नें माहस बटोर क कही, 'बी डी ओ साहब हमसों जो भूल है गई बाकी छमा मागवे आए हैं।'

चकोर न तुरत उत्तर दियो पहले भूल भई जानें नाँय भई, पर अव अवसि भूल है गई है। मोत बी डी ओ कहक चो मोय लजा रहे हो? मै तो तिहारो वच्चा हू। मौते बी डी ओ कहवे वारी दुनिया भोत है। 'चकोर कहक प्यार ते पुकारवे वारे ऊ तो चइए'। मोय तो आप अपनो छोटो सो छोरा चकोरई समझो। रही वात पाछे की वाम तिहारो कोऊ दोस नाए'। सब समै की बात होय। समै अनुकूल होय तौ मटूगी हू सोनो है जाए। 'जब समै खोट तौ सोनो हू मटटी है जाए। कबऊ-कबऊ काऊ लहर आव। बुई लहर सबकी बुद्धि कू फेर दे। लहर निकस जाए तौ फिर बात साधारन है जाए।

परमाल बोलो 'भया तुम भलई कछू मत कहो पर गाम ते गलती है गई है। गाम त अनीति है गई है। हमारो दोस है। अब तो छिमा करनी होगी। गाम चलनो परैगो।'

चकोर न हाथ जोरि क कही 'सिगर सरदारो मोपे पाप मत चढाओ। तुमम ते काऊ काका है कोऊ ताऊ, कोऊ बडो भया है। छिमा जस सबद तिहारे म्हो त सोभा नाय दें। तुम मोय परायो मत बनाओ। तिहारो हू तिहारोई रहूगो। मै तो विनम त हू काऊ देस म रहिंगे काऊ नस म रहिंगे तोऊ रावरे कहाइगे।'

राधे नें कही भया तू अपनो है याही सो तो घर आए हैं। सुख दुख की पूछव आए हैं। तोय गाम लिवाव आए है। तरे घर ए तेरे खत ए, तोय सम्हारव आए हैं। याके सग सग गाम की बढोतरी क ताईं आए ह। तू अपनो है तो गाम की बढोतरी क ताईं गल निकास।

चकोर नें उत्तर दियो 'सिरदारो मेरी घर कायको है घर तो गाम कौई है अरु खेत कू अब मै कौन सो करवे जाय रह्यो हू। आप मरो बताय रहे हो। ई तिहारी महानता है। मैंने तिहारी वात मान क इनकू स्वीकार कर लियो है पर अब इन दोनोन कू मै गाम कू राजी राजी सौप रह्यो हू। मरी झोपडी की ठौर प तो बनाओ पुस्तकालय अरु वाचनालय मन की ठौर प बनाओ सकण्डरी स्कूल। गाम की बढोतरी को सुभारम्भ अपन तेई कर रह्यो हू। रही बात सरकार की ओर सो मदद की सो मैं विसवास दिवाय रहया ह क मै अपनी करनी म कोऊ कोर कसर नाय छाडूगो पर हा काऊ दूसरे के हक्क ए नइ छीनगो। दूसरे के गरेन न नई काटगो। और सुनो मै अब तक अऊ नाय जायो द भूल मोत जरूर भई है याकी मै छमा चाहू।

गादी म खिलाए चकोर की ऐसी महानता देख आख फटी की फटी रह गई। सब कहव ला धन्य ह नथिया की कोख कू जान एसो लाल जायो।

वहारी बोलौ, भाई अब तौ सबके मन को मैल दूर है गयौ। जा मैंने कही साची निक्सी।'

सब नैं माथे हिलाए बोले, 'भाई साची कही और जो कही बू साची निक्सी।

ता पाछ एक पोत फिर सबन नैं नथिया अरु चकोर सौ छिमा चाही। अपने गाम बुलाइबे को नोतो दकें अऊ लौट आए। कह्क आए भया कल जरूर अइयो हम गाम बारे मह की नाई बाट देखिंगे तेरी।"

'भाई ई राज जनता कौ है अरु जनता जनादन होय तो जनता जनादन की बात कसें टार सकू ? पचन की आग्या सिर माथे। मैं कल जरूर आऊगो।'

या वात कूँ सुनिकैं, बहोरी के सग गाम बारे लौट आए। रस्ता भर चकार के ब्यवहार की चरचा करते रह। सब या बात कूँ मान गए क फूल को मार बडी पनी होय।

दूसरे दिना चकोर वायदे के अनुसार अऊ गाम जाय पहुँचो। गाम नैं चकोर को खूब सत्कार कियो। सामियानो लगायो गयो। वदनवार बाधे। झडी लगाई। बाजे बजवाए। स्कूल के छोरी छोरान ने स्वागत गीत गायो। भासन भए। चकोर की जी भरक बडाई करी। चकोर नैं अपने भासन म सबन कू हाथ जोर कैं कही, भयाओ जो कछू माय मिल्यो है, ई सब गाम वारेन की आसीस को फल है। प्रभु की किरपा है। मेहनत काऊ की अकारथ नाय जाय। मेहनत सौं सब कछू पायो जाय सकै। बिना महनत हाथ की गस्सा म्हो म नाय जाए। कछू तकदीर की वात कर तदबीर कू बनाइबे वारी तदबीर होय। गाम वार चाहैं तो तदबीर सौ गाम की काया पलट कर सक। गाम मे तै सामाजिक कुरीतीन कूँ दूर करबौ नई नई अच्छी बातन कूँ अच्छी स्कीमन कूँ स्वीकार करबौ भौत जरूरी है। जुर मिलिक काम करिगे तो गाम उन्नति कर सकैंगे। कही है, 'जहा सुमति तहँ सम्पत्ति नाना।" आग्या अरु बिसबास के सग भागे बढिंगे तो गाम को विकास अबसि है सकैंगो। भैयाओ! महनत ई भगवान है ? भाग के भरोसे रहोगे तो समझ लेओ भाग टूट की सिफर होय। करम को अरथ भाग नई काम है। करम को मतलब है काम। काम सच्चो देवता है। या हाथ कर वा हाथ लै। काम को अरथ है चढ़ै तो चाख प्रेम रस अरु करम ते गिरे तो चकना चूर। काऊ न ई ऊ कही है–करनी कर तो क्यों डर क्यों करके कैं पछताय, बाए पेड़ अमूर क आम कहा त खाय।'

चकोर ने अपन भासन के अखीर म हाथ जारिके एक निवेदन और कियो— 'भयाओ! मैं अपनी चौपाल की ठौर कू वाचनालय अरु पुस्तकालय क ठाद रव का

सवल्प कर चुको हू । दो बीघा जमीन कू अब डो स्कूल बनाइवे क वाइ यह रह्यो हू । याए गाँम सम्हार अरु इनक निर्मान को प्रबध कर। मोते तो जो है सकगो सा मै सहायता करुगो। अब काट अरु फूलन को मारग आपके सामई खुलो परो है चलनो हमारे अरु तिहार हाथ है। एक बात और सुनो—सतरज के खेल म दोनों ओर क खिलारीन कू बराबर के मोहरा मिलैं पर अपनी चाल ते एक हार अरु एक जीते। करनी ते ही जय अरु विजय होय।'

चकोर की साँची सारभरी बातन कूँ सुनिकै गांम वारेन न भूरि भूरि प्रसंसा करी। खूब तारी बजाई। खूब जकारे लगाए। चकोर नै जितेक मना करी वितेकई और दून दून है कैं जोस दिखायो। गाजे बाजे के सग सिगरे गाम मे है क जलूस निकसवायो। चकोर न गाम बारेन की राजी म अपनी राजी दरसाई। हा बानै बडेन के पाम छीए बराबरउन कूँ गरे त लगायो। अपने छोटन कू प्यार उडेल कै बिनके माथे प हाथ फेरो। ना काऊ जाति-पाति को अन्तर दिखायो ना काऊ गरीब अमीर को भेद बरतो। सबसों समान भाव सो मिल्यो।

ठौर ठौर प लाग वाके भाग की सराहना कर रह। एक गरीबनी को छोरा जाको काऊ धनी धोरी नाओ अपनो महनत ते पुज गयो। अपनी करनी ते बी डी ओ बन गयो। याक छोरान कूँ प्रेरना मिली जब फूल छेदे जाएँ तबई गर को हार बनै। अच्छे पइसा बारे जो अपन छोरान प पानी की नाई धन बहा रहे वे अपने करमन नैं ठोक रहे। अधिकतर गाम क, चकोर के बी डी ओ है जाबे त गव को अनुभव कर रहे। वे दूसरे गाम बारेन ते कहबे कू तो है गए क हमारे गाम को छोरा बी डी ओ है। व याउ सोच ए मोच रहे क बू कछू न कछू तो भलो करगोई। गाम बारे अपनी-अपनी तरियाँ सोचत रहे। चकोर सब सौ प्यार सो मिलिक सबनते विदा लकैं डीग कूँ लौट परयो। सबन के होठन पओ, जननी जन तो भक्त जन क दाता क सूर चकोर ने सबन के मन प अपनी करनी की छाप छोडी। पत्थर की लकीर खच दइ। सबन के मन के मैल कू साफ कर दियो।

सब सौ मिल क चकोर चल दियो। जीप डीग सडक प चली जा रही। चकोर अपनी जन्मभूमि मे आय कै अपने भयान त मिलक भौत प्रसन्न हो। बिछुडे मिल गए सबन को सकोच दूर है गयो, आपसी मन मुटाव छट गयो। नीम निमाने धरम ठिकाने आ गयो। डीग मे जीप जैसइ घुमी, दूसरी ओर ते आते भए ट्रक सौ जीप की टक्कर है गई। टक्कर भयकर भई। ड्राईवर अरु चकोर दोना गम्भीर रूप ते घायल है गए। दुघटना की चरचा हवा म तर गई। चारा ओर हाहाकार मच गयो। पूरी डीग अस्पताल म उमड आइ। चकोर के घर किले मे खबर भेजो तो मालूम परी क चन्दा कैं छोरा भयो है। नथिया कूँ खबर दई ता समै नथिया की गोद म नातो आ चुको। बू नानी कूँ दधि क सिहा रही। जस ई ऐक्सीडेट की सुनी भाजी छुटी लीजो

दीऔ करक जसै-तसै रोमती फिफामती अस्पताल ग्राई। चकोर अचेत लहू मे लथपथ है रह्यौ। नथिया प नई देखौ गयौ पछार खाय कै गिर परी। आप हू अचेत है गई। डाक्टरन नैं देखौ चकोर चलौ सा चलौ बुढिया हूजा रही है। डाक्टर न दोनोन कू सम्हारौ। चकोर कू आक्सीजन दई जा रही बुढिया कू इन्जक्सन दिए।

ड्राईवर अरु चकोर कू भरतपुर लै जावे की सोची जा रही। डाक्टरन नैं बताई हालत गम्भीर है। मारग मई कछू गडबड है गई तौ बात बिगड जाइगी। डाक्टरन नैं दौड धूर खूब करी। चोटी कौ पसीना ऐडी तक आ गयौ। अच्छी ते अच्छी दवाई दई गई। मान्स टूट पर। काऊ तरिया डाईवर अरु चकोर बचाए जाए। डाक्टरन की महनत सफल होती दिखाई परी जब ड्राईवर होस म आ गयौ पर चकोर नैं तौ चेतइ नई कियौ। धीरैं धीर बाकी नारी कमजोर परती गइ। लम्बी लम्बी सास चलबे लगीं। डाक्टरन कू जच गई अब पछि उडिबे वारौ है। बिनकी हालत खराब ह्वैबे लगी। बिनकी आखन म आमू आ गए। चकोर नैं तौ सिगरे अफसरन कौ मन जीत राखौ। चकोर तौ डाक्टरन के गरे कौ हार हौ। डाक्टरन कौ प्यारौ, बिनके हाथन म ते देखत-देखते खिसकौ जा रह्यौ। डाक्टर देखते रह गए अरु चकोर के प्राण पखेरु उड गए। सब यही कहके रह गए 'टूटी कू बूटी नही, नही काल कू बैद।

थोरी देर पीछ नथिया होस मे आइ तौ फरफरामती भई चकोर कू देखिबे कूँ लपकी। वाए कौन बतातौ क अब वाकौ छोरा कहा है ? बानैं आख्य फार कै देखी, भीड उमड रही है वाकी आँखन म आसू है। वाके कानन म चकोर के नाय रहब की भनक सी परी। नथिया धाड मारकै रौवे लगी मेरे बटा ए माय दिखाय तौ देऔ! मरे लाल के मोय दरसन तौ करा देऔ! मेरे छोना कूँ मौते मिलातौ देऔ!" पर लाल होतौ तौ बाए मिलाते लाल की तौ लास परी पोस्टमाटम ह्वैब के ताईं। नथिया रोती रोती उठी चकोर की ओर झपटी। नुगाईन नै वू सम्हारी पर वू तौ तडफडा रही लाल ते मिलिब कूँ। पानी त बाहर निकासी भइ मछरिया की नाईं बेचैन हौ। जब वू घिसट कैं चलबे लगी तौ मथा फोरी लकै बाकू चकोर की लास के सामई डार दियौ अरु वहीं, दख याकी दबाई है रही है।

नथिया कूँ तसल्ली सी भई बाली 'डाक्टर भयाओ याए बचाऔ। जो कछु खच होयगौ बाय मैं दऊगी। मैं महनत करोगी, मजुरी करोगी पर एक एक पइसा चुकाऊगी। काऊ तरियों मेरे बेटा कूँ बचाऔ। मेरे लाल कू बचाओ !!'

बुढिया त बात ए कब तक छुपाते। छुपाते भए हू बात मालुम पर गई। फिर काई नथिया अपन बटा की लास त लिपट गई। वाक म्हौं प म्हो धरन पुकारबे लगी हाय मेरे लाल ! हाय मेरे छोना !! माय छाडकै कहा चल दियौ ? थारी देर म वू अचत है गई। हाट फल सो है गयौ बाकौ प्राण ठहर गई। अपनी गोदी म खिलाए लाल कू

अपनी गोदी म लकं सो गई। विपत्ति पै और विपत्ति। मैया बेटा एक संग चल दिए रह गई चन्दा एक दिना के मास के लोथरा कू लकं।

चन्दा त चकोर के ऐक्सीडेन्ट ह्वैबे की बात छुपाई जा रही। वू जरूर सोच रही डीग ते अऊ तीन मील है। फिर जीप त आइबे म पाच मिनट लगै क दस मिनट। का बात हुई ? छोरा ह्वैबे की बात पहुँच गई होगी ? अब तक कस नई आए ? चन्दा कू अब अपनी सास हू दिखाई नांय पर रही। पडौस की बयरबानीन नै चन्दा कू सम्हार राखौ। चकोर आताई होगौ। नथिया के बाहर जाइबे कौ बहानौ बनाय क चन्दा कू तसल्ली देती रही।

चन्दा मन में पछतायौ कर रही वे इतेक निरदयी कसै है गए ? अपने छोरा क जनम की बात सुनिकऊ नई आ सके। जापे के समै ना जानें का का चीजन की जरूरत परै या बात कोऊ ध्यान नइ दियौ। चन्दा अपने मन म परेखौ करती रही। कब तक वू जेई सोचती रहती ? भौत देर तक जब सास नई दिखाइ परी तौ वू बयरबानी प चल्ला परी—'मेरी सास कू बुलाऔ। विनते मिलाओ।' जब कोऊ तसल्ली की सी बात हाथ नई लगी तौ चन्दा समझ गई दार में कछू कारौ है। अब चन्दा की आखिन म ते आसू ढरकबे लगे। चन्दा बड़बड़ाती रही। बाए सम्हारबे वारी सब महन करती रही। समझाती रही 'अरी बच्ची आब हैं राबे मत जाति चली जाइगी या मास के लोथरा कू सम्हार। सब ठीक हैं। बितकू चकोर कौ पोस्टमारटम भयौ। नथिया की अरथी मजी। सग म चकोर की काठी बनी। मैया बेटान की सग सग अरथी निकसी। डीग म का सिगरे जिले म हाहाकार मच गयौ।

रात कू जस ही चन्दा के मैया बापन न ई समाचार सुनौ वे दौरे दौरे डीग पहुँचे। चकोर अरु नथिया के चल बसबे की बात सुनी तौ पर कटे गिद्ध की भांति गिर परे। अपने सामई अपने ज्वान जमाई की मौत अपनी ज्वान बिटिया के मांग कौ सिंदूर पुछतौ देख वे फूट फूट के रोवे लगे। बितकू बिटिया जच्चा अरु बच्चा क्लिनिक के भीतर पचायत समिति के भीतर परे। वे दोनों चन्दा के पास पहुँचे। चन्दा न बिनकू उदास देखौ तौ अपनी सास अरु चकोर की बात पूछी। मैया बाप का उत्तर दत। काऊ तरियाँ रात भर तसल्ली दक बहाने बनाय क रात निकासी पर भोर होत ही चन्दा न अपनी सास अरु चकोर की रट लगा दइ। अखीर म धीरैं-धीरैं बात खोलनी ही परी।

चन्दा कू बिसवास ई नाय भयौ पर जब असलियत सामने आई तौ चन्दा क धीरज कौ बाध टूट गयौ। जच्चा जच्चापन भूलिक धाड मारक रोबे लगी। घर म कुहराम मच गयौ। न जान जच्चा कू इतेक बल कहा सो आ गयौ क वू बिलाप करती पछाड खाबे लगी। बिलाप करती रही। मैया बापन नैं जितक समझाई वितेक्ई रोबे लगी। वाक बिलाप कू सुनिकैं अच्छे अच्छे रोबे लग गए। कछू कहबे लगे चन्दा कू

खग्रास ह्व गयो है। चन्दा ए समझाबे लगे तू अपने छोरा को तौ ध्यान कर, चकोर की घरोहर कू सम्हार क रख पर बाप इन बोलन को कोऊ असर नई परो। वू तौ डकरायवे लगी, "अरे ! मोय कौन के सहारे छोड गए। अरे !! मोय अपने सगई ल जाते। अरे !!! मोते कछू कह तो जाते।" चन्दा चकोर की ना जानें कितेक बातन की याद करती भई तब तक रोमती रही जब तक अचेत नाय है गई, डॉक्टर बुलाय क बातल चढवाई गई तब कहू जान म जान आई।

दूसरे दिना चकोर के यार राजेन्द्र कू जैमेंई खबर मिली तौ भगो भगो डोग पहुँचौ। वाकौ हाल बेहाल है गयो। फूट फूट कें ऐसों रोयो मानौ बाकौ सगौ भया मर गयौ होय। बानें चन्दा के आसून कू थामबे के मारे अपने आसू थाम लिए। आसून न पीकें रह गयो। वू चकोर की बातन नैं चकोर के कामन नैं याद करकें अकेले म रा लैतौ पर चन्दा के सामई आंसू रोक क रह्या।

अऊ गाव मे तौ ओर ऊ हाहाकार मच गयो। चकोर की जलसा, चकोर कौ भासन, चकोर कौ जलूस चकोर की जय जयकार साकार हैकें याद आवे लगे। अऊ बारेन नैं अपने माथे को कलक मानक भारी सोक मनायो। रोटी खावें की का चलें काऊ के घर चूल्हौ तक नई सिलगो। कछू तो अचेत है गए। कछू "होनी बडी बलवान है" कहके रह गए। चकोर के गुनन कौ बखान हर एक क होठन प होतौ रह्यो। गाम बारेन के सुपने चकनाचूर है गए। चकोर अऊ गॉम कू आदस गाम बनानो चाहै ओ। वाकी इच्छाई क सिगरो गॉम साक्छर है जाए। सिगरे गाम मे चेतना आ जाए। पर पर मेरे मन कछु और है कर्ता के कछु और' वारी बात भई।

चन्दा की तो दुनियाई लुट गई। आसा निरासा म, सम्पन्नता विपन्नता म प्रकास अंधकार मे बदल गयो। चन्दा क सामई ता अंधेरो ई अंधेरो छा गयो कहौ करे उगते सूरज कू सबई नमन कर उगते चन्दा क ही सब अर्घ्य चढावें। सब जन बसती के ही गीत गावें जरत भए दिवरा प प्रान चढाव। हर एक की नयनन की चवर ब्याहुली पै ही ढुरें। हर एक महल अरु मीनारन कू ही ललचावें। फलते फूलत पौधान मई सब पानी दें। अग्नि कू ई सब हवन करें। कहबे कौ मतलब ई ए कै बनी बनी क सब साथी है जाए। बिगडी हस्ती की दुनिया म काऊ सगाती नाय होय। मोई यात चन्दा के सग भई।

चन्दा बिना चकोर क बीच भवर माहि रह गई। यो कहो चन्दा प मावस छा गयी। वाकौ सरवस लुट गयो। वाए तसल्ली दिवावे वारे आते रहे। कछू ऊपरले मन त अपनोपन निभात रह। कोऊ चकोर क गुनन को बखान करतो चकोर मानस नाहो देवता हो कोऊ चदा ते चकोर को धरोहर कू पालन करबे की कहतो। काऊ न

सम्कार सौं मदद दिवाइब कू धीरज बँधायो। काऊ नैं चन्दा की नौकरी लगाइवे के ताईं कही। चदा नैं सबन के सातरें न बोल सुने पर जानैं सातर क बोल निभा पाव। ताते धावन जो कछू है जाए सो है जाए। पीछे तौ पीछई होय। चन्दा न सबन की सीख सुनी। सबन की बातन कू सिरमाथे चढायो जिन जिनन सहानुभूति दिखाई तिनके ताईं आभार प्रकट करयो।

चन्दा के मैया बाप अपनी बिटिया पै छानी दकैं परे रहे। वे ऊ भीतरइ भीतर रो लैते, जाते चन्दा कूँ मालूम नई परे। वे सोचते चन्दा के भाग मे का लिखौ है। लाड चाव म परी पर ब्याह के समय कगानी रही ब्याह पाछैं वाकी भाग जगौ पर भाग के चमकते ही बजपात है गयौ। बिनके सामई छोरी विधवा है गई। विधवा को जीवन का होय ? समाज मे विधवा का तरियां देखी जाए ? वि नैं याकौ खूब अनुभव हौ जवानी म विधवापन कितेक दुखदायी होय। याको अनुभव तो बूढ़ कर सक जाकी विवाइ फटी होय। अब चन्दा की नया कसै पार लगगी ? गाडी कम आगैं ढरकगी या सोच फिकर मे बिनकी भूख, प्यास, नींद सब उड गई।

अऊ मे चकोर की ठौर ठौर पै चरचा भई। बाक गुनन कू गात गात अऊ वारे अघाते नाय। चकोर न अपने सद्व्यवहार सौं सबन कौ मन जीत लियौ। जा चकोर कू गाम वारेन सौ बदलौ लनो चइएऔ वान बिनका सत्कार कियौ। सम कौ फर बताय कैं सबके मन को मैल दूर कियौ। गाम के ताइ नई नई योजना बनाई। सब सोचिवे लगे, अब वाकी विधवा के ताईं गाम कूँ कछू करनौ चइए।

गाम वारेन नैं तै कियौ, चन्दा कूँ अऊ लायौ जाए। वाकौ मकान सब गाम वार मिलक बनावैं। वाक खेत कू बाकू सौप। वे अपने प्रस्ताव कू लक चन्दा के पास पहुँचे। चन्दा न सबन की सुनी तौ भभक क रोय परी। बान अऊ चलवे की बात तौ स्वीकारी पर जो कछु बाकौ पति कह गयौ जाकौ दान कर गयौ वाए कसे भ गज लती वाके कह भए बचनन न कसैं मैंट दती। वानैं हाथ जोरि क गाम वारन सौं कही जो सहानुभूति दिखाई है वाके ताईं मैं सबन की आभारी हू पर जो कछू व गाम बारन कूँ दान कर गए अब वाप मेरौ अधिकार नाएँ। समाज को अधिकार है बाए उल्टौ लक मैं पाप की भागीरदार नइ बनूगी, बिनकी आत्मा कूँ कस्ट नाय दऊगी। गाँव वारन की मौप छत्र छाया बनी रह। गाम बारे मोय अपनो मान इतक मेरी बिनती है। गाम वारे चदा की नीति की बात कू सुनिकैं चुप्प है गए। भारी मन ते वापिस लौट आए।

चकोर क सिगर क्रियाकम विधिवत करायक बाके न बिटिया क सामई बात राखी, बिटिया अब अपने घर लौट चलवे म सार हैं।

चन्दा बोली, "अपनौ घर तौ अब कहूं रह्यौ ही नाएँ। जा दिना मरे पीर

हाथ किए वाही दिन ते पीहर अपनो घर नाय रह्यो। सासरो ही तो मेरो घर बनाय दियो। अब पीहर ए अपनो घर कैसे कह दऊँ।'

या बात ऐ सुनिक चोखे अरु राधा को गरो भर आयो। आखन सो आसुन की धार बह निकसी। इतकू चदा की हिचकी बध गई। वा समै तीनों अपनी अपनी आखन सों गगा जमुना बहाते रहे। एक दूसरे सों लिपट कै रोते रहे। नवजात सिसु मूक चितक की नाईं दिखाई परो। वू का समझतो दुनिया काए, दुनिया मे सुख-दुख काएँ। थोरी देर तक वे तीनों प्रानी वा आलीसान भवन मे सुख के सब साधनन के बीच छटपटाते भए करुना भरो विलाप करते रहे। फूलन को जो वातावरन कछु दिना पहल बनो वू सूलन सो ज्यादा पीडा देबे लगो। धीरें धीरें एक दूसर के आसून नैं पोंछतें भए सान्त भए। एक गहरी चुप्पी छिन भर कू छा गई। नवजात सिसु नैं रोय के सबन को ध्यान बटायो।

थोरी देर पीछे चन्दा नैं मौन तोरो पिताजी आपन जो कछु कियो मेरे भले के ताईं कियो अब आप चों दुखी होओ? मोई कूँ अपने पाँयन प ठाड़ो होनो है मेरे भागई कम छेद परो है। अब आप अपने घर कूँ सम्हारो मोय मेरे ऊपर छाड़ो।'

'बेटी तोय बीच भँवरन मे छाडि के हम कहाँ जाएँ? हमारी बेटी अरु हमारो बेटा जो कछु है सो तू है। या घर मे हम कैसे रह पाइगे। हमारो जीवन आधार तू ही तौ है। अब हमारे घर मे सुख को साज नाएँ। पर ईंट पत्थरन को घेंसुआ तौ है। वा घेंसुआ प तेरोई तौ अधिकार है। वाए हम कौन कूँ छारि के जाइगे।

चोखे अरु राधा चन्दा कूँ सब तरियाँ सों समझायक हार गए, पर वाके गरे बात नईं उतरी। वू खूब समझ रही चकोर वाए जा घर मे छोरि गयो है वा घर मे वू ज्यादा दिना नाय रह सकै। पर वाए ई ऊ पतो क सरकार की ओर त वाए जो सहायता मिलेगी वाकी एक कुटिया बनाय कैं अपने बटा कू पारेगी। सरकार चकोर की एवज मे वाकू जो छोटी मोटी नौकरी देगी वास अपनो गुजारो करगी।

या बीच मे चकोर कौ यार राजेन्द्र अपने कर्तव्य के निवाह मे लग गयो। वा ने रोइबो-भिफायबो छोड़िक अपने करबे बार कामन कू सम्हारो। सबसे पहले वा ने चोखे की मया अ ची कू सम्हार क राखो। फूस सी बुढिया अ चो ना सीखतो ना मारतो। चोखे अरु राधा अपनी बिटिया अरु जमाई सौं मिलिबे गए हैं या वात कू जरूर जाननो। राजेन्द्र म ची के पास रह्यो वाकी रोटी पानी को जुगाड़ बठायो। अ ची कू ई बात बताय दइ क चन्दा के छोरा भयो है। दोनों जन जच्चा अरु बच्चा कू सम्हार रह हं। अ ची मनइ मन मगन है रही पर वाए ई का पतो क वाकी जवान नातिनी विधवा है गई है।

राजेन्द्र अची की सार सम्हार तो करई रह्यो, वू जिलाधीस सौं मिलिकें, ताते-धायन भई चन्दा कूँ नौकरी पे लगवाइबे को जतन कर रह्यो। वू कबऊ डीग जातो कबऊ भरतपुर आतो। वू एक साँचे मित्र की भूमिका निभा रह्यो। वू जानतो जब, लौं कागजन को पेटो नाँय भर जाय तब लौं कोऊ बात नाँय बन। अधिकारीन नें चन्दा क प्रमाण पत्रन को बारो चाह्यो तौ वे ल जाय कें सामई धरी। चकोर की मृत्यु को प्रमाण पत्र जब लौं डाक्टरन ते प्रमाणित नद होय तब लौं कौन मानबे वारो। इन सब कामन क ताई दौड धूप जरूरी ही। राजेन्द्र नें मौन साधक की नाई सब करकें दिखायो। सब कागज जहा के तहा पहुँचाए। राजेन्द्र चन्दा कूँ भाभी कहकें पुकार हो। वाए भाभी की भावी की चिन्ता ही।

वू चन्दा कूँ धीरज बँधातो, 'भाभी भया चकोर तौ अब आवे त रह्यो। सब तौ चकोर की या धरोहर की रच्छा करनी है। याकूँ ऐसो बनानो है जासौं ई, चकोर सौ दो तिल आगें बढ जाए। सब चकोर के दुख ए भूल जाएँ।"

चन्दा भावनान म बचलौं बहुती। वाए तौ कठोर धरती प उतर कें जीवन बितानो। दुनियादारी हू निभानी। मया-बाप की भरतपुर चलब की हट वाए नैक्हू नाय सुहा रही। वाए पतो प कहू वू मया बाप के सग भरतपुर चली गइ तो आफिस बारे जो बाकी नौकरी के ताई दौड धूप कर रह हैं वाए छोड दिंगे। सब ठडे पर जाइंगे। मैया बाप को बात पास ठहरबो क्यलों है सगे। ई बिचार चन्दा कूँ झकझोरतो। कबऊ वाए अपनी बूढी दादी की याद आती। वू बिचारी अपन दिलान न कस फोर रही होगी? दूसरे छिन बिचार आतो वाये मैया बाप चले गए तौ वू अकेली रह जाइगी। अपने अकेले छौना ए लम्बे चौडे भौन म कैसे रख पाइगी? भौन की ईट ईट पाबे कूँ दौरगी। वू अकेली धाड मारके मर जाइगी। बाकी बुद्धि काम नाय द रही। कबहू सोचती आप काज महाकाज, आप मरे स्वग दीख। भँवर म परे भए पत्ता की भाँति बाकी हालत है रही।

अखीर म वू एक तोर प आई अपन पिताजी अब मया म त एक कूँ भरतपुर भेज दै। एक बाके सग रहे, जो बाए सम्हार एक बाकी दादी कूँ सम्हार। मैया बाप म कौन बाके पास रहैगो? याहू की त करनी हती। सोच बिचार कै या निरनय प आई क पिताजी दादी कूँ देखें अब मैया बाक छोरा कूँ पार। या बात कूँ मानकै चोखे भरतपुर कूँ चल दियो। राधा चन्दा के पास रह गई।

चोखे नै भरतपुर पहुँच क मया सौ राधा क नाय आइबे की कह्यो। अची असमजस म आ गई। सोचिबे लगी जब नथिग चन्दा के छोरा ए सम्हारबे कू है तो राधा चौ रह गई? चोखे अ ची कूँ कसैं समझातो। वू भेद ए कब तक छुपातो।

अखीर म कच्चौ चिटठा खोलनोई परो। अ ची नें सुनो तो मन्न रह गई। वू रोई फिफाइ। रोटी पानी छाड दिए। चोखे न जितेक वाकूँ समझायो बितेकई वू

भभक भभक कै रोई। कई दिना तक वाके आंसू नाय थमे। वू विचारी का करती राज रो लती अरु रोज राकै रह जाती। जाकी फुलवारी वाई के देखते-देखत उजर गई वाप रोवे क सिवाय और काम्रो ?

राजेन्द्र दिन को भोजन अरु रात की नींद छाडकै चन्दा की नौकरी कै ताई जी जान सौं जुटो भयो। बानै भरतपुर त कागज निकसवाय कै जयपुर भिजवाए। कागज पहुँचा तो दिए पर तिनको उत्तर नई आयो। वाकी समझ मे देर त आई क अब तक कागज के पीछ नई लगो जाइगो तब तक आगै नई खिसक सक। कागज कै पांम लगाए जाएँ। कागज कै पख लगाए जाएँ। कागजन क पांम अरु पख लगाइव के तौर तरीकान सौं राजेन्द्र खूब परिचित हो। कागज के नीच हरे हरे छप भए भारत सरकार के कागज लगाए जाएँ। काऊ बडे आदमी की दबाव चिट्ठी त डरवायौ जाए, क वाकूँ लाइकैं सिफारिस करवा॰ जाए। कबऊ ज्ता को जोर हू काम आ जाए। जमानो सक्ति को रह्यो है। हमेसा सक्ति पुजी है। काऊ तरिया की सक्ति होय। बिना सक्ति म काम नाय होय। सक्ति धन की होय, बुद्धि की होय चाहे देह की होय। सदा सो लाठी वारो भैंस ए लै जातो रह्यो है।

राजेन्द्र नै अपनी बुद्धि को प्रयाग करो। अफसरन की चिरौरी करी, मनुहार करी। जहा आँख दिखाब की जरूरत परी आँख दिखाई। वाको पालो भाँति भाँत के लोगन सो पर्‌यो। ऐस लोग हू मिले जो बिना रुपयान के कागज ए निकास ही नाय सकै जिनके चाहे कोऊ पटटा बठो राड घो न है जाए बिन्न अपने टका सौं ही काम है। एसे हू लोगन सो पालो परो जो भए काम म राडा अटकाव। एस लोगन सौं हू मिलिबो भयो जो भूखे भेडिया की नाई लाल लाल आख दिखाव। एसे हू लाग सामई आए जा हुकम मीर नई फरी फोरैं नही। राजेन्द्र नै सब कछू करो पर अपने सिद्धान्तन सौ नई गिरा। नीतिवान मानसन कूँ पग पग प काटे लगैं। पैंड पैंड प पापड बेलने परै। राजेन्द्र न सब सहन कियो पर बाजी जीत कैं लौटो।

चन्दा कूँ पचायत समिति डीग मे ई नामल ऐजूकेसन आफीसर के आदेस जब राजेन्द्र नैं लायकै बाके हाथ म दिए तो वाकी आँखिन म आंसू झलक आए। वे आसू दुख के नाँए एहसान के है।

उमग कौ रग

सम जात नही लागहि बारा की कहावत कवन प सच है। दू बात दूसरी है क घाऊ ने दिना हसी खुसी म आनन फानन सो कट जाएं। घाऊ क दिना रोमत रोमते कट। हा काल को पइया रूक जाएं। चन्दा के दिना कट तिल तिल करकै कट। इती पूर्ति क ताई सम क सिवाय और कछू उपाय नाएं। सम ही घावन नै भरै।

अब तानूं दू एक आलीसान भवन म रह रहो पर नए वी डी ओ क आत ही वाए वू भवन खाली करनो परो। रहो तो दू बाई भवन म पर पहली मजिल क एक कमरा बार आवास म आनो परो। गनीमत ई रही क वाए अपन टाड कहूं और नई लाग्न पर।

या तो चन्दा क जीवन म चकोर क जाए त अधेरो छा गयो पर अपन छोरा को वाए सहारो हो। वू ही वाक जीवन म उजियार की किरन ही। अधेरो रात कूं छाटिब बारो वू ही तो हो। याही सो वाकौ नाम रख लियौ दिवाकर। चन्दा क आग दिवाकर क पालन पोसन की जिम्मेदारी ही। राधा वाक सग रहक वाए पारिबौ सिखा रही।

चन्दा कूं जब सो नौकरी मिली तबई सो दिवाकर की देखभाल राधा प ही रहती। वाक मलमूतन न साफ करती वाए न्हवानी धुवाती लत्तान नै बदलती वाकूं दूध पिवानी। वाए खिलौनान सो खिलाती। पर मया तो मैया ही होय। साझ कूं चन्दा नौकरी सो वाही तरियां लौटती जस अलब्यार्ई गाय जगल के हरे भरे चारे कूं छोडक अपन बछरा के ताईं चली आव वाते लिपटब चिपटबे चूमब चाटब कूं। दिवाकर हू दारि क वाकी गोदी क ताई तुरानो चन्दा आत ही दिवाकर पै नह की बौछार करती। नह को हाथ फेरती। सौ सौ बर चूमती। हँसती हँसाती। दिवाकर क ताईं चन्दा ही माँ ही चन्दा ही बाप। चन्दा कूं दोनो ही रूप धारन करन पर रहे। चन्दा कूं दिवाकर ही आसा की केन्द्र हो। उडते पछी को अडा हो।

चन्दा नैं इ ऊ बात पढ राखी क माँ ही बालक की पहली गुरु होय। गार्गी अरु मैत्रेयी के जीवन कू चन्दा न पढो। वान ई ऊ पढो क शिवाजी कूं शिवाजी बनाव वारी वाकी मा जीजीबाई ही। याही सो चन्दा न हू अपन बटा कू बनाइबे क ताईं कमर

करी। वू याहू वात कूँ जानती कै आरम्भ की बिगरी भई बात बन नाय सकै। यासो वाल भगवान की सेवा माहि लगी रहती। विचारी प हतक काम्रो ? दिवाकर ई तो वाकी निधि हो। चन्दा साहस बटोर क दिवाकर क विकास म लग गई।

यो तो चन्दा प कारे वादर आए। वाके जीवन कूँ ढक लियो पर वा क साहस क सौंमई नई ठहर सके। वाक सरूप कूँ मिटा नई सक। धीरैं धीरैं वादर छट गए फिर अमृत की वरसा भई। फिर वगिया म वहार आई। चन्दा न अँसुअन जल सींच सींच प्रेम वेल वोई। अपन वेटा कूँ पालन पासन म लाड लडायो पर मोह नई दरसायो। थोरे दिना पाछे आनन्द फल आवे को ओसर आगयो।

राधा न हू दिवाकर क पालन पोसन म पूरो पूरो हाथ बँटायो। राधा कबहू भरतपुर चली जाती फिर चन्दा अरु दिवाकर कूँ सम्हार जाती। याही तरियाँ सो समय वीततो रहो। दिवाकर तन ते मन त आचरन त माँ क कहे अनुसार सुसांच म ढरतो रह्यो।

चन्दा अपन पति क मारग प नौकरी कर रही। जस घरेलू जीवन म रुचि लनी वाई तरियाँ नौकरी कूँ लगन के संग निवाह कर रही। जीवन क झकझोरन नैं वाकूँ सहयोग सहानुभूति प्रेम को पूरो-पूरो पाठ पढा दियो। चन्दा गाम गाम जाती घर घर वयरन सो वन्ने नेह सों वतराती। विनके दुख दरदन कूँ सुनती। दुखियान क ताँई सहानुभूति के दो वाल वोलती। वू जाक पास बठती वाही की है जाती। गाम की वैयरवानी तो वडी भोरी भारी होय। मन ते कोरे कागद होय। विन्न जसी पटटी पढानो चाहो वैसी ही पट्टी पढ ल। तवई तो वे वहकाए म आ जाएँ। आए दिना सुन अमुक वावाजी अमुक ठौर प वैयरन न ठग क ल गयो। या बात कूँ मान क वे नाभी होय। लालची होय। तवइ तो अपन गहनन न दुगनो करायवे के ताईं उतार क वावाजी कूँ दै आवे और फिर हाथ मलती रह जावे। वैयरवानीन म भक्ति होय याही को लाभ कपटी सडे मुसटंडे उठा जाएँ। चन्दा न नारी समाज कूँ भ्रम, अज्ञानता रूढिवादिता लोभ लालच त छुटकारो दिवावे क ताईं गाम गाम म अलख जगायो। गाम गाम म महिला मंडल वना दिए। जाक प्रभाव सो नारी जगत कूँ नई विचारधारा मिली। नई ज्योति जगी।

चन्दा नैं सच्च समाज सवकन क सहयोग सो घर घर म पढाई को मन्त्र फूँको। वान मैया भनन कूँ समझायो क व पढ गइ तो घर को घर सुधर जाइगो गाम नगर सुधर जाइग अपने आप देस सुधर जाइगो। वान वतायो कै माँ ऐसो साँचो है जासो नए खिलौना वन, जिनसो समाज अरु दस वन विगर। याही सों चन्दा न गाम-गाम म प्रौढ सिच्छा की पढाइ प्रारम्भ करवाई। जा छोट छोटे छोरा दिन माहि पढव नई आ सक हैं, बिनके ताईं सांझ कूँ पढव को प्रबन्ध कियो।

महिला मडलन की गम्म गाम म धूम मच गई। गाम गाम म महिलान की मडली म वाल विवाह मौसर, दहेज जैसी कुरीतीन प चरचा होंती। सादा ब्याह अरु सामूहिक ब्याहन क ताई वातावरन तैयार कियौ। च दा सबन क सौमई कहती भगवान नै बेटा कूँ उमर दई तौ सादगी सौं ब्याह करक दिखाउ गी। छोट परिवार क ताई उदाहरण द दक समझाती। राम लखन, भरत सत्रुघ्न नौ भए ही पर आज के जमाने म तिलक गाखल, जवाहरलाल नहरू मौळ उदाहरन दक अपनी कथनी प मोहर लगाती। दानव ज्यादा दव कम हाय। एक ही सूरज त रोसनी हाय। एक ही च दा अधेरौ दूर करै। अनगिन तारेन ते अधियारौ नाँय मिटै। सब्य। त राम नाँय च र गुलन त राम चल। बढती भइ भीड त का का दुस्परिनाम भुगतन पर रह हैं याह ए समझाती। च दा की बानी म कछू ऐसौ रस अरु प्रभाव हो क वाकी वातन कूँ गाम गाम म बडे चाव सौं सुनौ जातौ। वाके इसारे पै लोगलुगाई मरवे मारव कूँ तयार है जात। न जान वू का जादू सौ करती। कथनी अरु करनी के तालमेल सौ वाके कामन न देखिकै सब कहते चन्दा देवी है दुर्गा है, अन्नपूर्णा है। बान न जानें कितेक गामन की काया पलट कर दई।

बाहर सौ घर आते ही चन्दा अपने बेटा कूँ सम्हारती। वाकी पढाई लिखाई की ओर ध्यान दती। दिवाकर कूँ च दा घर हू पढाती और विद्यालय माहिं भेजती। दिवाकर बुद्धि मे अपने बाप कूँ गयौ। अपनी क्लास म सबसौं आग रहतौ। गुरूजी सौ ऐसे-ऐसे प्रस्न पूछतौ क गुरूजी हू चक्कर म आ जाते। बा प उज्जवल जीवन की कामना करते और कहते, 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात। विद्यालय में जब काऊ दिवस मनायौ जातौ दिवाकर जरूर भाग लैतौ। कविता पाठ म भावन के अनुरूप हाव भाव दिखातौ। लगतौ, कोऊ कवि ही बाल रह्यौ होय। भासन देव म बानैं अच्छे-अच्छेन के कान काट राखे। वाद विवाद म अपने विचारन कौ मडन अरु तकन सौ दूसर के विचारन कौ ऐसौ खडन करतौ क दूसरे कौ म्हौ बद है जातौ। लोग वाकी वाह-वाह करते। वाए बुद्धि की पूनरा बताते। बडे बूढे कहते है है तौ बाई बाप कौ बटा।' याही कारन सौ दिवाकर सिगरे गुरूजीन कौ प्यार पातौ, बू अपने बराबर वारेन सौ आदर पातौ। सिगरे छोरा बाए भयाजी कहक पुकार हैं।

जब जब वार्सिक उत्सव मनायौ जातौ म्हा च दा हू जाती। अपने दिवाकर कूँ मच प इनाम पातौ देखती तौ बाकौ मन फूलौ ना समातौ। अपने आँखन म आँसू भर लाती। मन म साचती कहूँ व होते तौ अपन बटा कूँ दखि के निहाल है जात। अपनी देखरख मे पढाते तौ कछू ते कछू बना देते। कबऊ-कबऊ कालौ छाया हू सामने आ जाती जासौ बाकौ रोम रोम काँप उठतौ।

समय निकसतौ गयौ। जीवन के ऊजरे भविस्य की चाह वाके जीवन रथ कूँ घर घर चलाती रही। दिवाकर बिना बाप कौ हो पर अपनी मेहनत अरु सवा सौं बाप वारेन सौ बढक निकसौ। जमैं वू पढवे लिखिबे म आगें ही खेल कूदवे मे हू सिरमौर

हो। फुटबाल टीम में कैप्टेन बनकैं राजस्थान को प्रतिनिधित्व कियो। सरकार की ओर सौं वाए खिलाडी कौ वजीफा मिलिव लगौ। दूसरी ओर अनेक उद्योगपतीन नैं वाकूँ मासिक वजीफाऊ बाध दियौ। दिवाकर को नाम अखबारन में छपव लग गयौ याए देखिकैं चन्दा सिहाती रहती अरु अपने भाग्य कूँ सराहती रहती। बातहू साँची ही-दिवाकर तन ते पुस्ट, मन ते सबल अरु चरित्र सौ दृढ हौ।

जसे पेड़ कूँ तौ अपने विकास ते ई मतलब होय वाए या बात की चिन्ता नाय होय क कौन फल खायगो? कौन बाकी छाया मांहि बैठेगो? कितेक मान्स अरु ढोर ढगर लाभ उठाइगे? वाते वाए कछू मतलब नाय होय। याही तरियां चन्दा दिवाकर कूँ वढोतरी की ओर लै आ रही।

दिवाकर नैं अपने बाप की नाँई हाई स्कूल की परिच्छा प्रथम पंक्ति म सबसौ उपर पास करी। वो सौं वधाई को तार आयौ। फोटाग्राफर बाकौ इन्टरव्यू लवे के ताई आ जमे। दिवाकर नैं अखबार वारेने के सवालन को जवाब जा तरियां दियो वाए सुनिक सब दाँतन तरे ऊँगरिया दवा गए। चन्दा के दरवज्जे प वधाई दवे वारेन की भीड लग गई। चन्दा न सवन को म्हो मीठो करायौ। आस-पास सवन कूँ मिठाई वाटी।

अब दिवाकर कूँ इंजीनियरिंग के ताई डीग सौ बाहर जानो। वानै कँऊ ठौर फारम भरे। सौभाग्य सौ जहा जहा फारम भरे म्हा म्हा ते वाकूँ बुलावौ आ गयौ। चन्दा नै सिच्छा के अच्छे स्तर कूँ देखते भए पिलानी ही चुनी। चन्दा आपई एडमीसन दिवावे के ताँई गई। वान म्हा सिगरे नियमन की जानकारी लई। वातावरण देखौ। म्हाँ ते सन्तुस्ट है क आई। चन्दा विन मैयान म सौ नाही जो मोह के वसीभूत हैकैं अपने छोरी-छोरान न मरी वँदरिया के बच्चा की नाँई छाती सौ लगाए डालैं। बिनकी बढोतरी के मारग म रोडा बन जाएँ। विदेसन कौ बुलावो आव तौ या मारें नाय भेजैं क का पतौ सागर म ते लौटिकैं आवगो क नाएँ। कछू या मारे नाय भजें क कहू म्हाँई नई बस जाए। कहू म्हाई ब्याह नई करले। कछू सागर पार भेजिवौ पाप समझैं। चन्दा तौ समझदार ही। वू ऐसी माता नाही जो सोन के टुकडा मो राजी है जातो वू तौ सोन कूँ आभूसन के रूप म देखनो चाहेई।

चन्दा न राजी राजी दिवाकर कूँ पिलानी म पढव के ताँई भेज दियौ। या तरियां सौं एक ओर वाकी आसम्न की नीव प सुख की दीवार उठती गई तौ दूसरी ओर दुख को गड्ढा धीरे धीरे भरव लगो। अब चन्दा कहव कूँही अकेली रह गई। अब वाके आस पास क रहवैया बाके है चुके। वू हर घर की अग बन चुकी। काऊ के घर कोऊ करनी होती च दा सबसौ पहल बुलाई जाती। चन्दा हू अपनी ओर सौ ऐसौ निर्वाह करतो क सब देखते ही रह जाते। ना काई को सकोच ना सरम। ना कवहू लन दन म पीछ हटती। हर एक की वढोतरी कूँ देखती तौ सिहाती। आग त आग बढक वधाई देती। जाकूँ जसी सहायता की जरूरत होती वसी ही करती।

अब च ग समाज सवा मे और लग गइ, अब तक तौ दिवाकर कौ व धन हौ। वारी देखभाल क ताईं आए सबै दबी परतौ पर जा दिना सौं दिवाकर पिलानी गयौ वा दिना सौं तौ चन्दा कूँ सेवा करब कौ औसर घनौ मिल गयौ। जा समै दिवाकर य ताईं जातौ सो समाज सेवा म लगतौ। गाम गाम म जहा छोरी सयानी है रही, गरीबी के भार जिनकौ ब्याह नाय है पा रह्यौ परिवार म संसत बढ रही दनिक जीवन गिर रह्यौ तनाव बढ रह्यौ, दहेज बिना ब्याह की समस्या म्हौं फार खडी, म्हा चन्दा न महिला मडल के सहयोग ते और उदार दानी लोगन सौं मिलिक आन्स ब्याह कराए। यहूँ अकेले म अरु नहूँ समूह मे चन्दा न सब सौ पहल लछमनजी के मंदिर के पीछ डीग म 21 जोडान को सामूहिक ब्याह कराय क आदस उपस्थित करौ।

21 जोडान के दोनो पच्छ डीग की खडेलवाल धमसाल म ठहराए। हर एक सौ पाच पाच सौ रुपया लिए। 21 वदी बनवाई गयी। वदिक ढग सौ यग भयौ। फेरा परे ता पाछै 21 जाडान कूँ मच प बठारौ। सबकूँ सामूहिक आसीस दियौ। सामाजिक अरु राजनैतिक नेतान सौ भासन दिववाए। जा काऊ न सामूहिक विवाह कौ मण्प दखौ ताही न सराहना करी। ब्याह म तामझाम सौ उकताए भएन कूँ सामूहिक विवाह खूब भायौ। यासौं एक ओर छोरीन कौ दुख दूर भयौ तो दूजी ओर माता पितान कौ भार हल्कौ भयौ। तीजे नई पीढी कूँ नई डगर दिखाई। दहजवारेन की गरदन लटक गई। म्हौ प कालिख लग गई।

याही तरिया चन्दा न बाल विवाह के रोकथाम क ताईं काम कियौ। जिनकौ सम्बध तै है गयौ बिनसौ मिलिक बिन्नै समझाय क बिनके गरे बात उतार कैं बिन बाल-बिवाहन कूँ रोको। जिन बाल विवाहन कूँ रोको, बिन बाल विवाह करब बारेन के सामई छोट छोटे छोरा-छोरीन कूँ बठाय क बिनके फोटो खिचवाय क अखबारन म प्रचार प्रसार करायौ। सग मे बाल विवाह क दोसन कूँ हू छपवायौ। दुनिया की या तरिया सौ चन्दा नै आख खोल दई।

गाम गाम म औसधालय विद्यालय सत्सग भवन बनवायवे क ताईं जन सहयोग सौ धन उगायवौ प्रारम्भ करौ। यामें हू चन्दा कूँ सफलता हाथ लगी। बानैं ई सिद्ध कर दियौ कैं चन्दा दवे के ताईं दुनिया तयार रहै। हाँ, एक तौ सबक भल कौ काम होय दूसरे नीयत साफ होय। फिर कौन नट ? कौन पीछ हट ? चन्दा नैं चन्दा तौ इकट्ठौ कियौ पर हाथ सौ नई छुऔ। जा गाम म चन्दा इकट्ठौ कियौ बाई गाम के ईमानदार लोगन की समिति बनाय क धन बिनकूँ ई सौप दियौ चन्दा न स्वजन पीडित असहाय वृद्ध सेवा सदन खालिक तौ कमालई कर दियौ। जिन घरन म बहू अपन सास ससुर कूँ पीडा द या बेटा अपने मया बापन कूँ रोटी पानी दवे में आँख तरेर बिन घरन के दुखियान कूँ राहत दिवाई। अनाथ अरु विकलांगन कूँ जीवन निर्माण सस्था खोली जहा पढौ और कमाऔ। अपने पायन प खडे हौनौ सिखायौ। दुनिया कहबे लगी राम राज की अब तक सुनी पर चन्दा के कामन न राम राज लायकैं दिखा दियौ।

क्रमस करत उरौ

बितकूँ पिलानी मे दिवाकर नै दो साल म ही चारा ग्रार अपनी बुद्धि वौ कौसल दिखायो । फूल की गध बाँधी नाय जाय सक बू तौ फलई फल । वाकी गध प भौंरा मडरावै । तितलीन कौ जमघट हैवे लग । मधुमक्खी छा जाएँ । याही तरिया पिलानी मे दिवाकर कौ यश चारो ओर तैरवे लगौ । कॉलेज के छोरी छोरा प्रोफसर दिवाकर के व्यक्तित्व सौं प्रभावित भए बिना नई रह सके । खेल के मैदान मे धाक न्यारी जमाई । फुटवाल की टीम कौ कप्टिन बनकैं मैसूर खेलवे गयौ । अपनी टीम कू जिताय कै लायौ । सालाना जलसा मे बिडला भयान न हू दिवाकर की खुलकैं सराहना करी । अखबारन मे दिवाकर के कामन की खबर जब चन्दा सुनती तौ मन बांसन उछलतौ । बाके फोटू दखिकैं चकोर कौ स्मरन है आतौ ।

दिवाकर के वडप्पन के कामन कू दखिकैं वाके यारन नैं चुनावन के सम बाकू प्रेसीडन्ट के पद प खडो कर दियौ । दिवाकर न मुक्तेरी मना करी, पर बाके साथी नई माने । एक न तौ महा लौं कह दई यासौं व्यक्ति की महिमा नई बढ़गी पद कौ गौरव बढ़गौ' यारन की बात मानकैं दिवाकर कूँ फारम भरनो परौ । दिवाकर क वढते भए यस कू देखिक कछू कुढवे लगे । कछू जरवे लग । कछू पजरवे लगे । दिवाकर कू ज्यादातर छोरा चाहे हे पर जिनक मन मे मल हौ वे होठन सौ वाह वाह करें हे। पर मन म आह भरकै रह जाते ।

प्रेसीडेन्ड के पद प दिवाकर के सॉमई ठाडो हैवौ काम रखग्रो पर पिछली साल कौ भरत सामई आ ही गयौ । देखते ही देखते बू चौडे म आयकैं दिवाकर की बुराई करवे लगौ । बाम छेद बतावे लगौ । अनेकन लौना लगाइवे लगौ । बाकी गरीबी की हसी उडावे लगौ । बाके कपडा लत्तान प फब्ती कसवे लगौ । बाके बाप के ना हैवे की कमजोरी बताव लगौ । ज्यों ज्यो भरत बाकी बुराई करतौ त्यौं-त्यौ दिवाकर के समथक और पक्के हैवे लगे । भरत नै अपने सगी साथीन कू लकैं एक दिना दिवाकर कू बाक कमरा म समाझयौ । दिवाकर सा अपनो नाम वापिस लैबे क ताई लोभ-लालच हू दियौ पर दिवाकर पै कछू असर नई परौ । बानै इतेक जरूर कही क मोय नाम वापिस लबे म कोऊ उजर नाय पर मेरे समथकन कू आप मना लेऔ । मरो तौ भार कम है जाइगो ।

ताही सम न जान कहा सौ दिवाकर क समथकन कू सूसर लग गई । वे दल-बल के सग दिवाकर के कमरा म आधमके । भरत बिनकू देखक हक्कौ बक्कौ रह गयौ कमरा मे गहरी चुप्पी छा गई । दिवाकर ही बोलौ भैयाग्रो मेरौ बडो भया मेरे सामई एक प्रस्ताव लक आयौ है क मैं प्रेसीडन्ट के पद कौ अपना परचा वापिस ल लऊं । मैं हू कमवादो पद कौ लोभी नाऊं आप जसौ चाहो वैसौ करौ ।'

या बात कू सुनिकै सब घुसर पुसर करब लगे। कछू कमरा सौं बाहर निकस गए। भरत सब समझ गयौ। वानैं देखी सीधी अ गरिया घी नईं निकसगो। वान आँख बदली। वान दबे दबे सब्दन म सबकू जतायौ क बात नईं मानी तौ परिनाम भुगतन परिगे। दिवाकर नैं भरत सौ अनुरोध कियौ क वू अपने भयान की अनदेखी नाय क्र सकै। फिरऊ और विचार करवे की क्ही। ता पाछें भरत कमरा म नईं रूको। भरत अरु बाके साथी चलते-चलते ताहुन मार गए, 'लालाऔ अच्छी तरिया विचार कर लेऔ।'

अब कमरा मे दिवाकर के समयक ही रह गए बिन साफ-साफ कह दई, नाम वापिस नइ लियो जाइगो। आज के युग म कोऊ अपनी देही के बल प काऊ की आवाज कू नईं दबा सक।' दिवाकर नैं एक पोत फिर सबसो भरत की बात मानबे की कही, भयाऔ भरत हू अपनो भया है, पिछली साल सो वू सबा करतो आ रह्यो है। बाकू एक पोन और औसर दियो जाए। बाए एक बरस को अच्छो अनुभव है।'

सिगरे साथीन नैं सुनी पर कह दई "रहटू उतर चाहे बट्टा नाम वापिस नईं लियो जाइगो। कहूँ विनकूँ गुण्डागिर्दी को ज्यादा घमड है तो सठम साठये समाचरेत वारी बात ह्वेयगी। समयकन की बात सुनिक दिवाकर न भरत कू नाम वापिस लब मे अपनी असमथता की सूचना द दई। भरत या समाचार कूँ सुनिक आग बबूरा है गयो। वाके सगी साथी ऊटपटाग बकवे लगे।

नाम वापिस लबे की तिथि निक्सते ई दोना पच्छ अपने अपने प्रचार मे जुट गए। भरत बडे घर को छोरा ह्वो। बाके साथी हू बडे घर के। पिछली बेर भरत पन्सा के बल पैं ही जीतो। पर बाके ब्योहार सो सब आती आ गए। भरत फिर बाई इतिहास कूँ दुहरानो चाह रहो। पिछली बेर तो भरत की चढ बनी। नयो चेहरा ह्वो। भाति भाति के बान प्रलोभन दिए। कछू भय मे आ गए। कछू कन्नी काट गए। पर एक साल के कामन नैं भरत की सिगरी पोल खोल दई। काठ की हाडी एक पोत चढ चुकी। वानैं जातिवाद फलाया। हर छेत्र मे दादा टाइप के छोरान कूँ चुनो। विनकूँ ही दन्डाबो दियो। गभीरता अरु गरिमा को ध्यान ही नाय राखौ। बाए दिना हडताल करक पढाई ठप्प कर दई। सबा के नाम प सबकूँ अगूठा दिखा दियो। हा अब बाए प्रेसीडेन्टी कौ चस्का लग गयो। हर जलसा मे ऊचे मच प बडे बडे लोगन के सग बठिबो हाथ मिलाबो फोटू खिचिवायबो चाहे जहा रुआब दिखायबो बाए भा गए। याकौ लोभ बाए सतायबे लग गयो। याहो सो फिर बाक म्हो म पानी आ रह्यो।

ज्यो ज्यो चुनावन के दिना निकट आ रहे त्यो-त्यो प्रचार धुँआधार ह्वेबे लगो। भरत क नाम के पोस्टर दीवारन प चमर गए। सडकन प सफेदी त वोट फोर भरत चमकतो दिखाई परो। भरत क नाम क बज छोरी–छोरान की छातो प छा गए।

भरत की ओर सौं दारू, कम्बर, साइकिलन सौं वोट उगाइवे की धम मच गई । पइसा पानी की तरिया बहायौ गयौ । ठौर ठौर पै खाइवे पीव की छोरी छारान कूँ खुली छूट द दई ।

इतकूँ दिवाकर के पास पइसा कहा हो ? वाकौ मया अपन वेतन म ते बचा खुचा के पूरौ पार रहौ । कवऊ कवऊ इत वित ते लने ग्रौर पर जाते । दिवाकर क हिमायतीन के पास दमखम तौ हुतौ पर धन नाम्रौ । फिर प्रचार म कौन पइसा लगातौ । लगातौ तौ कहा लौ लगातौ । याही सौ वाके साथी प्रचार के ताई कछू ताम झाम नई जुटा सके । दिवाकर न प्रचार-प्रसार के ताई वनर, पम्पलेट पास्टर अरु सडक अरु दिवारन प लिखवे के ताई मना कर दई । तक ई दियौ सव पढे लिखे हैं । सव ज न फिर वनावटपन सौं कहा होय ? दिवाकर की बात वाक साथीन न सुनी पर जब भरत की हल्ला गुल्ला ग्ररु जमौ भयौ अखाडो देखौ तौ दिवाकर क समथकन प नई रह्यौ गयौ । धीरे-धीरे रुपया इकठौरे करक गेरु ल आए । हांडीन म गेरू घोर लियौ । कछू हाडीन मे सफेदी घोर लई । राता रात सडकन प सफेदी ते ग्ररु दीवारन प गेरू ते वोट फोर दिवाकर लिख दियौ । पर भरत की प्रदसनी के आगे दिवाकर को दिखावौ नैकऊ नइ टिक सकौ । साँची बात है कहा राजा भोज ग्ररु कहा गंगू तेली ?

हा दिवाकर कौ प्रचार डोर टू डोर रह्यौ । दिवाकर के साथी बिना कोऊ लाभ लालच के ग्रपनो धम-कम समझ क प्रचार के काजै समर्पित है गए । प्रतिष्ठा कौ प्रश्न समझकै जुट गए । भरत के साथीन की उमग तौ देखते ई बनती । विनक पाम धरती प नाय टिक रहे । वे नौ-नौ हाथ उछर रहे । खूब बढ चढ कै बात कर रहे । मौछन प ताव द रहे । अपने घासना पत्र म खूब चमक दिखाई । भाँति-भ ति की घोसना करी । वोटरन कूँ भाँति भाँति सौं फुसलायौ । दिवाकर कूँ भीगी बिल्ली उजड्ड , ना समझ और न जान का-का उट पटाग सम्वोधन दिए ? विन दिवाकर की छवि धूरि मे मिलायवे क ताई कोई कार कसर नई छाडी । चुनाव जीतवे के जितेक हथकडे अपना सक ए सा सव अपनाए । दिवाकर नैं न कवऊ वढ़ चढके वात करी न भयान कूँ कोऊ औधे-सूधे प्रलोभन दिए । भरत वे ताई कोऊ एसो बोल नई कह्यौ जो वाकू बुरौ लगौ होय । जव कवऊ मिले भरत कूँ बडो भया कहकै राम राम करी पर भरत ने सूधे म्हो राम-राम हू नई लई । या चुनाव कूँ देखि कै पिलानी वारेन नै कही क अव को चुनाव राम रावण कौ युद्ध है । एक ओर राजा हे तौ दूजी ओर वनवासी । या चुनाव म छोरी छोरा तौ रुचि ल ई रहे पर गुरूजन ऊ लालायित है क देख रह्यौ । गुरू वर्ग कौ झुकाव दिवाकर की माऊ हुतौ पर कोऊ कछू कह ना सक हो । सवन न अपनी-अपनी इज्जत कौ ख्याल हो । साचत स्योंप के विल मे कौन हाथ डार ।

चुनाव सौ दो दिना पहले भरत कौ ग्रच्छौ खासौ जुलूस निकस्यौ । धूम धडक्का दौड धूप, ज जकार खूब रहे । कछू समथक तौ जुलूस मे हुते, कछू भय के मार सग लग रहे । कछू प्रलोभन के मार जय हो जय हो कर रहे । भरत के जुलूस सौ भरत की जीत

प मुहर लग गई। दिवाकर के समर्थकन की तो बधिया बठ गई। छाक छूट गए। हालत पतरी पर गई। हापन क ताता उड गए। इन सब बातन को दिवाकर प काऊ प्रभाव नई परो। वान ज्यादा चिन्ता नई करी। तनाव नई बढ़ायो। वान ई बात सिद्ध कर दई क अधड म तरु, गुलम अरु लता छिल पछारन प का प्रभाव परै। वानै हिम्मत नई हारी। भाग के भरास हू नई बठो। ज्यो ज्यो भरत ने द्वन्द बढ़ते गए दिवाकर की कमान तनती गई। 'चरवति' को मंत्र और गहरातो रह्यो।

दिवाकर की सरलता अरु विनय को लाभ उठाय कै भरत के साथी उल्टी सीधी सुनायव लग। चेतावनी हू दई गई। इन सौं दिवाकर न एक पाठ पढ़ लियो क भरत की पार्टी सौ सचेत रह्यो जाय। दिवाकर के साथीन न हू दिवाकर कूँ अकेलो नई छाडो। वाके सग छाया की तरिया लगे रहे।

चुनाव क दिना चाम्री तैयारी है गई। भरत क समर्थकन कूँ कलऊ के ताई मिठाई अरु नमकीन आ गयो। भाजन के समै भाजन आ गयो। दिवाकर के पास का धरयो? वाकी फौज तो चनान के सहारे जुझ रही। पिलानी म पहली पात ऐसी चहल पहल भई। दोनोन के खेमे म भागम भाग देखबे लायक ई। कई बेर दोनो दलन म तनाव की सी स्थिति आ जाती पर दिवाकर की सूझ बूझ अरू विनम्रता सौ टकराव बच जातो। काऊ तरिया दिन भर की गहमागहमी साँझ कूँ चार बजे जाय कै थमी।

चार सौं पाच बजे के बीच एक घन्टा को सम और बाम डारब वारन कूँ बचो। अपनी-अपनी सूचीन मे देखिकैं ई मालुम करी जाय रही क वोट दब ते कौन कौन रह गए हैं। बिनै पकरि पकरि क समपक ला रहे। भरत के वाहन दौड धूप कर रहे। भाँति भाँति के धुँआ के गुब्बारे दिखाई पर रहे। एक एक वोटर के पीछे चोटी सौ एडी तक को पसीना बहा रह। एक वोटर कूँ आतो देखते तो दोनो दल टूट परते। एक याए अपनी ओर खीचतो तो दूसरो अपनी ओर। वाके कपडा ऐसे खचे जाते क बाकी जानआफत मे आ रही। बू बिचारो आतो आ जातो। दोनोन ते हा हू करतो चुनाव के कच्छ तक पौंच कै हो चन की साँस ले पातो। मतदान केन्द्र प रस्साकसी को सौ वातावरन दिखाई पर रह्यो। या तरियाँ एक घन्टा निट्ठन सो बीतो।

पाच बजते ई उफान एक सग बठ गयो ज्वार उतार प आ गयो। गरम दूध प मानौं ठन्डे पानी के छीटा पर गए होय। अब काऊ वोटर सो बात करवो तो दूर वाकी ओर देखबो हू पाप समझ रह। जस काऊ टोटका धरक पीछे मुड क नाय देखै बस ई काम निकस जाबे क पीछे वोटरन की ओर काऊ वू कऊ नाय रह्यो।

एक घन्टा पीछे वोटन की गिनती हैब कूँ ही। एक घन्टा सबन कूँ या बात कू दियो क सब सुस्ता ल। अपनी थकान कूँ मिटा ल। भोत तो इत वितकूँ छँट गए पर जो गीध खत ह, विनको सुस्तावो कसो? वे तो म्हांइ छाए रह। चील कौआन को कचन करत खरो

नाई मडराते रहे । वे तौ ई चाह रहे क एक घटा पलक झपकत ई निकस जाए पर सियारीयान की उलायती ते बेर नाय पकै । फल तौ समै प ही आव । घडी की सुई ना काऊ की आतुरता देखे ना काऊ की छटपटाहट । समै तौ अपनी गति सौ सरकै । हा मान्स सुख मे समै कूँ भागतौ भयौ अरु दुख मे ठहरतौ भयौ अनुभव कर ।

खर, काऊ तरिया छ बजे । कालेज के विसाल सभागार मे बिजुरी जुर गई । मजन प गिनती करबे बारे जम गए । दोनो पच्छन के प्रतिनिधि चौकसी क ताई आख पसार के डटगए । यो तौ सबन कूँ सिगरी सीटन कौ परिनाम जानब की चाह ही पर, प्रेसीडेन्ट की चुनाव काट कौ भयौ, सबन की निगाह प्रेसीडेन्ट के परिनाम पही । सबन की टकटकी मतन की गणना के ताई ऐसे लग रही जस बगुला की मच्छी प हाय । सबकी आख निरनय सुनिवे के ताई, ऐसे लग रही, जैसै करवा चौथ पै उपासी बयरन की आख चन्दा माऊँ होय ।

पहलै ओर सीटन की मतगणना भई । एक एक करक ओर सीटन क परिनाम निकस गए जीते भएन के जकारे लग । जीते भए बाहर है गए बिनकूँ फूल माला चढाई गई हारे भए चुपचाप खिसक गए । अब वरी आई प्रेसीडेन्ट के मतन के गिनवे की । दोनान के भाग के डिब्बा खुलबे लगे । बोटन की गिडडी बन गई । नाम पुकार-पुकार कै बोट बांटे गई । पहले डिब्बा म भरत ही भरत चमको, दिवाकर कौ नाम आयौ पर कम आयौ । भरत क साथी चमक उठे नाचबे लगे । बाहर भागक ऐलान कर आए । भरत क नाम के जैकारे लगावे लगे । दिवाकर के समथकन के मन मर गए । बुझे बुझे से माथौ पकर क रह गए । भरत बा कमरा म ई जमौ भयौ जाम बोट गिनी जा रही । बाके होठ नाचबे लग । आंख नाचबे लगी । दिवाकर तौ पहले ई अपने कमरा म चलौ गयौ । बाके समथकन मे ते एक न जाय कै जब पहले डिब्बा के समाचार सुनाए तौ दिवाकर के चेहरा प ना कोऊ उतार आयौ ना माथे प सरवट परी ।

मतगणना के कच्छ मे दूसरौ डिब्बा खुलौ पर अबकी बेर पाँसौ ही पलट गयौ । अब की बेर दिवाकर इ दिवाकर कौ नाम सुनाई परौ । भरत कौ नाम इक्का दुक्का ही रह गयौ । भरत क समथकन के चेहरा उतरबे लगे । तोऊ और डिब्बान प आस लगाए जमे रहे । और डिब्बा खुले तौ भरत की कई डिब्बान म ते नामई गायब मिलौ । बाकौ करेजा धक धक करब लगौ । पांयन के नीचे ते धरती खिसकबे लगी बिनके हाथन के तोता उड गए । भरत म्हाँ फारे रह गयौ । जो मोछन प ताव द रहे बिनके चेहरा लटक गए । 80 और 20 की औसत देखिकै भरत की आसा निरासा म पलट-गइ । कछू तौ भरत ते बिना मिले ही खिसक गए । दिवाकर के समथकन के चेहरा प भोर की ललाई नाचब लगी । मुरझाए भए पौधान कूँ पानी मिल गयौ । तेल चुके दीपक म तेल पर गयौ । अगले डिब्बान नै तौ भरत के पाँमइ तार दिए । भरत नै कमरा कूँ छाडिबौ ठीक समझौ ।

वितकूं दिवाकर के साथी दिवाकर कूं कमरा प ते जबरन उठा लाए। परिनाम कच्छ में परिनाम की घोसना भई। दिवाकर भारी बहुमत सों बिजयी घोसित भयौ। ता सम हू दिवाकर एक्दम सात हो। विजय को उल्लास चेहरा पै जरूर झांक रह्यौ, पर कोऊ अभिमान की रेख नांई। वाके यारन न वाकूं बधाई दाई। काऊ न हाथ मिलाए, काऊ नै गोदी म भरो, काउ नै हिए सों लगायौ। कछून नै बाकूं अपने कधान पै उठा लियौ। जो लोग माला लकैं आए बिन वाकूं मालान सों लाद दियौ। कछू भरत के ताई माला लाए पर जब बिन दिवाकर की जीत देख लई तौ मन के भाव दबाय कै ऊपरले मन सों अपनौ दूसरौ चेहरा चढाय कै दिवाकर के गरे में ही माला टार दई। फोटोग्राफर न अपनी कला दिखाई।

जसे ई दिवाकर माला पहर कै बाहर आयौ वाके नाम की जय जयकार ह्वैवे लगी। काउ नै फून माला डारी काऊ नैं गुलाल लगाइ। थोरी देर में ही भीड न एक जुलूस कौ रूप धारन कर लियौ। सडक प दिवाकर की जय जयकार के नारे गूंजब लगे। "जीत गयौ भई जीत गयौ भाई दिवाकर जीत गयौ।' दिवाकर की जय हो" जसे नारे पिलानी में गूंज उठे। दिवाकर की आंख भरत ते हाथ मिलावे कूं ललक रही। पर भरत तौ अपने कछू साथीन के सग मन मारे एक कमरा म जा बठो। और साथी वाए वसे ही छोड गए जसै क मरे ढोर कूं कलीला छोड जाए। भरत के कमरा म मातम सो छा गयौ सबन के चेहरा प हवाई उड रही। बडबोला भरत के साथी कहवे लगे, 'अमुक धोखो दै गयौ अमुक न पीठ म छुरा भाको है, अमुक न एन टम प लीम डीपन कियौ है। भरत हू निढाल परो चुपचाप सुनतो रह्यौ। कहतौ तो का कहतो? वाए अपनी तौहीन को ऐसौ अनुमान नाओ। वू तो जीतवे के पाछै मधुर सुपने सँजोए बठो। बाके मसूबे मर गए। ख्याली पुलाव धरे के धरे रह गए। सब सुपने ढह गए। विनम ते एकाध दिबाकर कूं गारी गुप्ता करवे लगो। एक बोलो न जान कहा ते बीच म ही बबर परो। दूसरौ बोलो 'सब मालुम पर जाइगी प्रेसीडन्टी कस करी जाए। तीसरे नै कही 'अजी प्रेसीडन्ट बन गयौ है तो काए, हम वाए चन ते नइ बठन दिग। चौथे न कही, अजी हमारी बात नाय मानबे कौ वाए मजा चखानौ परगो। पाचवे न कही वान हमारी नाक काट दई है हम याको बदलो लक रहिगे।'

दिवाकर के खेमे म जीत की धूम मच रही। उल्लास कौ वातावरन छा रह्यौ। सबन क चेहरा प गुलाल अरु उल्लास की लालिमा नाच रही। होठ मुस्करा रह। कमरा म मिठाइ बँट रही दिवाकर नो म्हो मीठो करायौ जा रह्यौ। दिवाकर न अन्त म सबन कूं धन्यवाद दियौ याने कही ई मरी जीत नांए तिहारी जीत है। तिहारी महनत रग लाइ है।' सबन के ताई आभार प्रगट करकैं बिदा कियौ।

रचन करत ग्रो

बाके कमरा म रह गयो वाको लँगोटिया यार राकस। बाने दिवाकर कूँ या सम अकेलो छोडिबो ठीक नई समझो। दिवाकर के मन म तो कोऊ मल नाओ ना काऊ आसका ही पर बाके साथी बाते कान मे कह गए क सचेत रहनो है। फूँक फूँक कै पाँम रखनो है। ऐसो नई होय क रिसियाए भए चोट फैंट कर जाएँ। दिवाकर न सबन की सुनी और अनुसुनी कर दई।

सबन के जायवे के पीछ दिवाकर के मन म बिचार उठने लग। भरत कहूँ काऊ भेडियापन नई कर दे। काऊ नें कही है गुंडा बडे परमेसुर ते पर फिर दूसरो विचार आतो पढ़े लिखे है बिना कारण कोऊ ऐसी बात नाँय कर सक। हाँ कछू कहनावत सुनावत करेंगे तो सुन लिंगे। चुप्प लगा जाइगे। एक चुप्प सोन कूँ हरावे। इनई विचारन म डूबतो उतरतो दिबाकर सो गयो। कई दिना को थको भयो। बिना दबोर नींद आ गई। एसी नींद आई क सवरे आँख खुली ही नई। भोर ते पहलेंई बधाई दैव बार आ गए बिन्ने हा हुल्ला करक दिवाकर कूँ जगायो। जा बोट डार क चले गए, बिनकूँ अखबारन सो सब पतो चल गयो। अखबारन क सबते पहले पन्ना प दिवाकर का फोटू छपो। बाए दखिकैं दिवाकर के समथक खिल उठे। विरोधी पजर गए। पिलानी म कई दिना तक दिवाकर क नाम की चरचा रही। कॉलेज म दिवाकर की धूम मची रही।

भरत अरु बाके समथक कछ दिना तक म्हो छिपाते रहे। मनई मन कुढत रहे। विनकी बदले की भावना धीरैं धीरे जार पकरती गई। वे जान बूझक लरबे मगरबे के बहाने ढूँढवे लगे। दिवाकर न कोऊ औसर ही नई दियो। एक दिना राकेस कूँ सग-लकै भरत के कमरा प पहुँच गयो। भरत नै दुनिया दिखाइव कूँ मन म घुसे चोर कूँ दबाय क स्वागत कियो। बधाई दई। दिबाकर नें आभार मानो अरु सहयोग की आकांच्छा प्रकट करी। ऊपरले मन ते भरत न सहयाग दब की कही पर मन को मैल दूर नई भयो। खीरा को सो रूप हो वाको, ऊपर ते तो मन मिलो भीतर फाक तीन।

चुनावन कूँ भए पन्द्रह दिना बीत गए। मामलो सब सान्त है गयो। दिवाकर के मन मे त मका धीर धीर निकस गई। एक दिना दिवाकर पिलानी बस स्टण्ड सों रात के नौ बजे क आस पास कालेज होस्टल की ओर लोट रह्यो। मुख्य दरवज्जे के भीतर घुमवे वारो ही हो क दस बारह छोरान न बाप भयकर हमला बोल दियो। दिवाकर सम्हर ऊ नई पायो। ना कछू कह पायो ना सुन पायो। हक्को-बक्को देखतो रह गयो। ऐसो लगो मानो चक्रव्यूह के द्वार प निहत्थो अभिमन्यु दुस्ट कौरवन के घिराव म आय गयो होय। विनमे ते एक छुरा भौक क भाग गयो। वाक सग और सब सिर प पाँम रख क भाग गए। दिवाकर छुरा लगते ई गिर परो। इतनो ई कह पायो भयाओ अच्छो नई कियो।" बाने साहस करकैं सबसो पहल घाव प धोती कसक वाँधी फिर कालेज हास्टल चलवे की ठार अस्पताल चलवे की साची। हिम्मत करक

लडखडातो बस स्टॅड की ओर सरको। तागे वार कूँ पुकारो। बाते छुरा लगब की बात करकै तागे मे चढायवे की कही। तागे वारे न मदद करी अरु फुरती सौं वाए इमरजसी म ल गयो। तागे मे इ दिवाकर अचेत है गयो।

तागेवारो हत तौ मुसलमान हो। पर दुख के समैं जाति पाति काऊ नाय देख। बानै दिवाकर कू गोदी मे उठायो और इमरजसी रूम म ल गयो। इमरजसी कच्छ मे डाक्टर अरू नस हस रहे। मस्ती मार रहे। चाय की चुस्की चल रई। लग रह्यो इमरजैसी कच्छ, इमरजसी कच्छ ना हैक कोऊ रेस्टोरॅट होय। तागेवारे न गोदी म लैकै दिवाकर कू लिटायो। डाक्टर अरू नसन न मायो ठोक लियो। मस्ती म खलल पर गई। बडे नाज नखरेन ते उठे। तागेवारे न कही, "डाक्टर साहब कालेज को छोरा है' तब डाक्टर सावधान भए। फिर तो फुरती आ गई। दिवाकर टबिल प लिटा दियो जा समै वाको कमरपेटा खोलो दिवाकर अचेत ही हो। डाक्टर न फोन सौ कालेज क प्रिसीपल कू फोन कियो। होस्टल के वाडन कू फोन कियो। जासो कोऊ सार सम्हार करबे वारो आव। बाजार सो दवाई लाब। कमरबन्द खोलते इ खून बह निकसो घाव भौत गहरो। खर इतेक रही व छोरा, छुरा कू घुमा नई पायो। डाक्टर ऊ घवडा गए। और डाक्टर बुलाय गए। दखते ई देखत रात मे प्रिसीपल होस्टल वाडन, होस्टल के छोरा सब अस्पताल मे इकठौरे है गए। डाक्टरन नै जाच पडताल करक घोसना करी घाव गम्भीर है, हालत अच्छो नाय। दिवाकर के मया बाप वगि सौ ही बुला लिए जाएँ।

जा बाऊ न सुनी सन्न रह गयो। प्रिसीपल न दिवाकर कू जपुर ल जाब की कही तो डाक्टर बोले अपनी जिम्मेदारी प ल जा सको रस्ता म ही कछु हैगो तो जिम्मेदार नाय। सब गहरी चिन्ता मे डूब गए। प्रिसीपल नै सबसौं पहल लाइटनिंग काल लगाय कै ठीग मचना दई। चन्दा बिचारी सो रही। रात म फोन की सुन क करेजा धक धक करबे लगो। ल दकै भगी भगी गई। कांपते हाथन त टलीफोन कू उठायो। पिलानी को नाम सुनत इ चन्दा कांप गई अरू जस ई सुनी, दिवाकर की तबियत खराब है बेग ते चलो आओ। तो याए सुनत इ चन्दा हिल गई। कार उठी गहरी कारी छाया के भय न झकझोर दई। रात म अकेली कसे जाए? पर वाई छिन वाए याद आयो परोसी अपने इ तो हैं। फिर या सम काम नई आइग तो कब काम आइग। बान कमरा म ते कछु कपडा अपनी टोकरी म रखे। कछु रुपैया पइसा बांधे। आस-पास क लोग लुगाई जिन सुनो व भागे चले आए। चन्दा क सग चलब कू हर एक तयार है गयो। सबन न निरजन एस डी आई कू सग लियो। निरजन परिश्रमी निष्ठावान अरु समझदार है। बेग ई जीप करक भरतपुर पहुच गए। रात कू ट्रेन पकर क जयपुर पहुच गए। जपुर त फिर बस पकर न पिलानी पोंचे। निरजन न अनुमान त अस्पताल ही पहुचबो उचित समझो।

क्रमश: (?)

पिलानी के अस्पताल के सामई छोरान के ठटठ जुर रहे। दिवाकर के बारे म बातचीत कर रहे। हर एक चिन्तित दिखाई पर रह्यो। चन्दा नैं धडकते मन सी जो कोऊ सामने आयो बाई सौं दिबाकर की पूछी। गम्भीर हालत जानक चन्दा के पाम टूट गए धडकन बढ गई, लम्बी सास चेहरा पैं हवाई उड रही, तेज उड गयो। छोरान नैं अनुमान लगा लियो दिवाकर की मया आ गई है। बाए देखिब छोरा इकठौरे है गए। निट्ठन ते बाए भीर म ते निकास क दिबाकर के वच्छ तक ल गए। वा सम दिवाकर कू आक्सीजन दियो जा रह्यो। वा समै कोऊ वच्छ मे नई जा सक हौ। डाक्टरन न पूरी तरिया सौ भीतर घुसबे तक की मना कर राखी। चन्दा कू हू रोक दियो। च दा न डाक्टरन के हाथ जोर पाम पकरे पर डाक्टर नइ पसीजे। चन्दा माथौ पकर क बठ गई। बाए पसीना आ गयो। भावी आसका सौं दिल की धडक्न और बढ गई। चन्दा समझ गई हालत गम्भीर है। बाते बाव छुपाई जा रही है।

दिवाकर के साथीन नैं चन्दा कूँ मुकतरौ धीरज बधायो पर ज्यो ज्यो धीरज बँधायो त्यो त्यो चन्दा को मन भारी हैवे लगो। आखन के आगें अधियारी छा गई। आँसून की धार बह निकसी। चन्दा की हिचकी बँध गई। डाक्टरन नैं देखी क चन्दा प कोऊ भारी आघात नई पर यासो कही क दिवाकर चेत म आ गयो है अरू खतरे सा बाहर है। या बात कूँ सुनिकें बाकी जान में जान आई। मुरझाई बेल कूँ पानी मिल गयो। बान डाक्टरन ते फिर बिनती करी, बू नेकहु नई बोलैगी। होठन नैंऊ नई खोलैगी। आसू हू नई गिरावैगी। नक देर कूँ नैनन के तारे ए दख तौ लन देओ। डाक्टरन नैं आधे घन्टा पीछें मिलबे की आग्या दई।

आधे घन्टे चन्दा कूँ भारी पर गयो। आधे घन्टा पाछ चन्दा दिवाकर के जोर पहुँची तो देखी सिलाइनवाटर की बोतल चढ रही हैं। दिवाकर चित्त लेटो भयो। दिवाकर नैं जसैं ही मैया देखी हाथ जोर कै राम राम करी फिर पांव छूवे के ताईं उठवे लगौ पर बाक साथी राकेस नैं बाकूँ रोक दियो। नस नै कडक कै लेटे रहवे की कही। चन्दा दिवाकर कूँ देखि क कछू नई बोली पर बाके नैनन सौं आँसून की बूँद मरव लगी। दोनो ओर आँसून की बरसात देखिक, देखिबे बारे हू पसीज गए।

दिवाकर न मदे सुर मे कही 'अम्मा तू आ गई ?

'हाँ। बेटा मैं आ गई अब चिंता मत कर।' चन्दा नैं दिवाकर के माथे प हाथ फेरते भए धीरज बधायो।

दिवाकर 'अम्मा 'अम्मा' कहतो रह्यो अरू चन्दा अपनी आँखन म आत भए आँसून न रोक क, मेरे बेटा मेरे लाल तू ठीक है जायगो कहती रह्यो।

दियाकर सौं मिलिकै चन्दा बाहर आई तौ देखी कालेज के छोरान की भीड़ और बढ़ गई है। भीत से तौ चन्दा के दरसनन के ताईं आए। बिन्न चन्दा के समाज सचिवा हैव की बात सुन राखी। वे वा मैया कू देखिबे आए जानैं ऐसौ लाल जायौ है। मिलिवे वारेन म वे हू छोरा हते जो हमला करवे वार हू।

चन्दा सौं दियाकर के साथी बोले अम्मा तू चिन्ता मत कर हमारो भया ठीक है जाइगो।" सहानुभूति के बोल सुनिके चन्दा फफक क रो परी "बटाओ दियाकर मेरे जायो भयो अकेलो बेटा है पर म्हो बोले तुमहू तौ मेरे बेटा हौ। जब इतेक बेटा सग रहरहे है, तौ मोय चिन्ता नाएँ, पर हाँ, माय तो कल्लई ऐसी भाव पर गई के कछू अनहोनी हैवे कूँ है। मोय तौ कल्लई ते रोटी पानी अच्छो नाय लगी। बुरे बुरे सुपने दीख रहे।

चन्दा की बात कूँ सुनिके छोरा काप गए, बिन्न चन्दा त कही, अम्मा जो कछ हानौ सो है गयो अलावला सब टर गई पर तू चिन्ता मत कर हम हमला करवे बारेन त बदलो लेकै रहिंगे।'

या बात कू सुनि कै चन्दा एकदम गम्भीर है गई। सागर को ज्वार एक सग उतरिगो। सबन कूँ समझाते भए कही, बेटाओ! बदलो कौन त लेओगे? कौन पै बार करोगे? अपने भयान प। अपने भयान कौ लहू बहाओगे। कालेज म जितेक छोरा हैं सब मेरे बेटा की नाईं है। तुम मेरे बेटान पइ वार करोगे? ना ना बटा ऐसी बात मत करौ। ई घटना तौ नासमझी मे घट गई है। का तुम और नासमझी करोगे? का कीचड ते कीचड साफ करोगे? बेटाओ तुम सब पढ़े लिखे हो। जिनसो गलती है गई है वे दुख दकैं सुखी हु गे का? वे हू पछता रहे हुगे। मोय मिल जाएँ तौ मैं तौ बिन्न गरे सो लगा लऊँ प्यार करूँ प्यार सो समझाऊँ।

या बात कू सुनिके दियाकर के साथीन प कछू प्रभाव परौ क नई, पर हा एक दो हमलावर जिन्न इन बातन कू सुनौ व अपने घिनौने काम प मनई मन पछताव लगे। बिन्न चन्दा म अपनी मैया के दरसन किए।

थोरी देर लौ चुप्पी छाइ रही। चन्दा न इ मौन तोरौ, कही, 'का साच विचार मे पर गए? मैने कछू अनहोनी बात नाय कही। एक मैया के मन की पीरा कही है। नक ठण्डे मन त सोचो तुमनै काऊ तरिया बिन बेटान कौ पतौ चलाहू लियो जिनसौ ना समझी भई है और तुमम ते काऊ न बिनके हाथ पाम तोर हू दिए तौ का हाथ आवेगो? पर जाके लाल कौ कुहाल करोगे वाके मया बाप प का बीतगी? का वे मेरे नाई नइ रोइ ग का? का तुम काऊ लाल के मया-बापन नै दुखाओग? सोचो, समझो अरू मोय बताओ। 'हिंसा त हिंसा उभरती क मरैगी?

कचन करत खरौ

या बात कूँ सुनिकें हमलावरन के मन मे आई कै चन्दा के पामन कूँ पकरल पर सबन के समाई सकोच, लाज अरू भय के मारै व भीड मे चुपचाप खिसक गए पर बिन्नैं अपने मन में कछू निहुच कर लियो।

ब भागे छूटे भरत के पास गए। बिन्न दिवाकर की मया के बिचार वाके सामई रखे। भारत अचम्भे म आ गयो। बिन सबन को मन पसीज गयो पर विन्हैं पुलिस को डर हो। पुलिस कूँ प्रिन्सीपल ने रपट कर दई। पुलिस जी जान ते खोज मे लगी भई। बाए सुराग हाथ ना लग रह्यो। हमलावर पुलिस के डण्डा के डरत बात कूँ छिपाबे की सोच रहे पर चन्दा व विचारन न बिनकूँ नक्कार दियो। वे चन्दा सों छमा चाहबे कूँ आतुर है रहे।

सोच समझ क दस जने चन्दा सों छमा चाहबे पहुच ई गए। चन्दा कूँ दिवाकर के साथी हरदम घेरे रहते। एक छिन कूँ हू ढील नाय दे रह। बिन दसन न चन्दा सों एकान्त मे बातचीत करनी चाही। दिवाकर के साथी समझ गए क अपराधी पुलिस सों डरकें सरन म आ गए हैं। ब दसहू चन्दा सों अकेल मे बात करबे लग अरू बितकूँ तक दौ याकी खबर दब दिवाकर के पास पहुच गए।

चन्दा न सबन सों प्यार सो बाई तरिया बात करी जस दिवाकर ते करई। सबसों पहल सबन न अपनो-अपनो परिच दियो। परिच पायकें चन्दा की आंख भरत प टिक गई। बान भरत ते कछू कहे सुने बिना ही बाकूँ गरे त लगा लियो। भरत नैं चन्दा के पाम पकर लिए और कही मैया तू दिवाकर की ही मया नाए तू तो हम सबन की मया है। तेरे सद्‌ विचारन न हमारो हियो बदल दियो है। जो कछू गलती भई है वू हमारी भई है याकी हम सब छमा मागिबे आए हैं।

या बात कूँ सुनिक चन्दा गद्‌गद है गई। आंखन म सनेह के आंसू भरक बोली 'बेटा छमा मागिबे की बात कहक तुमन अपनी महानता को परिच दियो है। बच्चान ते गलती होती रहै। मया तो मया ई होय। ई तो इतिहास मे एक ककई हो ऐसी है गई जासों मातुपद के माथें प करोंच लग गई, बान इतिहास कूँ मुठला दियो। आखीर म वू हू पछताई। बटाओ! छमा होठन ते ना तो मागी जाए ना होठन सों दई जाए। ई तो मनते मांगी जाए अरू मनत दई जाए। जब तिहारे मन न अपने मन म कछू निहुच कर लियो अरू जब तुम सबन न अपने मन की बात मेरे मन तक पहुचा दई तबई मेरे मनकू अनुभूति है गई। मेरे मन में वात्सल्य के भाव उमड परे। बेटाओ! तुम मोय पराई मत मानो अपनी मया की नाई समझो। गलती है जावे प तुम अपने मया के पल्ले पकर क अधिकार के सग कहो करो कै मया मात एसो है गयो, मैंने एसो कर दियो बस ई मैया ब्योहार करो।'

वे पानी पानी है
इन बातन सों भरत के साथीन कौ मन कौ मैल धुव गयौ। विनम ते एक तो रो परो
गए। विन्नै अपने म्हों सों कही, 'मया तोकूँ धन्य है।" दिवाकर हम भया ते हू वढक है
बोलौ "मया अव जो कछू है गो सो तो है गो अव चन्दा नै सबन कूँ प्यार कियो सबन न चन्दा के पाम
बाते हम ग्रौर छमा चाहिगे। छमादान दकै सबको मन ओरते ओर कर दियो। काऊ न कही
छीए। चन्दा न सबकूँ यासौ प्रभाव तन ते वढक मन अरू आत्मा पै होय
है, 'छमादान सबसौ बडो दण्ड होय।

जब चन्दा अरू भरत के साथी बात कर रहे दिबाकर क साथी भाति भाति
सौ सोच रह। हाँ विन्न विसवास है गयौ कै भरत अरू वाक साथी दिबाकर सों छमा
मागबे आए हैं। जैसं ई भरत अरू भरत के साथी चन्दा कूँ छोडि कै गए सिगरे चन्दा
के पास इकठौरे हैकै ललचाई आखन सों पूछव लग। चन्दा न सूधे सुभाव सौ सिगरी
बात कह दई। बान ई ऊ कह दई क विन्नै का कियो बिनके मन नै कियो जव मन ई
बदल गयौ तौ फिर का लवौ दवौ?

'तौ वा मया तनै सबन कूँ छमा कर दियो?" एक न पूछी।

वेटाम्रो! छमा किए ना जाएँ। छमा मागिवे वारे क सामई मा स अपने आप
झुक जाय सो हाल मेरो भयो। चन्दा बोली।

दिवाकर के साथी मन मसोस कै रह गए। भाव उठे। ज्वार आयौ पर उतर
गयौ।

दिवाकर नै सिगरी राम कहानी सुनी। बान हू अपन साथीन सौ कही
भया पापन ते घिरना करो, पापी ते नई। स्याप म दोस ना होय जहर मे दोस होय
जहर की पोटरी निकस जानी चइए।

दिबाकर के साथी चाह रहे क अपराधी कूँ पूरी सजा मिलनी चइए।
कौआ मारकै टाकनो चइए जासौ सबन कूँ आख है जाए। जिनने हाथन सौ पाप कियो
है बिनके हाथ काट दिए जाए। जिनकी प्राखन न बुरी बात करी है बिनकी आँख
फोर दई जाए।

दिवाकर न और समझाए भयाओ गरम पानी म म्होडो नाँय दीख ठण्डे
पानी म म्होडो दीख। हिसा ते हिंसा भड़क, घातक परिनाम निकसै। फिर बीछू जब
अपनो सुभाव नाय छोडे तो साधु बाए बचावे को सुभाव कसै छाड दे।

या बात कूँ सुनिक एक न कही मया स्यापन कूँ कितनऊ दूध पिवावो जाए
व तो जहरई उगलिग, यासों ई अच्छो है क विनकूँ दूध ना पिवाय क बिनको पूपरो
कुचलो जाए। कुचलकै छाडे नई जाए जराय क राख म मिला दिए जाए नई तो
पुरवाई हवा सौ मधमर हू जावित हैकै बर निकास। क पन करत घरो

दिवाकर ने कही "अपने विगत इतिहास कू देखौ दयानन्द, ईसा, मोहम्मद, गाधी नैं का कही। महावीर के कानन मे खूटा ठोक दिए। बुद्ध की आलोचना पै आलोचना भई पर अखीर में जीत विनकी भई ? किनकौ नाम पुजौ ? फिर मोऊ ए तौ सोचनी चइए मैंकोनसी मया कौ वेटा हू ? मेरे पिता कैसे भए ? का सबन नैं भूल क नीति पथ कू छोड दऊ ? स्याप की जो बात कही है, हम कोऊ स्याप थोरई हैं हमम बुद्धि है, हम हानि लाभ जानें, भलौ बुरौ पहचानें। सुधार घर मान्सन कू ही तौ बने है, स्यापन के ताई थोरई है।

बीच मे ई एक न बात काट कैं कही "अरे भया मान्स तौ स्यापन सौं हू बढक ह्वै गए है। स्यापन को तौ मालुम तोऊ पर जाए पर आस्तीन के स्यापन कौ पतौ ई नाय चले। न जान कब चोट फट कर जाए।'

दिवाकर नें फिर समझायौ जो आस्तीन के स्याप है बिनकूँ नरक म हू ठौर नाए जो जा हाडी म खावें बाई मे छेद करें, बे दीन के रहे न दोजख के। बे समाज की नजरन मे गिर जाए। बे जीब पर बिनवौ जीबे मे का जीबौ। बेहा जीब बुरे हवाल' बारी बात होय। हां, एक बात जरूर है जो बुरे काम करकें हू सुधर जाए, बिन्नें दुनिया पूज। सबेरे को भूलो साझ कूँ घर आ जाए तो भूलो नाय कहाब। या सौं भरत के साथी न कूँ अरू भरत कू गरे ही लगानौ चइए। अरे! काऊ ए तरवार ते चो मारौ फूलन सौं मारौ। ऐहसान को बोझ भौत भारी होय। और अन्त मे बिनकी करनी बिनके सग, हमारी करनी हमारे सग। जो जसौ बोवगौ वसौ ई कटगौ।'

दिवाकर के अकाटय तकन कू सुनिकैं सिगरे साथी ढीले पर गए। दिवाकर की सराहना करते भए बोल ' ई ब्यौहार तौ इनक माता पिता की दन है।'

ताही सम भरत हू अपने साथीन के सग दिवाकर के पास आयौ। बानै आते ई हूक करी ना धक्क दिवाकर के पाम पकर लिए। अपनी गलती के ताई छमा चाही। दिवाकर न अपने पाम सिकोर लिए वान हाथ जोरि कैं बाए अपने पास बठायवे की कही, ' भरत भैया मोसौं छमा चाह रह्यौ है। अरे! यार मोय चौ लज्जित कर रह्मौ है ? हम दाना भया सग-सग रह रहे। भावावेस म कछू बात है गई तो है गइ। याकौ मतलब थोरई है क हम बैरी है गए। तू तौ या बात कूँ जानैं दूध उफनैं मायें ई धन उफनाय दे। ई धन के बुझत ही दूध अपनी ठौर प आ जाए। अरे हमारे देस की तौ ई सस्कृति है क भाई भाई लरैं भलें ही टूट सके का नातौ ? हम बरी हू है जाएँ तौ हू या बात को ध्यान रहे क जब कबऊ मिलैं तौ निगाहन मे नई गिर।

भरत बोलौ, भयादिवाकर हमसौ भारी भूल है गई, पर अब हमारी आँख खुल गई है। तिहारी मया न जो प्यार उ डेलौ है, बाके सामई हम झुक गए हैं। और एस खिचे चले आए हैं जसैं लोहे के कन चुम्बक की ओर आपई आप खिचे आवैं।

मया तिहारी मैया पूजय जोग है। तिहारी मया तो पारम है है। तिहारी जसी मया है जाएँ तो मसार म ते अपराध अपन आप दूर है जाएँ। हमने तिहारी मया सों छमा माग लई है, अब हमारे पहार मे पाप कूँ तुम हू छमा कर देयो।"

दिवाकर न भरत के म्हों पे हाथ रखर्वं कही, 'मया हम मब मा स हैं। मा सन ते भूल होय। मा म ही सुधारो करे।' दिवाकर नें सबकूँ मूधे सुभाव सों गरे लगायो। सब सों कही हम कुम्हार की माटी क घटा योरई हैं सुनार के सोन के गहन वे समान हैं। टूट कैं हू जुरें।

भरत कूँ पूरो विसवास है गयो क दिवाकर नें विनकूँ छमा कर दियो है। भरत दिवाकर सों छमा माग क प्रिसीपल के पास पहुचो। प्रिमीपल नं सुनी तो पहल तो बाको पारो चढ गयो पर जब कोऊ अपराध मान रह्यो होय छमा चाह रह्यो होय तौ कौन पत्थर हियो होयगो जो नई पिघल। मान्स को हियो दूसरे के हिए की धड़कनन न सुनै। भरत नें प्रिसीपल कूँ ई बता दियो क बान दिवाकर यह दिवाकर की मया सो हू छमा चाह लई है। या बात कूँ सुनिकें प्रिमीपल और हू पिघल गयो। वाऊ न भरत अरु बाके साथीन कूँ छमा कर दियो। वाऊ नें चन की सास लई। बाकी चिंता दूर भई। बाको तनाव दूर भयो। भरत जो भक्ठक बन रह्यो अब रक्छक बनक रहैगो। पसीना की ठौर लहू गिरावैगो। या बात कू जानकें एक अच्छो बातावरन बनो।"

दिवाकर की अस्पताल म चिकित्सा होती रही। दिवाकर के साथी तो सवा मे लगे ई रहे। भरत हू सेवा मे दिनरात लगो रह्यो। या मेल कू देख क पिलानी की गली गलियारे घट पनघट, तिराहे चौराहे सब ठौरन प दोनोन के मेल की चरचा ई चरचा सुनाई परी। दोनोन के फोटा अखबारन क पहले पन्ना प छप। पिलानी के रहवया या मेल कू देखिक दातन तरे अ गुरी दवा गए।

पन्द्रह दिन पाछे दिवाकर कू अस्पताल सो छुट्टी मिली। चन्दा नें चाही क वू दिवाकर कू अपने सग डीग लै जाए। प्रिंसीपल अरू छोरा चन्दा सो हठ पकर गए क दिवाकर कू अच्छी तारिश रखिबे पर चन्दा नै जलवायु के बदलाव अरू सबसो मिलबे जुलबे की कही तो चन्दा की बात सबन नै मान लई। सब समझ गए मया को हियो तौ मया कोई होय। चन्दा जब दिवाकर कू लक चली तो सिगरी कालेज उमड आयो। भरत के सग सबन नें चन्दा के पाम छिए। बिदाई क समे सबन की आंखन मे पानी तरबे लगो। बान चलते-चलत सबन ते कही बटायो जो बीत गई गई सो बात सम सदा एक सो ना रहे। सतयुग त्रेता, द्वापर अरू कलियुग समय सो नाय होय ये तो हर पल हर छिन हमारे जीवन म घटें। युग तो मा स के करमन अरू व्यवहार सो होय। चरैवेति 'चरैवेति' को हमारो लच्छ होंनों चइए। तुमने सुनी ए व्यक्ति होय चाहे समाज—कछू पडे सो रहे हैं, कछू अगडाई लक बैठ गए हैं कछू ठाडे है गए हैं कछू चल पडे हैं जा ना कथन करत खरो

प्रवस्था म होय वाए वाही युग माहि विचरन करतौ भयौ मानौ। हम अपनी अतीत की सस्कृति कू भुलावैं नई जीवन म उतारैं।"

या वात कू सुनि कै छोरान की रंगन मे नई चेतना कौ अनुभव भयौ। बान चलते चलते कही, 'बेटाजो, हम सुधिरगे युग सुधरगो याहू ए ध्यान रखियौ। इन वातन कू कहकै चन्दा दिवाकर कू लकै चल दई। विदाई दवे बारे ओर सौं और है गए। सबन के हिए म सात्विक भाव जाग गए। मन कू ऐसी प्रेरना मिली कै सब नई उमगन सौं भर गए। गाडी म दिवाकर नैं अपनी पूरी कहानी मया कू सुना दई।"
दिवाकर डीग आयौ तो वाए देखिवे कू मेलो सौ जुर गयौ। चन्दा के सिगरे हितसी मेह की सी बाट देख रहे। दिवाकर कू स्वस्थ दखौ तौ सब खिल उठे। सबन नैं भगवान कू सराह्यौ। काऊ ने कही चन्दा के पुण्य आडे आ गए।' काऊ ने कही "भैनाओ पुरखान के भाग सौं छोरा बच्यौ।' सबन नैं अपन अपने ढग सौं कहक सतोस दरसायौ।

दिवाकर दस बीस दिनान मे ही आराम करकै भलौ चगौ है गयौ। बाकौ घाव चोखी तरीया पुर गयौ। वाके विरोधीन कै हू मन को घाव पुर गयौ पिलानी सौं बराबर पाती आती रही। बिन पातीन के सग वाकौ मन उडान भरतौ रह्यौ। कबहू कबहू तौ भरत की पाती कू पढकै दिवाकर भाव विभोर है जातौ। कई कई पोत पढ़तौ। आखिन मे आंसू भर लातौ। भरत की पाती कू मया कू पढकै सुनातौ। मया हू पढकै भावन म बह जाती। इन पातीन सौ दिवाकर तन ते डीग म मन ते पिलानी के अतीत क वातावरन मे चलो जातौ। कबऊ-कबऊ तौ पिंजरा के पछी की नाई पखन नै फडफडातौ। मन करतौ उडक पिलानी पहु च जाए। जब दिवाकर पिलानी चलबे की चरचा चलातौ तौ चन्दा काप जाती। चन्दा वाक स्वास्थ्य के ताई रोकनो चाह रही पर अधीर म कतव्य क पथ प आरुढ है कै कठोर हियो करनो परी चन्दा के वात्सल्य कू दिवाकर के निहच के आगे झुकनो परो। कतव्य की विज भई।

चन्दा दिवाकर ए करव एक पात फिर पिलानी पहु चो। सब दिवाकर की माद म सूख कै जवास है रहे। वाय पाय कैं सब हरे है गए। नई बहार आ गई। घी के दिए जुर गए। दिवाकर की मया क दरसन करकैं फिर सबन नैं अपन भाग सराह। चन्दा जब दिवाकर कू पहु चाय क लोटबे लगी तौ सबन नैं कही 'अम्मा चिंता मत करियौ जसौ ई तिहारौ अकलौ बेटा है वसई ई हमारौ अक्लौ भया है।'

पिलानी सौं चन्दा लौटी पर या सम वाकी हालत वा गया का सी जा बछडा कू खूटा प बाधि कै घास क ताइ जगल कू जाए।

पिलानी म आयकैं दिवाकर छात्रन क हित क क ताइ जुट गयौ। स्रम अनुसासन सयम अरु नियमन के साचे म ढरक कम क पथ प आरुढ़ है गयौ। समै-समै प छात्र यूनियन की बठक करानौ बिनके अधिकारन को ध्यान करानौ सग म कतव्यन कौ हू

भान करातो । बान अपनी मेहनत सौं कालेज की पढ़ाई को स्तर उठायो । खेल कूद की सुविधा जुटवाई । वाचनालय-पुस्तालय म सग्रह करबे याग साहित्य खरीदवायो । बान छात्र हित के करनीय अनेकन काय किए । छात्रन अरु गुरुजनन क बीच दिवाकर सतु बन गयो । यासौं गुरुजनन को सिर दद दूर है गयो । कालेज प्रसासन कू छात्र सहयाग भरपूर दिवायो । सब बिघटन, सगठन मे बदन गयो एकता म अनेकता समूल नष्ट कर दई । यूनियन के उदघाटन समारोह ते लैकैं जितने उत्सव अरु सास्कृतिक कायक्रम भए विनम एक सालीनता अरु उपादेयता के दरसन भए । छात्रन को बरस भर हितई हित भयो ।

दिवाकर के कायकाल मे ऐसो सूत सो क्तो ऐसो कालेज को नाम भयो क देस के अनेक प्रा`तन के प्रतिनिधि मडल याकं क्रिया कलापन कू देखिबे आए । यहा के बातावरन कू देखिकं निहाल है गए । ऐगो भाईचारो, ऐसो तालमेल ऐसो सहयोग ऐसो अनुसासन, ऐसी पढाई-लिखाई ऐसे खेलकूद देस म ढूढे तऊ नई दिखाई परे । य अपने-अपने कॉलिज मे पिलानी कालेज को सो बातावरन बनाइबे को सकल्प लकैं गए । इ सब भयो दिवाकर के काय अरु व्यवहार सो । बान सामाजिक पच्छ कू तो सम्हारो ही अपनी पढाई को हू ध्यान रखो । परीच्छा म अपने बाप की नाई अव्वल आय कै सोन को बिल्ला पायो । बी ई म प्रथम आय क कालेज कू गौरव दिवायो सग म अपनो अरु अपनी मैया को नाम उजागर कर दियो ।

ऐसी करनी कर चलौ

दिवाकर के इंजीनियर के कोर्स कू पूरो करतई चन्दा के घर में बेटीवारेन के आइब कौ तानो लग गयो। गाम बसौई माओ ममता पहुन ई आ गए। दिवाकर जैसे वर कू अपनी कन्या दैबे मे अपनो यश अरु कन्या को सौभाग्य समझ रहे। दिवाकर जब मौं पिलानी म पढ रह्यो तबई ते बेटीवारे पीछे पर रहे। तब तौ उनतें ई कह दई जातो कै अबई छोरा पढ़ रह्यो है। नौकरी ते लगन दओ। पर, अब नौकरी हू लगवे म देर नाहीं। बताओ, अब चन्दा काऊ तें का कहकै मना करती।

थोरे दिना पाछै ही भरतपुर की एक प्राइवेट कम्पनी तें दिवाकर कू नौकर आ गयौ। दिवाकर नैं रनजीत नगर भरतपुर म रहबो सिरू कर दियौ। चन्दाऊ रनजीत नगर आ गई। अब दिवाकर के ब्याह की चरचा नई करबो समाज के मन म सदेह पदा करबो हो। दिवाकर के पास या समै गदवी प्रतिभा प्रतिष्ठा सब कछू हुतो। बेटी वारन की ऐसी लम डोरी लग रही क दो जा रहे चार आ रहे। जाए देखिक हँसी उडाबे वारे कहते एक अनार सौ बीमार वारी बात है रही है। कथनी त करनी की बात आ गई। ठौर ठौर पै चारचा हैब लगी। अब मालुम परगी कथनी करनी की कछू कहते, "अजी हाथी क दांत खाइबे के और होय दिखाइबे के और होय।" कछू कहत घर आई लच्छमी कौन कू बुरी लग।" या तरिया जितेक म्हौं बितेक बात सुनाई परई।

चन्दा के सामई कोई धन की पोटरी लैरैं आतो, तो काई रूप कौ एलबम। चन्दा कू आपबीती याद आई। बाप की गरीबी क दिन याद आए। बाके बार कूं घर माही दिनरात खुचरके लगते और घर के बाहर गरीबी देख कै कोऊ सुध म्हों बात नाय करतो। बाक ब्याह में आ का बाधा आई बाए सब याद ही। न तौ चकोर जसो भलो, उदारमना, सादगीपसन्द, सुहृदय होंतो और ना वाको ब्याह है पातो। बेटी वारन क दुख दरद कू वानें भोगो। वू या पीडा कू समूल नस्ट कर दैबे क तांई अपने हिए म निहच कर चुकी।

चकोर के चल बसबे के पाछें चदा नें गाम गाम म महिला मडल बनवा क दहेज लन क विरोध म सौगध खवबाई। दहज के ब्याहन कू त्यागउ की बात नहीं।

सादगी सौ ब्याह के नारे लगवाए। अब चन्दा के सामई कसौटी के छिन आ गए। हाँ सिद्ध और योगी प्रलोभन म नाय आवें। साधक प्रताड़ना सौं भय नई खावें। बान प्रलोभन दबे वारेन कू विनय के सग समझा दियौ। ब्याह बस को नाम चलायबे कू जरूरी है पर और आडम्बर विरथा है।

कछू लोग, दिवाकर कू नौकरी देब बारी फक्ट्री के अध्यच्छ के पास दबाव डरवायबे कू गए। अध्यच्छ ने कह दई, "नौकरी बाप दया करके नाय दई। बाके गुनन नैं अपने आप ल लई है। फक्ट्री जाइन करकैं वान फक्टी प किरपा करी है। याते बाकी गौरव नाय बढ्यौ हमारी फक्ट्री की प्रतिष्ठा बढी है। कछू बेटी वारेन नैं दूसरेन ते चदा पै पहुँच करवाई। चन्दा नैं सबकी सुनी। दखती रही। परखती रही।

चन्दा के सूधे सुभाव कूँ देखिकै कनुआ पडित वाके पास पहुँच गयौ। लगौ बौना विराट क माथे प चन्दन लगायबे कूँ पहुँच गयौ होय। कनुआ कै एक छोरा और तीन छोरी। छोरा कौ ब्याह है गयौ पर बू निकम्मौ निकस गयौ। एक छारी कौ ब्याह है गयौ। तीना छोरी गौर वण, सुन्दर, सुशील, सुसिच्छित पर बिन पइसा सब सून बारी बात है रही। बिना पइसा के कोऊ म्हौंऊ नाँय छुतौ। सूधे म्हों कोऊ बात नाँय करतौ। साँची बात है दमड़ी के आगे चमड़ी की का चल? गरीब समझ क कोऊ पास तक नाँय फटकन दतौ। कन्या अरु कगाली की रासि मिल जाए तौ यो समझौ करेला नीम पै चढ जाएँ। काम कौ बनबौ टेढी खीर ही नईं गूलर कौ फूल अरु गधा के सींग है जाएँ।

बू बिचारौ दहेज कहाँ ते देतौ। बड़ौ छोरा बहू कूँ लकैं अलग है गयौ प्राइवेट नौकरी म चार पाच सौ रुपैया मिल हे। बात अपनौ काम ल दकैं चलातौ। कनुआ छोरा त पानी माँगतौ तौ वाकौ छोरा बाते अमृत की कामना कर ग्रो। कनुआ पडित ऊ हिन्दी साहित्य समिति म नौकरी करत ग्रौ। अट्ठावन पूरे कर चुकौ। नौकरी दबे वारेन की किरपा प जी रह्यौ। बाकी गरीबी कूँ देखिकै दो बरस और बढा दिए। या तरियाँ सौं बिचारौ गुजर बसर कर रह्यौ पर या गरीबी में हू बाकी छोरी मेहनत ते पढ रही। दूसरी लड़की रजनी नैं बी ए कर लियौ। तीसरी एस टी सी की टेनिंग कर रही।

रजनी पढ़बे के सग सग घर के सिगरे काम काज के धमरगज कूँ पीटती। अपन मैया बाप के दुख कू देखिकैं मन मसास कैं रह जाती। तन तोरिक काम करई मन लगाय कैं पढ ई। घर के काम काज की कसौटी प कसक कचन है गई। हाँ गरीबी के मारै ओर काऊ बेटाबार कूँ नाँय भाई।

कनुआ चन्दा कौ नाम सुनिकैं तौ चलौ आयौ पर भीतरई भीतर घुकर पुकर है रही। साच रह्यौ कहाँ राम राम कहाँ टाँय टाँय। कहाँ राजा भोज अरु कहाँ गगू कचन करत घरौ

तेली। कोऊ यो नाय कह दे ई म्हों अरु मसूर की दार। पर ई समय के, के ओखरी म सिर दियो तो मूसरन को का डर और काज़ो ध्यान ना करेंगो तो का घर नाय ग्रान देगो। कनुआ चन्दा के घर आ ही गयो।

चन्दा कनुआ सों भली भाति परिचित हो। कनुआ के सेवा भावी सुभाव सों प्रभावित हो। जब वू पढई तबई ते कनुआ की सबा भावनान सों परिचित हो। पुस्तकालय मे पुस्तकन कूँ लबो दबो ललक क चुकि के, हाथ जारि कें अभिवादन करबो, हाथो हाथ पुस्तक देबो सबन कूँ भातो। कनुआ वेतनभोगी सों ठौर सेवा भावी अधिक हो। चन्दा ऐसे समाज सेवी मानस की तो हिए ते वेरी हो। जबई कनुआ बाके घर पहुँचो चन्दा नैं विनम्रता सों अभिवादन कियो। आसन दियो। मीठे वचनन सों बोलो—

'कहो पंडितजी कैसे आए ?

'आपके दरसन कूँ।"

'दरसन तो आप जस महानुभावन के हैं। मैं तो आपके पॉमन की धूरि हूँ। जो कछू हतू सो आपके सहयोग के कारन हूँ।

'राम राम ऐसी चौं कहो। आपको यस तो चारा ओर फल रह्यो है। हम तो आपके गुन गाते गात नाय अघावें।"

'पंडितजी ई सब आपकी महानता है। आपके मन के भावन की परछाई है। हाँ तो अपने आइबे को कारन तो बताओ ?"

चन्दा के सद् व्यौहार सों कनुआ को साहस बढ़ो। फिर वाने अपने मन की बात सकोच सों कही।

'निवेदन ई है क अपनी बिटिया रजनी के ताँई ।'

'हाँ हाँ पंडित जी बोलो हिचक क्यो रहे हो ?'

"निवेदन ई है क अपनी रजनी कूँ आपकी सेवा मे अरपन करबे आयो हूँ।"

'पंडित जी पहलें यो तो बताओ आपकूँ अतो पतो कौन न दियो ? या उत्तर कूँ सुनिकें कनुआ सकपका गयो। पसीना आ गयो। वाए अपनी औकात याद है आइ। अपनी भूल को अनुभव भयो के गलत आ गयो है पर तोऊ सम्हर क बोलो—

अतो पतो कौन दतो। प्यासे कूँ जलासय कौन बतावे ? पीडिन कूँ पीरा को ज्ञान कौन कराव। गज बावरो होय। जाको गज हाय वू सो रस्ता निकास क सुदामा की भाति अपन आप द्वारिका पहुँच जाए।"

पंडित जो आप कहा कह रहे हो ?"

"अजी, फून की गंध कद नाय रहै। हवा के पखन प उडि कै पहुँच । पू जी, प्रतिभा अरु यस जलासयन म तूमा की भाति तरैं।"

"पंडित जी हम तौ भौत बौने है। एक छोटी सी इकाई हैं।"

"भगवान की आपप कृपा है। भगवान न आपकूँ सब कछू दियौ है । हाँ आपके सामई तौ मैं पासग म हू नाऊँ। बडे सकोच के सग आयौ हूँ। बुरौ यावरौ आपके सामई हू। माय जाच लेओ परख लेओ।'

"पंडित जी सोने की परीक्षा काट कैं, घिस क तपाय कै करी जाए, वृच्छन की फलन ते और याई तरियां सिगरे पदारथन की परीच्छा छूकं, दाखक, चाखकैं सुनिक करी जाए पर मान्स की परीच्छा बाके ब्यौहार सौं हाय । जीवन भौत लम्बौ है। याकी लम्बाई कूँ ध्यान मे रख कै निरखौ परखौ जाए।'

"हलवाई अपने दही कू कब खटटो बताव । मालिन अपने बेरन नैं कब खटटे बताव पर मैं ई बिसवास दिवाऊँ क मेरी बिटिया गरीबी म परी है। गरीबी मे ही वानैं बी ए कियौ है। आपनै जैसें तन मन और धन सौं दिवाकर कू बनायौ है मैंनें हू तन मन सौ वाए बनायवे म कोऊ कोर कसर नाय राखी।

पंडित जी बेटी कौ तौ मैंने कछू नाय देखौ पर मैं आपके ब्यौहार सौं भौत प्रभावित हू। मैं ई चाहू दिवाकर कू सुयोग छोरी मिल जाए। दो इकाई मिलकै दोना परिवारन को समाज को अरु दस को कल्यान कर ।'

"यही मेरी चाह है पर अब बात आगैं कस बढ ?

बात तौ बढी बढाई है। छोरी छोरा की जोडी ठीक बन जाए। दोनो एक दूसर सौ बात करलै। दोना राजी है जाएँ बस फिर काऊ रुकावट नाए।'

चन्दा की बात सुनते ही कनुआ क प्रान हरे है गए। तडफडाती मच्छी कू जल मिल गयौ। बू उमगतौ उमगतौ घर लौट कै आयौ। घरवारी कू सिगरी बात बताई बाकी घरवारी के गरे बात नई उतरी। जो इन्जीनियरिंग करक आयौ है बू गरीब की छोरी कू काइकू अगेजगो।

दूसरी ओर और बेटीवारेन नैं जब मालूम परी तौ बे भजे दौरे चन्दा क पास पहुँचे। अपनी बडाई के पुल बाधबे लगे। प्रलोभन दबे लग। चन्दा नैं सबन की सुनी पर वानैं अपन मन म निहुच कर लियौ ।

चन्दा क सकेत पै भरतपुर म बिहारी जी के मन्दिर म पडित कनुआ अपनी बिटिया रजनी कू लै आयौ। उतते चन्दा अरु दिवाकर आ गए। चन्दा नैं रजनी त बात करी तौ रोम रोम खिल उठौ। चन्दा अरु रजनी क योग सौ ठडक आ गई। अमृत

की सी बरसा है बे लगी। रजनी के चेहरा ते भोरोपन झलकतो। हँसई तो फूल झर हे। रजनी अरु दिवाकर न एक दूसरे सों बात करी। दोनो एक दूसरे कू पाय कै ऐसे लग मानों दोनो एक दूसरे कूं भौत दिनान ते जानत हो। दिवाकर नैं रजनी सौ बडी सालीनता सौ पूछी—

'कहो रजनी हमार संग रहोगी?'

रजनी न उत्तर दियो रजनी तो दिवाकर की सदा सौ पिछलग्गू रही है।' याए सुनिकै दिवाकर को मन भर गयो। चन्दा न हू पायो कै रजनी अरु दिवाकर मणि कांचन योग है। लगो सोनौ अरु सुहागो मिल रहे होय। बाइ समैं न दोना मन ते बध गए। बस देर रह गई तो अग्नि कू साच्छी करवे की।

दिवाकर अरु चन्दा दोनोन न कनुआ कू अपनी स्वीकृति द दई। कनुआ अरु वाकी घरवारी को सुपनो साकार है गयो अन्धे के हाथ बटर लग गई।

ब्याह की पक्की होते ही ब्याह की तैयारी की बात चल परी। जिन लोगन नैं सुनी ब भौचक्के से रह गए। जो चन्दा कू परखनो चाह रहे बिनकी आंख खुल गई। बिनकी संका दूर है गई। दरिद्र कू कुबेर नैं गोद मे बठा लियो।

चन्दा नैं कनुआ कू बुलाय कैं सिगरी बात समझा दई। ब्याह सादगी सौ होयगो। 25 बराती हु ग। ना तासे बाजे की धूमधाम होयगी ना रोसनी अरु फुलझडीन की चकाचौंध। एक-एक रुपैया के नेग हु गे। अपनी भारतीय संस्कृति के अनुरूप सिगर काम हु गे। सादी है तो सादी ही रहैगी। कनुआ नै सब बातन की हा कर लई। अन्धे कू चइए ई दो आख सो कनुआ कू मिल गई। लोगन न कनुआ ते कही 'खूब तीर मारौ पंडित जी चन्दा प का जादू कर दियो का मंतर फूक दियो?' पंडित जी सहज सुभाव सौ बोलो म नाय बजा रह्यो मेरी तो करतार बजा रह्यो है।'

जिन लोगन नैं ई चरचा सुनी बिनमे ते कछू चन्दा की नासमझी प हसे। कछू भाग के खेल पै हँसे।

ब्याह को सायो सुझाय कै सब अपने अपन काम म लग गए। कनुआ न पीरी चिट्ठी भेज दई। चन्दा नैं भात नोतिब के ताई दो चार बयरबानी लई अरु भात नौत आई।

भात नौति कैं चन्दा ब्याह क दूसर कामन म लग गई। अपन कहब क अनुसार सिगरे काम किए। ब्याह कू सादगी सो सपन्न करायो जाए याको पूरो ध्यान रखो गयो। ब्याह सों एक दिना पहल चन्दा नै भात पहरो। चोख नैं तो चन्दा असली जनी वाको कोई मा जायो भया नाओ। चोख नैं मामा फूफी क दो चार भया और दो चार गोपालमड क छारा भेज कै भात पहरबायो।

दूसरी ओर मनुआ के घर हू याही तरिया रगल मगल सो काम चल रहे। ब्याह सौं पहलै रजनी के रूप मे निखार लाइबे क बाए उबटन सो नवाह्यौ गयौ।

रजनी की नाई दिवाकर क हू उबटने ते नवाह्यौ गयौ।

दूल्हा बनकं बरात कू जब दिवाकर घोडी प बठक चलौ तौ देखतई बनैथौ।

दिवाकर की बरात मे वेई गिनती क पच्चीस बराती निकसे। बडी सालीनता सौ बेटी वारे के दरवज्जे पहु चे। रनजीत नगर सौं चौबुर्जा तक भरतपुर की भरतपुर म पहु चबे मे आधा घटा लगौ होगौ। सब जाने पहचाने लोग। मनुआ न खूब आवभगत करी। दरवज्जे पै बिधि विधान सौं तोरन भयौ। मत्र पन्डितन नैं बोल। बयरबानीन नैं मगल गीत गाए। आरतौ भयौ गीत गायो—

प्यारे ममक की बरसगौ मेह।'

बारौठी के पाछै ब्याह के मभ गीत गाए गए मीठे-मीठे। मीठी मीठी गारी गाइ गई—

'राम रग बरसगौ।

रग बरस भ्रुरु इमरत बरस अरु बरस कस्तूरी

रग बरसगौ।

ऐसी गारीन नै सुनिकऊ बराती जमते रहे अरु मन ही मन मुस्कराभते रहे। फेरा परे। तबहु गीत गायौ। जावौ जीवन दरसन छठे फेरा को बतायौ—

'छठौं फेरा, अबहु बेटी बाप की'

चन्दा न जसी कही वसे ही सादगी सौ ब्याह सम्पन्न भयौ। असभव सभव है गयौ तौ कछू चन्दा अरु दिवाकर की सहजता प रीझ गए सराहना करबे लग। आवस की बडाई करबे लग। अ ध बिसवासी निंदा करबे लग पाम कुम्हाडी दत है मूरख अपने आप। चन्दा न ब्याह कू सहज भाव सौ स्वीकारौ।

रजनी धार्मिक परिवार सौ आई धार्मिक सस्कारन म ढरी। चन्दा क रीति नीति मय भ्रादर्स व्यवहार को सग पाइक और निखर उठी। रजनी अरु दिवाकर ऊ एक दूसरे कू पायक एक दूसरे के प्रेरक बन गए। अच्छी जोडी बनी। एक दूसरे के पूरक बने। रजनी सीतलता को प्रतोक अरु दिवाकर ताप और ओज को भन्डार। विचार और भावनान को सुखद सयोग भयौ।

रजनी क सात वार और नौ त्योहार। व्रत की ठौर प व्रत अरु उत्सब की ठौर प उत्सब। काया राखे धम को हू निर्वाह करत भए रजनी को धार्मिक जीवन समुरार म हू चलतौ रहौ। दिवाकर कू भोजन करायक भोजन करवौ, अपनी सास क माज कू पाम

दाबबो घर कू सफाई मों रखबो, घर म सामान क यथा स्थान रखबो दीपक, दियासलाई, सुई डोरा सदा एक स्थान प रखबो, अंधेरे म हू हाथ डारो जाए तो चाहो भयो सामान आसानीसो मिल जाए। ऐसो नीतिपरक जीवन देखिकै पास परोस वार रजनी के काम की अरु चन्दा के भाग की सराहना करत।

दिवाकर जा फक्ट्री मे नौकरी करतो म्हा अपन काम मोर त्यौहार सो चमक उठो। सामाजिक कामन म खूब हाथ बटातो। परिवार नियोजन के कैम्प लगत बिनमे तीमारदारी खूब करतो। एक पोत फक्ट्री को महिला क्लब न विकलांगन कू उपकरण बाटे। समाज सवीन न निहत्थन कू हाथ, कट पैरवारन कू टाग दई। दिवाकर नै ॥ अपनी ओर सो एक विकलाग कू हाथ दियो। फक्ट्री म कोऊ सांस्कृतिक कायक्रम होतो तो दिवाकर बिनम भाग लनो। योग आसन को सिविर लगो तो याग सिविर के सचालक मनहर कू पूरो पूरो सहयोग दियो। आए दिन अखबार म दिवाकर को नाम आतो।

दिवाकर अकेलो ही काम करतो हाय, सो बात नाही। जा तरिया जलासयन सों जल लकै बादर बरसा करै याही भाति दिवाकर अपन सखान को मडल बनाय क समाज के दीन हीन पीडितन कू मदद करतो। तिनकू सन्तोष और सान्ति दतो।

घर माहि चन्दा अपनी सदआचरन वारी बहू कू पायकै निहाल है गई। दिवाकर की सहयात्रा कू एसी सहचरी मिली कै बाक आदस रूप क देखिकै भरतपुर वार बाकी सराहना करते। सेठ बरसानेलाल की मील प नत्र सिविर लगो बाम दोनान् की सवा देखिकै सिगरे जन धन धन कह उठे। जिन गरीब गुरबान को कोऊ नाओ बिनके दिवाकर अरु रजनी ह। बिनक मल मूतन कू उठाबो दवाई दारू देबा, रात कू बिनक पास दाबबो जस कामन कू देखिकै लोग लुगाई हिए ते आसीस दते।

भरतपुर म जो नवयुवक मडल काम कर रह्यो बामे तो दिवाकर अरु रजनी नैं जान डार दई। चकोर के यार राजेन्द्र कू दिवाकर न हर काम म पूरो पूरो सहयोग दियो। दहेज प्रथा के विरोध मे मोहल्ला म नुक्कड मीटिंग करबो अन्तरजातीय ब्याहन के ताईं प्रोत्साहन दबो बाल ब्याह रोकिबो, विधवान को ब्याह करबो जसे कामन म दिवाकर अरु रजनी को पूरो पूरो सहयाग रहनो। ब्याह के दो बरस पाछ रजनी के पाम भारी है गए। चन्दा नै फल सो पहलै फूल को अनुमान करक अपन घर माहि दोहद क गीत गबवाए।

'पहलो महीना लागिए

बाको फूल गह्यो फल लीजिए।

प्रभु की किरपा त मित्रन की सुभ कामनान त अरु गुरजनन क आसीसन सों रजनी क छोरा भयो। मुडगेली प चटक मासी नै थारी वजाइ। चन्दा क घर म एक

फूल सौ खिलौना आयौ वू फूली ना समाई। बच्चा जब छै दिना कौ भयौ तौ छटी पूजी। रजनी नें नवजात सिसु कू गोद म लैकें देवी देवतान ते धन सम्पत्ति की कामना करी, गीत गायकें सीता अरु उरमिला कौ सुमरिन कियौ—

छठी पुजन्तर बहू आई सीता
छठी पुजन्तर बहू आई उरमिला,
छठी पुजन्तर कहा फल मागें,
अनु माग धन मागें अपने पुरखन कौ राज मागें,
बारौ जडला गोद माग।

थोरे दिनान पाछ बच्चा कौ नाम करन सस्कार भयौ। जच्चा के घर तें छोछक आयौ या औसर प जच्चा नें अपने मया बाप के घरते आए समान कू देखिकें खुसी मनाई।

मगलकारी गीतन के माहि चौक पुरायौ पीहर ते आए भए कपडान कू पहर क रजनी के सग दिवाकर बठौ। हवन भयौ। नामकरन सस्कार भयौ। छोरा कौ नाम निकस्यौ प्रभात। नाम घर के अनुरूप रह्यौ। अधेरौ दूर भयौ। घर म साच माच कौ प्रभात आ गयौ। दिवाकर अरु प्रभात कौ सुखद सयोग होय। सबन नें चन्दा अरु दिवाकर कू बधाई प बधाई दई। या औसर प जमन जूठन भयौ। गरीब गुरबान कू दान पुन्न दियौ। साझ क कुआ पूजन भयौ जामे खूब लोकगीत गाए गए। खूब नाच कूद भऐ बयरबानीन न खूब अपने मन की निकारी। सबन न खूब मनखत मनाई।

चन्दा की मनचाही पूरी भई। छोटो परिवार सुखी परिवार मान क भाग सराहौ। जच्चा बच्चा दोनो स्वस्थ हे। दादी और पिता तन मन ते खूब स्वस्थ हे। रजनी राज प्रभु कौ ध्यान करती भगवान कू धन्यवाद दती। अपने स्वभाव के अनुरूप व्रत त्योहार, उत्सव, पव विधिवत मनाती। कोऊ माह ऐसो नई जातो जाम रजनी व्रत नई रहती।

सामन क पीछ भादौं कौ महिना आयौ। जन्मास्टमी क दिना चन्दा दिवाकर और रजनी तीनो व्रत रहे। रजनी नें न्हाय धोय क व्रत कौ सामान बनायौ। धनियौं भूंजौ। बाम बूरौ मिलायौ। पचामृत बनायौ। मिगी पाक बनायौ। जल म नीबू डार कैं सक्कर मिलाय व म न अरु दिवाकर कू पिवाय क व्रत राखौ। भगवान कौ मडप सजायौ। प्रभु क ताई फूल माला गूथी। झन्डी लगाई। दिन भर तीनो प्रभात सौ खलत रह। हसत रह। हुमान रह।

रात रेडियो प मथुरा त जन्मठ कौ आखन देखौ हाल सुन रह। कबऊ द्वारिकाधीस क मन्दिर त, कबऊ कृष्ण जन्मभूमि त कृष्ण कौ जन्मोत्सव कौ हाल सुनायौ

जा रह्यो। रात के बारह बजते ही द्वारिकाधीस के मन्दिर म सख बजे। पुजारी ग्रर पडित क मत्रोचार भए। नई मडी भरतपुर के मन्दिर सालिग्राम म हू झालर घन्टा बज उठे। लोग लुगाई छारा छोरी जो रडियो प आनन्द लै रहे वे मन्दिरन की ओर चल पडे। दिवाकर अरु रजनी हू हाथ म कटोरा लक प्रभु को प्रसाद लेबे कू निकस परे। दिवाकर की आखन मे नीद चुकि रही। तन मे उपवास की सिथिलता मन म प्रभु दरसन की लालसा। रजनी पीछे पीछे चली जा रही एक मोड प जम ही दाना मुडे दूसरी ओर सों तेजी ते आते भए ट्रक की चपेट म दाना आ गए। भयकर एक्सीडैंट है गयो। दोना बीच सडक प ढेर है गए। लहू बह निकसो। सडक लाल है गई। दोनोन नैं एक दम दम तार दियो। ट्रकवारो एकऊ छिन नाय रुको। ट्रक ए लकै फरवट है गयो। दिवाकर अरु रजनी ना हिन ना डुले। सदा कू सो गए। जीवन म एक रह अखीर म अलग कैसे होत। दोनोन के सामइ, परसाद कू लायो भयो कटोरा औंधा परो रह गयो।

भादों की कारी रात मे परमान लवे बारेन को आइवा जाइवो है रह्यो। दसनार्थीन नैं एक्सीडट की सुनी ग्रौर अपन सामई दो लोग लुगाइन कू मरो भयो देखो तो कछ तो घबरा गए। कछू झपट सौ बचवे के मारे इत वितकू है गए। कछून प नाय रह्यो गयो। जौरे जायक आख गढ़ाय क देखो तो समझवे म नैंकऊ देर नाय लगी। अपनी ही बस्ती रनजीत नगर को जानो पहिचानो दिवाकर ह्यो। देखते ही हक्के बक्के रह गए सग म रजनी कू मरो देखक ग्रौर हू व्याकुल है गए। रनजीत नगर की एक भली जोडी अचानक चल बसी। जन्माठै को दिना ग्ररु एक नही दो दो ज्वान मौत। देखब वारे काप गए कछू भगे भगे वाके घर गए। वाकी मया ते जाय कैं कही तो वाकी मया कू बिसवास नाय भयो। पाच मिनट पहलेई तो दोनो बात अलग भए। ई कमै है सक बू प्रभात कू लक भाजी गैरी तिराह प पहैंची। मानसन क ठठठ जुर रहे। वाको मन धक धक कर रह्यो। भीर कू चीर क भीतर जाय कैं दखो तो देखती ही रह गई। आख फार कैं रह गई पछार खाय क गिर परी। ताई ममै बाके प्रभात कू एक परोसन नैं सम्हारी। चन्दा रुदन करवे लगी 'हाय मेरे लाल, हाय मेरे बेटा अरी मेरी बहू ग्ररी मेरी बिटिया'' कहकैं विलाप करव लगी। अरे! मरे छोना मोय कौन के सहारे छोड गयो, मरी फूल सी सुकुमारी तू कितकू चली गई। हाय राम ई का है गौ अरे! विधाता तनैं ई का कर दई। तोय एमोई करनी तो एक कू तो छोरतो या प्रभात प दया करतो। अरी मेरी बहू या प्रभात ए कौन प छाड गई-ई कौन ते मया कहैगो। अर बेटा! मोकू अपन सग ल जातो। मैं तो ताई कू देखिकैं जी रही ग्रब कौन के सहरे जीऊगी। अरे निठुर विधाता तनैं ई वज्रपात कसो कर दियो। हाय राम! मोय ई पतो होतो तो म बेटा तोय चो भेजती। मैं ही आ जाती। ग्रब मैं कौन कू दखिकैं जीऊगी।

चन्दा के विलाप कू सुनिकैं सुनवे वार हू सुभाटन ते रो परे। सिगरी वस्ती म हाहाकार मच गयो। मन्दिर जाइवो, परसाद लाइबो व्रत खोलिवो सब भूल गए। सबन की भूख प्यास उड गई। नीद उचट गई।

लोग दातोन की सामन क ले र, चन्दा क घर आए। चन्दा कू बडी निट्ठन सा लाए। चन्दा क घर म लाग लुगाईन क ठट्ठ जुर गए। चन्दा दहाड मार मारस रोती रही। वाए जितक समझाव ह यू वितक्इ विहुल है क रुदन करतो। रुदन नाय करती बाकी तो दुनिय उजर गई। लका लुट गइ। प्रभात विचारो एक साल की तो हुतइ ओ। कछू नाय समझ पा रह्यो। यू तो इ समझ रह्यो बाक मैया वाप चादर तान क सो रह हैं। वाए ई का पतो क व ऐस सोए है जा कबऊ उठिंग ही नई। सकडा मन बयर नाक घर रात भर बठ रह रात नियामवा भारी पर गयौ।

भोर होत ही काठी कफ्फन को प्रबन्ध करक दातोन की संग संग अरथी उठाई। अरथी उठत समै चन्दा अरथी त लिपट गयी। कबऊ एक कू पकरती तो कबऊ दूसरी कू। बाकी तो दोनो ही प्रान ही। बयरन नें चन्दा बडी निट्ठन त अरथी त छुडाई। वाक एकन समझायो 'चन्दा ये अब तेरे ना रह। तर होते तो तोत बोलते। तरो इतकई दिना को संग हो। धीरज धर। चन्दा कैसे धीरज धरती अरथीन क जात ही और जोर-जोर त रुदन करव लगी। पछाड खायक गिर परी। अखीर म अचेत है गइ। प्रन की भूखी प्यासी ताप रात भर को रुदन। हालत खराब है गई। किरन नर्सिंग होम पास म ही हो। डाक्टर बुलायो गयौ। बडी निट्ठन त नब्ज सम्हारी। बोतल चढाई गई। चन्दा बेहोस परी। बैयरवानी वाक आस पास बठी रही। प्रभात कू सम्हारौ बाकी नानी न।

दिवाकर अरु रजनी कू फूकि क जब चन्दा क दरवज्ज प आए तो मालुम परी क चन्दा कै बोतल चढ रही हैं। भौन स भया वाए सम्हारबे कू रुक गए। रनजीत नगर की बस्ती म मातम छा गयौ। कई घरन म तो चूल्ह तक नाय जरे। जरते तो कैसे जरते विनकी बस्ती की एक ऐसी जोरी चल बसी जो सबक दुख ददन म आगे ही भाग रहता। चन्दा कबऊ नक आखन न टिमटिमाती तो बडी बूढी वाक प्रभात कू वाक गर त लगा दती। बू फिर आखन न बन्द कर लती। साझ तक या ही क्रम चलतो रह्यो मोहल्ला वारे हू बारी बारी सौ सम्हारत रह। साझ समै जब वाए होस आयौ तो दिवाकर और रजनी की हाय धक लगा दई डाक्टर नै मुक्तेरी मना करी क बुढिया अब चिरलाव नई रोव नई। बयरवानी हू वाए मुक्तेरी समझा रही। पर बू समझ नाय पा रही। बाके पेट मे तो आग लग रही। घर मे ते एक संग दो ज्वान मौत। विकलांग की मानो दोना बसाखी टूट गई हाय। सबर बाधती तो कस बाधती। पच्चीस बरस पहल चकोर के चल बसबे क पीछ दिवाकर कू छाती ते लगाय क सबर बाधो। अब तो दुरभाग्य सौं दूसरी चोट और हू जबरदस्त परी। कस धीरज धरती। रोती रही रोती रही, तब लो रोती रही जब लो दुबारा अचेत नाय है गइ।

मोहल्लावारन न रात कू बारी बारी त चन्दा कू सम्हारन की तकरी। चन्दा क नातदारन की और बुरी हाल हो। चन्दा क पीहरवार न्यारे परसान ह, रजनी क पीहरवार न्यार। विनकू सबर बधाबो और हू कठिन पर रह्यो। चकार क यार

राजेन्द्र नैं बडी टहल चाकरी करी । जाकूं जैस जसैं सम्हारौ जा सक हौ वैसैं वग सम्हारीं । दा दिना पीछे चन्द्रा की हालत सही भई । वाके रोवे ते फिर हालत विगर जाती । खायवौ पीवौ वान विल्कुल छोड दायौ । दो दिना ग्लूकोज की बोतल आर चढी । समझाय बुझाय क वाकूं चाय पानी दियौ । मुक्तेरो चन्द्रा कूं समझायौ पर घाव ए तौ समै ई भर ।

12 दिन पाछ दोनान के वारह वामन किए । जो नातेदार आए वे अपने अपने घरन कूं चल दिए । वे अपने काम काज कूं छोडिकैं कब तक रहते । सब अपने अपने रामन ते लगे । घर मे रह गई चन्दा अरू एक वरस कौ नाती प्रभात । दुभाग्य की दूसरी किस्त मानकैं चन्दा न प्रभात कूं गरे ते लगायौ । विधि कौ विधान मानक परिस्थितीन सौ समझौता कर प्रभात कूं बनाइवे कौ कमवीर मवला न निह्च कियौ । जीवन *कौ गाडी कूं फिर ते हिम्मत बंध कैं आगैं बढाव कौ निरनय कियौ । वान चरवति का* मत्र दुहरायौ । प्रभात कूं दिवाकर की नाई पारवे कौ दृढ सकल्प कियौ । चकोर अरु दिवाकर की आकस्मिक दुघटनान की मृत्यु सौं ई निरनय कर लियौ कै चन्दा लौटिक अऊ जाइगी । चकोर क अधूरे कामन कूं प्रभात सौं पूरे कराबेगी । अऊ आइक वैज्ञानिक ढग सौ खेती करगी । गाम मे अलख जगावगी ।

चन्दा की थोरे दिना पीछैं पिसन है गईं । बू बीमा ग्रेचुटी अर कम्यूटसन की सवा लाख रुपया पायकैं अऊ गाम पहुँच गई । वानैं 10 बीघा जमीन खरीद कैं एक फारम बनायौ । वज्ञानिक ढग सौं खेती प्रारम्भ करा दई । वाई फारम प कुक्कुट पालन सूत कताई पापड बिलाई, कागजन के लिफाफे बनवाई मसाले पिसाई जस कई काम प्रारम्भ कर दिए । गाम की बेरुजगारी कूं काम मिल्यौ । झगरे दूर भए । गरीबी गाम ते दूर हैबे लगी । चकोर जा ठौर कू वाचनालय अरु पुस्तकालय कूं दे गयौ बू खोल तौ दियौ पर भरो सो परो । वामें अच्छी ग्रन्थी पोथी अखबार मँगाय क जान डार दई चन्दा नैं । सिगरौ गाम चन्दा के चेताए त चेत गयौ । नइ चेतना आ गई । अऊ आदस गाम बन गयौ ।

प्रभात कूं गाम क स्वस्थ वातावरण मे पहल तन ते स्वस्थ कियौ फिर वाकैं मानसिक रूप सौ सबल कियौ । सम सम प बाके बाबा बाप अरु मया के करमन की कहानी सुनाय क करम करव की प्रेरना देती । कच्छा आठ तक अऊ म पढाई करायक आग पढव कूं डीग के ताइ भेजौ । चन्दा न अपने जीवन के अनुभवन कौ निचोर प्रभात कूं उँडेलो । पढवे कौ सही तरीका, लिखिवे कौ उचित ढग अपनी वात कूं निर्भीक हैक कहवे कौ कौसल सबको ऐसौ अभ्यास करायौ क प्रभात दिवाकर कूं हू पीछे छोड गयौ ।

प्रभात साइकिल सौ सवेरे डीग पढवे जातो । घापर कूं लौटिकैं आतो । चन्दा कूं प्रभात की चिंता लगी रहती । कबऊ दुघटना की आसका, कबऊ छोरान की लराई

बरऊ छोरान नैं उडाय क ल जान वारे बाबाजीन की याद आ जानी । जब तक वू लौट क नाय आ जातो । चिंता में डूबी रहती । तीन मौतन नैं वू जरजर कर दई पर वाने हिम्मत नाय हारी । हाँ प्रभात कूँ आवे म देर है जाती तो मन वाकी धुकर-धुकर जरूर करबे लग जातो । सही बात है दूध को जरो छाछ कूँ फूँक फूँक क पीवै । वू धापर कूँ जलब्याई गया की नाई रँभाबे लग जाती ।

डीग क स्कूल म प्रभात की तूती बोलिवे लगी । हर भाव म प्रभात ही प्रभात दिखाई परबे लगो । प्रभात कूँ प्रतिभा मिली, दिवाकर अरु रजनी त पर चन्दा क वातावरन नैं वाकूँ सान प चढाय क निखार दियो । किताबी पढाई सौं ज्यादा करकै सीख्यो, अनुभव बटारयो चन्दा न ई सिखायो । बाकी चतुराई कूँ देखिकैं बड़े-बूढ़े कहते, 'चन्दा तेरो नाती तो अपन बाबा और बाप दोनों क सस्कार लकैं आयो है ।' एक पोत डीग म स्कूल म छात्र संघ के चुनावन क सम प्रभात कूँ जब खड़े करबे की बात आई तो चन्दा कूँ दिवाकर के चुनावन को सिगरो चित्र ध्यान मे आगयो । कोऊ दूसरी होती तो वाए कबऊ खड़ो नाय होन देती । पिछले आघात को ध्यान करक रोक लती । पर बान भावी आसका कूँ निकास क प्रभात कूँ स्वीकृति द दई । प्रभात नैं अध्यक्ष पद को चुनाव लडो । अपनी प्रतिभा काय अरु व्यवहार सो एसो जादू कियो क प्रभात नै विजय पाइ । प्रभात लौनी घ्यौ क लौदा की नाईं छाछ म उभर क आ गयो ।

एक दिना प्रभात और दिनान की भांति अऊ सो डीग जा रह्यो । साइकिल सडक के किनारे किनारे चली जा रही । वाए कार अरु बसन प पड़े भए नम्बरन कूँ पढबे को चाव हो । जो कोऊ वाहन आगे ते आतो तो वाक नम्बरन न पढतो । पीछे त आतो तो नम्बरन कूँ पढतो । वा दिना एक कार बाके पीछ त आइ । फर सौं आगे निकस गई । थोरी दूर जाय कैं कार पल भर कूँ रुकी । बानैं बामें ते एक मान्स कूँ बाहर ढकेलतो देखो । ढक्का दब बारन नै सोची पाप कटो हत्या मिटी काम बनो । पर विन्न ई ना पतो मरते भए सुग्रीव कूँ बचाव कूँ राम ठाडे है जो सुग्रीव कूँ बचाय क बाली कूँ मारिंगे । प्रभात नैं वा कार को नम्बर पढ लियो । बान कार सौं ढकेलत भए आदमी कूँ देखई लियो साई बान पडल तेज मारे । पास पहुँचो तो देखो आदमी खून सौं लथपथ है रह्यो है । गुन्डा छुरा भौंक कैं चले गए । वू मान्स अबई बस म हो वान इतनई बतायो क वू बैंक सौं साठ हजार रुपया लैक आयो गुन्डा बाक रुपयान नैं लक भाग गए है । प्रभात न अपनो कुरता फारक लहू बहबे को ठौर प कसक पट्टी बांधी । सयोग सो दूसरी ओर डीग त साईकिल त आव वारे अपने यार कूँ वाए डीग लाइवे को काम सौपिकैं आप साईकिल सौं डीग टलीफोन एक्सचज पहुँचो । कार नम्बर बताय क कार को रग बताय कैं टलीफोन दिल्ली राड प कामा, अरु अलवर राड प नगर कूँ करा दिए । सग म पुलिस कूँ वायरलेस हू करा दियो । या भांति चतुर प्रभात न गुन्डान की पूरी नक्काबदी करा दइ । गुन्डा कामा तक हू नाय पहुँच पाए नक्को रोक दियो । सफेद कार देखिकैं कामा की पुलिस न कार अरु कारवारे हिरासत म ल लिए । बदमासन क छक्का

छूट गए। हक्के बक्के रह गए। बिन बदमासन नैं मुकतरी सफाई दई नम्बर मिलायबे की कही पर पुलिस लौटायक कार कूँ डीग थान में ल आई। पुलिस ने कामा ते डीग कूँ टेलीफोन कर दियौ, व जान टलीफोन करायौ है वाकूँ डीग थान म ल आव। आधा घंटा म कार डीग थान म आ गई।

प्रभात बाई ठौर प बैठा गयौ। कार के आदमी जसैं ही कार मे त उतर बिनकी सकल सूरत गुंडान की सी लग रही। बिनकी पहिचान करब की बात कही प्रभात सौं। प्रभात न साफ साफ कह दई आदमी व हुतैं कै नाएँ या बात कूँ नाय कह सकूँ पर हाँ इतेक जरूर कह सकूँ क कार वुई है।' वान कही, 'नम्बर प्लेट बदल दई है कार की तलासी लई जाए।" गुंडान नैं प्रभात कूँ आँखई आंखन म डरायौ पर प्रभात तौ ऐसी मांगी को नातौ हो जान निरभीक्ता सौ अपनी बात कहबौ सिखायौ। वाई सम कार की तलासी लई गई। जा नम्बर की प्रभात नैं टलीफून करायौ वू प्लेट गद्दी क नीचैं छुपी मिल गई और मिल गए 60,000/-रु साठ हजार रुपैया। पुलिस की बन परी। गुंडान के होस उड गए। हाथ जोरि क पाँयन मे गिर परे। गिडगिडाबे लगे। घुसर-पुसर प्रारम्भ हुई। प्रभात सब समझ गयौ। वू घटना कूँ मंजिल पै पहुँचाबे के ताईं चटा की नाइ चिपक गयौ। प्रभात की चतुराई की सब बडाई करबे लगे। चारौ ओर प्रभात की चरचा सुनाई परी।

बितकूँ जा साईकिल बार यार कूँ वा घायल कूँ सौंपिकैं आयौ वू वा घायल कूँ बस सौं डीग अस्पताल ल आयौ पर वू अचेत परौ। वाकौ इतेक लहू निकस गयौ कै वू मरनासन है रह्यौ। वाकूँ बोतल चढ रही। वू बोल न सकऔ। डाक्टर बाए बचाव की चिंता म दाड धूप कर रहे। वाकूँ खून की दो बोतलन की जरूरत ही, पर कोई द ना पा रह्यौ। प्रभात तौ अपने दल बल के संग हौ। सबसौ पहलैं प्रभात नैं लहू की बोतल दैब की कही। लहू दान करब कू दूसरे छोरानै कही तीसरे छोरा नैं कह्यौ फिरतौ लन लग गई। बिनक गुरू मानसिंह नै औरन कूँ रोक कपहलौ नम्बर अपनौ लगा दियौ। डाक्टर हैरान है गयौ। कौन त ले कौन ते नई। लहू कौ ग्रुप मिलवाय क दो बोतल लहू चढायौ गयौ। रात भर घायल अचेत रह्यौ पर सबेर वू चेत मे आ गयौ। वान अपनौ अतौ पता दियौ। बतायौ, म बूडली गाँव कौ रहबे वारौ हू बक त साठ हजार रुपया लकैं आ रह्यौ। भरतपुर म कुम्हेर बस स्टण्ड के चौराह पै एक सफेद कार रुकी। कार वारेन न बस के किराए म ही डीग तक लाइब की बात कही। मैं बैठक चलौ आयौ। कुम्हेर तक तौ मात गुंडान नैं कछू नाँय कही। पर कुम्हेर क निकसते ही मोत पूछताछ करब लग। मन मुकतेरी मना करी मोप कछू नाएँ पर बिनै मोकूँ जबरन पकरक 60,000/-रुपया छुरा लिए। मैं रोव चिल्लान लगौ तौ अऊ क पास मोम छुरा मारकैं ग्रौर कार म ते धक्का दक डार गए। एक साइकिल वारे छोरा न अपनो कुरता फारक मरे घाव प बाधौ। वाके पीछे का भयौ माय पतौ नाँए। बात पूछी, 'अगर व गुंडा बाके सामई लाएँ जाए तौ वू पहिचान लेगौ क नाय? वान छाती ठोक क हाँ

कर लई। वाकूँ ई ऊ बताय दियौ कै वाके 60,000/-रुपैया कब्जे म आ गए हैं गुंडा पकर लिए हैं। याए सुनिक वाकी जान म जान आ गई।

चन्दा न अपने नाती के साहसिक काम की कहानी सुनी तौ गब सौ फूल उठी। वाकौ रोम-रोम खिल उठौ। वान प्रभात कूँ अपनी छाती सौ लगा लियौ। बोली, "तगा धन्न है तन अपने कर्तव्य कौ निवाह करकै मोकूँ आस्वस्त कर दियौ है क तू दिवाकर कौ नाम उजागर करगौ।"

पुलिस गुंडान कूँ सवेरे अस्पताल पहिचान के ताई लाई। घायल हालत म हू बूडलौ गाय बारे न दोनो गुंडान कूँ अरु ड्राईवर कूँ पहिचान लियौ। बाई दिना अखबार म खबर निकसी 'एक अग्यात मानुस के 60,000/ रुपया छीनकै अरु घायल करकै दिल्ली जावे बारे गुंडान कूँ पुलिस नैं बहादुरी सौ पकर लियौ है। कामा पुलिस थानेदार कूँ या काम के ताई आई जी न एक प्रमाणपत्र द दियौ। डीग त टैलीफोन करवे वारे कूँ एक घ्यौ को पीपा अरु पाच सौ रुपया को इनाम दियौ गयौ। पर वा प्रभात अरु डाक्टरन कौ कहू नाम नाओ जिन्नें अपनी चतुराई अरु सूझबूझ सौ अपने प्रानन का बाजी लगाय क जोरदार भूमिका निभाई।

हा डीग स्कूल के प्रिंसीपल न प्रभात के साहसिक कार्य की प्रार्थना स्थल प भूरि भूरि प्रसंसा करी। वाकूँ स्टेज प बुलाय कै वाकी पीठ थपथपाई। अखबार म दूसरे दिना पूरौ ब्यौरा दियौ गयौ। सबन कूँ असलियत मालुम परी क प्रभात दौड धप नइ करतौ तौ कछू नई होतौ। प्रभात की बहादुरी की सूचना कलक्टर कूँ मिली तौ वानैं राज्य सरकार सौं वीर बहादुर बच्चान म वाकौ नाम लिखवायवे की भरपूर कोसिस करी। कलक्टर कू या काम म सफलता मिली। 26 जनवरी कूँ वीर बहादुर बच्चान की सूची मे प्रभात को नाम पहले नम्बर प आयौ। चन्दा की खुसी कौ ठिकानौ ना रह्यौ। बाए लगौ माधवा की पहली सीढ़ी मिल गई हो।

26 जनवरी कूँ प्रभात जब राष्ट्रपति सौं पुरस्कार लव गयौ तौ चन्दा सग गइ। डीग स्कूल को प्रिंसीपल नारायन स्वरूप हू सग गयौ। एक भव्य समारोह म राष्ट्रपति न वीर बहादुर बच्चान कूँ माला पहराई। पुरस्कार दियौ। फोटू खिचे। टी वी पै बिनकी रील बनी। रात कूँ टी वी प प्रभात कूँ भरतपुर की जनता न देखौ तौ लगौ जसैं बिनकौ छोरा ही इनाम पा रह्यौ हाय।

जब प्रभात दिल्ली ते लौट क आयौ तौ डीग म वाकौ जुलूस निकसौ। 'प्रभात की जय जयकार भई। फूल माला पहराई। ठौर ठौर प दरवज्जे बनाय क स्वागत कियौ गयौ। याही तरियाँ अऊ गाम म स्वागत कियौ गयौ। सबन न इ स्वीकारौ क या सबकौ स्रेय चन्दा कूँ है जान प्रभात कूँ ऐसी अच्छी सिच्छा दई है। काऊ काऊ न तौ ई कह दई क ऐसी सबला नारी हो तौ एक नई अनक प्रभात बन सक। नव जागरन आ सक। प्रभात के ताई चन्दा के पास बहुतरे बधाइ पत्र आए। चन्दा कौन कौन कूँ

जवाब देती । बान अखबार म बधाई दैवे बारेन कूँ आभार प्रकट करकैं अपने सहयोग की कामना करी ।

बात टहाँई तक नाय रही प्रभात की बहादुरी चतुराई अरु सहासिक याय की कहानी टलीवीजन प उतारवे के ताँई एक टीम अऊ गाम आई । टी वी प प्रभात क घर कौ चित्र रिकाड कर्यौ गयौ । फारम प त अपनी दादी क पर छकैं साईकिल ते चलवौ दरसायौ गयौ । अऊ ते डीग की सडक प चलवौ पीछे ते सफेद कार कौ आइबौ, कार के नम्बरन कूँ प्रभान मौं पढिबौ घायल कूँ कार त ढकेलबौ, प्रभात को घायल कै पट्टी बाधबौ साईकिल सो दौरि क टलीफून करवौ, कामा के पास कार कूँ पकरबौ, गुडान की डीग मे पहचान करावौ गुडान कूँ जेल भेजवौ प्रभात कूँ पुरस्कार मिलिबौ ज्या की त्यौ सिगरी कहानी टलीविजन वारेन न रिकाड करी फिर याकूँ इतवार के दिना दिखायौ गयौ । घटना की सही स्थिति कान अरु आखिन क माध्यम सौ मन के कौने कौन म समा गइ । सबन के म्हौ त निकस परी मा स की चाम नहीं काम प्यारौ होय ।

प्रभात स्कूल की पढाई पूरी करक डीग के कालेज म भरती है गयौ । दादी अरु नाती गाम म कहवे कूँ अकेले हे पर हर घर क सदस्य बन गए । चन्दा कौ फारम अरु चन्दा कौ घर सबके ताईं खुलौ । सबकै दुख दरद चन्दा क दुख दरद ह । चन्दा नै प्रभात कूँ एस साच म ढारौ क प्रभात-प्रभात की बला सौ हू ज्यादा सुखद लगबे लगौ । कालेज म प्रभात की कथनी करनी ए देखिकैं प्राफेसर हू अपन छारा छोरीन न प्रभात की नाई बनायब की साचत । सब कहते प्रभात की दादी नें वाकूँ पढायौ ही पढायौ नाएँ वाकूँ गुनायौ हू है ।

प्रभात की कथनी करनी को एक उदाहरन देखिकै तौ और हू दग रह गए । डीग की भारतीय कला सस्थान नै एक पोत कालेज म निबध प्रतियोगिता कराई । निबध कौ विस रखौ गयौ मानव धम । डीग कालज म सवरे 10 वजे को सम दियौ गयौ । प्रभात रोटी खायकै दादी सौ पूछि क सवरे साढे नौ बजे डीग कूँ चलौ । कालेज के पास बान एक बुडढौ दखौ जो सडक क सहारे परौ परौ कराह रह्यौ । कोऊ साईकिल बारौ छोरा वामैं टक्कर मार गयौ । बिचारौ प्यास क मार घबरा रह्यौ । पानी पानी चिल्ला रह्यौ । पर काऊ कूँ इतेक टम कहा हो जो बुडढे की आवाज प ध्यान द तौ दो घूँट वाक गरे म डार द तौ । हर एक छारा कू निबध लिखिब को पर रही। सब साईकिल प हवा है रह । सबन न लग रही दस बजे पीछ पहुँच ती फिर बिन वाऊ कमरा माहि नाय घुसन दगौ । सबन न मानव धम पै निबन्ध जो लिखनौ हो ।

प्रभात न बुडडे कूँ देखौ वाकी आवाज सुनी । वू एकदम साईकिल सौं उतरौ । वाक घोटून त लहू बह रह्यौ । वानें रुमाल सौ बुड्ढा क लहू कूँ पौछो । वुड्ढो पानी कूँ चिल्ला रह्यौ । वू पास त कहीं त पानी लायौ । बुड्ढे कूँ पानी पिवायौ । वाकी जान म जान आइ । प्रभात वाए साईकिल प बठाय क अस्पताल तक ल गयौ । अस्पताल म भरती करायौ ता पाछ कालेज पहुँचौ । ता सम साढ़े दस बज गए । जब ही वू कालज पहुँचौ परिवीच्छक नें वाकूँ कमरा म नाय घुसन दियौ । बात कह दई सम निकस

गयो है। वानें परिवोच्छवन कूँ साँची साँची बात बताई पर नियम म बँधे परिवोच्छन सुट्ट खँच गए। प्रभात विचारो निबंध लिखिबे ते रह गयो। पर वाए सन्तोस हो क वानें अपनी मानव धम निभायो है। बुड्ढे कूँ सुख दियो है। वू बैठो बैठो टुकुर-टुकुर देखतो रह्यो।

थोरी देर पाछ प्रिन्सीपल साहब आए। वे प्रभात कूँ भली भाँति जानते ह। प्रभात कूँ बाहर बठो देखिकै पूछी 'ह्याँ बैठो है? निबंध प्रतियोगिता म भाग सौं नाँय ल रह्यो?' प्रभात ने देरी हैबे कौ सिगरौ चिट्ठा कह सुनायो। प्रि सीपल सुनिकं द्रवित ह गयो। वानें प्रभात की पीठ थपथपाई। सब छोरा निबंध लिखिकै बाहर भाए। प्रभात कूँ लेट लतीफ कहकै हँसी उडाते भए फर साइकिलन ते निकस गए।

निबंध की काणी जची। चौथे दिना परिनाम सुनायो गयो। परिनाम सुनिकं सब अचरज म आ गए। प्रथम स्थान प्रभात कँ मिल्यो। सब छोरा हा हुल्ला करवे लगे, साब प्रभात नै तो निबंध लिखो ही नाहैं। प्रिंसीपल न सबकी बात सुनी फिर सबकू सा त करकै बात कही 'छात्रो मानव धम विसँ पँ आपन तो निब ध लिखो है। प्रभात नैं निबन्ध के विस कू अपने जीवन म उतारो है। कालेज क बाहर गैल मे परे बुड्ढे कू कोऊ टक्कर मार गयो। वानें पानी कू आवाज लगाई पर कोऊ न मानव धम नाय निभायो। प्रभात नै वाकू पानी ही नई पिवायो वाकू अस्पताल हू पहुँचायो। या तरियाँ सौं प्रभात नैं मानव धम जीवन मे उतारकै दिखायो। पोथीन म जो कछू लिखो है रट कैं सुनाव कू नाएँ जीवन म उतारवे कू है। जीवन मे नई उतार सकै तो पढबो लिखिबो बिरथा है। जैस घी दूध म रमो भयो है। ऐसे ही ईसुर घट घट वासी है। सब व्यापी है। ऐसैं कहवे बारे तो भौत हैं पर दूध मथक लोनी के लोंदा ए निकासवे बारे बिरले हैं वही काम प्रभात नैं कियो है। मानब धम मे आचार पहल विचार पीछ है। याको निबाह प्रभात नै कियो है।

या बात कू सुनिक सबके म्हों लटक गए। जीभ तरए त लग गई। साँच कू आँच कहा। कछू कुसमुसाते रह गए होठन सौं बड़बड़ाए पर हिए ॥ स्वीकारी कै प्रभात न मानव धम निभाय कै साची निबन्ध लिखो है। जो छोरा टक्कर दक गयो वू हू वा समै म्हाई खडो। वान सिगरी राम कहानी सुनी तौ वान ॥ अपने मन मे कछू विचार लियो। गाठ बाँध लई।

चन्दा न या घटना कू सुनी तौ प्रभात कू गरे ते लगा लियो। अब चन्दा प्रभात की ओर सौं निस्चित है गई। वाए सतोस है गयो क वाको काम पूरो भयो।

अब चन्दा कौ बुढापो बडी तेजी के सग आवे लगो पर मन म साहस, उमग अरु उत्साह मे काऊ कमी नाही। आखिरी दिनान मे वान अपन फारम प एक कला विद्यालय खोलो। ब स तो म्हा सरकारी स्कूल हतो, पर वान अपन ढग सौं स्कूल

खर्चा को सवाल ही पर दान दातान की कमी ना वताय क चन्दा न करबं दिखायो। चन्दा के पास पइसा बरसबे लगो। दानदाता आबे लग। व अपनो भाग सराहब ला जिनको पइसा चन्दा न स्वीकारो।

काम और वढब लगो। वालिकान कूँ घरेलू उद्यमन की ट्रेनिंग दइ जाव लगी। अऊ गाम म गलीचा बुनवे, आसन बनाइवे द त मजन साबुन, सफ, तल, अमृधारा जसी दनिक वस्तुन कूँ बनाइव की ट्रेनिंग दई जाव लगी। कछू महिला चन्दा कूँ सहयोग दबे अपने आप आव लगी। कछून न वालिकान क जीवन निर्माण के ताइ अपन कूँ समरपित कर दियो। धीर धीर वालिका विद्यालय को सरूप फलतो गयो। अब वाको नाम बालिका विद्यापीठ है गयो।

दान दातान न अपने अपन नाम क वालिका विद्यापीठ म कमरा बनवा दिए। एक दान दाता नै दस वीघ जमीन की चाहर दीवारी करवा दई। एक न विसाल दरवज्जो बनवाय कैं बाप माट ओखरन म अऊ वालिका विद्यापीठ लिखवादियो काम इतेक फल गयो कै चन्दा दाए सम्हार नाय पा रही बाको बुढ़ापो जु आ रह्यो। याही सो वानै एक ट्रस्ट बना दियो। बान सब काम ट्रस्टीन कूँ छाडि दियो। लगनसील, इमानदार सवाभावी ट्रस्टीन के हाथ म काम सौप कैं चन्दा नैं छुटनी पाव की प्राथना करी पर एसो कैसे है सकै ओ। ट्रस्ट नै चन्दा के सामई ई बात राखी क बू आजीवन विद्यापीठ की सरक्षिका रहैगी। चन्दा नाम त नई काम त सरक्षिका ही। बू कर्तापन के अभिमान सौं दूर कमवादी बनी रही, पर बान कही बू तो पको पान है नदी किनारे की रुख है न जान कब चलदे बामौ या काम कूँ सम्हार कैं चन की साँस लइ।

सयोग सौ भले मानस विद्यापीठ कूँ मिलत रहे। वालिका विद्यापीठ को काम और अच्छो चल निकसो। प्रधानमत्री न राष्ट्रीय साक्षरता मिसन को एलान कियो। दस कूँ साक्षर करवे के ताईं गाम गाम म प्रौढ सिच्छा को विगुल बज उठो। स्वच्छिक सस्थान कूँ केन्द्र चलायबे के ताईं न्योतो दियो गयो। अऊ वालिका विद्यापीठ कूँ 300 केन्द्र मिले। 15 लाख रु सालाना मिलिवे लगो। वालिका विद्यापीठ न 300 केन्द्र खोले 30 जन शिक्षण निलियम बनाए जहा प्रौढन कूँ पुस्तकालय वाचनालय खेल कूद पढवे की सामग्री रखी गई। वालिका विद्यापीठ को काय क्षेत्र बढ़तो गयो।

धीर धीर प्रभात न बी ए कर लियो। चन्दा चाहती प्रभात वज्ञानिक तरीकान त खेती कर वालिका विद्यापीठ क काम कू देख। वाकू ट्रस्ट को सदस्य बना दियो। चन्दा की वात कू मानक प्रभात या काम म लग गयो। चन्दा अब धीर धीर सरीर त जर जर है गई। इन्द्री सिथिल है गई। बुढ़ाप की बीमारी सवसो बुरी बीमारी होय। आखिन मौ दीखबो कम है जाए। सुनिवो मद पर जाए। अनक रोग घर ल। खासी सुरा थारे। हाथ पाव न्यार मग नाय द।

जान जनम लियो है बाको एक ना एक दिना तो जान ही है। वहान अनक बन जाए। काऊ काऊ बीमारी ते काऊ काऊ बीमारी त चलो जाए। सदा को नियम है जो फूर खिलो है वू एक दिन मुरझाऽगो। जरब वारो दीपक बुझ जरूर है। छाइ बात चन्दा क संग भई। ओर दिनान की भांति सबेर चार बज चन्दा जस ही किवार खोलिब क् उठो। उठत ही गिर परी। पायन नैं बाझ नाय सम्हारो। चन्दा हू न ई समझ पाई य ई का भयो। वाकी आखन क आगें अंधेरो छा गयो सिर म चक्कर आव लग पाव लडखडाव लगे। वान प्रभात क् आवाज दई। प्रभात दौरा चलो आयो पूछो दादी का भयो ?" दादी क् उठायो पर पांयन त जम सत निक्स गयो हाय। प्रभात नैं दादी खूब उठाई पर पायन न बाझ नई सम्हारो। दादी कराहती भई बाली, बटा माय खाट प लिटा द। प्रभात नैं बाब् गादी म लकं खाट प लिटा दियो। इत वित सों सिगरी बालिका दौरी दौरी चली आई। दादी अम्मा क् कहा है गयो ? अध्यापिका हू दवठोरी है गई। मालुम परो चन्दा क् लकुआ मार गयो। चतुर प्रभात समझ गयो दादी की सान्ध्या निकट आ गई है। दीपक बुझब वारो है। पछी उडब वारो है।

थारी देर म ही चन्दा की हालत बिगरब लगी। गाम क लाग-लुगाईन न सुनी तो सब काम छाडिक चल आए। लाग लुगाईन की तातो लग गयो। लाग-लुगाई पूछबे लगी। चन्दा कौन कौन क् का उत्तर दती। प्रभात न डाक्टर बुलायो। डाक्टर न ज्वाब द दियो लकुआ को गहरो आघात भयो है।

चन्दा न हू धीमी आवाज म कही, अब बुलावो आ गयो है। जाइबे के छिन आ गए हैं। जानो परगो लाव प्रिय समाज सविका कमवृत्ति क दरसनन क् ट्रस्टी आ गए दुनिया उमड परी। चन्दा नै हाथ जोरि क ट्रस्टीन सो कही, विद्यापीठ तिहारे हाथ है याम ईमानदार मानस रखियो। सबन न समझा दीजो कोऊ अपने मग लक नाय जाय सब क् न्हाई छोड जाए।' वानै प्रभात के माऊ इसारो कियो, 'ई तिहारी गाद म हू ' प्रभात नैं सुनी तो रा परो। चन्दा बोली बटा रा मत य सब ट्रस्टी तरे मैया बाप है इन सबन की सवा करियो। काम सो पाछे मत हटियो। भाग्य, सस्कार अरू भगवान कम क खेल हैं। परोसी भयो भाजन हू म्हों म नाय जाय। चलो हू जाए तो म्हो चलाए बिना खायो नाय जाए। भगवान हू तो कम क् अवतार लें। अजुन क् हू तो कृष्ण न कम को स दस दियो।

चन्दा न ट्रस्टीन सों फिर हाथ जारि क एक बात कही देखो, या प्रभात को ब्याह काऊ पढी लिखी सुयोग्य छारी सो कर दीजो पर या बात को ध्यान रखियो क ब्याह सादगी सो बिना दहेज को हाय।" धीर धीरैं चन्दा की घडी निकट आवे लगी। अब वाकी जीभ लडखडाव लगी। वान प्रभात क् इसार ते कही, मर निकट आ'

प्रभात वाके जोरे आ गयो चन्दा ने वाको हाथ अपने हाथ में लियो अरु टूटत भए आखरन में धीरे धीरे इतनो कह पाई—

> जब तुम आए जगत में, जग हांसो तुम रोइ ।
> ऐसी करनी कर चलो, तुम हांसो जग रोइ ॥"

या बात कू कहती कहती चन्दा मौन है गई । आंख फटी की फटी रह गई । पंछी उड गयो पिंजरा खाली परो रह गयो ।



परिशिष्ट

प्रतिक्रिया

एक सम सामयिक उपन्यास खरो कंचन

कलानाथ शास्त्री

ब्रज भाषा अकादमी की प्रकासन योजनान में 'ब्रज शतदल' पत्रिका को नियमित प्रकासन तो हुई, ग्रन्थन की माला हू अपने सौन्दय सों राजस्थान कू सुरभित कर रई है, ई प्रसन्नता की बात है। राजस्थान के जाने माने ब्रजभाषा के कवि अरु साहित्यकार श्री गोपाल प्रसाद मुदगल को ब्रजभाषा उपन्यास अकादमी को नयो प्रकासन है। याको सीसक 'कंचन करत खरो' सूर के पद की सुरति करावै अरु पारस पत्थर को सन्दभ देय है। उपन्यासकार नैं नायिका चन्दा कू पारस के रूप म चित्रित करयो है। बान जाकू छुयो है बाई कू सोनो बना दियो। सच मे मैं या उपन्यास कू खरो कंचन पा रह्यो हूँ। मुदगल जी की पारस रूपी लेखनी नैं याकू कंचन बना दियो है, ऐसो माय लग रह्यो है।

कंचन करत खरो मध्यकालीन लोक भाषा के अभाव की पूर्ति—

राजस्थानी जैसी लाक भाषा अरु ब्रज जसी साहित्यिक भाषा मे पद्यमय काव्य सृजन की जितेक लम्बी परम्परा रई है अरु काव्य साहित्य जितेक बिपुल रह्यो है बितेक गद्य साहित्य नाय रह्यो। वार्ता साहित्य (84 अरु 252 बस्नवन की वार्ता आदि) अरु पुरानन या यौग वसिष्ठ जसे प्राचीन ग्रन्थन के अनुवादन तकई ब्रजभाषा को गद्य साहित्य सीमित हो। याही सों व्यक्ति व्यंजक निबन्ध लघु कथा, व्यंग्य विनोद उपन्यास जसी गद्य विधान कौ लोक भाषा अरु मध्य कालीन साहित्यिक भाषान में अभाव रह्यो। या अभाव की पूर्ति ऐसे उपन्यास ई कर सकिगें।

हिन्दी मे आंचलिक उपन्यासन की एक लम्बी परम्परा रही है। श्री फणीश्वर नाथ रेणु जैसे लेखकन ने अपने अपने छेत्र की सस्कृति अरु भाषा को पूर्ण प्रतिबिम्ब लिए भए जो उपन्यास लिखे बिनसों श्री रेणु ने हिन्दी साहित्य में अपनी अलगई पहचान बनाई। वे ई उपन्यास आंचलिक भाषान म लिखे जाते तोऊ बिन की उत्कृष्टता अरु पहिचान अलग ई होंती। है सक बिनकी ख्याति इतेक नही है पाती है सकै बिनको प्रचार व्यापक छेत्र मे नहीं है पातो किन्तु भावनान की तीव्रता अरु लेखनी की धार तो बैसी ही रहती।

कंचन करत खरो समसामयिक आंचलिकता को सौन्दय

स्यात इन सब दृष्टिकोणन सो मुदगलजी नैं आंचलिक उपन्यास हिन्दी म न लिखि कैं आंचलिक भाषा म यानी बाई अंचर की भाषा मे लिखिवो अधिक पसन्द कियो। या उपन्यास की दो विससता विसेस उल्लेखनीय हैं। एक तो याकी आंचलिकता अरु दूसरी सम सामयिकता।

राजस्थान के ब्रजभाषी अंचर म परी भई एक छोरी की प्रेरक जीवन गाथा उपन्यास म चित्रित है। वाकी साधना, कर्मठता, प्रतिभा, लगन, त्याग तपस्या कोई, ई परिनाम निक्सो के यान अगली तीन पीढ़ीन तक अपनी तपस्या की जगमगाती ज्योति की उजियारी रेखा बिखेरी। या अंचर के सामाजिक रीति रिवाज, समस्या, अरु अच्छाई बुराईन को उपन्यास मै भली भांति बरनन भयो है। पैनो प्रसग "राजस्थान की छोरी' सो सिरू भयो है। या तरिया सो प्रारम्भ भई मुद्गलजी नें राजस्थान अरु ब्रजभाषा के अटूट सम्बन्ध को सरस सरल अरु सफल याकी कराई है।

आंचलिक प्रभाव के सगई उपन्यास माहि समसामयिक स्थितीन को बड़ौ अच्छौ प्रतिफलन है। राजनतिक गतिविधि, सामाजिक कुरीति अरु परम्परागत रुढ़ीन क कारन महिलान कू मिलिबवारे कष्ट, रुढ़ीग्रस्त समाज की दकियानूसी मान्यतान अरु उन रुढ़ीन को तोरिवे को साहस की अंकुर फूटिवो इन सबन को सूधौ साँचो प्रतिबिम्ब याम दखिब कू मिले है। याके संगई आधुनिक युग क आगमन की झांकी समाज सुधार को सँभावना याम उजागर भई हैं। लेखक आसावादी है या ही सौ निरासावादी अरु धूमिल चित्र प्रस्तुत नाय किए हैं। कुरीतीन क निवारण अरु रुढ़ीन क सुधार सौ समाज सुधारक अरु लगनसील मानुस का तरियाँ सौं धुंध अँधियारे म उजियार की किरण फला सकै याको असरदार तानौ बानौ उपन्यास म पूरौ गयौ है। चन्दा अरु चकोर कौ अन्तजातिय ब्याह नवयुवक मंडल सौं वाको समथन, कालेज जीवन अरु ग्राम राजनीति के षड्यन्त्र के होते भए हू लक्ष्य की ओर प्रगति सब कछू यथार्थ अरु आदस कौ समन्वय करत भए चल हैं। अखीर मे कर्मठता सकल्प अरु निस्ठा की जीत होय। जेई लेखक को सन्देस प्रतीत होय।

लच्छेदार कहावत अरु आंचलिक मुहावरेन को सटीक गुम्फन—

कथानक के सग सग चरित्र चित्रन अरु सिल्प हू मृजनात्मक उत्कृष्टता लिए भए हैं। लोक भाषा को टटकापन तो सली मे होनो सुभाविक हुतौ ई औ। लेखक न ग्रामवासीन के मुख सौ कही जावे वारी लच्छेदार कहावन अरु आचलिक मुहावरन को सटीक गुम्फन कियौ है। कथानक के चरित्रन म व्यक्ति अरु देस को सजीव बरनन करक लेखक न चित्रात्मता पैदा करी है। सली की ये विसेसता या उपन्यास कू एक अच्छे उपन्यास की पंक्ति म ला बठार। एक उल्लेखनीय बात ई है क कथानक म सुभाविक गति है जासौ पाठक उकताव नाहैं। स्वतन्त्रता क सुखद भोर के पाछ देस म जो कछू है रह्यो है वाकी झांकी राजस्थान के ब्रजभाषी अंचर म का तरिया परी है याको दसन या उपन्यास म स्वच्छ दरपन की भाँति देखौ जा सक। या कृति कौ स्वागत ब्रजभाषी जनता राजी राजी करगी याम नकऊ सन्देह नाए। उपन्यास के लेखक तो अभिनन्दन क पात्र हैई, कथा साहित्य के या सुमन सौ ब्रजभारती कौ अर्चन करव वारी अकादमी हू जो याकी प्रकासक है, बधाई की पात्र है।

निदेशक, भाषा विभाग—राजस्थान

ब्रज अचर क सास्कृतिक परिवेस की रसमयी कृति कचन करत खरो

डा सुरेन्द्र उपाध्याय

जब नवऊ काऊ गद्य रचना पै कोऊ काम करै तौ अपन ताई जोखिम मोल ले। इत्तफाक ते बू जन कवि हू होय तौ ई जोखिम औरऊ बढि जाय। ई सुखद अचरज की बात है कै मुदगल या जोखिम कू झेलते भए स्वय कू ऊपर राखबे म सफल भए हैं। वे उपन्यास म कविताई के चाव सौं मुक्ति पायकै गद्य के सुभाव कू बनाय राखबे मे गद्यकारकौ दायित्व निभाव सफल भये है।

ब्रज बासीन के भाव-लोक कौ सफल चित्रन—

"कचन करत खरो' उपन्यास कू मुद्गल आचलिक उपन्यास कहे हैं कथा सूत्र डीग, अरु भरतपुर अरू मिलानी तानूँ फले भये हैं। ब्रज अचर की जीवन सैली या उपन्यास म बखूबी ते उभर क आई है। जाते आचलिक रचना धम की कथानक अरू चरित्र चित्रन में एक अलग पहिचान बरबस मन कू आनदित करै है।

या उपन्यास को महत्व जा कारन ऊ आकौ जाइगौ क वू राजस्थान मे ब्रज भाषा माहिं लिखौ भयौ पलो उपन्यास है। जसी सरल सीधी सादी ब्रजभाषा है वसे ही सरल सीधे ब्रजवासीन के भाव लोक कू मुद्गल उजागर करबे म सफल भये हैं। अगर मुद्गल की नजर ब्यौरान अरू स्थूल प्रसगन सौ हटिकै भीतर की ओर घूमती तौ चन्दा अरू चकोर रजनो अरू दिवाकर क नाम रूपकन म काछू नए सकेत भरे जा सक हे किन्तु लेखक को ध्यान बा माऊँ कम गयो है। अरू बिना दाव पच क सीधे अरू सरल ढग सौ अपने कथा सूनन कू अरू बाम सास लते, सघर्ष करते लोगन कू स्थापित करो है। अगरचे धूतता, धोखाधडी, चरित्र हीनता कू ई यथाथ न मानौ जाए तौ या उपन्यास को यथाथ मानवता के साक्षात की यथाथ रूप मानो जा सक।

थोरे मे मौत कहनो उपन्यासकार की अनिरिक्त सूझ

आदमियत की जो धतनी लेखक नै या उपन्यास म गढी है वू मन बदल अरू मानवता म आस्था की वतनी है। समस्या-अ तरजातीय ब्याह, दहेज प्रथा, पिछडीपन अरू गरीबी ही हैं। एक खास अथ म इन समस्यान पै आज को पाठक इतनो उद्ग्रीव नइ होनो चाहे तोऊ मुनष्यता के रिस्ते अरू समाजिक सद्भाव के सदभ म ये समस्या बर-बेर उठनी रहिगी। चन्दा के माध्यम सौ या समूचे उपन्यास कू लेखक नें सघर्ष गाथा के रूप म चित्रित करनो चाहो है। आदमी प विपत्ती आव जिनसौं वु टूट जावै तबई कोऊ दायित्व प्रेरना, कोऊ कतव्य वाए सघप के ताई सतत क्रियासील करदे है। चन्दा माना याही विचार को प्रतिरूप है अरू जा तरिया वू कबहु न थकबे वारे जीवन के

प्रतीक रूप म चित्रित है पाव । जि सफलता लेखक की निर्विवाद है, पर तीन पीढीन की कथा उठायबे म उपन्यास कू जा वहुत्तर कलेवर की दरकार होय है यासों क वाम चित्रित चरित्र अपनौ समूचौ आकार अरू विकास पाय सक बाके ताई या उपन्यास म कम अवकास बच पावे है । दिवाकर अरू रजनी के चरित्र व्यक्तित्व तौ लेखकीय वाक्यो वतीन के अधिक आस्रित रहे हैं । कम छत्र सौं विनकी तस्वीर कछू कम अभर पाई है । वू एक पीढ़ी को व्यक्तित्व अरू कथा सूत्र को विकास है । लगभग वुई सिल्प के स्तर प दूसरी पीढी के व्यक्तित्व व कथा सूत्र को पर्याय है गयो है । यासों औपन्यासिक ढांच कोऊ सिल्प कौशल वाकी विसिस्टता कू रेखाकित नाय कर पायो । लेकिन ईऊ हाय क अतिरिक्त सिल्प कौसल के चाव सौं या उपन्यास की सादगी वची रह जाय है जो अखीर तक या कृति की ताकत ऊ है । पर ध्यान राखवे की मूल बात जि है के याडे म भीत कछू कहके लेखक ने अपने औपन्यासिक कौसल की छाप पाठक के चित्त म परोक्ष रूप सौ छोडी है वू प्रससनीय के सग-सग लोक मे रची पची भाषा म वखूबी ते उतरबे के कारन अनुकरनीय एव प्रेरनाप्रद बन गई है । मैं याकू लेखक की औपन्यासिक कला को अतिरिक्त सूझ नाम देनो ज्यादा उचित समझू हू ।

ब्रज के ठेठ आचलिक जीवन कौ सांस्कृतिक निचोड

ब्रज अ चर के सास्कृतिक परिवेस को सफल निचोड मुद्गल या उपन्यास मे जा भावना लोक को सृजन कर वाम विनके चरित्र, सदभाव अरू सेवा भाव के प्रतीक बन जाए याम कोऊ बुराई नाय । रचना मे बुराई तबई आवै है जब सद्भाव अरू सदासयता परिस्थितीन के साक्ष्य सौं वचित है जाय है । दरअसल चरित्रन मे पनपे द्वन्द्व अरू परिस्थितीन की विसमता सौं जब सदासयता उग है तब बाकी प्रामाणिकता असन्दिग्ध होय है । मुद्गल भावुक चित्रन के चलते या माऊ सटीक ध्यान दै है । लेकिन पाठक याए नोट कर क मुद्गल की जि पलो उपन्यास है अखीरी नाए अरू ब्रजभापा मे गद्य रचना की कठिनाई कू जो लोग समझ है । ब्रज के लोक मुहावरे सौ जो लोग परिचित है लेखन म अरू बेऊ रचनात्मक लेखन मे रचना सदभ मे लेखक की कठिनाई कू चीन सक हैं । अलबत्ता जि कहवे को जरूरत समझी जाइगी क मुद्गल न यदि इन तीन पीढीन क सघप म राजनीतिक यथाथ प्रस्तुत करिब म सफलता पाई है यामे दो राय नाय है सक । लेखक ने ब्रज के ठेठ आंचलिक जीवन विसयक कछू सास्कृतिक परिवेस के लालित्य को निचोडऊ या कृति म प्रस्तुत कर्यो है । यथा ब्याह के औसर के मगलगीत भात गीत, बढार के औसर प गायबे वारी रसीली गारी भात नौतबौ दाहद के गीत याके सगई ब्रज के अनुपम पव, होरी के रसीले रूप की एक झलकऊ लेखक ने याम दिखायबे की कोसिस करी है ।

दुःख अरू पीडा मेऊ ब्रज की मिठास भावुकता अरू सरसता ब्रज छन की अपनी निजी विसेसता है । मुदगल के चरित्र दुख अरू पीडा कू सहकऊ वाए वनाए रखै है । स्यात मुद्गल कू हू यई सर्वाधिक प्रिय है । येई वू आस्था है जासौ खोट मिल्यौ

'कचन' खरो है उठें हैं पारस सो सगक मे भ्रायक कोऊ हू धातु कचन म बदल जाए है लेकिन खरो कचन हू काऊ के सगक मे आई वस्तु पै अपनो आलोक बिखेरे है। मुदगल के नरित्र चाहे च ा हो या चकोर हो दिवाकर हो या प्रभात हो ऐसोई आलोक बिखरबे वारे चरित्र है।

हिन्दी उपन्यास मे सस्थान के माध्यम सो मुनस्वता के निर्माण अरू परामश की आस्था रही हे। प्रेमचन्द को 'सेवा सदन' सस्था खुलवाम, फणीश्वर 'लोकनाटय" कू मन्च बनोहैं। मुद्गलऊ कही याई आस्था सो जुडकें विद्यापीठ को निर्माण करै हैं। ट्रस्ट बनावैं हैं ग्ररू बेर बेर ईमानदार अरू सेवा भावी लोगन को गुहार हू करै हैं। दरअसल आज जो कछू है इतेक कुरूप, इतेक विकृत है कै वाके ऊपर कोऊ रचना ठाडी करनी है तो वा विकृति सो ऊपर उठिनो होयगो। मुद्गल अपने या औपन्यासिक सस्कार मे वाई विकृति सो ऊपर उठबे की कोसिस मे है। पाठकन कू काऊ स्तर प वू अव्यावहारिक लग सक है। हा आस्था के स्वर प बाए जीबे की ललक मुनुस्यता की कसोटी है। मुनुस्यता म जिन लोगन की आस्था है वे मुद्गल के सग हू गे।

किस्साकोताह जि है के राजस्थान की धरती प गोपाल प्रसाद मुद्गल ने देस के पाच करोड लोगन की जबान ब्रजभाषा म उपन्यास लिखकै ब्रजभूमि के मुहावरे, लोकोक्ती को जगै जग सफल प्रयोग के सग ब्रजभूमि की आचलिक जन जीवन, धात प्रतिघात कौ सफलता पूवक 'कचन करत खरो' मे उतारबे को जो प्रयास कीनो है वाकी मै तारीफ करू हू।

ब्रजभाषा अकादमी ने स्थायी महत्व को काम कीनो हू।

मैं या उपन्यास के लेखन के ताई मुदगल कू साधुवाद दैऊ अरू ई मान क चलू हू कै जि विनकौ अखीरी उपन्यास नाय ग्ररू राजस्थान माहि ब्रजभाषा म पले उपन्यास के पाठक की नॉए स्वागत करू हू। राजस्थान ब्रज भाषा अकादमी ऊ याके सग भारी प्रससा की पात्र है के इतेक अल्प समय मे बाने ब्रज गद्य की विभिन्न विधान मे ढू ढ कै लेखक उत्पन्न कीनें है अरू नये विसयन प नये साच के सग लिखवायो हू। 'कचन करत खरो' याको ज्वलन्त प्रमाण हू। ब्रज भाषा अकादमी जा बात के लय सुधीजन की प्रससा पाती रहेगी क वाने रास्ट्रभाषा के समानान्तर ब्रजभाषा मे साहित्य की विविधविधान कू प्रकाशन देके स्थायी महत्व को काम कियो हू। अस्तु।

अध्यक्ष हिन्दी विभाग जोधपुर विश्वविद्यालय जोधपुर

नीको करनी को नीको उपन्यास

मोहन लाल मधुकर

'कचन वरत खरौ' उपन्यास को कथानक व्रज सस्कृति कूँ पूरी तरियाँ उजागर करिबे वारौ है। भैया गोपाल प्रसाद मुद्गल नें या उपन्यास माहि हमारी आजु की समस्यान के सरूप के सग सग बिनकौ साचो समाधान हू प्रस्तुत करि दीनौं है। विनें इन समस्यान कूँ अतीत, वतमान अरू भविष्य तीनूँन सौं जोरिकें व्यापक बनायौ है, समाज की नइ नई हलचलन को जीतो जागतो दिगदसन करायौ है।

लेखक को सबते जादा ध्यान सामाजिक कुरीतीन प प्रहार करिबे प रह्यौ है। हमारे देस कूँ खोखलौ करबे वारी कुरीतीन की दीवार याम एक सग अराइकें गिरि परी हैं। अबला कही जाइबे वारी नारी कूँ लेखक ने पूरी तरियाँ सबला सिद्ध करि दीनौ है। उपन्यास की नायिका चन्दा प विपदान के पहार प पहार टूटि परे परि वु अपने कम पथ त नेकऊ टस ते मस नाइ भई। चन्दा अपने जनम त लके जोबन अरू बुढापे तानूँ अँधियार कूँ पीके उजियारौ लामती रही।

कम अरू भाग्य को द्वन्द या उपन्यास माँहि बडी बारीकी अरू खूबी सौं दरसायौ गयौ है। अन्त मे कम को मौन मुखरित भयौ है। चन्दा अपने आचरन ते ऐसो मारग दिखामती रही जापै चलिबे ते भाग की ठौर करम की महिमा सबक घट म बठि जाइ। चन्दा को ऐसौ ऊजरौ आदस है जो भारत की नारीन कूँ अपने पामन पै ठाडी करिकें कमपथ प जरूर अग्रसर करगो। जि उपन्यास मानुस जीवन की सार बताइक वाय पाइबे की सूधी साची राह दिखाइबे वारो है।

उपन्यास की पूरी कथा या अचर के कहावत मुहावरेन के तान बानेन ते बुनी गई है। मोइ जि कहिब म नेंकऊ हिचक नाइ कि जि आचलिक उपन्यास व्रज लोकोक्ति, मुहावरे अरू सवदन को भरीपूरौ पिटारौ है। या रोचक उपन्यास ने सिल्प अरू सवादन माँहि व्रजभापा को माधुय अरू लालित्य सहज रूप सौ छलक्यौ परै है।

28 फरवरी 1983 कूँ कामवन के बिहारी समारोह के औसर प व्रजभापा के सबल प्रम श्री युगलकिशोर चतुर्वेदी नें व्रजभापा गद्य माहि साहित्य रचिव को जो चुनौती दई वु मुद्गल जी न सिरमाथ लई अरु वाइ दिना बि नें या उपन्यास लिखिबे को बीडा उठायौ। व्रजभापा गद्य माँहि कहानी, रूपक रेखाचित्र सस्मरन रिपोतर्ज, यात्रा वनन, निब ध अरु वार्ता साहित्य तो खूब लिख्यौ जाइ रह्यौ है परि उपन्यास लिखिब को मुद्गल जी को जि अनूठो प्रयाग कितनो सफल है याय पढ़िब वार ही बतामिगे। मेरी समझ म तो जन-जन को जीवन सुफल करिब को सदेसो दब वारो नीको करनी को जि नीको उपन्यास है।

16, आदस कोलानी भरतपुर (राज०)

'कचन करत खरौ' औपन्यासिक कचन

डा विश्वम्भर नाथ उपाध्याय

श्री गोपाल प्रसाद मुगदल सो व्रजभाषा को साहित्यिक जगत सुपरिचत है।

'कचन करत खरो' उपन्यास सौ श्री मुद्गल ने एक औपन्यासिक कचन' की रचना कीन्ही है। कला की चमचमाहट चाए कम होय, परि खरोपन पूरौ है। मोय प्रासा है के मुद्गल जी आगामी उपन्यास मे कलात्मक चमक्कऊ लाइगे।

'कचन करत खरो माहि लेखक ने चन्दा की सिगरी जीवन कथा कही है अरु कथा कौ इ तीन पीढ़ोन तानू तानो बानो बुनो है। याते उपन्यास कथात्मक नेरटिव ज्यादा है गयो है, चित्रात्मक कम। किस्सागोई सो लेखक पात्रन के अन्तमन को उत्खनन कम कर पायौ है ध्यान कहानी कहबे 'फरि का भयो' पर रह्यौ है। अत मनोवग्यानिक गहनता की कमी उपन्यास कू पारम्परिक बनाय दे है।

लेखक ने पात्रन के व्यक्तित्व, प्रतिभानन अरु ढाँचेन कू पूर्व निश्चित कर लीनो है। वू आदर्स चरित्र या Ideal Types की सष्टि करनौ चाहे ह अरु वाम वाय पूरी सफलता मिली है। चन्दा केन्द्रीय पात्र है जाके आदर्सीकरन कू लेखक ने वाय दुघटना क माध्यम सौ विधवा बनायके वाके समूचे जीवन के दायित्वन कौ नरन्तय द दीनो है जात वू अपने तपस्वी जीवन सौ निभावे है अरु वू उत्तरदायी गहस्वामिनी की भूमिका की भव्यता कू चरम सीमा पै पहोचावे है।

घरेलू जीवन के बिम्ब अरु बातचीत मन कू मोहित कर ले है—

पर, औपन्यासिक कचन कू दुघटना को सहारो लेनो जरूरी नाय हो। नाटकीयता क काज ग्रामीन जीवन क द्वन्द अरु बदलते विकत होते सबध-परिदृश्य अर विसगतीन म गहरे उतरब बिनकी चित्र देबे ते ई उपन्यास मे भास्वरता आ जाय अरु नवीनताऊ। तथापि जा रूप म लेखक न चन्दा अरु वाके पति वाकी सतान परपरा कू प्रस्तुत कीनो है वू स्वाभाविक अरु सहज लग है। दूसर या रचना म पात्रन म ग्रामीनता के भीतरे प्रामानिक रग ढग है। बिनकू लेखक बग (चन्दा कू छाड़के) या टिपिकल पात्र बना सके हो अरु जि कौसल मामूली नाँय। जाके काज लेखक म जा पात्रन के सुभाव को परिवेच्छन चइये वू लेखक म है। तबई वू चन्दा चकोर, चोखेलाल, रग्गो पडित राधा जसे पात्रन को चित्र दे सको है। एसो है क नगर जीवन क समानान्तर अरु सग म कछु विदुन प (भरतपुर प्रमग) टकरातो भयो ग्रामीन चित्रानन, प्रकृति अरु घरलू जीवन के बिम्ब एव बातचीत क बांक अन्दाज मन कू मोहित कर ल है। वस्तुत लेखक की सर्वाधिक सफलता पात्रन की अवधारना (Conception), जिनकी ग्रामीन छवि क चित्रन म मिलो है।

ठेठ ब्रज बोली को पूरो रस वास्तविक जीवन की सरस झांकी—

अरु लेखक प्रचलित मे वाई गांम की ठेठ ब्रज बोली को पूरो रस ल लक प्रयोग करै है। अकेलो ये प्रसग उपन्यास कू पठनीय बनावे कू पर्याप्त है। चोके आधुनिकता मे ऊबे डूबे अतिशिक्षित, प्रशिक्षित महानगरीय पाठक जब या तरियाँ की रचनान कू पढ है तौ वू ई बिरोधी रग उभर है गोया जम्स ज्वॉयस को 'यूलिसिस' कापका को दुग' पढ़बे के पाछ आधुनिक जीवन की जटिलता सो व्याकुन सूरदास, मीरा, देव ग्वाल, अरु गोपाल प्रसाद मुदगल कू पढक लोकभापा की अकृत्रिम बोली बानी पै मुग्ध है रह्यो हाय। या दप्टि सोऊ गोपाल प्रसाद मुदगल की जि रचना कलात्मक प्रयोग की जटिलता सो रहित है, पर वाम प्रकृत, वास्तविक जीवन की ऐसो सरल झाकी है के वाय पढते समय सहज मनुष्यता को रूप अरु रस उभरै है।

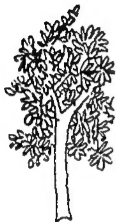
अकादमी प्रबन्ध कौसल की प्रससा करू हुं—

मैं समझू हू कै श्री गोपाल प्रसाद मुद्गल ब्रजभाषा के साहित्य म उपन्यास की कमी कूँ पूरो कर रहे हैं। अत सुरू के प्रयत्नन को महत्व है जाय है। ब्रज भाषा म कविता की परपरा अद्वितीय हैं पर बामे आधुनिक विधान को अब सुभारभ है रह्यो है। या दृप्टि मौं डा० विष्णु चन्द्र पाठक अध्यक्ष राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी की मैं प्रससा करु हू क बिनकी प्रेरना अरु प्रबध कौसल सौ ई आसा बध रही है कि ब्रज भाषा आधुनिक अरु समकालीन 'सजन एव चिन्तन के छत्र मे अन्य भारतीय भाषान की प्रतिस्पर्धा मे पीछे नही रहेगी अर अपनी अनत सजनात्मक छमता के कारन ब्रजभाषा एक वेर पुन वूई स्थान महत्व अरु महिमा एव मूल्यवत्त प्राप्त करैगी जो मध्ययुग म वाय प्राप्त ही।

राजस्थान की अन्तरात्मा डिंगल अरु अरु पिंगल की धूप छांह सो बनी है। अत राजस्थान को आन्तरिक व्यक्तित्व राजस्थानी अरु ब्रज भाषा एव अन्य बोलीन के साहित्य अरु सस्कृति सौं समृद्ध हायगो। श्री गोपाल प्रसाद मुद्गल को जि उपन्यास याई दिसा मे पलो कदम है जो स्वागत योग्य हत।

गगाप्रयाग ड/25 जवाहर नगर जयपुर।









'कथन करत खरों' उपन्यास में ब्रज की सस्कृति कूँ भैया गोपाल प्रसाद मुद्गल नें पूरी तरियाँ उजागर कीनों है। लेखक ने उपन्यास माहि हमारी आज की समस्यान क सरुप क सग सग विनकों सार्थो समाधानऊ प्रस्तुत करवे कों अतीत, वर्तमान अरु भविस्य क ताने बानन क सग उल्लेखनीय प्रयास कीनों है। समाज की नई-नई हलचलन कों जीतों जागतों दिग्दर्सन याकी अपनी एक अलग विसेसता है। सामाजिक कुरीती एव कर्म अरु भाग्य कों द्वन्द या उपन्यास में बड़ी बारीकी अरु खूबी सों दिखायों है। पूरी कथा ब्रज अचल क कहावत मुहावरन क ताने बान त बुनी भई है। याय जि कहब में नैकऊ हिचक नाँय कि जि आचलिक उपन्यास ब्रज-लोकोक्ति अरु मुहावरेन कौ भरों-पूरों पिटारों है। शिल्प अरु सवादन में ब्रज भाषा कों माधुर्य अरु लालित्य सहज रुप सों छलक्यों है।

मोहन लाल मधुकर, भरतपुर